



## घारिवारिक चिकित्सा ।

प्रथम संस्करण ।

Sethia Jain Library

BIKANER

Serial No १८३३

Index No ५६८

अष्ट पुस्तक ।

श्रीमद्वैद्यचन्द्र भट्टाचार्य एण्ड को० द्वारा

संस्कृत और प्रकाशित ।

ज० ११ बिनफीसड सेन,

कलकत्ता ।

[All Rights Reserved.]

१९६८

१००० २४ ४ ११,

दाम ५ मारुत धाने ।

१९०५-१९०६ - १९०७ - १९०८

---

PRINTED BY GOBARDHAN PAN  
AT THE GOBARDHAN PRESS,  
*50/1 Mukhtaram Babu's Street Calcutta.*

---

## भूमिका ।

भारतवर्षकी सामयिक दृशापर विचार करनेमें मानूस होता है कि इस समय प्राणा मात्र किसी न किसी रोगसे पीड़ित हो रही है और प्रत्येक मासमें उनकी अपने कठार परित्यक्तसे उपाजन किये हुए धनप्रा भाग, वैद्य डाक्टर अथवा हकीमोंको अर्पण करना पड़ता है तथापि उनकी अभिलाषा पूर्ण नहीं होती क्योंकि औषधक मुन्धसे भी अधिक भाग वैद्य डाक्टरोंके उदरमें धन जाता है, साथही कितने ही औषध ऐसे मिलत हैं जो खाटक हरफोरके कारण सबे अवस्था में सभी दशाओंमें और बूढ़ युवा बालक सभीक काम नहीं आ सकते । इसलिये हममें काहू मन्देह नहीं कि कोई ऐसी औषधि काममें लाना अत्यावश्यक है जो सर्व साधारणके उपयोगमें सरलता और प्रसन्नता प्रेषक आ सके । यह दवा होमियोपैथिक है जिसके सेवनमें मुँह कड़ुआ कसैला अथवा तीता तो कदापि हा हो नहीं सकता विपरीत चिह्नको प्रसन्नकर देनेवाला मोठा खाटक मिलता है और यही एक प्रधान कारण है कि इस होमियोपैथिकका प्रचार केवल भारतहीमें क्या समस्त संसारमें हो रहा है, साथ ही हममें अन्यान्य गुण भी ऐसे उत्तम मिले हैं कि जिसके कारणसे यह औषधि चिकित्सा शास्त्र गिरोमणि हो रही है अर्थात् पहिले तो इस औषधकी योजना इतनी सहज है कि सामान्यसे सामान्य मनुष्य भी कोवस्तु अन्य देखकर औषधोंकी

योजन कर सकता है, दूसरे इस औषधिकी सावा पहल ही रोगी पहिले तो इसके खादसे ही प्रसन्न हो जाता है और फिर रोगीका चित्त प्रसन्न होते ही यह औषधि पेटमें जाकर अपना लाभकारी विद्युत गुण दिखाती है तथा रोगी वातकी वातमें आराम्य होता है। साथ ही रोगीको इस दवाके सेवन करनेमें कोई कड़ा प्रयत्न भी नहीं करना पड़ता है। इन कारणोंसे यह औषधि मनुष्य मात्रके घरमें रखने योग्य हो रही है। केवल दस बीस रूपयोंकी दवाएं मगा कर मनुष्य प्रसन्नतासे अपने परिवारके साथ ही अन्योको उपकार पहुँचा सकता है। इसी लिये जिसमें सब कोई प्रसन्नतासे काम खचमें बिना किसी तरहके घर बैठे अपना काम निकाल लें और अधिक भ्रष्टमें न पड़े इस उद्देश्य पारिवारिक चिकित्सा की रचना की गई है जिसको देखकर सरलतासे सब कोई अपने परिवारकी लाभ पहुँचाकर साथ ही इस व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन भी कर सकते हैं और इसी कारणसे इस ग्रंथका मूल्य भी बहुत कम रखा गया है। आशा है इस ग्रंथ द्वारा सर्व माधारणकी आवश्यकता भी पूरी होगी।

कलकत्ता

२६वीं अप्रैल, १८९१।

} श्रीमद्देशचन्द्र महाचार्य पण्ड को०

# सूची-पत्र ।



१ । उपक्रमणिका ।

होमियोपैथी ।

होमियोपैथी क्या है—	१
होमियोपैथी कितने दिनकी है—	१
हनिमान कौन थे —	२
होमियोपैथीका विस्तार—	३

विषय ।	पृष्ठा ।	विषय ।	पृष्ठा ।
औषध प्रस्तुत प्रकरण ।		औषध प्रयोग प्रकरण ।	
भेषज और भेषजवद्	१	औषध किस तरह रखना चाहिये ?	४
औषध दो तरहके	१	औषधका प्रयोग किस तरह खिलाना चाहिये ?	५
विचूर्ण	१	क्रम निरूपण	५
अरिष्ट	२	औषधकी मरत्ता	६
कम	२	औषधि कितने कितने टेर पर देना चाहिये	६
निम्न मध्यम और उच्चक्रम	३	औषध प्रयोगके सम्बन्धकी कार्य करते	६
एकबुट औषध इतना फायदा करनेवाला क्यों है ?	३		
गति नहीं क्रम	४		

विषय ।	पृष्ठा ।
आनुपङ्गिक चिकित्सा ७	
रोग लक्षण और औषध	
निर्वाचन ।	

रोगका लक्षण कहनेसे	
क्या समझना चाहिये ?	८
औषधका लक्षण कहनेसे	
क्या समझना चाहिये ?	८
औषध निर्वाचन	८
रोगका लक्षण किस तरह	
ज्ञानना चाहिये	८
शरीरकी गर्मी	१०
नाड़ी स्पर्शन	१२
श्वास प्रश्वास	१२
नाड़ी श्वास और शरीरकी	
गर्मीका आपसमें	
सम्बन्ध—	१२
जिह्वा परीक्षा	१३
मुखमण्डल	१३
गात्र चर्म	१४
कै और हिचकी	१४
वेदना	१५
वक्षस्थल	१५
मल	१६
मूत्र	१७

विषय ।	पृष्ठा ।
२ । शोगित रोग ।	
हैजा	१७
सांघातिक हैजा	१८
सामान्य हैजा	१८
पूर्ववर्ती कारण	२०
उत्तेजक कारण	२०
प्रतिषेधक उपाय	२१
हैजेकी ५ अवस्थाएँ	२२
हैजेकी प्रधान चिकित्सा	२२
आक्रमणावस्था	२५
पूर्ण विकसितावस्था	२६
हिमाङ्ग अवस्था	२७
प्रतिक्रियावस्था	२८
परिणामावस्था	२८
चिकित्सा	२८
कैम्फर प्रयोगकी मात्रा	३१
आक्रमण वस्थाकी	
चिकित्सा	३१
पूर्ण विकसितावस्थाकी	
चिकित्सा	३१
आनुपङ्गिक उपाय	३८
हिमाङ्ग अवस्थाकी	
चिकित्सा	३८
मात्रा	४१

विषय ।	पृष्ठा ।	विषय ।	पृष्ठा ।
प्रतिक्रियावस्थाकी		पथ्य	५५
चिकित्सा	४१	मैलेरिया जनित सविराम	
परिणामावस्थाकी		ज्वर	५६
चिकित्सा	४१	पथ्य	६५
ज्वर और विकार लक्षणमें	४२	सान्निपातिक विकार ज्वर	६५
मूत्रनाश और तन्द्रादोष	४२	हामज्वर	७०
हिचकी	४४	चेचक	७२
यमनकी इच्छा या यमन	४५	संयुक्त वसन्त	७२
उदरामय	४६	घसमुक्त वसन्त	७३
पेटफूलना	४७	चिकित्सा	७२
दुर्बलता	४७	आनुपङ्क्तिक उपाय	७४
स्कोटक और कर्णमूल		जल वसन्त	७४
प्रदाह	४७	घिसर्प	७५
फुसफुस प्रदाह	४८	उपभिक्षी प्रदाह	७७
म्लेग ( महामारौ )		बहुव्यापक सर्दी	७८
म्लेग	४८	धातु रोग ।	
प्रतिपेधक	५०	वातव्याधि	७८
चिकित्सा	५०	पुराना वात	८२
आनुपङ्क्तिक चिकित्सा	५२	गठिया वात	८४
ज्वर ।		उपदर्श	८५
ज्वर	५२	बाघी	८७
सामान्य ज्वर	५३	गण्डमाप्ता	८७
एक ज्वर	५३	यक्ष्माकास	८८
लक्षण	५४	बहुमूल	८२



विषय ।	पृष्ठा ।
शोथ	८४
रक्त स्वल्पता	८७
<b>४ । स्नायुमण्डलके रोग ।</b>	
मस्तिष्क और मस्तिष्क	
आवरक भिक्षो प्रदाह	८८
शिर पीडा	१००
सन्धास	१०१
अपस्मार या गृगी रोग	१०६
शुल्म या मूर्च्छागत वायु	१०८
धनुष्टकार	११०
अलातह	१११
पक्षाघात	११२
सर्दी गर्मी	११३
स्नायुशूल	११४
<b>चक्षुरोग ।</b>	
चक्षुप्रदाह	११७
दृष्टि शक्तिकी अल्पता	११८
तारकामण्डल प्रदाह	१२०
आल दृष्टि	१२१
धूम दृष्टि	१२२
अश्रुमी	१२२
<b>६ । कर्णरोग ।</b>	
कर्ण प्रदाह	१२३

विषय ।	पृष्ठा ।
कर्णशूल	१२३
कर्ण व्रण	१२४
कर्णनाद	१२५
कानमें पीप	१२५
वधिरता	१२६
<b>७ । नाकके रोग ।</b>	
नाकमें फोडा	१२७
नाकसे रक्त बहना	१२८
नासा	१२८
<b>८ । रक्त संचालन</b>	
<b>यन्त्रकी पीडा ।</b>	
हृदयवि	१३०
हृत् शूल	१३१
हृद अम्लन	१३२
मूर्च्छा	१३३
गलगण्ड	१३४
<b>९ । श्वास यंत्रकी रोग ।</b>	
सर्दी	१३५
वायुनाली प्रदाह	१३७
हफनी ( दमा )	१४०
फुसफुस प्रदाह	१४२
सांभी	१४५

विषय ।

१० । परिपाक यन्त्रकी  
क्रिया ।

पृष्ठा ।

विषय ।

११ । सूत्रयन्त्रके रोग ।

पृष्ठा ।

मुख गह्वरका प्रदाह १५०

दन्तशूल १५०

जीभका घाव १५३

गलघात १५४

पाकाशय प्रदाह १५६

रक्तवमन या रक्तपित्त १५८

अजीर्ण या अग्निमान्द्य १६०

वमन १६२

पाकाशयमें दर्द १६३

अम्ल प्रदाह १६४

शूलकी टर्ट १६७

कोष्ठ वह १६८

एपेण्डिक्स प्रदाह १७०

उदरामय १७५

रक्तामाशय १७८

अर्थ १८०

क्रिमि १८३

यकृत प्रदाह १८७

खूँकी बुई डीहा १८८

पाण्डु १८८

भगन्दर १८८

सूत्रयन्त्र प्रदाह १८०

सूत्रस्तम्भ और सूत्रनाश १८१

सूत्रकृच्छ्र १८३

आपत्ती पेगाव निकालना १८४

शकघण १८५

प्रमेह २००क

पथरी २००क

पित्त पथरी २००ख

चिकित्सा २००ग

आमुपक्षिप्त चिकित्सा २००ङ

पथ्याटि २००घ

सूत्र पथरी २००ङ

१२ । चर्मरोग ।

१६७ २

१६८ आमवात २०७

१७० पाँचहा और खुजली २०७

१७५ घाव २०३

१७८ पुराना घाव २०४

१८० फोड़ा २०५

१८३ अंगुलीका घाव २०६

१८७ छत्रण (पीठकी सूजन) २०६

१८८ कद्द दूसरी दूसरी चर्मरोगोंकी २०६

१८८ दवाये २०६

विषय ।

पृष्ठा ।

## १३ स्त्री रोग ।

स्त्री रोग	२०८
ऋतु	२०८
गर्भसंचार	२१०
आर्तव व्याधि	२११
पहिले रज स्रावमें विलम्ब	२१२
रजोरोध	२१२
अनियमित ऋतु	२१४
अनुकल्प रज	२१५
स्वल्प रज	२१५
अति रज	२१६
बाधक वेदना	२२०
श्लेते प्रदर	२२३
रजो निवृत्ति	२२६
हरित् पौडा	२२७
जरायुके रोग समूह	२२८
जरायुकी उद्यता	२३०
जरायुज मुर्च्छा या हिस्ती रिया	२३०
जरायु प्रदाह ( नया पुराना )	२३१
तदन जरायु प्रदाह	२३१
पुरातम जरायु प्रदाह	२३१

विषय ।

पृष्ठा ।

जरायुमें वायु जल या रक्त समय	२३२
जरायु अर्जुद	२३४
दूषित अर्जुद या कर्कट	२३४
जरायुकी स्थानच्युति या नासा छुटटना	२३५
डिम्बकोषकी व्याधि	२३६
डिम्बकोष प्रदाह	२३६
डिम्बकोषका शोध	२३८
डिम्बकोषकी स्वायुशूल	२३८
योनिरोग समूह	२४०
योनि प्रदाह	२४१
नया योनि प्रदाह	२४१
पुराना योनि प्रदाह	२४१
योनि का आघेप	२४२
अवरुद्ध योनि	२४३
योनि भ्रंश	२४४
योनिमें खुजली	२४४
कामोन्माद	२४५
वन्ध्यत्व	२४६
स्तनके रोग	२४७
स्तनमें स्फोटक	२४७
स्तनमें अर्धद	२४८
स्तनमें दूषित अवुद	२४८

विषय ।	पृष्ठा ।
मेरुदण्डका चपटाह	२४८
पिक् चक्षु भीर अस्थि	
प्रदेशके दर्द	२४८

### १४ । गर्भिणी रोग ।

गर्भ सञ्चार	२५०
गर्भ लक्षण	२५०
गर्भ क्षाल	२५०
गर्भाविस्थाके नियम	
पालन	२५०
आहार (गर्भाविस्थामें)	२५०
पोशाक	२५१
निद्रा	२५१
भ्रम	२५२
मूर्च्छा	२५२
मिरका भारोपन या	
धूमना	२५०
दांतमें दर्द	२५१
शोथ	२५१
वमन या वमनेच्छा	२५१
मुखसे पानी गिरना	२५४
ऐ ठम	२५४
कफियत	२५५
उदरामय	२५५
छाती जलन	२५५

विषय ।	पृष्ठा ।
अनिद्रा	२५५
रुचिविकार	२५५
छातीकी घट्टकन	२५६
अर्श	२५६
खांसी	२५६
पेशाबकी तकलीफ	२५६
शिराधीका फुसना	२५६
रजःका निकला	२५६
पेटकी कनकनाइट	२५६
स्वर	२५७
दर्द	२५७
पेट बड़ा होनेके अत्यन्त	
कष्टमें	२५७
पेटमें धामक हिलनेकी	
कष्टमें	२५७
पायस्थानकी जगह खुजली	
होनेसे	२५७
धातुकी बीमारी	२५७
स्त्रगमें दर्द	२५७
स्त्रगक बोझीमें जलन या	
घाव	२५७
स्त्रग बड़ा होनेसे दारुण	
यन्त्रणा	२५८
मानसिक कष्ट	२५८
अप्रकृत प्रसव वेदना	२५८



विषय ।	पृष्ठा ।	विषय ।	पृष्ठा ।
गर्भावस्थामें रक्त स्राव	२५८	प्रसवके बादके सपट्टव	२७४
धातु दोष	२५८	योनि मुख और गुदाका	
गर्भपात या गर्भ स्राव	२६०	फटना	२७४
गर्भपात निवारण		पोतनहरकौ दर्द	२७५
चिकित्सा	२६१	रक्त बहना	२७५
गर्भस्राव होनेके बाद		रक्त स्राव	२७६
चिकित्सा	२६२	मूर्च्छा	२७६
आनुपङ्गिक चिकित्सा	२६२	ऐ ठन या आक्षेप	२७७
प्रसवावस्थाके उपसर्ग	२६३	पसीना बन्द	२७८
सूतिका गृह	२६३	सुप्तीमें	२७८
प्रसव वेदना	२६३	नींद न आना	२७८
प्रकृत लक्षण	२६४	भूखरोग	२७८
अप्रकृत लक्षण	२६४	कोष्ठबद्ध	२७८
प्रसवकौ तीन अवस्था	२६५	उदगमय	२७८
स्वाभाविक प्रसवके समयमें		अग	२७८
कई अवश्य पालने		सूतिकाखर	२७८
योग्य विधि	२६६	पुराना सूतिका रोग	२८१
पञ्चिमी अवस्था	२६६	अ तड़ीमें बाई	२८२
द्वितीय अवस्था	२६६	खेत प्रदर	२८३
नार्डी काटना	२६८	बन्धि कोटरका कौपिक	
तौमरा अवस्था	२६८	भिषी प्रटाह	२८४
सूतिका गृहमें प्रसूतिकी		बन्धि कोटरमें पीना	
सेवा	२७०	फोड़ा	२८४
प्रसवकालमें उपसर्गादि	२७२	पेटका भूख पड़ना	२८४
फूलका न गिरना	२७४		

विषय ।	पृष्ठा ।	विषय ।	पृष्ठा ।
सरका बाल सङ्गना	२८५	एक प्रकारकी भूत बाधा	२८४
स्तनका रोग, स्तनदुग्धमें		हिम्का	२८४
राग	२८५	शिशुका धनुष्टंकार रोग	२८४
प्रसवके बाद स्तनकी		सन्तानकी हिचकी	२८५
पीछा	२८५	सर्दी खाँसी	२८५
दुग्ध ऊवर	२८६	सन्तानका नेत्र प्रदाह	२८५
स्तन प्रदाह	२८६	तड़का ( वेङ्गोशी )	२८६
स्तनके बोड़ीका घाव	२८७	शिशुकी अनिद्रा	२८७
स्तनमें व्यथा	२८७	सन्तानका रोना	२८७
स्तन देनेके बाद कष्ट होना	२८८	दूध फेंकना	२८८
स्तनमें दूध अधिक होना	२८८	दात निकलना	२८८
	२८८	खाँसी	२८८
स्तनमें दूध न होना या कम		शिशुके मुँहमें घाव	२९०
होना	२८८	सन्तानका फोड़ा	२९१
दूध कमकर स्तनका कड़ा		शिशुका कीटवद	२९२
हो जाना	२८८	शिशुका पेट ऐ ठना	२९२
१५ । बालरोग ।		शिशुका सदरामय	२९३
शिशु पामन	२८८	शिशुका हैजा	२९४
टीका	२८९	विष्कौनेपर मूतना	२९४
रक्तवत् सन्तान	२८९	पेगाब घग्घ	२९४
शिशुके नाभी रोग	२८९	शिशु यक्षत्	२९५
गोड़	२८९	एकऊवर	२९५
स्तन न खींचना	२८९	सुतसापन	२९६
सन्तानका पीलापन	२८४	घम रोग	२९६
		पामा	२९६

विषय ।	पृष्ठा ।	विषय ।	पृष्ठा ।
शिशुके बदनका चमड़ा		चोट	३१५
निकलकर घाव होना	३०७	माथेमें चोट	३१५
शिशुके मृगी रोग	३०७	मुड़क	३१६
हुप खासी	३०७	कुचल जाना	३१६
मस्तिष्कका भिक्षी प्रदाह	३०८	चलनेके समयका वमन	३१७
मस्तिष्कमें जल संचय	३०८	कौड़ोंका काटना	३१७
बालास्थि विकृति	३०८	श्वास रोध	३१८
घातुटाघ या कुत्तज रोग	३०८	आंख या कानमें कीटादी	
व्रण रोग	३०८	प्रवेश	३१८
गण्डमाना	३११	सर्पदंशन	३१८
शिशु उद्देश	३११	अधज लक्षण रुग्रह	३२०
सुष्ठगङ्गी	३११	कई एक कठिन शब्दोंका	
धयल रोग	३१२	अर्थ	३२४
१ । आक स्मक दर्घटना			
आगसे जलना	३१४		

## १०४ प्रयोजनीय औषधोंकी सूची ।

हम लोग साधारणतः १२, २४ ३० ३६, ४८ ६०, ८४ और १०८ शीशियोंके बक्समें नीचे लिखे औषध दिया करते ।

औषधोंका नाम क्रम मा' द्वा	औषधोंका नाम क्रम मा' द्वा
ऐकोनाइट	३
आर्सेनिक	३०
फार्बीमिन	३०
बेलेडोना	३
आयोमिया	६
चायना	६

श्रीपधोका नाम क्रम' मा डा	श्रीपधोका नाम क्रम' मा डा
वधूप्रम ऐसेट	२
इपिकाक	६
नक्षत्रभमिका	२०
पलसेटिला	२०
हृदिराट्टम एन्वम	१२
मलफर	१०
एसिड फस	६
आनिका मटेना	१०
सिक्लि कर	१
मिना	१०
ऐगिटम टार्ट	६
हैपर मलफर	६
जेलसिमियम	२
कलोसिन्य	१
मार्क्युरियस कर	१
मार्क्युरियस सोल	६
रसटवस	१
कैमोमिला	१२
रिसिनस	१
साइकोपोडियम	२०
ओपियम	६
टेरिबिन्यना	१
वधूप्रम मीट	१२
हायोसाइमस	६
फसफोरस	२
वैप्टेगिया	२
कैन्थरिस	२
सम्रिया	६
स्याइनीजिया	६
भेराट्टम भिर	२
एसिड नाइट्रिक	२०
ऐगिटम क्लूड	६
सुआमनिया	२
कैनाविम स्यैट	१
यूजा	२०
हैमोमिक्स	३
ककालम	६
छानकमेरा	६
इरने गिया	२०
मिक्गुटा	२
साइलीसिया	३०
कुसेरा	२
कैल्कोरिया कार्थ	२०
मिमिसिफयूगा	११
पोडोफाइलम	६
सीपिया	२०
कैलिषाइक्रम	६
लैकेसिस	२०
सैविमा	२
डिजिटेलिस	६



औषधोंका नाम क्रम मा' डा	औषधोंका नाम क्रम मा' डा
कस्तिकम	फेरम
कोफिया	काटनटीग
कोनायाम	फाइटोलेक्का
कलचिकम	शूम
ग्रेफाइटिस	ऐकोनाइट रैडिक्सा
रुटा	ऐनाकार्डियम
नैट्रम स्यूर	कलोफाइटलम
प्रेटिना	ओमियम
मिडन	वैराइठा
नक्तमस्कोटा	ऐगारिकस
प्रास्थाम	ऐलो
डायस्कोरिया	अरम मेट
कैकूटस	कैपसिकम
सै फिमेशिया	क्लीनि मनफ
स्याडाडिला	आइरिस भार्स
गेम्बूका रस	सैण्टोनाइन
एपिस	हाइस्टिसड
यूपेटोरियम पार्फ	आयोडियम
युफे सिया	एसिड हाइड्रो
आर्निका (आर्य नगानिका)	नेपटेण्ड्रा
कैनेगल्ला ( , )	यूपेटोरियम पार्फ
नैजा ( कोया )	सैनम
मैट्रुनेरिया	रडोडियुन
टैवेकम	
क्रियोजोट	

# पारिवारिक चिकित्सा

१ । उपक्रमणिका ।

होमियोपैथी

किन्ती रोगों की भी चिकित्सा पर ध्यान देनेके पहिले होमियोपैथीके मन्त्रन्ध रखनेवाले अर्थात् होमियोपैथीके स्पष्ट विषयों और चिकित्साका ज्ञान लेता अत्यन्त ही आवश्यक होय है, हमसे प्रिय पाठकोंसे मेरा मविनय अनुरोध है कि वे इस उपक्रमणिकाको जो जगत्पर तथा ध्यान देकर पढ़ें ।

होमियोपैथिक क्या है ? — जो पदार्थ स्वास्थ्य शरीरको विकृत तथा विकृतको स्वास्थ्य कर सके उसको नाम "चोपध" (टवा है) । चिकित्सा अवस्थामें कोई चोपधके सेवन करनेसे जो लक्षण प्रगट होते हैं उसी चोपधसे प्रशंसित हैं—इसीका नाम "होमियोपैथी" या "सदृशविधान" है । जैसे, १ बिना रोगके आर्सेनिक (सखिया) खानेसे हैजा रोगके समान दस्त, वमन पिपासा इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं वही दस्त, वमन, पिपासा लक्षणयुक्त हैजा आर्सेनिकके प्रयोगसे आरोग्य होता है, २ चिकित्सा अवस्थामें कुइनाइन खानेसे जैसा कम्पल्वरया लक्षण दिखाई देता है, उसी प्रकारसे कुइनाइन कम्पल्वर नाश करनेवाला भी है ।

होमियोपैथी कितने दिनोंसे चली ? —

कमसे कम दो हजार वर्ष हुए जब "Similia Similibus

Curontur होमियोपैथीका बीज मन्त्र भारत और ग्रीस देशमें उच्चारित हुआ था, परन्तु अभी केवल एक ही सदी ( शताब्दि ) हुई है कि महात्मा हनिमानने प्राणपणसे चेष्टा करके इसका साधन और प्रचार किया है तथा चिकित्सा जगतमें एक नवयुगका प्रचार कर दिखाया ।

हनिमान कौन थे ?—होमियोपैथीके प्रवर्तक सैसुयल हानिमानका जन्म सन् १७५५ ईस्वीमें जर्मनी देशमें हुआ था । उन्होंने बड़े कष्टसे लिखना पढ़ना सीखा और ग्रीक, हिब्रु, अरबी, लैटिन, फ्रांसि जर्मन, इत्यादि भाषा तथा चिकित्सा और रसायन विद्यामें पूर्ण पण्डित हो गये । १७८० ईस्वीमें कालेनर्क सिखे हुए 'मेटेरिया मेडिका' नामक ग्रन्थ अनुवाद करते समय सहसा उनके हृदयमें यह नवीन भाव उदय हुआ कि कुइनाइन सुख शरीरमें स्वर पैदा करता है तथा उसी प्रकार स्वर भी है । हृदयके इस भावसे उनको आपसी "सम सम समयति" वाली राह पर लाया । इसके बाद छ वर्ष पख्खत उन्होंने नाना प्रकारके ग्रन्थ भूयोदर्शन, गरलविघ्नान इत्यादि अध्ययन करके और नाना प्रकारके विषोंकी स्वयं सेवन करके यह निश्चय कर लिया कि 'होमियोपैथी सत्यताके अटल पर्वत पर प्रतिष्ठित है—यह कल्पना या अनुमान झूठा नहीं हो सकता । १७८६ ईस्वीमें उनके इस नवीन मतका प्रचार होते ही चारों ओर सचबखती सी मच गई । सत्यानुरागी कई एक वैद्य

उनके गिफ्ट हुए। तथा उसी तरह और चिकित्सक तथा नौच प्रकृतिवाले वैद्य डाक्टर उनके घोर विद्वेपी होगये। १८२१ ईस्वीमें जर्मन कुसुमतिनक निर्यासित होगये मझी परन्तु उस रोगरुदयकी दुर्दम चदम यन्ही ठण्ठी नहोई हुई। जीवनके अथगिट बारह वर्ष उन्होंने ज़िम कटसे फ़ाम्समें काटा था, ज़िम प्रकारसे वहां हजारों कठिनसे कठिन रोग भारोग्य किये ये उस यग रोग काशिको ध्वजा समस्त सम्य देशमें व्याप्त हो गई। २री जुलाई सन् १८४३ ईस्वीमें सहग—विधानाचार्य यहाँक मन्त्राव्रतका उदयापन करके अमरधामको चले गये।

१८५१ ईस्वीमें उक्त मन्त्राव्रतके देशके लोगोंने उनकी मीनाभूमि "निपज़िक नगरमें उनकी पीतलकी मूर्ति स्थापन करके अपने प्रवृत्त अथगधका कुछ प्रायश्चित कर डाला।

ट्रिग्विजय अथवा होमियोपथीका विस्तार—  
मौक दितेपी हानिमान आप धन्य है। आपने व्याधिविमो घनका यज्ञ उपाय निकालकर जैसा जनमसूहका उपकार तथा कल्याण किया है उसकी याद आते हो कौन ऐसा पुरुष होगा जिसके हृदयका उच्छ्वास बड़े धैर्यसे आपके शीघरपथकी ओर न दोड़े। आज जर्मनी फ़ाम्स, आस्ट्रिया, इंग्लैण्ड, आमेरिका, आस्ट्रेलिया इत्यादि सभी आधुनिक सम्यदेश समूहने आपकी चिकित्सा प्रणालीको शिर भुक्ताकर ग्रहण कर लिया है। एक युक्त राज्य अमेरिकाहीमें १०२ अश्वतासी में सबसे कम ६ हजार रोगी आयय पाकर आपही की स्य

घोषणा वीरमादमें कर रहे हैं। राजेन्द्रनाथ दत्त, इ ग्ले एडमें रहनेवाले, भारत मन्त्री सभाके सदस्य सैयद हमनखिल्पायी, छाफ्टर धरनी, बङ्गाली सावक गौरव श्रीमहेन्द्रनाथ सरकार अह्मासद ए भूलार - बाबा - ( ईशापनी ) इत्यादि असाधारण अध्यवसाय गुणसे आज बंगदेशके प्रत्येक गाव और नगरमें तथा भारतके नाना खानोंमें तुमारी ही जयपताका फहरा रही है \* औपध निर्वाचनकी जैसी सुगम और सरल राह आपने दिखाई है उसके लिये वर्तमान और भविष्यतके सभी लोग सदा सदैव आपका निकट कृतज्ञताके फन्देमें बंधे रहेंगे।

\* यहाँ पर यह निम्न देना चाहना चाहता हूँ कि १८९३ ईस्वीमें पञ्जाब विधायी सभा १९३३ ईस्वीमें राजमन्त्री के रूप में आकर आनेवाले सचिव पदिले भारतवर्षमें और कलकत्ता के पदिले पञ्जाब आसिर कराओ छाफ्टर टैमियार सचिव पदिले यदात १८९३ ईस्वीमें जोनिपायेयिका प्रचार करने लगे। परन्तु इमाम्बय इन दोनोंमेंसे कोई भी अपनी अमीरसिद्धि नहीं कर सके। इससे बाद दोनोंके अन्तार इन्टरचेंज विद्यासागर, उनके भाता देवाता वीरवन्धु व्याकरण, अध्यापक आसिररन सचिव बारामतके अमि काशीकाय मित्र, काफ्टर विहारोकाय भादुकी तथा प्रायः अरबीय मूर्ख सुखापाध्याय इत्यादि मनुष्योंने बङ्गदेशमें जोनिपायेयी विस्तार करनेके लिये बड़ी सहायता दी और अर्थात् भी किया और अन्तिममें मुलर प्रतिष्ठित जोनिपो ऐन्जि भीरधान्य, आतुरायन बीजाबास, कुडायम, प्रेग अन्तर्गत इत्यादि जगहोंको आधुनिक वीर दु को रोजियोंको आरोग्य तथा लम्बेसुखसे बचाते देखकर मातृत बर्ष में भी उनके प्रतिज्ञावापसी की सर-व हिन्दू नामक पदक देकर अन्तर्गत करके जामिनीवेदीकी लड़िका बीरम करनेके लिये बाध्य हुए। (Vide Catholic times for 9th August, 1907). यह बात सुनकर भी जिस सङ्घस्य अन्तिमा धित प्रसन्न न, होया।

# पारिवारिक चिकित्सा



## औषध प्रस्तुत प्रकरण ।

भेषज और भेषजवद् ।—सोडा (

( मस्कास् ) काटविण ( भाकोनाइट ) इत  
 नी पदार्थ रोगको उत्पन्न और नाश दोनों काम  
 द्रव्योको "भेषज" या "औषध" कहते हैं । सा  
 ( डिस्टिल्ड ) पानी, सुरासार ( अल्कोहल ) दूधका घाना  
 ( सुगर औफ मिस्क ) बटिका ( पिस्सू ) अनुबटिका  
 ( ग्लोब्यूल ) इत्यादि दूसरे कई एक पदार्थोंमें रोगको नाश  
 करनेकी शक्ति नहीं है । इस लिये इन सब वस्तुओंके साथ  
 औषध प्रयोग और प्रस्तुत किया जाता है, इसी लिये इनका  
 नाम "भेषजवद्" ( अनुपात ) हुआ ।

औषध दो तरहके ।—औषधका सार भाग

( प्रधातु रोग नाशक शक्ति ) दो प्रकारसे रखा जाता है—  
 'विचूर्ण' और 'परिष्ट' ।

विचूर्ण ।—सोडा इत्यादि कठिन पदार्थों को सहजसे

नहीं गमते उसको दूधको चीनीके साथ खूब महीन चूर्ण

किया जाता है। यही चूर्ण किया हुआ लोहा इत्यादिको "विचूर्ण" (ट्रिटोसरेसन्) कहते हैं। परन्तु चूर्ण किये जानेके पक्षसे उक्त लोहादि औषधोंका नाम "मूल औषध" (crudo drugs) है।

**अरिष्ट।**—पेठ पत्तियोंके रस निचोड़ कर सुरासारके साथ मिलाये हुए पदार्थको "अरिष्ट" (टिञ्चार) कहते हैं। इन्ही निकासे हुए रसोंमें मूल पदार्थके सभी गुण विद्यमान रहते हैं। (सुरासारके साथ मिलानेसे लाभ केवल इतनाही होता है कि बहुत दिनोंतक खराब नहीं होते) इसी लिये इस पदार्थको "मूल अरिष्ट" (मादार टिञ्चार) कहते हैं।

**क्रम।**—'मूल औषध' या "मूल अरिष्ट" दूधको गीनी या सुरासारके साथ सूक्ष्मसे सूक्ष्म अथर्वी बांटा जा कर जो दवा तयार होती है उसको "क्रम" (attenuation) कहते हैं। जैसे एक भाग मूल अरिष्टको ८ भाग सुरासारके साथ मिलानेसे, प्रथम दशमिक क्रम (१४) प्रस्तुत होता है - और एक भाग मूल अरिष्ट को ८८ भाग सुरासार के साथ मिलानेसे प्रथम १०० वां क्रम तय्यार होता है। इसी तरहसे पक्षसे क्रमको अरिष्ट १ भाग, ८ भाग, वा ८८ भाग सुरासारके साथ मिलानेसे, १० वां या १०० वां क्रम तय्यार होता है। उस अरिष्टके क्रम को "डाइल्यूशन" कहते हैं।

औषध प्रस्तुत करनेके यदि पूरे पूरे भेद जानने हो तो “भेषजविधान” ग्रन्थको देखना अत्यन्त आवश्यक है।

मित्र, मध्यम और उच्चक्रम।—१८, २५, ३, ६, में सब मित्र अर्थात् छोटे क्रम है। १२, १८ ये मध्यम अर्थात् बिचसे दर्जेके क्रम हैं और ३०, १००, २०० इत्यादि उच्च क्रम।

अमेरिकान होमियोपैथिक फार्माकोपियाके मतसे १५—३० तक यह भी छोटे ही क्रममें गिने जाते हैं। तीसके ऊपर होनेसे उच्च क्रम गिना जाता है।

**एक बूंद औषध इतना फायदा करने-**

वाला को ?—छोटे से छोटे अंशमें औषध बाटे जानेसे उसका रोगनाशक शक्ति और भी बढ़ जाती है। कविराजो अर्थात् वेदिक मतसे बनाया हुआ मोठा सूक्ष्मसे सूक्ष्म अंशमें बंटा रहता है, वही स्वर्ण आयुर्वेदीय मतसे एक बड़ी रोगघ्न दवा है। नमक, गन्धक, सोना, कस्तुरी, धतूरा इत्यादि जड़, जीव और उद्भिद पदार्थ होमिओपैथी मतके अनुसार छोटे से छोटे अंशमें बाटे जाने पर उसकी रोगनाशक शक्ति का प्रभाव देखकर स्तब्धित हो जाना पड़ता है। यही शक्ति रोगीके शरीरमें पहुँचते ही बिलसीकी भाँति अपना काम कर दिखता है, वही एक बूंद औषध सम्बोधन मन्त्रकी भाँति



करना चाहिये यह ( इस ग्रन्थमें लिखे हुए रोगोंकी चिकित्सा-  
काष्ठमें ) प्रत्येक औषधके पीछे लिख दिया गया है ।

**औषधकी मात्रा ।**—जवान आदमीके लिये दवा  
१ बूंद सवाभर पानीके साथ देनी चाहिये । गोली २, और  
छोटी गोली ४, चूर्ण १ ग्रैन । लड़कोंके लिये १ बूंद दवा  
सवाभर पानीके साथ दो बार, गोली एक और छोटी गोली दो  
देनी चाहिये । छोटे बच्चेको एक बूंद दवा दो तोला जलके  
साथ ४ बार । छोटी गोली १ तथा बड़ी गोली कभी नहीं  
देनी चाहिये ।

**औषध कितने कितने देर पर देना चाहिये ।**—  
नये रोगमें १, २, ३, अथवा ४ घंटेके ऊपर, और ऐसीही  
कठिन तथा प्राणनाशक रोगमें १०, १५ वा २० मिनटके  
अन्तर पर दवा देनी चाहिये । पुराने रोगमें निरन्तर, अथवा  
सप्ताहमें एक या दो बार । नये पीड़ा अथवा रोगमें जब देखे  
कि तीन चार बार दवा देनेसे भी औषधका कोई फल न हुआ  
तो वही दवा दूसरे क्रमसे प्रयोग करनी चाहिये ।

**औषध प्रयोगकी सम्बन्धकी कार्यवाही ।**—  
होमियोपैथिक दो या तीन दवा एक साथ मिचाकर कभी  
रोगीको नहीं देनी चाहिये । एक समय पर एक ही दवा देनी  
चाहिये । यदि ऐसा ही कोई बुरा लक्षण दिखाई दे और  
ऐसी ही जरूरत सभको आय कि दो दवा देना बहुत हो  
जरूरी है तो पर्याय क्रमसे एकके बाद दूसरी देनी चाहिये

( Vide Hughes Principles and practice of Homoeopathy ) परन्तु डामहाम् प्रमुख चिकित्सकगण पर्याय क्रमसे अनुमादर वा देनेके विरोधी है ।

जिस समय तक कुछ खाया न हो तथा प्रातःकालमें ही औषध सेवनका प्रधान समय है । बारम्बार सेवन करते रहने पर आहारके एक घण्टा पूर्व और एक घण्टा पर दवा देनी चाहिये दवा खानेके एक घण्टा पहिले या पीछे पान तम्बाकू खाया मना नहीं है । गरम मसाला या कपूर नहीं खाना चाहिये । दूसरी प्रकारकी किसी चिकित्साके बाद यदि होमियोपैथिक दवा देनी हो तो पहिले दो एक बार कैम्फर खिलानेके बाद तब दवा देनी चाहिये ।

**आनुपङ्गिक चिकित्सा ।**—औषध प्रयोग करते रहने पर भी अर्थात् उसके साथ ही साथ कभी कभी दूसरा उपाय भी करना पड़ता है । जैसे फोड़ा होनेपर, तीसीया प्रससो वा अग्निको मुद्गटिस देकर फोड़ा पका बार चौरदेना उचित है । औषधके द्वारा यदि दस्त न होता हो तो सुसुप्त ( थोड़ा गरम ) पानीके साथ साबुन घिस कर पिचकारी देनी चाहिये । विकारसे माथा यदि गरम हो जाय, बड़े जोरकी मसूकमे पीड़ा हो, या नाक सुईसे रक्त गिरता हो तो बरफ या ठंडा पानी देना चाहिये । गर्म जलवा से क या फ्लासेनके

से कौ भी समय समय पर जरूरत पड़ा करतो है । चिकित्सकोंको चाहिये कि पथ्यापथ्यकी और खूब ध्यान दे ।

## रोग लक्षण और औषध निर्वाचन ।-

रोगका लक्षण कहनेसे क्या समझना चाहिये ?—किसी प्रकारकी पीडा होनेसे शरीर और मनमें जो विकार पैदा होता है, उसी विकार समष्टिका नाम रोग लक्षण (Symptoms) है । जैसे शरीर अधिक गर्म हो जाना, नाड़ीकी तीव्र गति, जोरसे सांसका चलना, कमरमें दर्द, प्यास, भूख नहीं लगना इत्यादि ज्वरके लक्षण हैं । इसमें पहिले तीन बाह्य लक्षण (objective Symptoms) कहलाते हैं क्योंकि ये बाहर अर्थात् रोगीके देहमें प्रगट होते हैं और पिछले तीनो अन्तर्लक्षण (Subjective Symptoms) हैं, क्योंकि इन तीनोंको रोगी स्वयं भीतर अनुभव करता है, यदि रोगी न बतावे तो उन्हें कोई जान नहीं सक्ता ।

औषधका लक्षण कहनेसे क्या समझना चाहिये ?—स्वस्थ शरीरके रहते भी कोई दवा खानेसे जो सब लक्षण प्रगट होते हैं उसी लक्षणको औषधका "लक्षण" कहते हैं । जैसे, स्वस्थ शरीरमें भाकोनाश्टके मूल परिष्ट

की अधिक मात्रा खानेसे घ्याम, नाड़ीकी तीव्रता, जोरसे सांस इत्यादि लक्षण प्रगट होते हैं इन्हीं सबको आक्रोनाइटका लक्षण कहते हैं। औषधके लक्षण विषयमें होमियोपैथिक "भेषज लक्षण संप्रह"में विस्तारसे वर्णन किया गया है।

**औषध निर्वाचन ।—(Selection of medicines)**  
किसी रोगके लक्षणके साथ जिस औषधका लक्षण पूरा पूरा या अधिकांग मिलता हो ता उसी औषधका उस रोगको होमियोपैथिक दवा समझनी चाहिये। जैसे, उपरोक्त स्वरके लक्षणके साथ आक्रोनाइटका लक्षण मिलता है, इसी लिये आक्रोनाइट प्रादाहिक स्वरकी लिये चुना गया है। इस ग्रन्थोक्त प्रत्येक रोग चिकित्सा प्रकरणमें जो सब दवायें लिखी गई हैं, वह सब इसी तरह चुने जानेके कारण नियत क्रमप्रद हैं। ( Vide Boerck's compend of the principles of the Homœopathy )

**रोगका लक्षण किस तरह जानना चाहिये ?—**रोगीके पास बैठकर पहिले उसके सामान्य (जैसे, शीतप्रवृत्ति गिरनेमें दर्द पैरका दर्द, सुहका खाद तोता हाना, कलेजिमें जलन, भय, सपने इत्यादि) रोगके कारण (मर्दाने लगनेसे, पानीमें मौजनेसे, भारी पदार्थके भोजनसे अथवा भारी खोज उठानेसे इत्यादि) किस समय वा किस अवस्थामें रोगको प्राप्त हुई होगी है (जैसे बुखारके

बल बढ़ना, रातके ११ बजे घटना, बदन ठधानेसे आराम मिलना, करवट बढ़ने या चलनेसे पीड़ाका बढ़ना, बाई करवट सोनेसे आराम मिलना इत्यादि ) प्रभृति विषयोंको धीरे धीरे उसे पूछ लेना चाहिये । इसके बाद बाहरी लक्षण सब ( जैसे शरीरकी गर्मी, नाड़ी, जिह्वा, चर्मा, वक्षस्थल, पायखाना, पेशाब इत्यादि परीक्षा द्वारा ) स्वयं नियंत्रण कर लेना चाहिये । किस तरहसे शरीरके गर्मीकी परीक्षा करनी चाहिये यह आगे लिखा गया है ।

**शरीरकी गर्मी ।**—शरीरकी गर्मी क्लिनिकल थर्मामिटर ( तापमान यन्त्र ) द्वारा निर्णय करनी चाहिये ।

( यह पाँसे भरा हुआ छोटो छोटो चिन्होंसे चिह्नित एक कांचकी नली है, सबके नीचे पारा है, उसके ऊपर कई एक छोटी बड़ी रेखायें और कुछ चिन्ह हैं । पहिली बड़ी रेखा ८० या ८५ डिग्री । उसके बाद ४ छोटी छोटी रेखायें हैं, हरएक एक डिग्रीका पाँचवा भाग बताती है । प्रत्येक बड़ी रेखा एक एक डिग्रीकी है । ८८ डिग्रीके ऊपर दूसरी छोटी रेखा पर एक तीरका चिन्ह है, यह मनुष्यकी स्वाभाविक गर्मीकी बतावेवाली है । थर्मामिटरका पारेवाला भाग शरीरके बगलमें या जीभके नीचे अथवा गुच्छादारमें प्रवेश कराकर शरीरके तापकी परीक्षा करनी पड़ती है । ५ से १० मिनिट तक स्थिरभावसे बगलमें रखकर तब बाहर निकालना और देखना चाहिये । पारेवाली जगहसे एक पतली पारिकी

शरीर ठठकर जहाँ पर आकर ठहर गई हो, शरीरमें घतनी हो डिग्री गरमी समझनी चाहिये । )

अच्छे शरीरमें ८८ ४ डिग्री, सुहमें ८८ ५ डिग्री पर्यन्त गरमी रहती है । लड़कोंके बदनमें जवानोंकी अपेक्षा कुछ अधिक गरमी रहती है तथा जवानोंकी अपेक्षा ४० वर्षसे ऊपर की अवस्थावालोंके बदनकी गरमी कम होती है । निद्रा और व्यायामके समय शरीरकी गरमी १३ डिग्री कम हो जाती है । गात्र ताप यदि २३ डिग्री अधिक हो जाये तो डरनेकी कार्र्ण बात नहीं है पर एक डिग्री कम होना निःसन्देह भयदायक है । मस्तिष्ककी आवरण किल्लीमें जलन, फुस-फुस प्रदाह, आरम्भज्वर, मोड़ज्वर और भीतला रोगमें गात्र ताप १०५ से १०७ डिग्री पर्यन्त बढ़ जाता है । अभ्यास ज्वरमें मधराक्षर १०२ १०४ या १०५ डिग्री तक गरमी बढ़ती है । शरीरमें १०० डिग्रीसे अधिक वा ८७ डिग्रीसे कमकी दूरी पर यदि पारा ठहर जाय तो समझना चाहिये कि किसी प्रकारकी बीमारी अवश्य हुई है । १०० से १०१ डिग्रीमें सामान्य और १०५ ही जगहसे प्रसन्न ज्वर समझना चाहिये । १०७ सांघातिक ज्वर, १०८ वा ११० होनेसे समझना चाहिये कि रोगी शीघ्र ही मरेगा । टाइफाइड या आन्तरिक ज्वरमें दूसरे सप्ताहमें सन्ध्याके समय गात्रताप १०२ या १३ होनेसे सामान्य ज्वर, परन्तु १५ होनेसे भयको बात हो जाती है, मृतिका ज्वरमें साधारणत

१०५° पर्यन्त गरमी बढ़ जाती है। ८७ से ८८ डिग्री तक पतन अवस्था समझा जाती है। हैजेके रोगमें कभी कभी जाड़ा-मासूम होकर ८० डिग्री तक गरमी रह जाती है। नये और सतत रहने वाले ज्वरमें, पुराने घट्टे रोगमें, गरमीका सहसा झूठ कम हो जाना आशंकाजनक है।

**नाड़ीस्पन्दन ।**—जन्मसे १ वर्षकी उमर तक प्रति मिनिटमें १५० से १४० बार तक, २ से ५ वर्षकी उमरतक ११० से १०० तक, ६ से १५ वर्षकी अवस्थामें ८०, १६ से ५० वर्षकी अवस्थातक ७५ बार और बुढ़ापेमें ७० बार नाड़ी स्पन्दन होती है। स्वाभाविक स्पन्दनकी अपेक्षा २० बार कम होनेसे जीवनी शक्तिका कम होना समझा जाता है।

**श्वास-प्रश्वास ।**—शरीरकी अच्छी अवस्था रहनेपर जवान आदमी २० बार सांस लेता है। श्वाम-प्रश्वासकी गति यदि धीमी हो, तो यह सन्तप्य अथवा समझना चाहिये। सांस यदि शीतल या जलदा अल्दी चलता हो तो इसे व्यत्यु सन्तप्य समझना चाहिये, वक्षस्थल या फुफफुसमें पीड़ा होनेसे सांस तेज चलने लगता है और दुर्बल अवस्थामें कम चलता है।

**नाड़ी, श्वास और शरीरकी गरमीका आप-समें सम्बन्ध ।**—शरीरकी गरमी यदि १ डिग्री बढ़ जाय तो नाड़ी १० बार अधिक चलेगी और सांस दो बार अधिक चलेगी। शरीरकी स्वाभाविक गरमी ८८० ४, नाड़ी स्पन्दन

७५ तथा मांसकी २० बार चमत्ती है । शरीरकी गरमी यदि १०० हो तो माछी स्रग्म ८१ बार और मांस २२ बार चमत्ती है । साधारणतः दो बारके मांस लेनेमें सात बार माछी चमत्ती है ।

**जिह्वा परीक्षा ।** यह भी रोग निर्णयका एक प्रधान सहाय है । इसके रंगके ऊपरसे रोग तुरत ही पहिचाना जाता है । तीव्र मन्निपातिक विकारमें नयेत्वरमें तथा अति दुर्बलता होनेसे जीभ सूख जाती है । शाल जीभ स्फोटकत्वर या पाकस्थलीके सम्बन्धका कोई रोग बताती है । यदि जीभ पर उज्जना लेपना चढ़ा मासूम हो और उसपर शाल शान्त होने दिखाई दे तो उसे आरक्त त्वरका लक्षण समझना चाहिये । जिह्वाका पिच्छता और भगता हिम्सा यदि सूखासा दिखाई दे तो उसे पैक्षिक त्वर समझना चाहिये । यदि जिह्वा कफ संयुक्त दिखाई दे तो समझना चाहिये कि यह रक्तहीनता और दुर्बलताका लक्षण है । सूखी जीभ यदि तर हो जाय और पीछेकी ओरसे साफ होती जाये तो समझना चाहिये कि यह आरोग्यताका लक्षण है । कासी या बैगनी रंगकी जीभ बताती है कि नाड़ियोंमें रक्त संचालन बंद हो रहा है । अच्छी अवस्थामें जीभ सदैव तर रहती है ।

**मुखमग्नहल ।**—यह शरीरका आरिण है । इसलिये



मुँह देखकर भी शरीरकी अस्वस्थताके विषयमें जाना आ सकता है। प्रसन्न मुख स्वस्थताका चिन्ह है। परन्तु वक्षस्थलकी पीड़ा या और किसी पीड़ाके बाद रोगीका प्रशान्त या प्रसन्न वदन शुभ लक्षण दिखानेवाला नहीं हो सकता। फुसफुसमें दर्द होनेसे मुखपर चिन्ता, मक्कोष, खासकट इत्यादि लक्षण दिखाए देते हैं। सलज्ज मुखमण्डल धातु-दोषस्वताका चिन्ह है। ज्वरके साथ कक्षियत होनेसे मुख मलिन, लाल, तथा ओठ काले हो जाते हैं।

**गात्रलस** ।—बदन रुखड़ा, सूखा और गम हो तो ज्वर समझना चाहिये। शरीरकी गरमी कम हो साथ ही साथ यदि ओर ओर लक्षण भी कम होते जाय और पसीना हो तो इसे अच्छा लक्षण समझना चाहिये। समस्त शरीरमें पसीना न होकर यदि किसी एक ही स्थानमें हो तो यह स्नायविक दोषरूप और उस स्थानक नीचे प्रदाहका लक्षण दिखा रहा है। विषम और प्रादाहिक ज्वरमें पसीना होनेके बाद और ओर पीड़ा यदि न देवे तो इसे सुरा लक्षण समझना चाहिये। विषमज्वर, मलेरियाज्वर, सूतिकाज्वर और दूसरे दूसरे ज्वरोंमें आड़ा और कपकपी भी मालूम पड़ती है।

**कै ( वमन) और हिचकौ** ।—पाकस्थालीमें दोष मस्तक सम्बन्धी पीड़ा और वक्षस्थल, फुसफुस जरायू इत्यादि

यन्त्रोंकी क्रियाके बिगड़नेसे ओ होती है। क्रिमी, च वासा और यकृतके प्रदाहमें छिचकी आती है।

। **वेदना** ।—यदि एक ही स्थानमें दर्द मासूम हो, दर्द वाली जगह गर्म हो और दधानेसे पीड़ा बढ़े, तब उसे प्रदाहजनित वेदना समझना चाहिये। छिचने होखनेसे यदि दर्द बढ़े तो उसे पसुकी (पेगी) की दर्द समझनी चाहिये। छायाशूलकी दर्द दधाने या घूमने फिरनेमें बढ़ती या घटती है। यकृत प्रदाहमें दाहिने कंधेमें दर्द और हृत्पिण्डकी पीड़ासे बायें हाथमें दर्द होता है। पश्मरी पीड़ामें पुरुषाङ्गके अग्रभागमें पीड़ा होती है।

**वक्षस्थल** ।—वक्ष परीक्षा प्रधानतः तीन प्रकारकी होती है। (१) देखकर (२) छूकर (३) सुनकर।

**देखकर** ।—रोगीको स्थिर भावसे बैठाकर देखना चाहिये कि सम्पूर्ण वक्षस्थल विकाश प्राप्त है, सिक्का हुआ है और प्रत्येकवार सांस लेने और छोड़नेसे ऊँचा होता है कि झुक जाता है या कोई स्थान सूज गया है या नहीं। (२) **छूकर** या **ठोककर**—बायें हाथके करतलकी रोगीके वक्षके ऊपर रखकर दाहिनी हाथकी तर्जनी अंगुलीसे उसे ठोकना चाहिये, यदि ठन् ठन् शब्द हो तो सामान्य अवस्था समझनी चाहिये। टप् टप् शब्दसे फुस फुस प्रदाह, वक्ष शोथ इत्यादि समझना चाहिये। हंफनी रोग यदि हो तो वक्षमें

अधिक वायु प्रवेश कर जानेसे टन् टन् शब्द होता है । (७)

सुनकर ।—यह एथोम्कोप नामक यन्त्रद्वारा सुना जाता है ।

यह यन्त्र भी बहुत तरहका होता है—काठका, मीचका, जमन सिल्वरका तथा रबरके मलका भी । रोगीको पित्त सुलाकर अथवा स्थिर भावसे खड़ा करके वक्षस्थल ( हृत्तपिण्ड या उसके पीछेका स्थान ) में एथोम्कोपका छोटा सुइ लगाने तथा उसका दूसरा चौड़ा सुइ कानमें लगाकर परीक्षा करनी चाहिये । रबरके यन्त्रमें जो सुइ बड़ा हो उसे पीठमें वक्षस्थलमें लगाना चाहिये और छोटा सुइ कानमें लगाना चाहिये । स्वाभाविक अवस्थामें सीं सीं शब्द होगा । सांसकी नालीके प्रदाहमें हाँफनी खाँसी, चयीकी खाँसी इत्यादि रोगमें बहुत तरहकी ध्वनि सुननेमें आती है । श्लेष्मकी अधिकता रहनेसे छड़ छड़ शब्द होता है, फुसफुस प्रदाहमें कीच धिसे जानिकी भाँति तथा फुसफुस आवरक भिन्नी प्रदाहमें खस-खस शब्द होता है ।

मल ।—कीचड़की नाई यदि पायखाना हो तो पित्तका अभाव समझना चाहिये । कासा मल पित्तकी अधिकता, सज्ज मल ( लड़कोंका ) पाकस्थलीमें अम्लत्व बताता है और रक्त मिश्रित मल श्लेष्मा भेदसे अन्तर दाहकी बताता है । आवरक धोवनकी भाँति यदि दस्त हो तो हैजेका दस्त समझना चाहिये ।

**मूत्र।** — स्वाभाविक अवस्थामें जवान मनुष्यको दिन रातमें १॥ डेढ़ सेर पेशाब होता है। यक्षत रोगका पेशाब हस्तदीके तरह पीला होता है। ज्वरकी अवस्थामें नाड़ी तेज चलनेसे पेशाब कम और साफ रंगका होता है। मूत्र अधिक भीर साफ होनेसे स्रावविक रोग समझना चाहिये। पेशाब होते ही यदि दूध सरीखा हो जाये तो क्रिमिदोष और यदि पेशाब मीठा हो और उसमें चींटी खरी तो मधुमेह समझना चाहिये।

## २। शोणित रोग।

हैजा, ज्वर, शीतला इत्यादिसे शरीरका समस्त रक्त दूषित हो जाता है इस लिये इसका नाम शोणित रोग है। नीचे इसको बारेंमें यथाक्रम लिखा जाता है।

### हैजा (Cholera)

हैजा शब्दहीका अर्थ दस्त और कै होना है। चावलके धोवन की भांति दस्त और कै यही इस रोगका प्रथम लक्षण है फिर सुस्ती, और पांखीका घस जाना, स्वरमंग पेशाबका बन्द होना, हाथ पैरका ऐठम, बदन ठंडा होना, ठंडा पसीना निकलना, नाड़ी चीण हो जाना, बड़े जोरकी प्यास इत्यादि लक्षण दिखलाई देते हैं।

हैजेके रोगीके दस्त और कै भे' एक प्रकारके कीड़े ( Babillus ) देखे जाते हैं, ये विषाक्त होते हैं । इन्हींका विष अच्छे शरीरमें प्रवेश करनेसे मनुष्यको हैजा होता है । यह बराबर देखा गया है कि जिस ताम्बावसे हैजेके रोगीका मल सूख फेंका जाता है या कपड़ा धोया जाता है उसका जल पीनेसे यह रोग उत्पन्न हो जाता है (Vide Macnamara's Treatise on Asiatic Cholera )

सन् १८१७ ईस्वीमें बंगालके यशोहर जिलाके अन्तर्गत नक्तडाङ्ग नामके गावमें एक बड़ा मेला जमा हुआ था उस समय वहाँ यह रोग उत्पन्न हो कर धीरे धीरे पानके जिलामें फैल गया । ओट्टेलिया, अण्डामन इत्यादि टापुओंको छोड़ कर और सब देशोंमें इस रोगने अपना नाधिपत्य जमा लिया है ।

हैजा दो तरहका होता है एक सामान्य और दूसरा सांघातिक । सामान्य हैजेको प्रवन्त अक्षीर्ण भी कहते हैं । और सांघातिक हैजाको ( एसियाटिक करेन्डा ) प्रकृत हैजा कहते हैं । कभी कभी सामान्य हैजा भी सांघातिक हैजा हो जाता है । चिकित्सकोंके सुमीधाके सिधे दोनों हैजेका पार्यंक्ष नीचे अलग २ दिखाया जाता है ।

## सांघातिक हैजा

## सामान्य हैजा

१। यह कुछ जरूरी नहीं है कि यह हैजा आहार के दोषहीसे पैदा हो।

२। इसमें अधिकतर नीचे के अंत्रोंमें ( खासकर आघर्म ) दर्द होता है।

३। इसमें दस्त को अधिक या कम हो पर रोगी सुरत कमजोर हो जाता है।

४। इसमें एकाएक बदन की गरमी कम हो जाती है।

५। इसमें शूनहीसे चावल के घोंघनकी भांति पायछाना होता है।

६। इसमें पहिले हाथ और पर की अगुलि ऐठती है फिर सम्पूरा हाथ और ऐठने लगती है।

७। इसमें पहिले नाखून फिर पीछे समस्त शरीर नीला रंग हो जाता है।

१। यह अधिकतर आहारके दोष से ही उत्पन्न होता है।

२। इसमें नाभिके चारो ओर खींचनेकी तरह पीड़ा होती है।

३। इसमें अधिक को दस्त होनेसे भी रोगी वैसा कम जोर नहीं होता।

४। इसमें बदनकी गरमी धीरे २ कम होती है।

५। इसमें पहिले ऐठन अलग और दर्दके साथ पित्त संयुक्त दस्त होता है तथा पीछे पित्त नहीं रहता है।

६। इसमें पहिले पेटमें ऐठन होती है पर अर्द्धांत्रि नहीं होता है।

७। इसमें रोगीका थोड़ासा रंग बदल जाता है।

ऊपर लिखे हुए दोनों तरहके हैजेके प्रस्तावे एक तरहका और भी हैजा होता है, उसमें दस्त कै या ऐठन कुछ भी नहीं होती, पर पेशाब बन्द होना, सुस्तो, प्यास और दाह इत्यादि हैजेके बाकी सब लक्षण दिखाई देते हैं। इस तरहके हैजेको “सूखा” हैजा (Dry Cholera) कहते हैं। यह सांघातिक हैजेका एक प्रकारान्तर मात्र है। यह रोग हटात् रोगीको हो जाता है और तुरत ही शरीर नीला और ठंडा हो जाता है तथा माडी सोप, खरमङ्ग और चीय खर हो जाता है और पेशाब बन्द होना आदि सांघातिक लक्षण दिखाई देते हैं।

**पूर्ववर्ती कारण ।**—कच्चा फल मूल, खट्टी या सड़ी हुई चीजोंका भोजन, गन्दी हवासे फिरना, गन्दा और बिना साफ किया हुआ पानीका पीना अपरिमित आहार, नशीली चीजोंका अधिक सेवन, रात्रि जागरण, ऋतु परिवर्तनादि इसके पूर्ववर्ती कारण हैं।

**उत्प्रेजक कारण ।**—पहिले लिखे हुए कीड़े। यही कीड़े (Bacilli) प्रधानत हैजेके रोगीके मल मूत्र वमनमें देखे जाते हैं। परन्तु ये कीड़े किस तरह उत्पन्न होते हैं। इसके बारेमें अभीतक कोई बात खिर नहीं

प्रतिषेधक उपाय ।—हैजेके समय में और

दुर्गन्धयुक्त स्थानों के रहना, अधिक भोजन, अपरिष्कृत जलपान और अधिक परित्याग और मड़ा मछली मांस इत्यादि भोजन विनाशक मना है। यह रोग जब फैला रहे उस समय चित्तमें डर न पडा हो ऐसा उपाय अवश्य करना चाहिये। रातमें अधिक आगरण, ठंडो और दुर्गन्धित वायुका सिकन कभी न करना चाहिये। घरमें जो जो स्थान मौघा, तर या दुर्गन्धित हों उसको कार्बोलिक एमिड चूना अंगार इत्यादि छोड़वाकर साफ कर लेना उचित है। महाभारतीके समय किठपाम ३० या सप्पफर ३० का व्यवहार करना चाहिये। रोगी का को या दस्त पानी या स्थानिकी चीज किसी के साथ पेटमें न जाना चाहिये। हैजेके रोगीके मल या वमन को अलकतरा या चूनामें छानकर महीने गाड़ देनेसे फिर अधिक भय नहीं रहता। यदि माको हैजा हो आयी तो लड़किको कभी उसका दूध पीने देना न चाहिये।



## ‘हैजेकी’ ५ अवस्थाएँ :—

- १। प्राक्मणावस्था ।—इसमें रोगीकी अवसाद और वेदना हीन उदरामय रहता है ।
- २। पूर्णविकसित अवस्था ।—कौ दस्त और ऐठन इसके प्रधान लक्षण है ।
- ३। हिमांग वा पतनावस्था ।—इसमें समस्त शरीर बरफ की भाँति ठंडा हो जाता है तथा नाड़ी खोप होती जाती है ।
- ४। प्रतिक्रियावस्था ।—इसमें फिर शरीर गर्म हो जाता है और मणिवन्धमें नाड़ी पाई जाती है ।
- ५। परिणामावस्था ।—विशेष विवरण आगे मिलेगा ।

## ‘हैजेकी’ प्रधान चिकित्सा :—

‘हैजेकी’ पूर्वोक्त ५ प्रकारकी अवस्था तथा उसका पूरा पूरा विवरण और चिकित्सा आगे लिखा गया है परन्तु नये शिष्याकी समूचा ग्रन्थ पाठ करना तथा उसकी लक्षणोपयोगी औषधोंकी खोज निकालना एक प्रकारसे असम्भव है क्योंकि उस समय समूचा ग्रन्थ पढ़नेसे चिकित्सा करनेका समय नहीं मिलता कहीं कहीं ऐसा भी हो जाता है कि कोई पुरुष घरमें मौजूद नहीं है और अच्छा वैद्यभी नहीं मिलता उस समय साचारी । दर्जे स्त्रियोंको ही चिकित्साका भार ग्रहण करना पड़ता है । इसी लिये उनके सुविधाके वास्ते कई एक प्रधान

घोषर्धोको सहायता से इस रोग को मोटामोटी चिकित्सा निचे लिखी जाती है ।

अधिक करके कैं और दस्त तथा कपालपर ठठा पसोना दिखाइ दे तो, मेराट्रम & देना चाहिये । रुजमें यदि हाथ पैर का खींचना या ऐठन अधिक दिखाइ दे ( विशेषकर हाथ पैरमें ) तो किउप्राम & देना चाहिये । यदि कैं और दस्तके साथ प्यासभी प्रबल हो तो, बदनमें दाह रहते भी रोगी वस्तु इत्यादि से बदनको ठाके रखना चाहे वही सुस्ती दुर्बलता और अस्थिरता हो तो फार्मेनिक & , कैं और दस्तके साथ पेटमें ज्वाना या बड़ी दर्द मालूम हो, सत्यु भय हो, और रोगी छटपटाये तो आकोनाइट रेडिफ़ मादर के व्यवहारसे आसर्थ्यमें हासनेवाला फल दिखलाई देगा । कैं का अधिक जोर और कैं होनेपर भी उसकी शान्ति न होने पर इपिकाक & , परन्तु यदि कैं हो जाने पर फिर कैं होनेकी इच्छा न रहे तो ऐफ़्टिमटार्ट & देना चाहिये । गर्म दस्त गर्म कैं प्रयत्न प्यास या प्यासका एकदम न रहना, लड़कोंको दांत उत्पन्न होनेके समयका उदरामयमें तथा शिशु विशुद्धिकामि डाक्टर सर्कार पडोफाइलम & व्यवहार करनेकी राय देते हैं । रोगीका शरीर ठठा रहे लेकिन पेटको भीतर सदा ज्वाना रोगीकी मालूम हो, सदा चर्वा करनेकी कहे, बदनका कपड़ा निकालकर फेंक दें । बराबर दस्त होना गुद्गदर खुला रहना आदि लक्षणसे सिकेलि & उपयोगी है । हिमांग, सब शरीर

नीला, कौं दस्त और थोड़ा पसीना और शरीर शीतल बदनपर कपड़ेका न रखने देना इत्यादि लक्षण हो तो कैम्फर देना चाहिये । \*

नाड़ी सुप्त, सुप्त विक्षत और विषर्ण शरीर बरफकी भांति ठण्डा । उर्ध्वश्वास ( नाभिश्वास ) इत्यादि अन्तिमकालके लक्षण दिखाई देनेपर कोम्रा या न्याजा इ विचूर्ण प्रयोग करनेसे बहुत सुफलता प्राप्त हुई है ।

इसके अतिरिक्त सफाईकी और पूरा ध्यान रखना चाहिये रोगीके पहिरने और बिछानेका वस्त्र सोनेका घर और मकान सदा साफ सुथरे रखने चाहिये । मल मूत्र वमन तथा उससे भोजे हुए वस्त्र इत्यादि रहनेको जगहसे दूर गाड़ना या जला देना चाहिये । इस बात पर पूरा ध्यान रहे कि गांवके किसी तालाबमें कपड़ा कभी न धोया जाय तथा मल वमन इत्यादि पायखाना या खुली जगहमें कभी न फेंका जाय नहीं तो आस पास की सब जगहमें बैसा फैल जायेगा ।

साथ ही इसके इस बातपर भी ध्यान रखना चाहिये कि रोगारम्भसे लेकर आरोग्य अवस्था तक अर्थात् पेशाब हो जानेके तीन चार घण्टाबाद तक रोगीको केवल पानी या बरफका टुकड़ा घुसनेका देना चाहिये नहीं तो रोगी मर जा

\* डाक्टर क्विनी इत्यादि जैसेकी सभी जगहोंमें "कैम्फर" प्रयोग करते हैं परन्तु यह सम्बन्धी सत्य नहीं है ।

सकता है। प्रतिक्रिया अवस्था प्रारम्भ होनेके तीन घण्टे बाद पथ्यकी व्यवस्था की जा सकती है। पेशाब होने के बाद (या जिस समय स्पष्ट रूपसे मासूम हो कि मूत्र मूत्राधारमें जमा है और पेशाब छतरता नहीं) तब साबूदाना पानीमें बनाकर उसमें थोड़ा चीनी या निमक देकर खिला देना चाहिये। मलमें पित्तका भाग दिखाई दतो पानीमें थोड़ा सा गु वार्मी या जलके साथ बहुत थोड़ा दूध देना चाहिये। कैसा भो कोई कारण क्यों न हो रोगीको कै दस्त प्रारम्भ हो जानेके बाद कभी स्नान न करने देना चाहिये। बहुत से पादमी विचारतेहैं कि गरमीसे “कै” “दस्त” हुआ है स्नान करनेसे या “ठ ठा” व्यवहार करनेसे रोगका उपशम हो जायिगा परन्तु ऐसा कभी विचारना न चाहिये कै दस्त होने पर स्नान या स्नानकर कितने ही लोगोंने अपने अपने प्राण गवाये हैं।



(१) आक्रमणवस्था।—रोग प्रारम्भ को सूचना प्रर्षात् आवस्यके लक्षणकी तरह दस्त होनेके पूर्व आक्रमण अवस्था रहती है। इस अवस्थामें शरीरकी गर्मी धीरे धीरे कम होती जाती है। दुर्बलता शरीरकी कम हो जाना, शिरका घूमना, नोद न आना, अमश्व वमन की इच्छा, अरुचि श्वास, मुंहका बे स्वाद हो जाना, पेटमें भारोपन या दर्द मासूम होना, कभी जाड़ा, कभी गरमी मासूम पड़ना, कानमें

सी सी या दम् दम् गड्ढका होना, उदरामय इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं जैसेका कौड़ा जिस दिन शरीरमें प्रवेश करता है, उसी दिनसे एक सप्ताहके भीतर रोगी नित्य ५।७ बार पेट ऐठकर या बिना पेट ऐंठे ही रग बिरंगी पतला मसत्याग करता है। मल कभी पित्त मिष्टा हुआ और कभी दूसरी तरहका होता है।

(२) पूर्ण विकसितावस्था।—जब कि चावलके धोवनकी भांति दस्त और कै हो उस समय दूसरी अवस्थाका प्रारम्भ होता है। इस अवस्थामें चावलके धोवनकी तरह दस्त और कै होता है या जी मचन्ताता है। तेज प्यास, चेहरा मलिन, आंखें बँठ जाना शरीरका विवर्ण हो जाना, सब शरीरमें ठंडा पसीना होना (विशेष करके मस्तकमें) फिर ये श्राव बन्द हो कर नाड़ीका क्षीण हो जाना, आंखोंके चारों ओर मोलों देखा, स्वरभङ्ग पेटमें दर्द, पाकस्थालीमें जलन, पेटका गडगड़ाना, शरीरके स्थान स्थानपर विशेषकरके हाथ पैरकी अंगुलियोंका ऐठना शरीरकी अवसन्नता और अस्थिरता। सुह और ओठोंका सूख जाना इत्यादि लक्षण प्रगट होते हैं। कभी कभी इन लक्षणोंमें कमी वेशी हो जाती है। जैसे किसी रोगीको दस्त अधिक होता है पर कै कम होता है। किसी को दस्त ही कम होता है पर कै और कै की इच्छा अधिक होती है। इसी विकसित अवस्थाके ये सब लक्षण यदि उसे १२ घण्टेतक रहें तो

मसूके साथ पित्त ( अथवा पीला या हरे रंगका दस्त ) होनेसे और सक्त संचय कम होनेसे रोगी धीरे धीरे आराम हो जाता है । परन्तु ऐसा न हो कर यदि समस्त शरीर शीतल, सुखाकृति बिगड़ी हुई और नाड़ी सुप्त प्राय इत्यादि लक्षण दिखाई दें तो पतनावस्थाके निकट समझना चाहिये । इस अवस्थामें बहुतेरे रोगी मर जाते हैं, और यदि १२ घण्टा बचा रहे तो जी भी सकता है ।

(१) द्विमाङ्ग अवस्था ।—यहो द्विजेकी प्रकृति अवस्था है । यही पतनावस्था बड़ी भयानक है, और इसी अवस्थामें प्राय रोगी की मृत्यु होती है । द्वितीय अवस्थामें कै दस्त सहसा कम हो जाता है, रोगी प्याससे अस्थिर होता है लेकिन प्यासके साथ कै इनका बढ़ जाता है कि अन्त पीनेके साथ ही अत्यन्त कष्टकर वमन होकर तुरन्त पानी छूट जाता है । बारम्बार कै होते होते रोगी अत्यन्त निस्तेज हो जाता है और धीरे धीरे मणिवन्धसे भी नाड़ी छोप हो जाती है यद्यंतक कि बाँझकी जड़तक नाड़ीका पता नहीं लगता । धीरे धीरे जीवनी शक्तिका ह्रास होता है, और बदन वर्ण की तरह ठण्डा हो जाता है । भौंठ नीक्का, सब शरीर मलिन या भीले रंगका हो कर आँखें बँध जाती है, तथा प्रभाशून्य और आरक्त हो जाती है । चक्षुःप्राय फँस जाता है साँस लेनेमें बड़ा कष्ट होता है स्वर भग हो, गलेसे बड़ी ही दबी हुई आवाज निकलती है ( ऐसी कि बात तक

सुनाई नहीं पड़ती) पेशाब बन्द हो जाता है और हाथ पैरकी प्रतिक्रियाका अग्रभाग सिक्कड़ जाता है (जैसा कि बहुत देरतक पानीमें भीगे रहनेसे हो जाता है)। प्रतिक्रिया लक्षण दिखाई देते हैं। अत्यन्त बदनमें दाह हो जानेके कारण रोगी शय्यापर छटपटाता है बदनका कपड़ा यहाँतक की धोती तक उतारकर फेंक देता है। कभी कभी सुह पर बूद बूद पसीना दिखलाई देता है। इस अवस्थामें प्रायः बेमालूम दस्त भी अधिक होता है या दस्त बन्द होकर पेट फूल जाता है। तीसरी अवस्थामें अन्तमें रोगी ऐसा निश्चेत हो जाता है कि उसको करवट भी लेनेकी शक्ति नहीं रहती परन्तु "हैजा" रोगमें मरने को पहिले तक रोगीको ज्ञान रहता है। इस अवस्थामें दस्त को बन्द होनेके थोड़ी ही देरबाद मृत्यु हो जाती है अथवा २१ घण्टा चुपचाप पड़े रहनेके बाद मृत्यु हो जाती है। यदि को दस्त बन्द होनेके चार पाँच घंटा बाद तक रोगी न मरे तो (४) प्रतिक्रियावस्थाका आरम्भ समझना चाहिये।

(४) प्रतिक्रियावस्था।—छतीयावस्थाके अन्तमें को दस्त बन्द और नाड़ी साँप हाने परभी मृत्यु न होनेसे फिर मण्डिबन्धमें नाड़ी पाई जाती है। इसीके साथ तीसरी या पूर्णविकसित अवस्थाके लक्षण धीरे धीरे फिर पाये जाते हैं। यदि स्वास्थ्य या स्वाभाविक प्रतिक्रिया आरम्भ हो तो बदन गर्म हो कर फिर पित्त मिश्रित पदार्थों के और दस्त हो कर जीवनी शक्ति उद्भि होती है पेशाब होता है या मूत्राशयमें जमा होता

ह। शरीरका वर्ण और आंखोंमें, आभाविष ज्योती होती है। कभी कभी असामान्य प्रतिक्रिया आरम्भ हो कर रोगी (५) परिणामावस्था प्रगट होती है।

(५) परिणामावस्था।—शैजेकी परिणामावस्थामें शरीरके विविध यन्त्रोंमें रक्तसंचय होता है और रोगीका औसत यन्त्र अधिक दुर्बल हो जाता है वही यन्त्र विशेष रूपसे आक्रान्त होता है। नीचेके लक्षण बराबर देखे जाते हैं—रोगका पुनराक्रमण, स्वरालोचन, तन्द्रा, भ्रूवनाश, हिचको के और के करनीकी इच्छा, उदरामय, पेट फूलना, स्कोटक और कर्णमूल प्रदाह, फुसफुस प्रदाह इत्यादि।

चिकित्सा।—पूर्वोक्त पाँचों अवस्थाकी चिकित्सा सिखने के पूर्व इस रोगमें कैम्फरके प्रयोगके सम्बन्धमें कुछ कहना है। इटालीदेशके डाक्टर रुबिनी कपूरारिष्ट (या स्त्रिस्ट कैम्फर) तैयार करते हैं। उन्होंने इस औषध के प्रयोगसे हजारों रोगी आराम किये हैं। अवस्थाविशेषमें एकमात्र कैम्फरसे शैजेका रोगी आरोग्य हो सकता है। पेटमें ज्वर या पीड़ाके साथ दस्त और उल्टीके साथ साथ शीत और आन्धेप कैम्फर प्रयोग के लक्षण हैं। मज्जाका हनिमान कहते हैं कि शैजेकी प्रथम अवस्थामें (जबतक दस्तके साथ मल होता रहे), रोगी निश्चिंत हो जाय, सु हवा-रंग बदल जाय, स्वरमङ्ग, आँख बैठ गई होय सब शरीर शीतल हो जाय पाकसस्तीमें जलन इत्यादि लक्षणोंमें, कैम्फर प्रयोग



करना उचित है । डॉक्टर फेरिङ्गटन कहते हैं कि दस्त कम  
 के अधिक, सर्वाङ्ग शीतल स्वरका बदलना, यह सब लक्षणमें  
 कैम्फर देना । शीम या ठंडके अजोर्ण या उदरामयके बाद  
 हुआ हो जानेसे कैम्फर उपकारा होता है । इस रोगकी  
 आक्रमणावस्थामें जब थोड़ा थोड़ा जाड़ा लगना दुर्बलता, श्वास-  
 प्रश्वासमें कष्ट, पाकस्थलीमें जलन, मायाका घूमना इत्यादि  
 लक्षण मालूम हो तो उस समय कैम्फर प्रयोग करना चाहिये ।  
 दस्त और के जिस जेकेमें नहीं है उनका कैम्फर हो एकमात्र  
 औषध है । अत्यन्त स्त्रायविक अवसन्नता, सर्वाङ्ग बरफकी  
 भाति शीतल, पसीना न जाना या एक दर्म ठण्डा पसीना होना,  
 हाथ पेर वेदने श्वासकष्ट, आंखें स्थिर, नाड़ा चीप, सेवाङ्ग  
 नीलवर्ण इत्यादि लक्षणोंमें कैम्फर उपयोगी है । हिमाङ्ग  
 अवस्थामें जिस समय के दस्त बन्द होकर प्रतिक्रियावस्था  
 आरम्भ हो तो उस समय कैम्फर दो एकवार जरूर देना  
 चाहिये । इस अवस्थामें बृहदस्त, हृत्पिण्ड और पेशीमें पक्षा-  
 वात होनेसे और कार्बोमिज, फेस्फरस इत्यादि औषध प्रयोगसे  
 कोई लाभ न दिखाई देनेपर कैम्फर देना चाहिये । आघेप  
 हीन, हिजेमें या आघेपिक हिजेकी विकसित अवस्थामें कैम्फरसे  
 कोई फल नहीं होता । अधिक मात्रा बार बार कैम्फर  
 प्रयोग करनेसे यदि आर्मांशमें जलन, मानसिक अस्वच्छ-  
 म्दता इत्यादि कष्टोंके लक्षण दिखाई दे तो दो एक बार  
 फेस्फरस खिलाये से दोष नष्ट हो जाते हैं ।

कविराजी, हकीमी या ऐसोपैथिक चिकित्सा के बाद होमियोपैथिक चिकित्सा यदि करनी हो तो पहिले दो एक बार कैम्फर खिलाकर तब दूसरी दवा खिलानी चाहिये ।

**कैम्फर प्रयोगकी भावा ।—** १०।१५ मिमिटके बाद एक एक भावा रुबिनीका कैम्फर थोड़ी चीनी या बटा-शाके साथ खिलाना चाहिये । लड़कोंके लिये १।४ बुद्ध और बुवा या छहके लिये (रोगके उग्रताके अनुसार) ५ से २० बुद्ध तक प्रयोग करना चाहिये । दो घण्टे के बीचमें ८।१० बार कैम्फर प्रयोग करने पर भी यदि कोई लाभ न दिखाई दे तो दूसरी दवा देनी चाहिये ।

(१) **आक्रामक अवस्थाकी चिकित्सा ।—** उदरामयकी चिकित्साकी तरह । इस ग्रन्थके “उदरामय चिकित्सा प्रकरण”को देखिये ।

(२) **पूर्ण विकसितावस्थाकी चिकित्सा ।—** चायसके घोघनकी तरह के और दस्त भारम्भ होनेपर मेराट्रम या आसेनिक † प्रयोग करना चाहिये ।

† मेराट्रम और आसेनिकके लक्षणका प्रार्थक्य — जैसा के-या दस्त होता हो उसी तरहकी या उससे कम गरीरकी अवसन्नता हो तो मेराट्रम, और जैसा के दस्त होता हो उससे

तथा अत्यन्त ध्यास और हतवत् सुखाकृति-आर्सेनिक प्रयोगके प्रधान लक्षण हैं । हैजेकी सभी अवस्थाओंमें आर्सेनिक प्रयोग किया जा सकता है ।

**किउग्राम मेट ई-१२-३० ।**—हैजेके दूसरे सब लक्षणोंके साथही साथ जिस समय आन्तेप उपस्थित हो उस समय किउग्राम देना चाहिये । सर्वाङ्गगीतन्त्र (या मीलवर्ण) हो कर, हाथ पैर विशेष करके हाथ पैरकी अङ्गुलियां और पैरके पिङ्गुलोंमें यदि ऐठन हो, विचैनोंके कारण रोगी छटपटाता हो, तारकी तरह पतली नाडी या खुसप्राय नाडी, आंखें उल्टी या धस गई हुई, कानसे कम सुनाई देना या एकदम बन्द हो जाना । पानी पीतेही गलेमें कल कल या ठक् ठक् शब्द होना ठ ठी चीलोंकी अपेक्षा गर्म चीज खानेकी इच्छा, वमन या वमनेच्छा साथही साथ पेटमें दर्द, ठ ठा पानी पीनेसे वमनका बन्द होना, कौ करते समय आंखोंसे पानीका निकलना । पाखानेकी जगहका खुल्लाना, लीभकी जड़ताके कारण बातीका साफ न निकलना । फटा चुआ और मट्टेकी तरह पतला दस्त और कौ, भूलत्यागकी इच्छा किन्तु पेशाबका न होना, घन घन श्वास प्रश्वास, प्रसाप, चिल्लाना । हाथ पैरमें खैचम दांतपर दांतका घिसना इत्यादि लक्षणोंमें यह प्रयोगनीय है ।

आन्तेपयुक्त आघातिका हैजे में जिस समय छाया वह

माखीकी क्षमता हो तथा शोष या कीर्ण द्रव्य पेटमें आते ही कै हो जाय उस समय किछप्राप्तके प्रयोग करनेसे पेय या खाद्यद्रव्य धारण करनेकी सामर्थ्य हो जाती है । डा० प्रक्टर करते हैं कि किछप्राप्त ऐठनकी अति उत्तम दवा है ।

रिसिनास ३-ई ।—वेदना हीन कै या दस्त, अधिक श्वावसके घोघनकी भांति दस्त पेशाब बन्द इन सब लक्षणोंमें उपयोगी है ।

सिकेलि-कर ३-ई ।—किछप्राप्त प्रयोग करनेसे शोष आदिकी निवृत्ति यदि न हो और अधिक करके निम्न-लिखित लक्षण दिखाई दे तो—सिकेलि प्रयोग करना उचित है । मृत्युभय, पाखीका बैठजाना, कानसे कम सुनाई देना, मुख मलिन । शुष्क और रक्त हीन, साफ और सुफिद रंगकी जीभ और उसमें भी रङ्ग रह कर कम्पन, बड़ी प्यास और भूख, वमन या वमनेच्छा, पाकस्थलीमें जलन, मूत्ररोध, वक्षस्थलके बाईं तरफ ऐठनकी भांति दर्द, नाड़ी सूखा और सुप्तप्राय, हाथ पैरकी अंगुलियोंमें ऐठन या उनका टेढ़ा हो जाना, शरीरमें जलन इससे बदन पर कपड़ा न रखना, हाथ पैरका कांपना और हिलना, सुई टेढ़ा होना, जीभ ऐठना और मसृत्याग इत्यादि लक्षणोंमें सिकेलि अत्यन्त उपयोगी है । हेजेकी पतनावस्थामें यह प्रधान शोष है ।

तथा अत्यन्त व्यास और वृत्तवत् सुखाकृति--आर्सेनिक-प्रयोगके प्रधान लक्षण हैं । हैजेकी सभी अवस्थाओंमें आर्सेनिक प्रयोग किया जा सकता है ।

**किउग्राम मेट ई-१२-३० ।**—हैजेके दूसरे सब लक्षणोंके साथही साथ जिस समय आचेप उपस्थित हो उस समय किउग्राम देना चाहिये । सर्वाङ्गशीतल(या नीलवर्ण) हो कर, हाथ पैर विशेष करके हाथ पैरकी अङ्गुलिया और पैरके पिङ्गुलोमें यदि ऐठन हो, धीचैनोंके कारण रोगी छटपटाता हो, तारकी तरह पतली नाड़ी या लुप्तप्राय नाड़ी, आंखें उलटी या घस गईं हुईं, कानसे कम सुनाईदेना या एकदम बन्द हो जाना । पानी पीतही गलेमें कल कल या ठक् ठक् शब्द होना ठ ठी धींकीकी अपेक्षा गर्म चीज खानेकी इच्छा, वमन या वमनेच्छा साथही साथ पेटमें दर्द, ठ ठा पानी पीनेसे वमनका बन्द होना, कै करते समय आंखोंसे पानीका निकलना । पाखानेकी जगहका खुलखाना, जीभकी जहताके कारण दातोंका साफ न निकलना । फटा हुआ और मट्टेकी तरह पतला दस्त और कै, मूत्रत्यागकी इच्छा किन्तु पेशाबका न होना, घन घन श्वास प्रश्वास, प्रसाप, चिसाना । हाथ पैरमें खेंचन दांतपर दांतका घिसमा इत्यादि लक्षणोंमें यह प्रयोगनीय है ।

आचेपयुक्त सांघातिक हैजे में जिस समय खाद्य वस्तु

नालीकी छपता हो तथा भौषध या कोई द्रव्य पेटमें आते ही कौ हो जाय उस समय किसप्रामके प्रयोग करनेसे पेय या खाद्यद्रव्य धारण करनेकी सामर्थ्य हो जाती है । डा० प्रकटर करते हैं कि किसप्राम ऐठनकी अति उत्तम दवा है ।

रिसिनास ३-ई ।—वेदना हीन कौ या दस्त , अधिक चावसके घोंघनकी भांति दस्त पेगाब बन्द इन सब लक्षणोंमें उपयोगी है ।

सिकेलि-कार ३-ई ।—किसप्राम प्रयोग करनेसे आस्रेप आदिकी निवृत्ति यदि न हो और अधिक करके निम्न-लिखित लक्षण दिखाई दे तो—सिकेलि प्रयोग करना उचित है । मूत्रभय, आँखोंका बैठजाना, कानसे कम सुनाई देना, सुख मलिन । शुष्क और रक्त हीन, साफ और सुफिद रंगकी जीभ और उसमें भी रह रह कर कम्पन, बड़ी प्यास और मूख, वमन या वमनेच्छा, पाकस्थलीमें जलन, मूत्ररोध, वक्षस्वसके बाईं तरफ ऐठनकी भांति दर्द, नाड़ी सूक्ष्म और लुप्तप्राय , हाथ पैरकी अगुलियोंमें ऐठन या छनका टेढ़ा हो जाना, शरीरमें जलन इससे बदन पर कपड़ा न रखना, हाथ पैरका कांपना और हिलना, मुँह टेढ़ा होना, जीम ऐठना और मलत्याग इत्यादि लक्षणोंमें सिकेलि अत्यन्त उपयोगी है । हैजेकी पतनावस्थामें यह प्रधान औषध है ।

तथा अत्यन्त व्यास और घृतवत् सुखाकृति--आर्सेनिक प्रयोगके प्रधान लक्षण हैं । हैजेकी सभी अवस्थाओंमें, आर्सेनिक प्रयोग किया जा सकता है ।

**किचप्राम मेट ई-१२-३० ।**—हैजेके दूसरे सब लक्षणोंके साथही साथ जिस समय आचेप उपस्थित हो उस समय किचप्राम देना चाहिये । सर्वाङ्गशीतल (या नीलवर्ण) हो कर, हाथ पैर विशेष करके हाथ पैरकी अङ्गुलिया और पैरके पिङ्गुलोमें यदि ऐठन हो, बिचैनोंके कारण रोगी छटपटाता हो, तारकी तरह पतलो नाडी या सुप्तप्राय नाडी, आँखें उलटी या घस गई हुई, कानसे कम सुनाई देना या एकदम बन्द हो जाना । पानी पीतेही गलेमें कल कल या ठक् ठक् शब्द होना ठ ठी चीजोंकी अपेक्षा गर्म चीज खानेकी इच्छा, वमन या वमनेच्छा साथही साथ पेटमें दर्द, ठ ठा पानी पीनेसे वमनका बन्द होना, कै करती समय आँखेंसे पानीका निकलना । पाखानेकी जगहका खुलखाना, जीभकी जड़ताके कारण बातोंका साफ न निकलना । फटा हुआ और मट्टेकी तरह पतला दस्त और कै, मूत्रत्यागकी इच्छा किन्तु पेशाबका न होना, घन घन श्वास प्रश्वास, प्रक्षाप, चिक्काणा । हाथ पैरमें खैचन दाँतपर दाँतका घिसना इत्यादि लक्षणोंमें यह प्रयो-  
जनीय है ।

आचेपयुक्त सांघातिक हैजे में जिस समय खाय वहा

माल्तीकी जपता हो तथा भौषध या कोई द्रव्य घेटीमें जाते ही कै हो जाय उस समय किउप्रामके प्रयोग करनेसे पेय या खाद्यद्रव्य धारण करनेकी सामर्थ्य हो जाती है । डा० प्रक्टर करते हैं कि किउप्राम ऐठनकी अति उत्तम दवा है ।

**रिसिनास ३-ई ।**—बेदना हीन कै था दस्त, अधिक चावलके धोपनकी भांति दस्त पेशाब बन्द इन सब लक्षणोंमें उपयोगी है ।

**सिकेलि-कर ३-ई ।**—किउप्राम प्रयोग करनेसे आघेप आदिकी निवृत्ति यदि न हो और अधिक करके निम्न-लिखित लक्षण दिखाई दे तो—सिकेलि प्रयोग करना उचित है । मृत्युभय, आँखोंका बैठजाना, कानसे कम सुनाई देना, सुप्त मस्तिन । श्वस और रक्त हीन, साफ और सुफेद रंगकी जीभ और उसमें भी रह रह कर कम्पन, बड़ी प्यास और मृक्ष, वमन या वमनेच्छा, पाकस्थलीमें जलन, मूत्ररोध, वक्षस्थलकी बाईं तरफ ऐठनकी भांति दर्द, नाड़ी सूक्ष्म और सुप्तप्राय, हाथ पैरकी अंगुलियोंमें ऐठन या उनका टेढ़ा हो जाना, शरीरमें जलन इससे बदन पर कपड़ा न रखना, हाथ पैरका कांपना और ज्वलना, मुँह टेढ़ा होना, जीभ ऐठना और मलत्याग इत्यादि लक्षणोंमें सिकेलि अत्यन्त उपयोगी है । ऐजेकी पतनावस्थामें यह प्रधान औषध है ।



तथा अत्यन्त व्यास और हस्तवत् सुखाकृति--आर्सेनिक प्रयोगके प्रधान लक्षण हैं । हैजेकी सभी अवस्थाओंमें आर्सेनिक प्रयोग किया जा सकता है ।

**किउग्राम मेट ई-१२-३० ।**—हैजेके दूसरे सब लक्षणोंके साथही साथ जिस समय आन्त्र उपस्थित हो उस समय किउग्राम देना चाहिये । सर्व्वाम्नीतल (या नीलवर्ण) हो कर, हाथ पैर विशेष करके हाथ पैरकी अङ्गुलिया और पैरके पिङ्गुलोंमें यदि ऐठन हो, वीचैनोंके कारण रोगी छटपटाता हो, तारकी तरह पतली नाड़ी या लुप्तप्राय नाड़ी, आंखें चलती या धस गई हुई, कानसे कम सुनाई देना या एकदम बन्द हो जाना । पानी पीतेही गलेमें कल कल या ठक् ठक् शब्द होना ठ ठी चौंकी अपेक्षा गर्म चीज खानेकी इच्छा, वमन या वमनेच्छा साथही साथ पेटमें दर्द, ठ ठा पानी पीनेसे वमनका बन्द होना, जो करते समय आंखोंसे पानीका निकलना । पाखानेकी जगहका खुजलाना, जीभकी अड़ताके कारण बासीका साफ न निकलना । फटा हुआ और मड़ेकी तरह पतला दस्त और कौ, मूत्रत्यागकी इच्छा किन्तु पेशाबका न होना, घन घन श्वास प्रश्वास, प्रसाप, चिन्तन, पैरमें खेचन दांतपर दांतका घिसना इत्यादि प्रयोगनीय है ।

आन्त्रेपयुक्त सांघातिक हैजे में ।

नालीकी जगता हो तथा भौषध या कोई द्रव्य पेटमें जाते ही कै हो जाय उस समय किछप्राप्तके प्रयोग करनेसे पेय या खाद्यद्रव्य धारण करनेकी सामर्थ्य हो जाती है । डा० प्रक्टर करते हैं कि किछप्राप्त ऐठनकी अति उत्तम दवा है ।

रिसिनास ३-६ । - वेदना हीन कै या दस्त, अधिक चावसके घोषनकी भांति दस्त पेशाव बन्द इन सब लक्षणोंमें उपयोगी है ।

सिकेलि-कर ३-६ । - किछप्राप्त प्रयोग करनेसे आन्त्रेष आदिकी निवृत्ति यदि न हो और अधिक करके मिन्न-स्थिस्ति लक्षण दिखाई दे तो—सिकेलि प्रयोग करना उचित है । मृत्युभय, आंखोंका बैठजाना, कानसे कम सुनाई देना, सुख मलिन । शृष्क और रक्त हीन, साफ और सुफेद रगकी जीभ और उसमें भी रह रह कर कम्पन, बड़ी प्यास और भूख, वमन या वमनेच्छा, पाकस्थलीमें जलन, मूत्ररोध, वक्षस्थलके बाईं तरफ ऐठनकी भांति दर्द, नाड़ी सूझ और क्षुत्प्राय, हाथ पैरकी अशक्तियोंमें ऐठन या छनका टेढ़ा हो जाना, शरीरमें जलन इससे बदन पर कपड़ा न रखना, हाथ पैरका कांपना और हिलना, सुन्न टेढ़ा होना, जीभ ऐठना और मलत्याग इत्यादि लक्षणोंमें सिकेलि अत्यन्त उपयोगी है । ऐंजेकी पतनावस्थामें यह प्रधान औषध है ।

हाथ पैरोंमें ऐंठन, सर्वांग विशेष करके मुखमण्डल मोला, धनुष्टंशरकी भांति पीछे टेढ़ा हो जाना, क्रिमि या श्लेष्मा के करना, वमनके बाद पाराम मिलना इत्यादि इस शीघ्रधके प्रधान लक्षण हैं ।

**एकोनाइट रेडिक्स ५९ १५ ।**—दस्त केके साथ साथ सर्वाङ्ग शोथन, समस्त शरीर नीलवर्ण, साम लेने और छोड़नेमें कष्ट । पेटमें बड़ी दर्द, मुख मलिन, पानी सा पतला दस्त, जनवत् हरा काका पित्त वमन, सूत्रावरोध, निरमें दर्द, साम ठंडी, सुमप्राय जीण नाडी और कभी कभी पेटमें ऐंठन इत्यादि लक्षणोंमें देना चाहिये ।

हिमाङ्ग अवस्था, और प्रतिक्रिया अवस्थामें वदन गर्म न रहने पर एकोनाइट रेडिक्स १५ ।

पतनावस्थामें दृत्पिण्डके क्रियाकी शीघ्रता रहने पर भी दृत्स्फन्दनकी समता व्याकुलता और मृत्युभय, पतनावस्थामें श्लेष्मासय चटचटा दस्त होनेसे एकोनाइट रेडिक्स १५ । हेनेकी परिणामावस्थामें ज्वर हो आवे तो बेलडोना ३५ और एकोनाइट रेडिक्स १५ पारापारीसे देना चाहिये ।

एण्डिम टार्ट ३, २० । पूर्ण विकसित अवस्थाके शेषभागमें जब केके बाटही तरल मूर्छा या मूर्छावेश हो और वमनके समय चैतन्यता हो उस समय एण्डिम टार्ट देना चाहिये । उपरोक्त लक्षणोंके साथही साथ अवस्थामें जलमें

या दर्द हो, रोगी तन्द्रामें रहे या सुस्त पड़ जाय किसी बातका जवाब न दिया चाहता हो, बार बार बड़े कातर स्वरमें बोलता हो, ग्रास अधिक, प्रश्वाम कम, नाड़ी क्षीण और मन्द, जलवत् या फेनीला दूरा मलत्याग, अश्वानावस्थामें मलत्याग, कष्टकर वमनैच्छा, बड़े कष्टसे थोड़ासा वमन, पाखोंका बैठ जाना और दृष्टि क्षीनता इत्यादि लक्षणोंमें ऐण्टिम टार्ट देना ।

पतमावस्थामें यदि हृत्पिण्डकी क्रिया क्षीय होती देखी जाये तो ऐण्टिमटाट । भेराट्रम और ऐण्टिम टार्टके लक्षण प्राय एकही प्रकारके होते हैं । तब मांसपेशी कम्पन और वैद्योर्ध्व अधिक रहनेसे ऐण्टिमटाट और हृत्पिण्डकी दुर्बलता या पक्षाघातमें भेराट्रमसे यदि कोई फल न हो तो ऐण्टिमटाट देना चाहिये ।

आइरिस भास ३५ ।—नाभिके चारो तरफ और पेटमें दर्द हो कर लट्टी बढबू लिये कै दस्त हो, सादा या पित्त मिश्रा हुआ दस्त हो, अस्त्र वमन तथा पित्तयुक्त पतला दस्त, अधिक रात बीत जानेपर कष्टका बढना, खाई हुई चीजका कै करना फिर पित्त कै करना और कै के बाद गाद-टाँह, पसीना और सुखमें ज्वाला इत्यादि लक्षणोंमें ऊपर लिख लक्षणोंके साथ यदि सर्वाङ्ग गीतल हो तो इस दवासे कोई उपकार न होगा ।

इपिकाक ३५, ६ । रीजके और और लक्षणोंके साथ

घोर, लाल रक्त दस्त होना ( उक्त रक्त दस्त होनेके साथ श्लेष्मा न रहे ) ।

**मर्क्यूरियस कर ३ ।**—हैजेके अन्यान्य लक्षणोंके साथ ( चावसके घोघ्नकी भांति दस्त न होकर ) रक्त मिश्रा हुआ श्लेष्मास्राव होनेसे अजीर्णके ( उदरामय ) बाद हैजा होनेसे माकं कर विशेष उपयोगी दवा है ।

**क्रोटन टिग ३, ६ ।**—सहसा पिचकारीकी तरह जोरसे पतला दस्त होना । पेटमें बड़ा दर्द हो और पानी या पतला पदार्थ पीतेहो कै हो जाना इत्यादि लक्षणोंमें ।

**ज्याट्रोफा ३ ६ ।**—चावसके घोघ्नकी भांति दस्त होनेके बदले चटचठा उमले रगका पतला दस्त हो । पहिले कै फिर दस्त, सब अङ्ग शीतल, पसीना ठंडा, हाथ पैरमें ऐंठन, पेटमें गड़गड़ वा कलकल शब्द ।

**मात्रा ।**—रोग की तेजीके अनुसार १०।१५।२० मिनिट वा आधे आधे घण्टे पर एक एक मात्रा औषध देना चाहिये ।

**आनुसङ्गिक उपाय ।**—रोगके प्रारम्भावस्थासे रोगीको छुछे और साफ गृहमें सुलाना चाहिये । रोगीके घरमें सदा साफ सुथरी हवा आनी चाहिये ऐसा उपाय अवश्य करे । घरमें धूना, कपूर, गन्धक इत्यादि जलाना अच्छा है । दूसरी अवस्थामें रोगीको पथ्य कभी न दे । प्यासके लिये ठंडा जल या बरफ भी दिया जा सकता है । घरसे बहुत दूर मल, मूत्र, वमन इत्यादि मिट्टीमें गाड़ देना चाहिये ।

**हिमाङ्ग अवस्थाकी चिकित्सा ।—**जितनेही

घोषध ऐसे हैं जो पूर्णविकसित अवस्थामें भी दिये जाते हैं और हिमाङ्ग अवस्थामें भी उनकी जरूरत पड़ती है । जो घोषध, एकवार पूर्ण विकसित अवस्थामें खिलाया जा चुका है उसीको फिर हिमाङ्ग अवस्थामें खिलानेसे कोई लाभ होना सम्भव नहीं है ।

पतन अवस्थाके पूर्व यदि कोई घोषध प्रयोग करनेसे रह गया हो अर्थात् न खिलाया गया हो तो पहिले २।१ बार कैम्फरप्रयोग करनेसे यथेष्ट उपकार होगा । सांघातिका हैजेके प्रथम अवस्थामें २।१ ड्रस्र कै होते ही रोगी बंठात् निश्चेष्ट हो जाय, चैतन्यता जाती रहे सब शरीर नीला पड़ जाय, सुह सुख आवे, दृष्टि स्थिर रहे, सब शरीर बरफकी तरह ठंडा हो जाय, जीभ जकड़ आवे वा खरभङ्ग हो, हाथ पैर ऐठने लगे तथा नाड़ी सुप्तप्राय हो जाय तो ऐसी अवस्थामें अवस्था विवेचना करके २।१ मात्रा कैम्फर देनेहीसे लाभ दिखाई देगा ।

पतनावस्थाके पूर्व यदि आर्सेनिक, मेराट्रुम फिफोग्राम, सिकिलि कर और ऐकोनाइट इत्यादि घोषध प्रयोग न किये गये हो तो हिमाङ्ग अवस्थामें यह सब घोषध सत्त्वणकी अनुसार अयोग किये जा सकते हैं ।

**कार्वोभेज १-१२ १० ।—**हिमाङ्ग अवस्थामें कार्वो-

भेज विशेष उपकारी औषध है । सब शरीर बरफकी भांति शीतल, जीभ ठंडी तथा नीली, नाड़ी लुप्तप्राय, आंखें धूसी हुई, कपाल और गले पर पसीनाका बूद, स्वरभङ्ग या चमष्ट वाक्य को दस्त बन्द हो कर पट फूना हुआ, सास लेनेमें बड़ा कष्ट, अत्यन्त ठाढ़, सब शरीर नीला इत्यादि लक्षणोंमें कौर्षी-भेज दिया जाता है । यदि इस अवस्थाके पूर्व भेराट्रम या आर्सेनिक प्रयोग न किये गये हो तो ये दोनों पारापारी टॉनसे यथेष्ट उपकारकी सम्भावना है । पेट फूला रहनेके साथ यदि दुर्गन्धित मल भी निकले तो कार्बोभिज अवश्य देना चाहिये ।

**एसिड हाइड्रो ३, ६ ।**—सूतवत् आकार, सांसका धीरे धीरे चमटना, पसीना ठंडा, नाड़ीका लोप हो जाना, सब शरीर (विशेषतः जीभ) शीतल, आधी या पूरी आंखें फटी, हाथ पैरकी नख नीले और आंगिका भाग कुक्षित, अचेतन्यावस्था में पड़े पड़े बढ़वढाना इत्यादि इसके लक्षण हैं ।

**आलेपिक हैजेकी पहिली अवस्थामें** हाथ पैरमें ऐठन बलस्थलसे लेकर गले तक पीड़ा, पेट बैठ जाना, और दर्द, हाथ पैर अवश्य तथा सब शरीर नीला हो जाता है ऐसी अवस्थामें **एसिड हाइड्रो** देना चाहिये ।

**एकोनाइट में साम ० १५ ।**—हृत्पिण्डकी चीपता लेकिन हृत्स्रन्दनकी समता, बड़ी बेचैनी, मृत्युभय, सब बदल ठंडा और सूतवत् आकृति इत्यादि लक्षणोंमें इसे प्रयोग करना

चाहिये । ऐकोनाइस से गार्दी सेज तथा जीवनी शक्ति उसे जित होती है । सात सप्ताह कहते हैं कि एक बूढ़ माटर टिचर १ घाउनुस जलमें मिलाकर ५ से १० मिनिटके अन्तर पर एक एक ड्राम सेवन करना चाहिये ।

**कोष्ठा ३ ।**—घारम्बार खास रोध हो, पेट फूला हो सब शरीर मीमा हो और रक्त पुर्य थिराये फूलना इत्यादि लक्षण में ।

**मात्रा ।**—अवस्थानुसार १०।१५।२० मिनिटका अन्तर पर एक एक मात्रा औपघ देना चाहिये । कैम्फर, भेरा ट्रम, किउग्राम, चार्मेनिक, या निकोस लक्षणानुसार आवश्यक हो सक्ता है । लक्षणानुसार—चिकित्सा में देखो ।

## ४ प्रतिक्रियावस्थाकी चिकित्सा ।—आभा-

विक प्रतिक्रिया आरम्भ होनेपर किसी तरहके औपघकी जरूरत नहीं है उस समय पथ्य इत्यादिकी अच्छी व्यवस्था करना ही उचित है । प्रतिक्रिया आरम्भ होनेपर यदि १२ दस्तके भी हो तो औपघ प्रयोगकी कोई आवश्यकता नहीं है । यदि कष्टकर हो जाये तो लक्षणविशेष विचारकरके जो सब औपघ रोगकी प्रवृत्त अवस्थामें प्रयोग किये गये हो वेही सब औपघ कम मात्रामें देर करके देने चाहिये ।

(५) परिणामावस्थाकी चिकित्सा —(क) रोगकी पुनरा-  
लक्षण अवस्थामें ।—बहुत जगह प्रतिक्रियावस्था आरम्भ होनेके



बाद भी हैमेटा फिर आक्रमण हो जाता है । साधारणतः कृमिके कारणसे यह अवस्था होती है । सक्षयविशेष विचार करके पछिले सिखे हुए औषध देने चाहिये ।

(ख) ज्वर और विकारसंक्षयमें ।—प्रतिक्रियावस्थामें यदि और कोई उपसर्ग न हो केवल ज्वर हो तो सिर्फ ऐंकी नाइट देने जैसे ज्वरका नाश होगा । परन्तु यदि ज्वरके साथ ही मस्तकमें रक्त संचय होकर आंखें लाल हो गईं हो, कपास और कनपटीको सब गिरा में दप् दप् करती हो, माया गम इत्यादि लक्षण वर्तमान हो तो बेलाडोना ६, वा १० । रोगी शय्यासे भागनेकी चेष्टा करे या शय्याके ऊपर से सब खींचे या घेर घेर आप हो आप बके तो हाइपोसाइमस ६ । पैटमें कृमि रहनेके कारणसे दांत कड़ कड़ करे, नाकका अगला भाग खुजलाये, मुंहसे जल निकले और शिथिल इत्यादि लक्षणोंके साथ प्रसाप बके तो सिना १० वा २०० । चर्मरक्तको भांति आचरण और पासमें मनुष्य रहनेसे काटनेकी जामा इत्यादि लक्षण हो तो ट्रामोनिम ६ । घोर मिट्टाकी भांति अचेतन्य अवस्थामें पड़ा हो, आधी आंखें खुली हो तो ओपियम ६ वा १० । ज्वरके साथ फुस फुसमें प्रदाह हो तो ब्राइयोनिया ६ और फमफोरस ६ । पाकस्थलीमें यटि जलन या प्रदाह हो तो आर्सेनिक ६, गक्सभमिका १० वा २०० और ब्राइयोनिया १० । यकृत आक्रान्त होकर प्रदाहयुक्त हो

तो माइयोमिया ६, नक्सममिका ३०, और माकं सल ३०,  
ज्वरके साथ प्रसार हो तो माकं कर, नक्सममिका, इपि-  
काक, कार्बोमिज, और एसिड् फस । ज्वरके साथ मूत्रनाश  
और मूत्ररक्त हो तो एकीनाइटके साथ कैन्थरिस ६ या  
टेरिविन्यना ६ पारापारी देना चाहिये ।

(ग) मूत्रनाश और तन्त्रादोष ।—प्रतिक्रिया धारण न होने  
पर मूत्रनाश या मूत्ररक्त होनेके कारण पेट फुला हो और  
प्रस्ताप तथा आचेप भी हो तो कैन्थरिस विशेष उपयोगी  
है । कैन्थरिस ६, मूत्रचय और मूत्रनाशको बड़ी ही अच्छी  
देता है । मूत्रचयके कारण यदि तन्त्रादोष हो तो आर्सेनिक ।  
कैन्थरिसके प्रयोगसे यदि कोई फल न दिखाई दे, और नाड़ी  
अधिक क्षीण हो तो टेरिविन्यना ६ । छा मरकार कहते हैं  
कि जो २ ३ बार कैन्थरिस प्रयोग करने पर कोई उपकार न  
दिखाई दे तो टेरिविन्यना । मूत्रनाश और उसीके साथ नाड़ी  
मुट हो तो कैलिबार्कम ६ । एक पाव शीतल जलमें एक  
छटाक सीरा मिलाकर, उसी जलमें कपड़ा भिंगोकर, नाभिके  
ऊपर पड़ी चढ़ानेसे भी लाभकी सम्भावना है ।

उपरोक्त औषधोंकी व्यवस्था करनेमें पर भी यदि पेशाब  
न हो और उसी कारणसे माथेका विकार कम न हुआ हो तो  
बेल्लराना, ट्रामोमियम, हाइयोमायमम, माइक्रिउटा, ओपियम,

कैनाभिम इण्डिका इत्यादि औषध लक्षणानुसार देना चाहिये ।

(घ) हृचकी ।—पतनावस्थाके बाद प्रतिक्रिया आरम्भ होनेमें प्राय देखा गया है कि हृचकी आने लगती है । मेराट्रम १०, और आर्सेनिक १०, प्रयोग करने पर भी यदि हृचकी आराम न हो तो दूसरे दूसरे औषध भी देने पड़ते हैं । बार बार हृचकी और उसके साथ धमनेच्छा और कुछ देर तक बन्द रहकर फिर उसका वेग होना, जिस समय बन्द रहे उस समय कान बन्द हो, हृचकीके समय सब अङ्गोंका कांपना इत्यादि लक्षणोंमें बेनाडोना १ । बेहोशकी तरह पड़े रहना और बीच बीचमें बड़े जोरसे हृचकी आवे, तो साइकिडटा १ । पाकस्थलीमें पीछा और भारी मालूम होना, पेटमें आँसेप या कन् कन् करना । भोजनके बाद हृचकीके समय आपही आप मूत्रत्याग और पेटमें गुड़ गुड़ शब्द जाता हो तो हाइयोमायम । हिलने ही से हृचकीका जोर और उसीके कारणसे अवसन्नता, बन्द हो जानेके समय हर नेत्र इत्यादि लक्षणोंमें कार्बो मेज १ । भोजनका अन्तमें या तन्माक्षू पीनेके समय हृचकी हो तो पल्मटिस्ता १ । भोजनका अन्तमें पाकस्थलीमें ददं या दबाव मालूम कर हृचकी आवे तो फसफोरस १ । भोजन या पानी पीनेका बाद हृचकी, नाभिके, चारों तरफ खींचनेकी तरह पीछा और पाकस्थली

और यकृतमें घेठना इत्यादि लक्षण हो तो इग्नेसिटा ६ ।  
तब हिचको और उसीक साथ वमनेछा रहने परन्तु प्यास न  
हो तो एफिमपिया ६ । इनके अतिरिक्त समय समय  
ज़ियोज़ाट, एफिमपिया, एकानाइट, आर्सेनिक, फिडमाम,  
मिकेनि कर और एसिड फ्ल इत्यादि औषध भी प्रयोग किये  
जा सकते हैं ।

(७) वमनेच्छा वा वमन । बारबार हिचकी और  
कै या कै करनेकी इच्छा हानेसे रोगी निस्तेज हो जाय और  
उसकी नाड़ी खोप हो । ईजक बारम्बार यदि होमियो  
पैथिक चिकित्सा हा तो प्रायः यह दोनों दोष नहीं दिखाई  
देते । परिणामावस्थामे वमन—पित्त या अस्त्रद्रव्य । वमन न  
हो कर बारबार वमनेच्छा रहनेसे एफिकाक ६ । परन्तु वमन  
हानेसे वमनेच्छाकी शान्तिके लक्षण दिखाई दे तो एफिमपिया  
और वमनोद्देगके साथ वमन हो तो नक्सभमिका ६ ।  
एफिकाकके प्रयोगसे यदि कोई लाभ न दिखाई दे तो  
नक्सभमिका और नक्सभमिकाक प्रयोगसे कोई उपकार न  
दिखाई दे तो एफिकाक । इन दो औषधोंकी दो बार मात्रा  
के प्रयोग करनेपर भी यदि कोई उपकार न जान पड़े तो ३।४  
मात्रा पडोफाइलम ६ । ( जल या जलके सहस्र पदार्थ ) पान  
करनेके साथ ही वमन होनेसे यूपेटेरियम पाफ ६ परन्तु कुछ  
देर बीत जाने पर फमफोरम ६ ।

(घ) उदरामय ।—प्रतिश्रिया आरम्भ होनेके बाद अथवा

मूत्रसायके बाद यदि थोड़ा थोड़ा उदरामय हो तो भयको बात नहीं है । पथ्यकी ओर दृष्टि रखनेसे यह सहज हीमें आराम हो सकता है । यदि वह आराम न हो कर बढ़ता हो जाये तो हैजेको तेज अवस्थामें जीन जीनसे औषध प्रयोग किये गये थे अवस्था विशेषसे उन्ही सब औषधियोंका एक क्रम, इसकी मात्रामें प्रयोग करना चाहिये । इन सबके व्यवहारसे भी यदि शान्ति न हो तो सक्षणानुसार नीचे लिखे औषध देने चाहिये ।

पेशाब होनेके बाद उदरामय और स्नायविक दुर्बलताके लक्षणमें एसिड फ्लू ६ या १० । यकृतमें दर्द तथा पित्तयुक्त पतला दस्त होनेसे पोडोफाइलम ६ । पेट कुछ फूला हो और पेटमें गड़ गड़ कल कल शब्दके साथ पीली रंगका दुर्गन्ध युक्त पतला दस्त थोड़ा हो तो चाइना ६, १० । फेरम और चाइना एकके बाद दूसरा, पर्यायक्रमसे देनेसे उदरामय और दुर्बलता दूर होती है । चटघटा श्लेष्मामय कभी रक्त मिला हुआ मल, यकृतमें दर्द, कुछ सफेद और पीली भाखें और सुईमें दुर्गन्ध इन लक्षणोंमें मार्क सल ६ । कुछ कासे रंगका पतला दस्त होनेसे रसटण्ड वा रिसिनास ६ । रक्त दस्त होनेसे कार्बोमिज ६ । और सास रंगका दस्त हो तो इपिकाक ६, या १० ।

(छ) पेट फूलना ।—प्रतिक्रिया भारवा होनेपर घबरा प्रतिक्रियाके बाद कभी कभी पेट फूलता दिखाई देता है । ऐसोपैथिक मतके इलाजमें अफीम मिली हुई दवा रहनेसे यदि पेट फूलना तथा उदरामय हो तो कार्बोमेज ३० । यदि दस्त न होनेके कारण पेट फूलता हो तो साइकोपोथियम ३० । ओपियम ३० या मार्कसल ३ ।

(ज) दुर्बलता ।—होमेओ परिणामावस्थाके बाद रोगीके शरीरमें रक्त एकदम नहीं रहता । पीछे खिंचे हुए सुफेद बदन हा जाता है । भाखें घस जाती हैं, स्वरभङ्ग इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं । रोगी इतना दुर्बल हो जाता है कि उसमें उठनेकी शक्ति नहीं रहती । इस अवस्थामें चायना ३० या एमिल फस ३० उपकारी है ।

(झ) छोटका और कर्णमूलप्रदाह ।—प्रतिक्रियाके बाद शरीरके किसी किसी स्थानमें फोड़ा या घाव होकर पीप उत्पन्न हो तो हिपरसल्फर ३ । और फोड़ा फटकर वा और देनेके बाद पीप निकलजानेसे साइनिमिया ३० । कर्णमूलकी गांठ फूलकर साध, छत्तस और दप् दप् दर्द होती हो तो वेसाइोना ६५, पीप पैदा होनेसे लैकेसिस ३ और साइसीरिया ३० । गन्धायत होकर उसमें से रस निकले तो लैकेसिस ३, मार्सेनिक ३ वा कार्बो-

भेज ६ । सु घमें और मसूखे में घाव होनेसे एसिड नाइट्रिक ६,  
हिपरसल्फर ६, वा कार्बोभेज ६, आखमें घाव होनेसे चायना ६,  
सल्फर ३०, प्लसटिका ६ ।

(ज) फुसफुस प्रदाह ।—एकानाइट ३ और फसफोरस ६  
 इसका प्रचान औपध । इस ग्रन्थका “फुसफुस” प्रदाह  
 देखो ।

## प्लेग ( महामारी ) ।

### PLAGUE

सिन्धु देश इस महामारीका स्रोतिका गृह है, कमसे कम २४०० वर्ष हुए होगी कि उस देशमें यह रोग उत्पन्न हुआ था । इन्हीं सदासे १८वीं सदी तक इसका पराक्रम प्रकाश जा रहा है । १८१५ सनमें सुना जाता है कि इसने भारत-वर्षमें आगमन किया । वर्तमान महामारी १८९६, जो को से लार्ड गर्ह । यह कुतहरी विमारी है । एक प्रकारका विष किसी किसीका मत है कि कोष्ठा ( Bacillus ), किसी किसीका मत है जमीनको माफ ( effluvia ) अथवा वा संस द्वारा शरीरमें जानेसे यह रोग पैदा होता है । रोगकी भयंकरतायामें ( अर्थात् शरीरमें विष प्रवेश करनेके सुधूर्त्तसे

लेकर ऊपर आरम्भ काम पर्यन्त) शरीरकी दुर्बलता तथा चित्तमें अवसन्नताके अतिरिक्त और कोई लक्षण नहीं दिखाई देते। यह अवस्था ५।७ घण्टे लेकर ५।७ दिनोंतक रहनेपर सहसा सर्जिपात ऊपरका लक्षण (दाहण शीत और कम्प, शरीरमें १०० डिग्री पर्यन्त ऊपर, सब अङ्गमें वेदना, वमन, चक्कना, चैतन्यलोप, बलकी निकासनेवाला पसीना, शरीरके किसी अङ्गसे रक्तका निकलना, अत्यन्त दुर्बलता) दिखाई देने लगते हैं और २।४ दिनोंमें जोघ, बगल, गले इत्यादि स्थानोंमें गिब्टी (Bubo) निकल आती है। कभी कभी रोगी ४।५ घण्टेके भीतर ही (दूसरे दूसरे लक्षण प्रकाश पानेके पहिले) रक्त वमन करते करते प्राणत्याग करता है। गिब्टी निकलने पर ४।५ दिनोंके बीचहोमि पकजाना और ऊपर झूट जाना यह शुभ लक्षण है।

डाइसन और कौलवर्ट नामक ये दो चिकित्सक चिकित्सा की सुझावोंके लिये ज्वरकी चार भागोंमें बांटते हैं —

१। सेप्टिसेमिक (Septicaemia) ज्वर, इसमें शरीरके सब अङ्ग आक्रान्त हो जाते हैं।

२। बिसबोनिफ (Bubonic) ज्वर, इसमें लिम्फेटिक नोड सन्तूह निकल आती है अर्थात् जोघ बगल तथा गलेमें गिब्टी निकल आती है।

३। प्नुमोनिक (Pneumonic) ज्वर; इसमें फस्, फुस्,



विशेष करके आक्रान्त होता है अर्थात् सूखी, खासी कमेजमें दर्द, सास लेनेमें कष्ट इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं ।

४। इण्टेस्टाइनल (Intestinal) ब्लेग, इसमें अन्तड़ी विशेषरूपसे आक्रान्त होता है, अर्थात् पीठ, पिछू और कमरमें दर्द होती है। पेट फूल जाता है। दस्त के इत्यादि लक्षणोंकी अधिकता दिखाई देती है।

प्रतिपेधक—एक इग्नेसिया-बीन (Ignatia Bean) बीनमें छद्द करके सूत बांधकर दाहिने या बायें बाँहमें अथवा कमरमें पहिरा देना चाहिये।

### चिकित्सा ।

१। अदुरावस्था—इग्नेमिया १।

२। ज्वरावस्था—

(क) प्रारम्भमें (वक्कना झकना रहे तो) बेलाडोना ३।

(ख) पूर्ण विकारमें, जिस समय 'रक्त दूषित होकर शरीरके सब अंग आक्रान्त हो जाये (अर्थात् सेप्टिसेमिक लक्षणमें) म्याजा १, ६।

(ग) गिग्टीलिफस आनेसे (अर्थात् विषबोमिक लक्षणमें) म्याडियागा १x सेवन और गिग्टीलिफस १x गिग्टीके उपर लगाना चाहिये। इस बीषधके लगानेसे गिग्टी बैठ जाती है और दर्द जल्दी थाराम होता है।

## सामान्य ज्वर ।

(SIMPLE FEVER)

ठण्डा लग जानेसे बरसातमें भोजनसे, तेज धूपमें धूमनसे, आदे खाने पीनेसे वा परिश्रम अधिक करनेसे यह ज्वर घर जाता है ।

चिकित्सा ।—एकोनाइट ३५ २।३, घण्टाका अन्तर देकर शुरू । सिरमें दर्द, आँखें सात इत्यादि लक्षणोंमें बेले गुना ६ । सब अङ्गोंमें विशेषतः कमरमें पौड़ा हो तो कास- हूस् ६ । अपरिमित खाने पीनेके कारण हो तो प्रुसेटिला ६ । यदि जलमें भोजनके कारण हो तो लासकेमारा ६ ।

## एकज्वर ।

SINGLE FEVER

ज्वर, अत्यन्त गर्म या अत्यन्त ठण्डा, सफ़सा पसीना बन्दे, सामान्य परिश्रम, अपरिमित खाने पीने, आँखें लाल, आँखोंमें जल, आँखोंमें आँसू, आँखोंमें आँसू आदि ।

सायेंमस, टामोनियम, इपिकॉक एपिटिमम, हेपार सॉल्फ, सिलिका, और व्याडियागा ( Vide Calcutta Journal of Medicine for Nov. 1897 & Sircar's Plague 3rd Edition )

प्रातुषट्टिक चिकित्सा । -रोगीको हवादार घरमें रखना चाहिये। दूध, मांस, घालिं चाराखट, मांस वा मसूरकी दानका जूस रोगके समय ( आवश्यक होनेसे पिचकारी द्वारा) खिलाना चाहिये। पकजानेसे गिल्टीके ऊपर पुल्टिस देना चाहिये और फठ जानेसे (वा चीरे जानेसे) कैसेण्डूला का तेल फटे हुए जगहमें लगाया चाहिये।

### ज्वर ।

शरीरकी गर्मीका बढ़जानाही साधारणतः "ज्वर" कहा जाता है। शरीरके किसी अंग या यन्त्रका प्रदाह, या किसी तरहसे कोई विष रक्तमें मिला जानेके कारण ज्वरकी उत्पत्ति होती है। ज्वर बहुत तरहका है। उसमें सामान्य ज्वर, एकज्वर, सविरास ज्वर और सविषाधिक विकार ज्वर इस देशमें प्रचल हैं।

## सामान्य ज्वर ।

(SIMPLE FEVER)

ठण्डा लग जानेसे बरसातमें भोजनसे, तेज धूपमें धूमनसे, ज्यादा खाने पीनेसे वा परिश्रम अधिक करनेसे यह ज्वर घर दवाता है ।

चिकित्सा ।—एकोनाइट १५ २।१, घण्टाका अन्तर देकर १ बूंद । सिरमें दई, पांखें साफ इत्यादि सज्जणोंमें बेलें डोना ६ । सब अङ्गोंमें विशेषतः कमरमें पीड़ा हो तो जास-टकुस ६ । अपरिमित खाने पीनेके कारण हो तो पल्सेटिला ६ और यदि ज्वरमें भोजनके कारण हो तो डालकेमारा ६ ।

## एकज्वर ।

CONTINUED FEVER.

कारण ।—फटसु परिवर्तन, अत्यन्त गर्म र सेंदीका लगना, भोजन कपड़ा पहिरना, सहसा पसना बन्द कर देना, अतिरिक्त शारीरिक वा मानसिक परिश्रम, अपरिमित खाना पीना, शरीरके विकार का बाहर न होना, झोठ लगना, कमजियत और शक्ति का अवनयन आदि ।

**लक्षण ।**—पहिले थोड़ा-सा मालूम होना, पीछे

कंपकंपी हो कर खरका भारभ होना, कभी जाड़ा कभी गर्मी मालूम होना, बदनमें दाह, थमडा सूखा और रखडा, बेचैनी, प्यास, जीभका सूखना और सफेद, मीठी तेज सांसका जोरसे चलना, पेशाब थोड़ा और खाल, कमरमें तथा पीठकी रीढ़में दर्द । कभी कमजोर कभी खूब दस्त होना, सिरमें दर्द, भ्रूचि इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं ।

**चिकित्सा ।**—एकोनाइट १२ ।—नाड़ी सूझ, तेज, कठिन और उकलती हुई । बदन सूखा और शुष्क । कभी जाड़ा कभी गर्मीका मालूम होना, बारबार हिचकी और बेचैनी, सिरमें बड़ी दर्द, सांस तेज, रातमें रोगका बढ़ना और सामान्य प्रलाप । गलेकी नाड़ीका चक्कर, पसीना होनेसे एकोनाइट बन्द कर देना चाहिये ।

बेलेहोना ६, १० ।—माथे और गलेकी नाडीमें जलन, थोड़ा जाड़ा, अत्यन्त दाह, पसीनाका न होना वा थोड़ा होना, आंखें लाल, मींदका न आना, प्यास 'सुई' और भीठ सूखे । एकोनाइटके सब लक्षणोंके साथ यदि अत्यन्त दाह और सिरका दर्द हो तो इस एकोनाइटके साथ पर्यायक्रमसे खिलाना चाहिये ।

त्रायोनिया एल्बा ६, १२, १० ।—सिरका भारी मालूम होना, गलेकी गिरा, गिर, गर्दन काय पर और पीठमें दर्द ।

कथं वटजनेसे पौड़ाका घटना, सास लेनेमें कष्ट और सूखी खांसी, पाकस्थलीमें गर्मी और दर्द मासूम होना, जीभका पीला रंग होना, खाई हुई चीजें या अथवा तथा पित्त कै करना, मुख मण्डल पीला, यकृतकी जगहमें दर्द, शरीरकी गर्मी कभी कम कभी ज्यादा, नाड़ी तेज, चर्चाच, टैकार आनेसे तीता स्वाद और मुख चटचटा ।

जेनसिमियम १५ ।—एकानाइटसे यदि ऊपर कम न हो तो विशेषतः लड़कोंके एकऊपरमें इसे प्रयोग करना चाहिये ।

मेराट्रम भिरिडि १५ ।—नाड़ी पूर्ण, कठिन और तेज, जीभ इन्टोके तरह पीली, वीर्यमें आलू लकीरे, माथेका भारी मासूम होना और दर्द, विशेष करके माथेके अगले भागमें औरका दर्द, वमन करनेकी इच्छा, शारीरिक दुर्बलता ।

युपेटेरियम-पाफी १ ।—मिरमें दर्द, वमन करनेकी इच्छा या पित्त वमन, पानीपीनेके साथ ही वमन, खंफकपी कम होनेके समय पित्त वमन, दृष्टियोंमें दर्द ।

“वाक्तरोग” दमकी चिकित्सा एकऊपरके तरह ।

पथ्य ।—ऊपर-जब तथा बन्द न हो तब तक सावूदाना या बाली, चाराकट, और ठण्डा पानी । ऊपर बन्द हो जानेसे ४१५ टिनके बाद भस्म देना चाहिये ।

“मलेरिया जनित सेविराम” ज्वर ।

## INTERMITTENT FEVER

यह ज्वर बगालेमें अधिक होता है । इस ज्वरसे धीरे धीरे पित्तही यकृत आदिकी वृद्धि, पारीका बोखार, हड्डोंका ज्वर दोनों शामका ज्वर, शोथ, उदरी इत्यादि बहुत तरहके कठिन रोग उत्पन्न हो जाते हैं । इसीसे सब ज्वरोंकी चिकित्सा एक साथ ही लिखी गई है ।

ज्वर कुछ दिनों तक छूट कर फिर आ जाये तो उसे सेविराम ज्वर कहते हैं । प्रतिदिन एक बार आकर यदि छूट जाये तो उसको ऐकाहिक वा दैनिक ज्वर कहते हैं । जोड़ा बोखार (पारीका ज्वर) एकदिन अन्तर देकर यदि ज्वर आये तो उसे द्वाहिक । दो दिन अन्तर दे कर आये तो त्राहिक और तीन दिनोंका अन्तर हो तो चतुर्थाहिक कहते हैं । दिन रातमें दो बार यदि ज्वर आये तो उसे द्वौकाशीन ज्वर कहते हैं । यह द्वौकाशीन ज्वर अत्यन्त कठिन होता है । इसकी दवा बड़े ध्यानसे करनी पड़ती है । पित्त जनित ज्वर एक दिन अधिक और एक दिन कम आता है । कोई २ ज्वर नित्य एक ही समयसे आरम्भ होता है और किसी किसीमें किस समय आवेगा इसकी स्थिरता नहीं रहती । कोई २ ज्वर आज एक समय आवेगा तो कल दो घण्टा पहिले आ

आयेगा । यह त्वर भयङ्कर होता है । इसीका चक्रेटा यदि दो घण्टा बाद आवे तो अच्छा होता है ।

प्रधामत कुदेनाइनके अपस्यवहारसे ही जोड़ा और यकृत की वृद्धि होती है तथा गीय और चटरो भी पारभ हो जाता है ।

सेलेरिया एक प्रकारकी विष मिनी हुई हवा है । यह विष मले हुए उद्भिज की भाफ है ।

इस त्वरमें साधारणत तीन अवस्था देखी जाती है—  
ग्रीतावस्था, उष्णावस्था, धर्मावस्था ( पसीना चलना ) । ग्रीतावस्थामें पड़िले गीत, फिर कंठकपी । कभी २ तो एक साथ ही गीत और कंठकपी इतने जोरका होता है कि शिश्नोत्पत्ति पर भी जाड़ा कम नहीं जाता । बदममें दर्द, माथमें दद, प्यास, कभी सूखी खांसी भी इसमें होती है । उष्णावस्थामें प्राय मिरमि दर्द, सुप्त काल, बदमका चमड़ा चूखा, प्यास, घांस लेनेमें कष्ट, बदमकी गरमी १०१ से १०२ डिग्री पर्यन्त हो जाती है । बदममें दाढ़ नीचे ही से जाड़ा कम हो जाता है । कई एक घण्टेके बाद धर्मावस्था पर्याप्त पसीना आना शुरू होता है और त्वर छूट जाता है ।

चिकित्सा :—लक्षणकी और विशेष दृष्टि रख कर चिकित्सा करनेकी चाहिये क्योंकि उपरीक्त भव प्रकारकी त्वरोंकी दवाएँ एकत्र सिखी गई हैं । त्वर जिस समय न रहे उस समय दवा खानी चाहिये ।



## मलेरिया जनित 'सविराम' ज्वर ।

### INTERMITTENT FEVER

यह ज्वर बगालेमें अधिक होता है । इस ज्वरसे धीरे-धीरे पित्तही यकृत आदिकी वृद्धि, पारीका बोखार, हड्डीका ज्वर दोनों शामका ज्वर, शोथ, उदरी इत्यादि बहुत तरहके कठिन रोग उत्पन्न हो जाते हैं । इसीसे सब ज्वरोंकी चिकित्सा एक साथ ही लिखी गई है ।

ज्वर कुछ दिनों तक छूट कर फिर आ जाये तो उसे सविराम ज्वर कहते हैं । प्रतिदिन एक बार आकर यदि छूट जाये तो उसको ऐकाहिक वा दैनिक ज्वर कहते हैं । जाड़ा बोखार (पारीका ज्वर) एकदिन अन्तर देकर यदि ज्वर आये तो उसे हाहिक । दो दिन अन्तर देकर आये तो त्राहिक और तीन दिनोंका अन्तर हो तो चतुर्थाहिक कहते हैं । दिन रातमें दो बार यदि ज्वर आये तो उसे द्वौकाशीन ज्वर कहते हैं । यह द्वौकाशीन ज्वर अत्यन्त कठिन होता है । इसकी दवा बड़े ध्यानसे करनी पड़ती है । पित्त जनित ज्वर एक दिन अधिक और एक दिन कम आता है । कोई २ ज्वर नित्य एक ही समयसे आरम्भ होता है और किसी किसीमें किस समय आवेगा इसकी स्थिरता नहीं रहती । कोई २ ज्वर आज एक समय आवेगा तो कल दो घण्टा पहिले आ

कयोगा । यह छ्वर भयङ्कर होता है । इसीका छसूटा यदि दो छण्डा बाद आवे तो भयङ्कर होता है ।

१०. प्रधानतः कुईमाइनक अपव्यवहारसे ही झीडा और यकृत की वृद्धि होती है तथा गीय और उदरो भी चारभ हो जाता है ।

मैलेरिया एक प्रकारकी विष मिसी हुई हवा है । यह विष गले हुए उम्रिक की भाष है ।

इस छ्वरमें साधारणतः तीन अवस्था देखी जाती है—  
शीतावस्था, उष्णावस्था, चर्मावस्था (पसीना बहना) । शीतावस्थामें पहिले शीत, फिर कंपकंपी ; कभी १ तो एक साध ही शीत और कंपकंपी इतने जोरका होती है कि शिथिलता के छड़ाने पर भी जाका कम नहीं जाता । बदनमें दर्द, माथेमें दर्द, प्यास, कभी सूखी खासी भी इसमें होती है । उष्णावस्थामें प्रायः निरर्त दर्द, सुख साक, बदनका चमका चमका, प्यास, सांस सेनेमे कष्ट, बदनकी गरमी १०१ से १०७ डिग्री पर्यन्त हो जाती है । बदनमे दाह होने की से जाका कम हो जाता है । कई एक बरफ़ के बाद चर्मावस्था चर्मात् पसीना आना शुरू होता है और छ्वर छूट जाता है ।

११. चिकित्सा ।—छवणकी और विशेष दृष्टि रख कर चिकित्सा करनी चाहिये क्योंकि उपरोक्त सब प्रकारके छ्वरोंकी दवाएँ एकत्र लिखी गई हैं । छ्वर जिस समय न रहे उस समय दवा खानी चाहिये ।

यूपेटोरियम पाफी ३ । ज्वर आनेके पहिले ही जी मिचलाये और पीठमें आड़ा मालूम होकर ज्वर आरम्भ हो जाड़ा लगनेके पहिलेसे लेकर कण्ठावस्था तक घ्यास, पानी पीनेके साथही कै, पिस वमन और कण्ठावस्थाके बाद सामान्य पसीना आना । हड्डी और जोड़ोंमें दर्द । दर्दसे रोगी छटपटाये परन्तु करवट बदलनेसे पीडाकी शान्ति न हो ।

आर्सेनिक ऐल्बम ६, १२, ३०, १—पुराने विषम ज्वरमें, तथा उसके साथ ही साथ ग्रीवा और यकृत आदिकी यदि वृद्धि हो तो आर्सेनिक से बढ़कर कोई दूसरी दवा नहीं है । विषम ज्वरमें जिस समय गीत, दाह या कण्ठावस्थाका विकास न हुआ हो या कोई एक प्रबल हो या किसी एकका अभाव हो, पसीना न हो, दाह अवस्थाके बहुत-देर बाद बहुत पसीना हो, ग्रीवा और यकृतकी वृद्धि हो, ज्वरके समय अस्थिरता अधिक हो । दर्द अधिक हो अथवा रोगी बकता हो ;—और ज्वर-छूटने पर भी इन सब छपसर्गोंके साथ दुर्बलता और अवसन्नता हो तो यह दवा विशेष फलप्रद है । एक दिन, दो दिन, तीन दिनके आड़ा मोखारमें प्रतिदिन दो तीन बार ज्वरमें, कुहनाइनके अपव्यवहार, अतित विषम ज्वरमें ; हड्डीके ज्वरमें, ग्रीवा यकृत संयुक्त पुराने ज्वरमें शोथ हो तो, यह बड़ी गुणकारी दवा है । दाह पैर ठंडा हो

कर ज्वर आरम्भ होता हो। कफकंपो होनेके पहिले बदनको गर्मी बढ़तो हो और असम और दाह, बड़ी तेज प्यास किन्तु थोड़ाही पानी पीनेमें प्यासको गान्ति। मांस नेनेमें कष्ट, पानी

या पतली चीज खाते ही वमन करनेकी इच्छा, जीभ साफ, एकबार ज्वर आनेहीसे रोगी अत्यन्त दुर्बल हो जाये इत्यादि लक्षणोंमें आर्सेनिक अमोव औषध है।

पारिक्का मन्टेना ६।—सुबहके समयके विषम ज्वरमें

शरीरके पहिले जम्हाई आना, अत्यन्त दुर्बलता, हड्डीके भीतर बड़ी दर्द, नमं बिछावन भी कड़ा मात्स्य होना और उसके लिये सदा कर्वट बटलना, माया और सुइ गर्म (किन्तु और सब पङ्क ठण्डा), पसोना न आना इत्यादि लक्षणोंमें, और सामान्य ज्वरमें भीतर ठंडा और बाहर गर्म। पानी पीनेसे (या बाहरी गर्मीसे) शरीरकी बृद्धि इत्यादि लक्षणोंमें देना।

इपिकाका ६ १२. ३०।—पाकस्थलीके क्रियाकी खराबी के कारण वमन या वमन करनेकी इच्छा, पीसी इसटोसी जीभ, ज्वर आरम्भके पहिले जम्हाई आना, बदनका टूटना; बाहरकी गर्मीसे सर्दीका बढ़ना, उष्णस्थानमें अधिक प्यास, शीतावस्थामें प्यासका न रहना, सल रगका येसामय दग्ध होना; सुइका स्वाद तीता, मलेरिया जेमित पुराने ज्वरमें विशेष करके हाडिक ज्वरमें। ज्वरका कोई विशेष लक्षण ठीक निश्चय नहीं कर

पहिले इपिकाका ३० २००

पड़िते प्रधान लक्षण जब सब स्पष्ट प्रकाशित हो जायेगी ; तब उसी लक्षणके अनुसार दवा देने की संहिता ।

सुविख्यात साक्षर चार कम्पज्वरके प्रारम्भमें केवल इपिकाक

३० सिर्फ एकवार प्रयोग करनेकी सलाह देते हैं । बहुत जगह इसी तरह व्यवस्था करनेसे बहुत अच्छा फल दिखाई दिया है ।

इन्ने सिया ६, १२, १० ।—विषमज्वरमें, शीतकी अवस्थामें, प्यास, दाह अवस्थामें प्यासका अभाव, बाहरी गर्मीसे, शीतका उपशम, बाहर ठंडा, भीतर गर्म या भीतर गर्मी और बाहर सर्दी, दाहकी अवस्थामें माथा भारी मालूम होना, मुखमण्डल सूखा इत्यादि लक्षणोंमें इन्ने सिया प्रयोग करनेसे अच्छा फल होता है । सविराम ज्वरमें सब अङ्गोंमें खुजली, बदनोमें आमवातकी तरह घसीरी । चेहरके एक भागमें बड़ी दाह, पसीना कम या केवल चेहरके पर होना ; तीसरे पहरको सब अङ्गोंमें बड़ा गर्म मालूम होना लेकिन प्यासका न होना इत्यादि लक्षण हैं ।

एण्टम् क्रूड ६ ।—विषमज्वरमें, नाड़ीका वेग नियमित होना, बड़ी सर्दी, ऐसी-सी कि गर्म मकानमें भी उसका कम न होना प्यास बिलकुल नष्ट रातमें पेटोंके तलुबका ठंडा हो जाना, सबहकी जागनेके समय पसीना, जीभ सादी, कोष्ठबद्ध

(फजियत) या उदरामय ( दस्तका, अधिक होना ) इत्यादि लक्षण है ।

एपिटमटांट १ विचूर्ण या ६ ।—विषमज्वरके शीतावस्थामें प्यासका न लगना, जाँघोंमें दर्द, सब शरीर ठंडा और सावड़ी कपड़ोंसे पसीना ठंडा और चटचटा, बदनमें बड़ी दाढ़; ज्वरके समय नींद आना ।

कार्बोभेज ६, ६० । विषम ज्वरमें नाड़ी चीथ और तेज, शामके वक्त शीतका बढ़ना, कभी कभी केवल एकही पार्श्व में शीत महसूस होना, शीतकी अवस्थामें प्यास, उसके बादही बड़ी दाढ़, फिर दुर्बल करनेवाला खड़ा बदबूदार पसीना होना, शीतावस्थाके पहिले सिरमें दर्द बदनमें दर्द, हाथ पैर ठण्डे, चेहरा साफ, मर्करी या कुइनाइनके अपव्यवहारसे उत्पन्न भये ज्वरमें ।

ओपियम ६, ६० । नये ज्वरमें नाड़ी पूर्ण पर साफ घीमी, और निद्राकी अवस्थामें नुइका खला रहना, उसीकी साथ नाकका बोलना, पसीना होनेके बाद बड़ी दाढ़, विषम ज्वरमें अत्यन्त शीत तथा कपकपी देकर ज्वर आरम्भ होता है, प्रवस शीतावस्थामें नींद और अङ्गोका फरकना । प्यासका न लगना, उन्नीपावस्थामें प्यास और पसीना अधिक ।  
कोकटम १ । विषम ज्वरमें ठीक एकही समय (विशेषतः दोपहरके समय) जाड़ा लगकर ज्वर आना, फिर जलन,

दाह और बारबार खासप्रखास लेना; फिर शीतावस्थामें बूँद बूँद पसीना होना । बड़ी प्यास पीठमें सर्दी, तलहट्टी बरफकी भांति ठण्डी ।

चायना । ६, १२, ३०, २०० । नाड़ी: क्षुद्र, द्रुत तथा -

अनियमित, आहारके अन्तमें नाड़ीका वेग कम तथा तन्द्रा-  
वेश, झीहा तथा यकृतकी वृद्धि और दर्द; जलकी भांति  
गोंदकी तरह चटचटा या पित्तमिली हुआ सदरामय, शीत  
और उष्णावस्थाके पहिले या पीछे प्यास, ज्वर आरम्भ होनेसे  
ही हृत्पिण्डका धक धक करना, सिरमें बड़ी दर्द, पाँहरकी  
सब शिरायोंका फूलना, शीतावस्थामें सिरमें दर्द, सर्वाङ्गमें  
शीत, वमनोद्यम तथा प्यास बन्द, दाहकी अवस्थामें सुई  
और भीठ सूखे तथा उनमें जलनका मासूम होना, दाहावस्थाके  
बाद प्यास और खूब पसीना । कुदनाइनके अपव्यवहार अमित

विषम ज्वरमें चायनासे कोई फल नहीं होता । (कदाचित्त  
चायना २०० कुछ लाभ करे) । चायनाके लक्षणवाला ज्वर  
रातको कभी नहीं आता ।

जेल्सिमियम १x, ६ । नाड़ी शीघ्र, कीमल और द्रुत,  
पीठमें शीत देकर ज्वर, आरम्भ, पीठमें या सब अङ्गोंमें दर्द;  
रोज दो पहरको ज्वरका आरम्भ होना; हाथ पैर बरफकी  
भांति ठण्डे, मस्तक गर्म तथा चिहरा जल होना इस अवस्थामें

रोगी स्थिरभावसे पड़ा रहता है , प्यास प्रायः नहीं रहती ।

मफ़भमिका ६, १२, १० । सुबहकी आनेवाली ज्वरमें, दोपहरमें, सन्ध्याके समय या रातको ज्वर आते ही हाथ पैरोंमें भव्यता , भीतर सर्दी, बाहर गर्मी या भीतर गर्मी और बाहर सर्दी, अत्यन्त दाढ़ावस्यामें ओढ़नेका वस्त्र डटाने पर सर्दी घटना , बमनेच्छा, माथेका भारी माझूम होना , कोष्ठबद्ध, हाथपैरके तख्ख नीले , बाहरकी गर्मीसे भी जाड़ाका कम न होना शीतावस्यामें कपकपौ देकर जाड़ा , पानी पीनेसे जाड़ाका बढ़ना शीतके पहिले तथा पीछे गर्मी सुबहकी या शामकी सड़ोसूका पसीना ।

नेट्रम म्यूरियेटिकम १० । १०-११ बचनेके समय बड़ा जाड़ा तथा प्यास सिये ज्वर आये और उसके बाद सिरमें दर्द , शरीर बड़ा ही सुस्त , झीझा और यकृतकी छद्मि और दर्द , ज्वरके छूटनेपर निस्तेजभाव और बहुत पसीना , कुहमाइन या आर्सेनिकके अपव्यवहारजनित ज्वरमें ।

पसरेटिखा ६, १२, १० । पाकाशयकी क्रियाकी विरामता या पैत्तिक ज्वरमें , दोपहर-एक बजेसे ४ बजेके भीतर ज्वर आना जाड़ा और कपकपौका विक्षम्बतके ठहरना , उन्मादपावस्या यड़ी , प्यासका प्रायः न रहना , बिना पसीना हो



गुह, नासी ( Drain ) और गले हुए सुर्दों से एक प्रकारका विष निकलता है, जो इस रोगके उत्पन्न करनेका प्रधान कारण है। यही विष शरीरमें प्रवेश करनेपर भी- ५।७ दिनोंतक इसका कोई उपक्रम दिखाई नहीं देता। फिर रोगका विकाश होता है, उस समय रोगी शय्यागत होता है और नीचे लिखे उपक्रम होने लगते हैं—पेटका फूलना, पेट दबानेसे दर्द, यकृतके नीचे अङ्गुलीसे दबाने पर एक प्रकार शब्द होना, उदगमय, और कभी कभी घंटाड़ीसे रक्तका निकलना। पिल्लीका बढ़ना, चावलका धोषन, या दालके पानीके तरह मल, सास लेनेसे ऐमोनियाकी गन्ध, मस्तकके आगे दर्द, माथाका भारी मालूम होना, कानमें भी भों शब्द होना, नौद न आना, कभी कभी नाकसे रक्तका गिरना, अस्थिरता, बकना भकना, नौदमें चमक उठना या चुपचाप आखे आधी खुली हुई रहना, इस ज्वरके आरम्भसे अस्त तक, पेट, पीठ, छाती, हाथ, पैर और सुईपर लाल छाल दाने दिखाई देते हैं, पेशाब, लाल और थोड़ा होता है रोगके पहिले ५।६ दिन शरीरकी गर्मी १०० से १०२ डिग्रीतक बढ़ जाती है पर सुबह ज्वर याम हो जाता है। ७।८ दिनोंके बाद शरीरका उष्माप १०३ से १०५ डिग्री तक होता है। २।३ हफ्तेतक ऐसाही रहकर यदि शरीरकी गर्मी कम हो जाये तो अच्छा लक्षण समझना चाहिये, और बढ़ जानेसे बुरा। इस ज्वरमें अतडिया छिन्न हो जाती है

घौर अन्त्रावरणकी भिन्नी प्रदाहविशिष्ट होकर मूत्रविकार, फुसफुसप्रदाह इत्यादि हो जानेसे रोगी मर जाता है । जीभ पहिले सरस, फिर मैली घौर लाल रंगकी हो जाती है । इस रोगका भोगकाल साधारणतः २१ से ४२ दिन तकका होता है ।

चिकित्सा ।—आर्सेनिक ६ १२, १० ।—दुत कठिन

नाड़ी, अत्यन्त अयस्यता, शरीरका चमड़ा रुखड़ा, ज्वालाकर टाह, पसीना ठण्डा, बड़ी प्यास लेकिन थोड़ेही जलसे दृष्टि प्रदाहयुक्ता जालवण जीभ बदनमें घमौरी घौर माथड़ी अतिसार ।

चार्निफा मण्डेला १५, ६ ।—सांस नेनेमें दुर्गन्ध, शरीरमें जाल, काली तथा पीली घमौरियां, मनका भाव कहने तथा समझानेमें असमर्थ, प्रलाप या अचेतन अवस्था, शय्याका कड़ा सासूम होना घौर बार बार करवट बदलना ।

ऐसिड फ्ल ६, १० ।—कम्पकम्पी घौर जाड़ा, प्यासका अभाव, हाथ पैरकी अगुनियां दरफकी भांति शीतल दाहकी अवस्थामें बड़ी गरमी लेकिन प्यासका न होना, भीतर गरमी घौर बाहर जाड़ा, रातकी ओर सुबह अधिक पसीना आना घूसरे औषधीसे विकारका उपशम होनेपर भी बल बढ़नेकी लिये इसे देना ।

ऐसिड स्यूर ६ ।—आयविक क्रियाकी विशदघण्टाके कारण रोगी अयस्य, गलेमें घाव, हाथ पांव ठण्डे, जाड़ाका सहन न होना, नाड़ी क्षीण घौर दृत, छाँटाँपर सफेद रंगके दाने,

गुद्द, नाली ( Drain ) और गले हुए सुर्दी से एक प्रकारका विष निकलता है, जो इस रोगके उत्पन्न करनेका प्रधान कारण है। यही विष शरीरमें प्रवेश करनेपर भी- ५।७ दिनोत्तक इसका कोश्रु उपक्रम दिखाई नहीं देता। फिर रोगका विकास होता है, उस समय रोगी शय्यागत होता है और नीचे लिखे उपक्रम होने लगते हैं—पेटका फूलना, पेट दबानेसे दर्द, यकृतके नीचे अङ्गुलीसे दबाने पर एक प्रकार शब्द होना, उदरामय, और कभी कभी अतड़ीसे रक्तका निकलना। पिलड़ीका बढ़ना, घावलका घोघन, या दासके पानीके तरह मल, सास लेनेसे ऐमोनियाकी गन्ध, मस्तकके आगे दर्द, मायाका भारी मालूम होना, कानमें भों भों शब्द होना, नींद न आना, कभी कभी नाकसे रक्तका गिरना, अस्थिरता, बकना भकना, नींदमें चमक उठना या चुपचाप आंखें आधी खुली हुई रहना, इस ऊ्वरके आरम्भसे अन्त तक, पेट, पीठ, छाती, हाथ, पैर, और सुहपर नाल सास दाने दिखाई देते हैं, पेशाब, जल और थोड़ा होता है रोगके पहिले ५।६ दिन शरीरकी गर्मी १०० से १०२ डिग्रीतक बढ़ जाती है पर सुबह ऊ्वर कम हो जाता है। ७।८ दिनके बाद शरीरका उन्नाप १०३ से १०५ डिग्री तक होता है। २।६ हफ्तेतक ऐसाही रहकर यदि शरीरकी गर्मी कम हो जाये तो अच्छा लक्षण समझना चाहिये, और बढ़ जानेसे बुरा। इस ऊ्वरमें अतड़िया बिस हो जाती है

घोर चन्दावरणकी भिक्षी प्रदाहविशिष्ट होकर मूलविकार, फुसफुसप्रदाह इत्यादि हो जानेसे रोगी मर जाता है । जीभ पड़िले सरस, फिर भैली और खाल रंगकी हो जाती है । इस रोगका भोगकाल साधारणतः २१ से ४२ दिन तकका होता है ।

**चिकित्सा ।—**आर्सेनिक ६, १२, २० ।—दुत कठिन

प्लाही, अत्यन्त अवसन्नता, शरीरका चमड़ा रुखड़ा, ज्वालाकर टाढ़ पसीना ठण्डा, बड़ी प्यास लेकिन थोड़ेही जलसे तृप्ति, प्रदाहयुक्त लालवर्ण जीभ, वदनमें घमैरी और साथही अतिसार ।

आर्निका मण्टेना १५, ६, १—सांस लेनेमें दुर्गन्ध, शरीरमें लाल, काँसी तथा पौली घमैरियां, मनका भाव फटने तथा समझानेमें असमर्थ, प्रलाप या अचेतन अवस्था शय्याका कड़ा मानस होना और बार बार करवट बदलना ।

ऐसिड फ्लम, ६, १० ।—कम्पकम्पी और जाड़ा, प्यासका अभाव, हाथ पैरकी अगुलिया बरफकी भांति जीतल, टाढ़की अवस्थामें बड़ी गरमी नैशिन प्यासका न होना, भीतर गरमी और बाहर जाड़ा, रातको और सुबह अधिक पसीना आना दूमे में धींधीमे विकारका उपशम होनेपर भी बल बढ़नेके लिये इसे देना ।

ऐसिड स्यूर ६ ।—स्त्रायविक क्रियाकी विलक्षणताके कारण रोगी अवसन्न, गलेमें घाव, हाथ पाँव ठण्डे, जाड़ाका सहन न होना, नाड़ी क्षीण और दृढ़, शीतोपर सफेद रंगके दाने,

सुप्त में घाव, उदरामय, गुच्छावरक पेशी में पक्षाघात और शरीर पर दाने होना ।

कार्बोमेज ३ विचूर्ण या ६, १२, ३० ।—हाथ पैर ठण्डा तथा पसीना ठण्डा, समस्त शरीर शीतल, जिस समय रोगी के जीवनो शक्तिका ह्रास हो, दृष्टि शक्ति में भी व्यतिक्रम हो और कान बहरे हो जायें ।

पैपटेमिया १५, ३ ।—नरम, मोटी अथवा दुत नाड़ी, प्रत्याप, शिर में दर्द, बदन में दर्द भीठ और जीभ सूखी, अस्थिरता अचेतन्यता, शय्याका गड़ना, गले में घाव, सांस लेने तथा छोड़ने में दुर्गन्ध, वमन या वमनोद्यम इत्यादि लक्षणों में ( रोगी पश्चिमी अवस्थामें ) ।

ब्रायोनिया एल्बा ६, १२, ३० ।—सुप्त का स्वाद तीता, जीभ रुखड़ी तथा मैली, शिर में असह्य वेदना, खासी और पक्षर में दर्द इत्यादि लक्षण, विकार यदि धीरे धीरे मालूम हो तो ब्रायोनिया और यदि तेजीसे विकार बढ़ता दिखाई दे तो क्रास टका देना चाहिये ।

विलाडोना ६, ३० ।—शिर में दर्द, मुखमण्डल लाल, गले के शिराका स्रन्दन, चक्षुतारा विस्तृत, प्रत्याप, खोंककर उठ बैठना ।

क्रासटप्स ६, ३० ।—पेट फूटना, पेट दधानेसे दर्द, अज्ञानता अवसन्नता, बीच बीच में अलवत् शामभय अतिमार,

विचारका भूलजाना, रातको अस्थिरता, दिनमें तन्द्रा गरमी तथा जाड़ा देकर ज्वरका आना, एक पार्श्वमें पसीना ।

मेराट्रम ऐल्वम् ६, १२, ३० ।—इच्छा न होने पर भी घावलेके घोघनकी भांति दस्त, यमन तथा यमनोद्यम, ऊपर दड़, पसीना ठण्डा, सुरत निस्तेज हो जाना ।

मार्क्यूरियस सस ६, विचूर्ण ३ ।—अन्तर्हीकी अन्तिमें घाव होकर रक्त बहना साथही ज्वरकी उद्दि, जीभमें चमक, सुइका स्वाद तीता या फीका, गलेमें या दांतोंके चट्टुवेमें घाव ।

हाइपोसाइमस ३, ६ ।—हुत, पूर्ण और कठिन माड़ी, सुखमण्डल उत्तम, शरीरका हिलना, घीरे घीरे प्रलाप, बिछावनका कपडा इत्यादि छींसना और एकाएक बिछावन परसे भाग जानेकी चेष्टा, आपही मलमूत्रका निकल जाना ।

टेरेबिन्थिना ६ ।—अंतर्हीसे रक्त बहना मूत्रका रुकना आमाशयमें ज्वाला, घाम और अलमय मल, नाकसे रक्त निकलना, रोगके उपशमके समय पर यदि अंतर्हीमें घाव हो और उसीके कारण यदि बार बार दस्त हो तो टेरेबिन्थिना प्रयोग करनेसे विशेष लाभ होता है ।

रोगका उपशम होनेपर दुर्बलताको नाश करनेके लिये रेसिड फस, चाइना, ऐमोनकार्ब, मक्समिका ।

पट्य ।—रोगके समय ठण्डा पानी, जवका मण्ड, साबू, वाल्मी, आरारोट, रोगी अत्यन्त दुर्बल हो जाये तो माशुर

छलीका शोरवा या थोड़ा दूध । रोगी कभी थकेला न  
जाय ।

## हामखर—( Measles ).

यह छुत्तर ( स्पर्शाक्रामक ) होता है । लड़कोंकी ही  
यह रोग हो जाता है और युवकों को कभी कभी होनेसे  
बड़ा कठिन हो जाता है । शीत अथवा बसन्तकालमें  
इस रोगकी उत्पत्ति होती है । इसका विष शरीरमें  
वेवस्त हो जानेके १०।१२ दिन बाद सर्दी, खांसी और  
झींक इत्यादि होती है । नाकसे पानी बहता है आंखें  
ज्वल तथा पानीसे भरी रहती हैं, कपालमें दर्द तथा खरमंग  
युक्त खांसी हो जाती है । शिरमें तथा पीठ, हाथ और पैरमें  
पीड़ा देकर ज्वर आरम्भ होता है, फिर ४।५ दिन बाद हाम  
होता है । ३।४ दिन हाम रहने पर आपही गायब हो  
जाता है और ज्वरभी छूट जाता है । एकाएक यह ज्वर  
आकर शरीरकी गरमी १०३ से १०६ डिग्री तक बढ़ जाती है  
और रोग भयंकर आकार धारण करता है । उसी समय रोगी  
सकना शुरू करता है और तन्द्रा भी आ दबाती है । अर्द्धि,  
वमन, वमनोद्यम, कोष्ठवह या चंदरामय, सांसकी नालीमें  
जलन, पुसपुस प्रदाह, आसकष्ट इत्यादि लक्षण दिखाई देने  
लागते हैं । किसी किसी रोगीको अतिसार या रक्तस्राव

होकर जीवनमें संशय उपस्थित हो जाता है । हाम बैठ जाना या प्रतिशय साक्ष या काखा रंगका हो जाना मन्दलक्षण सूचक है ।

**चिक्षित्वा ।**—सामान्य हाममें चिक्षित्वाकी कोई आवश्यकता नहीं है ।

**ऐकोनाइट १, १ ।**—अत्यन्त ज्वर, पूर्ण, कठिन और तेज भाड़ी, बारम्बार छँक, सजल चक्षु, कपालमें दर्द, सूखी खाँसी, गला खस खस करना, कोष्ठवह, वक्षस्थलमें दर्द अस्थिरता ।

**पलसेटिला १, ६१ ।**—( प्रतिपेधक ) सध्वाकाल और रातको खाँसी बढ़ना और गना घड़ घड़ करना, नाकसे गाढ़ा न्रेषा चहना तथा रक्त निकलना, उदरामय, पाक्वायकी विलक्षणता ।

**बैलेडोना १, ६० ।**—पूर्ण, कठिन भाड़ी, आँख और चेहरा ज्वाल, खाँसनेके समय स्वरनालोमें दर्द, स्वरभंग मस्तक उत्तम, तन्त्रामें रहना पर नींदका न आना, हटात् चमक् उठना ।

नाक और आँखसे यदि जलगिरि तो **यूकेशिया १ ।**—पलन या घमनीघमके साथ ज्वर रंगका घाममय दस्त और सूखी खाँसी हो तो **इपिकाक १ ।**—रोग उपशम हो जाने पर भी यदि सूखी खाँसी रक्त आय तो **फस्फोरस ६ ।**—हाम पूर्ण



तथा नीप न होकर बैठ जाय वा कुछ रह जाय तो त्रायोनिया है ।

**आनुपङ्गिक उपाय ।**—थोड़े गर्म जलमें कपड़ा भिगोकर वदन पोंछ डालना चाहिये । रोगीके शरीरमें ठण्डी जवा न लगनी चाहिये । खरके समय ठण्ठा जल, बाली, मिथी और आरारोट इत्यादि पथ्य देना चाहिये ।

## वसन्त वा मसूरिका (चेचक) (Smallpox)

वसन्त (चेचक) बड़ाही कठिन तथा छुतहर रोग होता है । वसन्तबीज (विष) शरीरमें प्रवेश होनेसे इसकी उत्पत्ति होती है । यह प्रधानतः दो तरहका होता है संयुक्त और असंयुक्त ।

**संयुक्त वसन्त ।**—२।३।४ या इससेभी अधिक दाने वदनमें एक साथ रहनेसे उसकी संयुक्त वसन्त कहते हैं । इसी तरह गोटियां दाने पत्रकर उसमें पीप होजाता है, चेहरा, गला, माथा, नाकके भीतर होनेसे सांघातिक होता है । यह विष शरीरमें प्रवेश करनेके ११।१२ दिन बाद खर आता है । इस खरमें शीत, दाह, सब शरीरमें दर्द, वमन इत्यादि उपसर्ग दिखाई देते हैं । खरके दोही तीन दिन बाद दाने बाहर निकल आते हैं । ५।६ दिनके बाद इसमें

पानी भरकर पीप हो जाता है और ८।१० दिनों के बाद दाने सूखने लगते हैं । इस रोगमें ज्वर अधिक होनेसे बहुतसे रोगी मर जाते हैं ।

**असयुक्त वसन्त ।**—दाने अलग अलग दिखाई दे तो उसे असंयुक्त वसन्त कहते हैं । इसमें ऊपर कड़े लक्षण दिखाई देते हैं पर ज्वर उतना प्रबल नहीं होता इससे यह भयकर नहीं है ।

**विकृति ।**—वसन्त रोगकी प्रथम अवस्थामें दानोंसे यदि रक्त बड़े और रोगी अवसन्न हो जाये तो बैपटेगिया ३५ देना चाहिये । पीठ या कमरमें दर्द, हुत माछी, प्रबल ज्वर और अलवत् दस्तमें मेराइम भिर ३५ पीप मने दाने सांस नालीमें दर्द, वमनेच्छा वा वमन, ज्वर इत्यादि लक्षणोंमें एण्टिमार्ट ६ वा १म क्रमका विघूर्ण । इस रोगकी सभी अवस्थामें यह दूसरे औषधके साथ पर्यायक्रमसे दिया जासकता है । दूसरी अवस्थामें ज्वर, दानोंमें पीप गलेमें घाव, रक्त मिश्रित आमस्य अतिसार, इत्यादि लक्षणोंमें मार्कस ६ । दाने पूर्णतया यदि बाहर न हो या एकाएक बैठ जाय तो रुविनीका सिरिट कौम्फर वा जेलसिमियम १५ प्रयोग करना चाहिये । गौ बीजसे छपवानेके बाद यदि दाने बाहर हो और उसीसे और और सपसर्ग प्रकाश हो तो यूजा सूस परिट १ दाने पकनेके समय यदि सन्निपातिक लक्षण प्रकाश हो तो

फ्लासटक्स ३० प्रयोग करना चाहिये । दाने बाहर होनेके बाद चेहरा और दानेके चारो तरफका स्थान सब फूस जोये और रात्रिमें उसमें खुजलीकी दृष्टि हो तो एपिस-मेस ३x । दानेमें पीप होनेके बाद ज्वरातिसारका लक्षण यदि दिखाई दे तो आर्सेनिक ६ वा ३० देना चाहिये ।

**आनुषङ्गिक उपाय ।**—जिस घरमें हवा आती हो उसी घरमें रोगीको रखना चाहिये । बार बार रोगीका बिछावन बदल देना चाहिये और सदा रोगीको कोमल गय्यापर सुलाना चाहिये । दानोंमें पीप होकर सूख जानेके बाद गर्म जलमें साफ कपड़ा भिद्धाकर पोछ देना चाहिये । रोगके भोग समयमें साबू वाली आरारोट इत्यादि तथा आराम होने पर हल्की पुष्टिकर चीज खिलानी चाहिये ।

### पानीवसन्त या जलवसन्त ।

( Chicken pox )

जलवसन्त वसन्त रोगकी तरह छुत्तहर रोग नहीं है । लसके और छोटे बच्चोंको यह रोग अधिक होता है । जल-वसन्तमें ज्वरभी बहुत थोड़ा दिखाई देता है । दाने चिपटे न होकर खड़े और सुहृपर पतले होते हैं इसमें पीप भी नहीं होता । ३।४ दिनोंमें दानोंमें जल भरकर फोले संरीखा भी जाती है और ६।७ दिनोंमेंही सूख आवे हैं । इसमें प्राण

जानेका कोई डर नहीं रहता तथा आसटक्स ६ सेवनसे अच्छा लाभ होता है ।

## विसर्प । ( Erysipelas )

ज्वर आये हुए शरीरके प्रसारणशील प्रदाहको विसर्प कहते हैं । या तो रक्त दूषित होकर या शरीरके किसी स्थानमें घोट लगनेके कारण इस रोगकी उत्पत्ति होती है । पश्चिमे कड़ा हुआ विसर्प सदा गले और चेहरेहीपर दिखाई देता है और पिछला शरीरके किसी अंशमें भी उत्पन्न हो जाता है । तीव्रज्वर, थोड़ा जाड़ा और कम्पकम्पी, भव-सन्नता, शिरमें दर्द, शिरका घूमना, प्यास, शरीर गर्म कभी बमन या बमनेच्छा और अतिसार या उदरामय आदि लक्षण दिखाई देते हैं । गलेमें दर्द, तन्द्रा, भ्रम और नाकसे रक्त बहना इत्यादि लक्षण भी दिखाई देनेके बाद शरीरमें जलन होकर छोटे छोटे दाने बाहर शरीरपर निकल आते हैं । फफोले बाहर होनेकीसे दाह कम होजाती है ।

चिकित्सा ।—बेल्लेडोना १, २ । शरीरमें जलन हो कर यह उज्जला, साफ और सूखा होजाता है, चेहरेमें जलन बड़ी गर्मी, शिरमें दर्द, चक्षुतारा विस्तृत, आक्रान्त स्थान स्कीत, ( विशेषतः सु ४ और मक्षकके विसर्पमें ) ।

आसटक्स ६ ।—गलेमें, सु ४में, और शरीरके दूसरे दूसरे

स्थानोंमें लाल, तथा जल भरे हुए फोले, उसके बगलमेंकौ जगह फूली, सब शरीरमें दर्द, फोलोंसे रस निकलना और दाह ।

एपिस मेल ३, ६ ।—रसपूर्ण, तप्त, और दाह युक्त फोले, यह अतिशय फूल जाते हैं और खनुभाते हैं, छूरी भोंकनेकी नाईं दर्द, दाहवाली जगह लाल और रसपूर्ण न होनेपर भी तेजीसे सूज जाती हो ।

आर्सेनिक ६, ३० ।—जलते हुए तथा दर्द करते हुए काले रंगके फोले, अथवा पीप भरे फोले सुखी, वैचैनी तथा अधिक प्यासमें ।

एकोनाइट १ ।—बिसर्पकी पीडिका बाहर होनेके पहिले, ज्वर आकर आक्रान्त स्थान प्रदाह युक्त हो तो ।

यदि आक्रान्त स्थानमें ज्वानाकार दाह और फोलोंसे रस गिरने लगे तो कैन्येरिस ६ फोलोंमें पीप, हो जानेका डर हो तो आर्सेनिक ६ तथा कार्बोमैज ६ । सड़ता हुआ दिखाई दे तो लैकेसिस ६ । एक जगहके फोले अच्छे होकर दूसरी जगह उठने लगे तो पल्सेटिला ६ ।

पथ्य ।—रोगकी प्रबल अवस्थामें साबू या वार्मि भारारोट और अच्छे होने पर दुग्ध और मागुर मछलीका शेरवा ।

## उपभिक्षीप्रदाह । ( Diphtheria )

यह एक प्रकारका गलेका रोग है । एक प्रकारका विष रक्तमें मिला आनेके कारण यह रोग उत्पन्न होता है । सामान्य डिप्थिरियामें गलेमें दर्द, खानेमें कष्ट, गलेमें ज्वाला इत्यादि इसके लक्षण हैं । रोग सांघातिक होनेसे पश्चिमे प्रवल ध्वर, दन्त कैं, कम्पकम्पी, दुबलता, अस्थिरता फिर भिक्षी आक्रान्त होकर शाल रंगकी होजाती है । टनसिलगान्थ और जीभ फुलकर उसकी ऊपर पतला पर्दा पड़ जाता है । वह भिक्षी न निकालनेसे सास बन्द होकर मृत्यु होजाती है ।

**चिकित्सा ।**—आक्रान्तस्थल प्रदाहयुक्त मुख और आँखें शाल रंगकी, शिरमें दर्द, गलेमें दर्द, पृष्ण और कठिन नाड़ी, कोमल तानू, गलेकी घण्टी और खर नालीमें प्रदाह इत्यादि लक्षण दिखाई दे तो एकीनार्डिट १, विसाडोना २५ पर्याप्त क्रमसे देना चाहिये । आक्रान्त स्थानमें दर्द, दप् दप् कृत्रिम पर्दा उत्पन्न, तालुमूल और गलकोपमें स्यासी, जीभ पीली, सांस लेने तथा छोड़नेमें दुर्गन्ध, कोई चीज निगलनेमें दर्द, खार बहुत गिरना, गन्ना दबानेसे दर्द, इत्यादि लक्षणोंमें मार्क्यूरियस सायनेटास ६ । गलेमें दूसर रंगका घाव पव-सन्नता, सांस लेने तथा छोड़नेमें दुर्गन्ध रहती एसिड म्यूरियेटिक १ । रोगकी श्रेष्ठ अवस्थामें आड़ी चीज , घत स्थानसे पीप या रक्त निकले तो आर्सेनिक ६ ।

## बहुव्यापक सर्दी ।

( Influenza )

वायु दूषित होनेके कारण यह रोग होता है । सर्दीके लक्षणोंकी भांति इसके भी लक्षण दिखाई देते हैं, शरीरका चमड़ा गर्म और सूखा रहता है, मस्तकके सम्मुख भागमें तेज दर्द, नाकसे जलके तरह कफ गिरना, आंखोंसे जल बहना, घदनमें ऐंठन, बमनोद्देश, छींक और अत्यन्त दुर्बलता ।

**चिकित्सा ।**—इन्फ्लूयेन्झिनम १० एकही बार देनेसे यह रोग दूर हो जाता है । परन्तु एकमात्रासे अधिक कभी न देना चाहिये । इससे यदि ४८ घण्टोंमें कोई लाभ न दिखाई दे तो सुरत दूसरी दवा देनी चाहिये । सांस लेनेमें कष्ट, मानों सोनेसे ऐसा मालूम हो कि सांस बन्द होता है । नाकसे बहुत पतला, गर्म तथा ज्वालाकर स्नेहा प्रवाह, छींक स्वरभग, आंखोंसे जल गिरना, अवसन्नता, वक्षस्थलमें शीतलता अनुभव इत्यादि लक्षणोंमें आर्सेनिक ६ । उल्लिखित लक्षणोंके साथ यदि इन्डिगेमें तेज दर्द हो तो यूपेटोरियम पाफॉर्नियेटम १२ । सांस लेनेमें सांय सांय शब्द होना, कष्टकर खांसी, स्नेहाका अधिक गिरना, घड़ घड़ शब्द, कमर पीठ और शिरमें दर्द हो तो ऐण्टिमार्ट १ । स्वरनाली और वक्षस्थलमें दाह कष्टकर खांसी, कभी सादे कभी पीले रंगके कठिन स्नेहाके साथ खांसी, रोगकी पुरानी अवस्थामें फुसफुस

प्रदाह, दुर्यलता, स्त्रीणां निवाल देनेमें अक्षमता । फेनयुक्त, रक्तमय या पौषकी तरह स्त्रीणां गिरे तो फसफोरस ६ । बार बार खांसी होनेमें हाइड्रोसियानिक एसिड १ ।

प्रतिषेधक ।—वैपटेशिया १२ या इन्फुलुयेस्त्रिम २० सिर्फ एक खुराक देना चाहिये ।

—०—

## धातुरोग ।

वात, यक्ष्माकास इत्यादि कितनेही रोग पिता माताकी रहनेसे लड़कोंको भी होते हैं इससे इन्हें धातुरोग कहते हैं ।

—०—

## वातव्याधि ।

### Acute Rheumatism.

लक्षण ।—शरीरके सन्धियोंमें यह रोग होता है । कभी कभी २।१ सन्धि और कभी कभी सन्धिया इस रोगसे भर जाती हैं । रोगके प्रारम्भमें ज्वर आकर सन्धिस्थल सूजकर लाल नाल और प्रदाहयुक्त हो जाते हैं और बड़ी दर्द छिनने छोलनेसे बढ़ जाता है, वदन गर्म पसीनेसे दुर्गन्ध, कम्पकम्पी कण्ठियत, शिरमें दर्द, प्रलाप, प्यास, तथा दृष्टिपिण्डकी क्रियाकी विलक्षणता, नाड़ीपृष्ठ और कठिन, जीभ मैली मूत्र कभी खाल कभी चञ्चल । इस रोगमें शरीरकी गर्मी १०४।५ डिग्री पर्यन्त बढ़ जाती है । लक्षण वात रोग, २।१ सप्ताह



लगने देना उचित नहीं है । आक्रान्त स्थान गर्म कपड़ा या रुईसे बांध देना उचित है । रोग उपशम होनेपर रोटी या भात खानेको देना । गर्म जलसे स्नान ।

## पुराना वात ।

( Chronic Rheumatism ,

इसमें तरुण वातके सभी लक्षण वर्तमान रहते हैं । केवल सन्धिस्थान कठिन होता है । दर्द भी कम ही रहती है परन्तु आक्रान्त स्थान जलसञ्चय होकर फूल उठता है ।

चिकित्सा :—कैलिहाइड्रो ६, ३० । अत्यन्त तीव्र दर्दके कारण बार बार अवस्थाका बदलना, आक्रान्त स्थान का फूल जाना तथा कड़ा होजाना, रोगीकी चलनेकी शक्ति नहीं रहती है तरुण वातरोगके बाद । सन्धिकी दुर्बलता, गरमी रोगसे हुआ ग्रन्थिवात ।

रहोडिराइन ३० ।—हात, पैर तथा जांघोंमें तथा हातके मध्यमें दर्द, स्थिर रहने पर और हड्डिके बाद दर्दको बढ़ना, आहारके समय तथा आहारके बाद दर्दका दब जाना, रातमें खास करके—पिछली रातमें दर्दकी हडि, हड्डिके पहिले और ग्रीष्मकालमें पीड़ाका आक्रमण । सन्धिसंज्ञमें सूचक जानेकी भांति दर्द ।

सासकोमारा ६ ।—हड्डिके बाद जलमें भीजने या भीजी

भगइमें बैठनेके कारण रोग उत्पन्न हुआ हो तो, विश्रामके समय पीड़ाकी वृद्धि, घुमनेसे उपशम, रङ्ग रङ्ग कार खिन्नवत् दर्द, पीठ, मांस और पैरोंकी सन्धियोंमें अधिक दर्द, पसीना, दुर्गन्धयुक्त मूत्र ।—

फाइटोव्याक्का १ ।—आक्रान्त स्थान भार और वेदनायुक्त तथा शीतल भी, शीश और वर्षा ऋतुमें पीड़ाकी वृद्धि, आक्रान्त स्थान सूजा हुआ और लाल ।

कष्टिकम १, २० ।—कन्धेमें, उर और घुटनेमें दर्द, दर्दके कारण बदन झिलानेकी शक्ती, परन्तु झिलाने पर पीड़ाका कम न होना, कन्धेमें दर्द होनेके कारण माथेकी तरफ झायका न उठना, सन्ध्या समय दर्दका बढ़ना तथा सुषुप्तकी घटना, रातकी सुखपूर्वक न सो सकना, चंगुलीकी सन्धियोंमें टकाकर पकड़नेकी भांति दर्द ।

माकर्परियस मोल १, २० ।—खींचनेकी भांति हड्डियोंमें दर्द और उसीके साथ सामान्य खर, शीत बोध, आक्रान्त स्थान में अल्प गन्धकी नाई, दुर्गन्धयुक्त बहुत पसीना, पसीना होनेपर भी दर्दकी शान्ति न होना, रातकी बिछावणकी गर्मीसे दर्दका बढना, समय समय पेट पेटकर शामसय मसखान गरमीके कारण उत्पन्न भये पातमें ( यदि पारा न खिन्नाया हो ) ।

सक्षिप्त चिकित्सा ।—घुटना और पैरकी गांठमें दर्द हो तो पाण्डुस १०, विश्रामायस्थान रोगकी वृद्धि हो तो

झसटक १०, हिलने खोलनेसे बड़े तो, ब्रायोनिया १०, छोटी छोटी सन्धियां आक्रान्त हों और उसीके साथ सर्दी वर्तमान हो तो लेडस ६, रोगका भोग शेष हो और सम्पूर्णरूपसे आरोग्य करनेके लिये सल्फर २०० । छातीके वातमें । ब्राइओ आर्षिका, रोडोडे, झस, सिमिसि ।

हृत्पिण्डके वातमें । ग्राइजि, डिजिट, ऐको, मैराइम, काकेटस, ब्रायो ।

प्रमेहजनित वातमें । मार्क-विम-आर्ष, ऐको, पलस, सार्सा । कसरकी वातमें । ऐको, आर्निका, सिमिसि, सिकेल, ऐन्टिमटार्ट, आर्सेनिक और झसटक ।

उरुसन्धिके वातमें । कालोसिन्य, ऐको, झस, आर्स, सिमिसि, नक्स, फाइटो ।

गठिया वातमें । एको, कलसि, कैलकार्ब, सैबिना, ( तरुण अवस्थामें ) ऐमन फस, कैलफस, कष्टिकम, लाइको सल्फर ( पुरानी अवस्थामें ) ।

पथ्यापथ्य ।— अधिक घी और तैलका पदार्थ सेवन, मछली मांस तथा मद्यपान निषिद्ध । पुराने आवलका भात थोड़ा दूध, दाल, भुजिया, रोटी, बरफी, मोहनभोग इत्यादि पण्य देनी चाहिये ।

## उपदंश ( गरमौ ) ( Syphilis )

उपदंश बड़ा बुरा रोग है । इस रोगके रोगीसे संगम तथा सहवाससे यह बिमारी उत्पन्न होजाती है । उपदंशका विष शरीरमें घुसनेके १० दिन बादही यह रोग उत्पन्न होजाता है । पहिले मसुरीकी भांति साख चक्के उत्पन्न होते हैं फिर तीन चारही दिनोंके बाद फोलोंकी भांति उसका आकार हो जाता है । पहिले इन फोलोंमें जल रहता है पर फिर पीप उत्पन्न होकर गलना शुरू होजाता है । घावके चारो तरफका भाग ऊँचा रहता है और मध्यका भाग घीरे घीरे गहरा होता चला जाता है । इस उपदंशको कठिन उपदंश कहते हैं । एक प्रकारका और भी कोमल उपदंश होता है जिसका प्रान्त भाग ऊँचा या कठिन होता है । कभी कभी यह घाव उत्पन्न होने या घुसनेके १५ या २० दिन बाद बाघी उत्पन्न होजाती है । कठिन उपदंशके बाघी होकर प्रायः बँठ जाती है परन्तु कोमल उपदंशकी बाघी हमेशा बनी रहती है । उपदंश होने के कुछ दिन बाद सब शरीरमें खुजली तथा ताम्बेके रंगके जसम, चक्के फूट निकलते हैं । गलेमें फोड़ा, हाथ पैर तथा भाँखोंमें हाड़ हाड़ सन्धि सन्धिमें दद, सिरके किनका उठना इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं ।

**चिकित्सा ।—मार्कसस १ ।—**उपदंशकी

अवस्थामें जब फोड़ोंमें पीप उत्पन्न होजाता है । फोड़ा घीरे घीरे फैलता जाता है, सन्धि तथा इच्छियोंमें दद, सुँह गला

और सांस लेनेकी नालीमें दाह, फोड़ेके ग्रान्तभाग-कठिन, मध्यभाग कोमल और उजला । उपदंशके साथ प्रमेह इत्यादि हों, आधी और दूसरे चर्मरोग तथा फोड़ेसे पतला पौपका बढ़ना इत्यादि लक्षणोंमें मार्क-कर ६ ।

एसिड नाइट्रिक ६ ।—उपदंशकी पहिली अवस्थामें ग्रान्त-भाग ऊँचा होकर अधिक रक्त ग्रहता हो तो या लठके लठ-कियोंको कौलिक उपदंश हो अथवा पारेका अपेक्ष्यवहार होने के कारण रोगी क्षीण, दुर्बल और शरीरके माना स्थानोंमें फोड़ा होगया हो, तो २ ड्राम नाइट्रिक एसिड १ पाइण्ट जलके साथ मिलाकर रोज फोड़ा घोलनेसे अच्छा फल दिखाई देता है ।

कैलि-हाइड्रो १० ।—पुराना उपदंश-विष नाश करनेके लिये यह औषध अधिकतम है बहुत दिनोंतक गर्मी वर्षमान रहे तथा साथही दांतकी जड़में फोड़ा हो या सूजा हो, तालु में फोड़ा होगया हो, हाड़ हाड़-सन्धि-सन्धिमें दद हो, सब शरीरमें फोले और उपदंशका फोड़ा गलता दिखाई दे ।

सलफर ६, १२, १० ।—उपदंशकी सभी अवस्थाओंमें बीच बीचमें सलफर खिलाना चाहिये, विशेष करके घावका मध्यभाग पर सलसरंगका लेप दिखाई दे ।

अरुम मेटोलिकम १ विधूर्ण यो ६ ।—सुख और नाकमें घाव, लिङ्गमूलके मांसकी वृद्धि (पुराने उपदंशमें) विशेष करके रोगी सदा दुःखित रहे और बाष्पहत्याकी चेष्टा करे ।

कभी कभी हेपर सल्फर ६, आर्सेनिक ६, कैसी स्रो-  
रि-  
कम ६, एसिक फौसफोरिक ३० इत्यादिकी भी जरूरत  
पड़ती है ।

साधारण नियम १— घाव मित्य साफ करलेना  
चाहिये । जब तक घाव आराम न हो जाये तब तक  
मच्छी या मीठा न खाना चाहिये । ज्वर रहे तो लघु पथ्य,  
और ज्वर न हो तो हल्की पुष्टकर चीज खिलानी चाहिये ।

## बाघी ( Bubo )

बाघी उठे तो उसे बैठानेकी चेष्टा न करके पुष्टिन्  
देकर पकाना वो चिरना चाहिये । पर मासूर गोप  
इत्यादि अच्छा करनेके लिये, माक्सूरियस ६, हेपर सल्-  
फर ६, आर्सेनिक ६, लकेसिस ६, का प्रयोग करना चाहिये ।

## गण्डमाला ( Scrofula )

१ । रक्त धूपित हो कर शरीरके कई स्थानोंकी ( जैसे  
गला, गरदन वगैरह या पेट ) गठि उठ जाती है । कभी  
कभी बचस्यल, भाग्य, काम, भाक इत्यादि स्थानोंमें घाव हो  
कर रोगीको दुर्बल कर देता है ।

पितामाताकी गण्डमाला, या उपर्दश दोष, तथा अस्वस्थ

कर स्थानमें बास करनेसे, अच्छा-खाना न मिलनेसे यह रोग उत्पन्न हो जाता है ।

**चिकित्सा ।—**वेलेडोना १, ६ ।—प्रदाहजनित गांठों

का फूलना और दर्द, गला भुंकानेमें कष्ट ।

कैल्केरिया काव्य १, ३० ।—घांखोंमें जलन, खुसोदर, अतिसार, कान या ग्रन्थि सूजी हुई और पीप भरों, नाक साख और सूजी हुई ।

सलफर १, ३० ।—बगलकी गांठ, तालूमूल, नाक और घोंठोंकी सूजन घुटने तथा दूसरे दूसरे सन्निवृत्त कठिन, पट्टोंका फूलना लड़के लड़कियोंकी घांखोंमें जलन, कानके पीछे तथा शरीरके दूसरे दूसरे स्थानोंमें दाने, शरीरका रुन्न आदि लक्षणोंमें ।

मर्कूरियस आयोडेटास १x विचूर्ण ।—तालूमूल में घाव और प्रदाह, गलग्रन्थि का फूलना और कठिन । तालूमूलमें दप् दप् दर्द ।

साइलिसिया १, १० ।—ग्रन्थियां सूखकर सफेद रंगकी होजाये तो ।

अरम्-मिट १, फसफोरस १, फेरस १, चायना १, सीपिया १, पायोडियम १, डालकैमैरा १, वैडिएगा १x की भी समय समय जरूरत पड़ा करती है ।

**पथ्य ।**—साफ जवा सेवन, और ठंडे पानीमें स्नान

## यक्ष्माकास ।

### Phthisis or Consumption.

एक प्रकारका जीवाणु फुसफुसमें प्रवेश करने से फुस-फुस शीघ्र शीघ्र क्षय होना चारम्भ होता है, उसीका नाम क्षयकास है। पितामाताको यह रोग रहनेसे बचकेको भी हो जाता है। सदा दूषित वायु सेवन तथा भीजी जगहमें रहने और अपुष्टिकर भोजन रक्तकी अशुद्धता, सांसके साथ भूख शरीरमें प्रवेश करनेसे, बहुत परिश्रम, पुनः पुनः सन्तान प्रसव करनेसे शरीर दुर्बल हो जानेपर यह रोग उत्पन्न होता है। पहिले सूखी खांसी होती है, सामान्य परिश्रमसे कष्ट होने लगता है, मूख बन्द हो जाती है बारबार प्यास लगती है, बख्खसमें दर्द सांसलेनेमें कष्ट, नाड़ीकी गति तेज, सन्ध्याके समय बदन गर्म हो जाना स्वरमद्ध सीसा इत्यादि लक्षण दिखाई देता है। धीरे धीरे खांसी बढ़ कर पीले रंगका कफ गिरने लगता है और कभी उसमें रक्त भी दिखाई देता है।

**चिकित्सा ।**—मैसिकिनाल टिचवार किचसिनाम १०, २००, रोगकी सभी अवस्थामें लाभदायक है। ऐसी चाया



होती है कि यही इस रोगकी एकमात्र दवा समय पाकर हो जायेगी । डाक्टर बाबैट इसके बड़े भारी प्रशंसक हैं ।

कैल्केरिया कार्बो ६, १० ।—अग्निमान्द्य, अस्त उद्गार, विशेष करके तेल, घी और मीठा पदार्थ सेवन करनेसे, रातमें खांसी बढ़नेसे, खांसते खांसते कठिन श्लेष्मा, दुर्बलता रक्तस्राव, छाती झूवे ही दर्द ।

वैलेडोना ६ १० ।—सूखी खांसी, बाहर दवानेसे स्वरनालीमें दर्द, स्वरभङ्ग, मंथ्याकी बदन गर्म हो जाना बहुत देर तक खांसते खांसते रक्त मिना हुआ कफ निकलना, वक्षस्थलमें दर्दके साथ (सन्ध्याको या रातको सोती समय) खांसीकी वृद्धि ।

आयोडियम २, ६ ।—घट्यखांसीके साथ थल्य सूजी हुई, ठोटमें दर्द और उदरामय, बदनका चमड़ा सूखा और रूखड़ा, चेहरा लाल, भूखकी अधिकता, दूध, तेल और चर्बी मिला हुआ पदार्थ पचानेमें असमर्थ, शरीर शीघ्र शीघ्र दुर्बल होते जाना ।

फसफोरास ६ ।—सूदु और ठुत नाड़ी, सूखा और गर्म चमड़ा, फुसफुसमें घाव, हरे रंगका दुर्गन्धित कफ गिरना, प्रायः पसीना और उदरामय, देह शीथ ।

फेरम मिट २ विचूर्ण ६ ।—फुसफुससे रक्तस्राव, छाथ पैर उजले, उदरामय, शरीरमें रक्तकी कमी, सूखी खांसी, वक्षस्थलमें दर्द हो कर रक्त निकलना ।

पल्लसेटिस्ता ६ ।—रोगकी पहिली अवस्थामें अग्निसन्ध

हो कर जिस समय तेज, चर्बीयुक्त पदार्थ, या काठसिंभर आयल न पचे, रातमें खांसी और कफकी हृत्ति, अधिक गाढ़ा और पीला तथा तीता कफ गिरे ।

नाइकोपडियम १२-३० ।—आमाशय और पेटमें दर्द, भस्त्र फुलकर मलरोध अग्निमन्द, रक्त मिला दुग्धा नमकके स्वादका कफ, सूखी खांसी खांसते खांसते अत्यन्त बेचैनी, फुसफुसमें जेलन, दुर्गन्ध डेकार, थोड़ा खानेसे भी पेट फूलना ।

आर्सेनिक ६, ३० ।—रोगकी सभी अवस्थामें ( विशेष करके सदरामयमें ) इसे प्रयोग करना चाहिये ।

ड्यूपर सल्फर ६ ।—स्त्रभट्ट, खांसते खांसते दौभाग और रक्त, ( या पीप ) निकलना, सोनेसे सांस लेने तथा छोड़नेमें कष्ट, गच्छमात्रा धातु विशिष्ट युवक तथा युवकियोंके लिये यह दवा अत्यन्त उपकारी है ।

सल्फर ३० ।—बीच बीचमें ( विशेष करके रोग पुराना होनेसे ) देना उचित है ।

ऐकोनाइट ६, ड्रोसेरा ६, खानेम ६, ब्रायोनिया ६, भी  
समस समय देना चाहिये ।

पथ्याट्रि ।—बकरीका दूध, गायका दूध, घी, मखन, छोटी मछली या बकरीके मांसका शोरवा, सूजीकी रोटी, मू ग, पक्षवत्त इत्यादि सुपथ तथा काठसिंभर आयल भी इसमें फायदा करता है । फुंगसका व्योहोर में करना चाहिये ।

बहुत बर्फ, या ठण्डा भी न लगने देना चाहिये । रातको जागरन, बहुत परिश्रम तथा स्त्री सहवास भी न करना चाहिये ।

## बहुमूत्र ( Diabetes ) .

वङ्गदेशमें कवि भारतचन्द्र राय, वाम्सी केशवचन्द्र सेन, राजनीति विचारद कृष्णदास पाल, अथर्व गुप्ताधार विद्यासागर महाशय इत्यादि महोदयोंने इसी रोगमें अपना अपना प्राण त्यागा है । इस रोगकी उत्पत्तिका कारण आजतक निर्णय न हुआ, रोगकी पहिली अवस्थामें चमड़ा सूखा, और रुखड़ा, अत्यन्त प्यास, अधिक भूख, दन्तमूल फूला, कोष्ठवृद्ध, बारबार मूत्र त्याग, शरीरकी चोखता, सांस लेने तथा छोड़नेमें दुर्गन्ध, जीभ फटी फटी तथा लाल, संजकी भांति मल इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं । घीरे घीरे भूख बन्द हो जाती है । स्त्रियोंका सरायू कण्डूयन, पुरुषकी काम इच्छा प्रबल होजाती है । फिर फुसफुस प्रदाह और ज्वर खांसी इत्यादि लक्षण दिखाई देने लगते हैं । रोगी ४ सेरसे २० सेर तक दिन रातमें मूत्र त्याग करता है । मूत्रमें मिठास रहनेसे उसे मधुमिश्र कहते हैं मिठास न हो तो मूत्रमिश्र । मूत्र पर यदि मखी और चींटी लगे तो समझना चाहिये कि उसमें मिठास है ।

चिकित्सा ।—सिजीवियम जैम्बोलिनम १५—यह जाम्बा जाम्बुनके बीजका, पूर्ण—रोगकी सभी अवस्थामें दिया

जा सकता है । इसे सेवन करनेसे मूत्रका परिमाण कम और मिठास चली जाती है ।

एसिड फससरिक—१५६ ।—सायुमण्डलके पीड़ाके साथ बहुत बार मूत्रत्याग, रातको कमरमें दर्द, शरीरचय, धातु-दौर्बल्य, चित्त चञ्चल ।

यूरिनियम नाइट्रिकम १५, ३ ।—अपरिपाक, अतिशय प्यास, कोष्ठबन्ध, जीभ साल, निद्राहीनता, पेशाब करतीं समय जननेन्द्रिमें अलन, आंख तथा नाकसे पीपकी भांति स्रोभात्साग, दुर्बलता ।

क्योजोट ६, १२ वा १० ।—बार बार मूत्रत्याग करनेकी इच्छा, वर्षहीन या लाकरनका मीठा मूत्र, मूत्रवेग रोका न जासके इत्यादि लक्षणोंमें ।—

बहुमूत्रके साथ शोथ हो तो आर्सेनिक ६, १० । पेशाब त्याग करनेकी समय ज्वाला हो तो टेरिविन्विना ६ । रोगी शीघ्र २ दुर्बल होता जाय तो आर्जेंटम ६ । सिला १ मूत्रमैदमें उपकारी होता है ।

पथग्रापथ १ ।—नये चावसका भात वा चाटकी रोटी, मखली, मीठा, घी या अधिक तेल, मिली हुई चीज़ न खानी चाहिये । पुराने चावसका भात, धानका आवा, मधु, मट्ठा, जवकी भू सीकी रोटी, गुखर, मोषा, मूली, पल्पस इत्यादि प्य । मांसका जूस और मखन निकासी दूध पीना चाहिये,

नींबूका रस मिना हुआ ठण्डा पानी, और चावला खानेसे  
प्यासकी शान्ति होती है ।

## शोथ ( Dropsy )

शरीरके किसी अंशमें जल संचय हो तो उसको शोथ कहते हैं । शोथ स्थानिक (जब माथा पेट इत्यादि शरीरके किसी स्थानमें हो) और सार्वजनिक (जब समस्त शरीरमें हो) दो प्रकारका (होता है) त्वककी नीचे जो शोथ होता है वह पहिले पैरके तलवेमें उत्पन्न होता है फिर धीरे-धीरे ऊपर बढ़कर समस्त शरीरमें हो जाता है, पिलहीका बढ़ना, रजोवैलक्षण्य, मैलेरिया ज्वर, अथवा आर्सेनिक सेवन करनेसे, पुराने इत्यादि रोगोंकी शेष अवस्थामें शोथ हो जाता है । फूली हुई जगह नर्म और चमकदार होती है । अङ्गुलीसे चापने से जगह बैठ जाती है अरुचि, प्यास, बदनका चमड़ा सूखा और खुरदरा रहता है पेशाब थोड़ा और लाल होता है । इतिष्यके किसी रोगके कारणसे जब शोथ उत्पन्न होता है तब पहिले आँख और मांसमें सूजन होती है । ज़ीड़ा और यकृतके कारणसे जो सूजन होती है, वह पहिले पेटमें होती है (अर्थात् उदरी होती है) रजोवैलक्षण्यके कारणसे उत्पन्न हुई सूजन पैर हाथ और मुँह पर होती है ।

चिकित्सा ।—आर्सेनिक-६, १२ या ३० । सब

प्रकारकी सूजनमें आर्सेनिक फायदा करता है। वक्षस्थलकी पीड़ाके कारण हाथ, पैर और सब शरीरकी सूजनमें और यिन्हीं यक्षतादि बढ़नेके कारण पेटकी सूजनमें, दुर्बलता शोथता, नाल वर्णकी सूखी और रुखड़ी जीभ, सूक्ष्म और विषम गति विशिष्ट नाड़ी, हाथ पैर ठण्डे, बारम्बार प्यास, परन्तु थोड़ा ही जल पीनेसे द्रुति वक्षस्थलमें घाँपकर धरनेकी नाश्त दर्द, सोते समय साँस लेनेमें कष्ट, बदनका रंग पीला, इन सब लक्षणोंमें आर्सेनिक अवश्य देना चाहिये।

एपिस मेल् ६।—मूत्रमें विकार रहनेके कारण सूजन।

भारत खरके बाद सूजनमें, गर्भावस्थाके पैरकी सूजनमें, तरुण शोथ और प्यास न रहने पर, प्रनापावस्थामें उधर उधर दृष्टि करनेमें, दात कड़कठानेमें, शरीरके आधे अङ्गके सन्दनमें तथा पेशाब कम और माथे पर पसीना हो तो।

- एपोसाइनम १५।—माया भारी, दुर्बलता, सदा तन्द्रा या अस्थिर निद्रा, नाड़ीकी गति मृदु, कोठबद्ध पर मल कड़ा, नर्दी, प्राप ही प्राप पेशाब निकल जामा, पेटके ऊपरसे बक्षस्थल तक भारी मासूम होना वक्षस्थलकी पीड़ाके कारण रोगी बारबार दीर्घ निश्वास त्याग करे, द्रुतिपण्डकी क्रिया धीर हो।

सिज़िटेलिस ६५।—दुर्बलता, धीर और विषम गति विशिष्ट नाड़ी, साँस लेने तथा छोड़नेमें कष्ट, मुखमण्डल मलिन, रोगी चित्त न हो सके, द्रुतिपण्डकी क्रिया वैपम्य, हृद-रोग और मूत्रगत्य अनित्य शोथमें।

खिलाना चाहिये । यदि उस बार भी कोई लाभ न दिखाई दे तो नेट्राम सल्फ २० खिलाना चाहिये । यह औषध प्रायः सभी अवस्थाओंमें लाभदायक है । इस ग्रन्थमें लिखे हुए “ग्रीहा” “उदरामय” “अति रज” “पुरानी सूतिका” इत्यादि रोग देखिये ।

नियम ।—पुष्टिकर और शीघ्र पचनेवाला द्रव्य भोजन, सुबह और शामको जरा घूमना चाहिये (यदि सहन हो तो) मटौके जलमें तथा थोड़े गर्म जलमें थोड़ा नमक मिलाकर नहाना चाहिये ।



## ४ । स्नायुमण्डलके रोग ।

मस्तिष्क सहित स्नायुको स्नायुमण्डल कहते हैं । इस स्नायुमण्डलके भीतर एक ऐसी शक्ति है कि जिसके बलसे हृत्पिण्ड इत्यादि शरीरके सब यन्त्र काम करते हैं, उसीके बलसे हम लोगोंके हाथ पैर चलते हैं और उसीके बलसे हम लोगोंको समझनेकी शक्ति उत्पन्न होती है ।

मस्तिष्क और मस्तिष्क आवरक भिक्षी प्रदाह—मस्तिष्क तीम परदेसे ढंका है । उसके एक पर्देको भिक्षी कहते हैं । मस्तिष्क और उसके आवरक भिक्षी प्रदाहकी चिकित्सा एक साथही लिखी है ।

**लक्षण ।**—अतिशय ज्वर, प्रवण शिरकी पीड़ा, मस्तिष्कमें दर्द, प्रलाप, वमन, सुखमण्डल लाल, द्रुतगति नाड़ी, कपाल और गलेकी सब नाडियोंका सम्मन, कोष्ठबद्ध, वमन या वमनेच्छा, निद्राशून्यता, रोगके आरम्भमें चक्षुतारा संकुचित पर रोगके बढ़ने पर उसका भी बड़ जाना और उसी समय आंखके सामने उजियाला अच्छा मानूम न होता । रोगकी प्रवण अवस्थामें रोगी कभी दांत कड़कड़ाये माथाधूमे, स मचेने तथा छोड़ने में व्यष्ट हो और मूर्धन पन्न गन्ध मानूम हो ।

**कारण ।**—गिर पड़नेसे या और किसी तरह शिरमें चोट लगनेसे, अधिक देर तक धूपमें धूमनेसे, मानसिक अवसन्नता या उत्तेजना इत्यादि इस रोगके प्रधान कारण हैं । लड़कोंको अधिकतर यह रोग होजाता है ।

**चिकित्सा ।**—चोट लगनेके कारणसे उत्पन्न हुए मस्तिष्क प्रदाहमें के साथ ज्वर भी हो तो आर्निका ६, एकीनाइट १५ (पर्याक्रमसे), साथही प्रलाप भाषा गर्म, आंखे लाल इत्यादि लक्षणोंमें आर्निका ६ और बेलेडोना ६ या १० (पर्यायक्रमसे) खिलाना चाहिये । शिरमें अत्यन्त पीड़ा हो और साथही रातको बकना मकना भी हो, नींद अचानक उभट जाती हो, इत्यादि लक्षणोंमें आयोनिया ६ हेनिबोरास ६ या मलफर १० खिलाना चाहिये ।



## शिर पीडा । (Headache )

शिरका दर्द दूसरे रोगोंके लक्षण मात्र है ।

**चिकित्सा ।—**एकोनाष्ट १२ या ३० रक्त सञ्चयजनित शिरकी भयानक दर्द में, ऐसा मान्य होता है कि मस्तिष्कके भीतरकी समस्त चीजें ठेलकर बाहर निकलती हैं । समय समय पर कपाल और कनपटीमें टप् टप् करके दर्द हो यहां तककी आखें भी दूखने लगें, तथा माथा हिलाने, झुकाने और इधर उधर डोलानेसे दर्दकी वृद्धि और विरामकालमें शान्ति ।

आर्निका ६, १० ।—रक्त सञ्चय जनित या स्त्रायविक दुर्बलता जनित, शिरका दर्द आखोंके पलकका भारी मान्य होना, आखोंके आगे अंधेरा होना, या भागकी कनोंका दिखाई देना, आखें झाल तथा जलन, माथा गर्म, कपाल कनपटी और गलेके शिराका स्पन्दन, जोरका शब्द, रोशनी, हिलने डोलने तथा सोनेसे पीडाकी वृद्धि, स्थिर होकर बैठनेसे कभी ।

त्रायोनिया ६, १२, ३० ।—रक्त सञ्चय और वात जनित शिरका दर्द, हिलने डोलनेसे वृद्धि, माथा भारी, नीचे झुकानेसे ऐसा मान्य हो कि शिरके भीतरकी सब चीजें बाहर निकल पड़ेगी । दबानेसे पीडाका अन्त होना आगे कपालमें विशेष करके दाहिने तरफ दर्द, बार बार झीमिचलाना और पित्त चमक करना, शिरमें दर्द होनेके बाद नाकसे रुद्ध गिरना ।

कैलकेरिया कार्ब २० । मानसिक चिन्ता बहुत होनेके कारण शिरमें दर्द, शिरमें भयानक दर्द, सुबहके समय रातमें शरीरके छपरी भागमें पसीना, खासी पेट रहने पर भी बारबार टेकार आना और माथा ठण्ठा मासूम होना ।

चादमा ६, १२, २० ।—कानमें गुनगुन शब्द, चेहरा लाल, शरीर दुर्बल और बारबार जंभाई आना ।

हरनेशिया २, ६ ।—कठिन शोकके कारण शिरमें दर्द, गुल्मवायुग्रस्त रोगके कारण शिरमें दर्द तथा घुई भोकनेकी भांति दर्द ।

चिनीयाम टिप्री ६ । समूचे शिरमें दर्द और भार मासूम होना, दोनो हाथोंसे माथा पकड़े रहनेकी इच्छा, खुली हवामें शिरकी दर्दका बढ़ना और शामको शान्ति ।

नक्सममिका ६, १२, २० ।—माथा घूमना, कपास और सनपट्टीका फुदकना, फटमानेकी भांति दर्द, वमन या वमनो घम, कोष्ठबद्ध, भोजनके बाद तथा मानसिक परिश्रमके बाद मस्तक झुकानेसे पीड़ाकी वृद्धि, बलवान या रक्त प्रधान मनुष्योंके शिरका दर्द, अधिकपारी जो दर्द सुबह उठकर सन्ध्याको अच्छी हो जाये, अम्ल या पित्त वमन ।

पससेटिसा २, ६, १२ ।—अस ठीक न पचनेके कारण या अधिक तीव्र तथा घी खानेसे, स्त्रीके जगनयन्त्रकी क्रिया

विकारसे, एक तरफके कानके पिछले भागमें तेजदर्द, ऐसा मालूम होना मानो कोई शिरमें सूई वेध रहा है ।

फसफरिक एसिड ६, ३० ।—धातु दौर्बल्य और स्रावविक दुर्बलताके कारण माथेमें दर्द, स्मरण शक्तिका घट जाना, दृष्टि शक्तिका कम होना तथा कानोंसे भी कम सुनाई देना ।

सोपिया ६, १२, ३० ।—माथे पर भार मालूम होना तथा सूई वेधनेकी भांति दर्द, रजो वैलक्षण्य जनित वमन या वमनो-द्यमके साथशिर-पीड़ा, कोष्ठवद्ध ।

साइक्सिया ६, १२, ३० ।—प्रवस शिर-पीड़ाके कारण विवेचना शून्य होजाना, सुबहको जाड़ा मालूम होना तथा वमनेच्छाके साथ दबानेकी भांति दर्द, आंखोंके ऊपर ऐसी दर्द कि आंखें बाहर निकल पड़ेगी ।

सिमिसिकिउगा १ ।—स्राववीय, घात जनित या रजोवैल-क्षण्य जनित सिक्का दर्द, मस्तक और आंखोंमें तीव्र वेदना, हिलानेसे दर्दका बढ़ना, कपालसे लेकर गरदन तक दर्द, तेज दर्दके कारण चक्षुतारा विस्तृत, प्रलाप और दृष्टिविकार, गुच्छवायुगस्ता स्त्रीको वमनके साथ दर्द ।

स्राईगोलिया ३ ।—शिरके सम्मुख भागमें जोध कर फेंक देनेकी भांति दर्द, यह दर्द आंखों तक फैली हुई हो, हिलनेसे या झुकानेसे पीड़ाकी वृद्धि साथही हृदयमदन और अस्थिरता, जोरसे दबानेसे पीड़ाका कम होना, आधी औरका दर्द, सूर्यो

रुखके समय बेदनाका आरम्भ होना धीरे दो पहर तक बढ़ना, फिर धीरे धीरे कम होकर सुर्थास्त तक अच्छा हो जाना ।

सल्फर ६, १२, ३० ।—कपासमें धीरे कानके पिछले भागमें दप् दप् दर्द, माथेका ऊपरी भाग गर्म मालूम होना, मात कालके समय उदरामय चर्शसे रक्तस्राव बन्द होकर मस्तकमें रक्तका सञ्चय होना तथा गिर घूमना धीरे दर्द ।

मिराडममौर ६, ३० ।—मस्तक पृष्ठ धीरे भारी मालूम होना, सब रगोंका सन्दम अचेतनावस्था, कानमें भों भों शब्द, यमन या वमनोद्देगके साथ उदरामय ।

पथ्यापथ्या ।—दर्दकी पहिली अवस्थामें कुछ भौ न खाना चाहिये । अस्त्रजनित गिरकी दर्दमें दुधके साथ थोड़ा घृनाका पानी मिलाकर पीना चाहिये । दाबकर धरनेसे यदि उपशम हो तो भीजा कपड़ा माथेमें बांधनेसे अच्छा फल दिखाई देता है ।

## सन्यास (Apoplexy)

अच्छी हालतमें घूमने फिरनेके समय अचानक गिर पड़नेसे विस्कुल या कुछ अवैतन्य हो जाये तो उसीको सन्यास कहते हैं । तीन कारणोंसे इसकी उत्पत्ति होती है (१) माथेके रक्त

## धनुष्टङ्गार (Tetanus)

इस रोगसे शरीर धनुषकी तरह टेढ़ा हो जाता है । यह दो तरहका है पहिला स्वयम्भूत और दूसरा आभिघातिक । रक्त दूषित हो कर स्रावविक्रमण्डली विकृत हो जानेसे जो धनुष्टङ्गार होता है उसे स्वयम्भूत और शरीरके किसी अंशमें भारी चोट लगनेसे चोटकी जगहमें वायुकी उत्तेजना होनेसे जो धनुष्टङ्गार पैदा होता है उसे आभिघातिक कहते हैं । गलेमें दर्द, गरदन कड़ी, चहुआ बन्ध, रोगीका चेहरा चर्पयुक्त देखा जाय । मुख मण्डलकी सब पेशियां कड़ी होकर आक्षेप या ऐठन आरम्भ हो, मुखमण्डलसे दुःख भलके या एक दृष्टिसे देखता हो, पीछे दर्द होकर सब शरीर धनुषकी तरह हो जाये । कोई कोई रोगी आगकी ओर और कोई पीछेकी तरफ झुक जाता है । यह रोग सभी अवस्थाओंमें हो सकता है ।

**चिकित्सा ।**—स्वयम्भूत धनुष्टङ्गारमें प्रवल आक्षेप न हो और आक्षेपके समय ठंड या पसीना हो आवे तो एकोनाष्ट रेडिक्स । आघात जनित धनुष्टङ्गार रोगमें रह रह कर आक्षेप होता हो और रोगी पीछेकी तरफ झुकता जाये तो नक्सममिका । आभिघात जनित धनुष्टङ्गारमें बड़ा जोरका आक्षेप हो तो एसिड हाइड्रो । रोगीका सब शरीर कड़ा हो कर टकाटकी लगाये देखता हो, देरतक जोशमें न रहना, नागाप्रकार अथवा विकृति बहुत देरके बाद आक्षेप हो, छूनेहीसे

बढ़े, सास लेने तथा छोड़नेमें कष्ट होता हो चेहरा साल, मुहसे फेन गिरता हो और रोगी पीछेकी तरफ झुके तो सिक्किचटा भिरोस ६ । आघात जनित घगुष्टकारमें चैतन्य रहने पर भी श्वास रोध होमा चाहे या सब शरीर कभी नर्म या कभी कड़ा हो जाये तो मग्गभमिका १x । निरुदण्डके ऊपर धरफ रखना चाहिये ।

मात्रा ।—रोगके पूर्व लक्षण प्रकाश होतीही २० मिनिट का अन्तर देकर दवा देने चाहिये ।

## जलातङ्क (Hydrophobia)

पागल कुत्ता, सियार, भेड़िया या बिल्लीयें काटनेसे यह रोग उत्पन्न होता है । उनके दांत और नखोंमें एक प्रकारका विष होता है जो रक्तमें लगतेही शरीरमें पैठ जाता है । इसके १७।१८ दिन पहिले कोई लक्षण रोगका नहीं दिखाई देता । कपड़े पर काटनेसे विष कपड़ेमें लगना समझ कर रोगी उस रोगका कुछ खयाल नहीं करता है । पर काटनेके १७।१८ दिन बाद उस काटे हुए स्थानमें जलन, चारों तरफ खुजली स्वभावका कोधी हो आना, रातमें भयङ्कर स्त्र दिसाई देना, यस्सेकी मसोंका सिकुड़ आना, कोई चीज निगलनेकी शक्तिका न रहना, सांसमें कष्ट, पानी या पानीकी तरफ चीज देखनेसेही

रोगीको छर मालूम होना और धीरे धीरे कुछ दिन बाद ऐसाही हो होकर रोगी दुर्बल हो मर जाता है ।

**चिकित्सा ।**—काटनेही घत स्थानके ऊपर बांध देना चाहिये, इसके बाद जिसके दांतमें कोई रोग न हो वह उस काटी हुई जगहका रक्त चूसकर बाहर फेंक दे । फिर लोहा गर्म करके उस स्थानको दाग दें या कार्बोसिक एसिड तथा माग्नेट्रिक शीफ सिस्वर द्वारा उस काटी हुई जगहको जला देनाही अच्छा है, और ट्रामोनिया १५ भी देना चाहिये ।

## पक्षाघात (Paralysis).

किसी अङ्गका (या आधे अङ्गका) सर्व शक्ति नष्ट होना अथवा अथग होनाही पक्षाघात कहलाता है । पक्षाघात कई प्रकारका है, जैसे मेरुदण्डके आघातके कारण पक्षाघात, चेहराका पक्षाघात, कपकपीके साथ पक्षाघात, नीचेके अङ्ग या ऊपरके अङ्गका पक्षाघात ।

**चिकित्सा ।**—शरण शक्तिका कम हो जाना, कपकपीके साथ बूढ़े आदमियोंका सब अङ्गका पक्षाघात और चेहरा तथा जीभके पक्षाघातमें बैराइटा कार्ब १-१० । चेहरा स्वरनाली और मूत्राशयके पक्षाघातमें कटिकम ६, १२ २६ । पक्षाघात प गके छूनेसे नहीं मालूम होता परन्तु कांटा इत्यादि

मङ्गानेसे मासूम होता है और रोगको जगह भिन्नभिन्न करती है । चाँधे पङ्ककी प्रवृत्ति ( नये पचाघातमें ) ऐकीनाष्ट १५ । चाँधमें गठियेकी तरह दर्द, दृष्टिकी सीपता, रातमें येशाब रोक्नेकी सामर्थ्यका न रहना, घसनेमें, कमजोरी इत्यादिमें श्वेडोमा १ । बहुत ज्यादा धातुघटक-कारण भ्रममङ्ग या पचाघात होनेसे फसफोरस ६ या १० । हाथ-पैरोंका सन्दन, सायुमण्डलके खराबीके कारण पचाघात होती मार्कसल ६ । काँटा मङ्गानेसे दर्द हो तो और छूनेसे न मासूम हो, तथा सब जोड़ोंमें कड़कड़ आवाज होकर चाँधे-घसमें पचाघात हो और नीचेके पंगोंके पचाघातमें क्विक्लस १ । बूढ़े आदमियोंके पचाघातमें कोनियाम ६ । बहुत-बराबर योनेसे पीठमें पचाघात हो और साय ही वसन ( क ) की इच्छा रहे, कब्रियत, अरुधि इत्यादि लक्षणोंमें मसूमनिका १, आँखकी पलकके पचाघातमें वेससिमियम ( ६ ) ।



माथा हिलाने या झुकानेसे दर्द बढ़ने लगता है और साथ ही कलेजा घड़ घड़ करने लगता है और अस्थिरता (वेचैनी) बढ़ जाती है । इत्यादि लक्षणोंमें ।

कलोसिंथ ६ ।—भाघे गिरकी, दर्दमें, माथा तथा दांतके दर्दमें, चेहरेके बाईं तरफ सूई बेघनेकी तरह-दर्द, यद्य दर्द गर्मीसे और हिलने छोलनेसे बढ़ जाती है, सब मसोंका सन्दन तथा स्त्रियोंके मासिक धर्मका दर्द और पुरुषोंके अर्ध-शूलमें, शूद्रसी शूलमें सूई बेघनेकी तरह, झुकनेसे दर्दका बढ़ना, माघेमें बड़ी दर्द, ऐसा मासूम होना कि माघेमें और आंखोंमें कोई सूई गड़ा रहा है और साथ ही चबुतारामें जलनमें साथ दर्द होना इत्यादि लक्षणोंमें ।

जेलसिमियम २ ।—स्त्रायविक दुर्बलताके कारण सब अङ्ग सन्दनके साथ स्त्रायुशूलमें, पीठमें, कन्धा तथा गर्दनमें और हातमें दर्द ।

कफिया ६ ।—दाहिनी तरफकी अर्धकपालीमें ( जो सुबह-से भारभ होकर दिन भर कष्ट देता रहे ) कपालके बगलमें कांटी बेघनेकी भांति तेज दर्द ( मासूम हो कि माथा कटकर गिर आयेगा ) झुकनेसे या तेज आवाज सुननेसे दर्दका बढ़ना, शाय और पैर ठंडा रहना तथा अतिशय शीत मासूम होना ।

## चक्षुरोग ।

चक्षुप्रदाह (Ophthalmia).

आँखोंमें धूल, धूप, सर्दी या ठण्डी हवा, धूँआ, तेज रोशनी  
सगनेसे आँखें आती हैं। हाम और प्रमिष्टसे चक्षुप्रदाह  
होता है।

लक्षण ।—आँखोंके अन्दर स्यामका लाल हो  
जाना, आँखसे जल या पौष निकलना, आँखोंका झुट जाना,  
केश गिरने या सुई बेघनेकी तरह दर्द, कड़काना, रोशनीका  
सह्य न होना।

चिकित्सा ।—बेसेडोना १५, अजली, लाल रंगकी  
आँख, तेज दर्द, फूस जाना और कपासके पास दपदप  
टपकना, दोनो पपनी लाल रंगकी, रोशनी या धूपका  
असह्य होना।

एकोनाइट १५, ६। बात प्रमिष्ट या सर्दीके कारणवाली  
नई आँखोंकी बिमारीमें सामान्य ज्वर हो तो इसे देना।

मर्क्युरियसकर ३।—आँखोंसे 'जल' गिरनेके बाद पौष  
'अल्प' हो 'कीचड़' आवे, 'आँख' सट आय, गर्म और दर्द  
आसूम हो, देखने या झुक्तानेसे दर्द होता हो, बहुत कुटकुटाय  
और रोशनी सह्य न हो सके।

एपिस मिस १०।—बहुत पौष बहना, रोशनी असह्य,  
ज्वाला, खुजलाना, दर्द और आँखें सूजी हुई।

इसके सिया ३५ ।—(सभी अवस्थाओंमें दिया जा सकता है) 'आंखें' लाल, रोशनी असह्य, नाक तथा आंखोंसे बहुत जल गिरना, दर्द, बारबार छींक, आंखोंके छल्ले अथवा और चक्षु ताराके बगलमें छोटी-छोटी फुनसियां निकल आना, आंखोंसे पीप बहे या सूतकी तरह पीप आंखोंमें हो आनेसे देखनेमें बाधा हो तो, १० घू द १ औंस जलमें मिलाकर आंखें धो देने चाहिये ।

आर्जेण्टम नाइट्रिकम ३ या ३० ।—अधिक पीप बहनेके साथही लड़कोंके चक्षुप्रदाहमें, पुराने चक्षु प्रदाहमें जब कुछ हल्दीके रंगका पीप बहने लगे ।

सल्फर ३, ३० ।—चक्षुताराका प्रदाह और उसके बगलमें लाल रंगका चक्काकी तरह फोड़ा सूई गड़ानेकी भांति दर्द, पानी लगनेकीसे छिड़ या गण्डमांसा जमित चक्षु प्रदाहमें आर्सेनिक ६, फसफोरस ६, जेलसिमियम ३५ भी प्रयोग किया जाता है ।

पथ्यापथ्य ।—इसका और पुष्टिकर भोजन, मूखली, और मिठा, निषेध, रोगीको साफ सुथरे बिछावणपर सुलाना चाहिये । गुसाव जलमें या थोड़े गर्म दूधसे आंखें साफ करनी चाहिये ।

## ८ दृष्टिशक्तिकी अल्पता (Amblyopia)

**कारण ।**—दृष्टिकी क्षीणता बहुतसे कारणोंसे उत्पन्न होती है । बहुत छोटा या चमकता हुआ पदार्थ देखते रहनेसे, अपरिमित नज़दसे या निशा खानेसे, ठण्डे प्रयोगसे, एकाएक पसीनेको रोक देना, रजोरोध इत्यादि इस रोगके कारण हैं ।

**चिकित्सा ।**—रक्त, रक्त आदि अधिक निकल खानेसे यदि दृष्टिक्षीण होगई हो तो चाइना ६, ३०, यदि चाइनासे कोई लाभ न दिखलाई दे तो फसफोरस ६, ३० । बहुत निशा खानेसे क्षीण दृष्टिशक्ति हुई हो तो मक्ख भमिका १५ । रक्तकी अधिकतासे हो तो बेसेडोना ६, ३० । रजोरोधसे हो तो पल्सेटिला ६, ३० । छत्पिण्डकी पीड़ाके कारणसे हो तो काफेटस ६ । तेज दर्द गिरमें हो और साथही दृष्टिक्षीण हो तो सेडुइनेरिया ३, चक्षुतारामें दर्द हो तो सिमिसिफिउगा ३, सायुमण्डलमें अधिक दर्द हो तो स्नाइजिडिया ६, और कसोसित्व ६ । माथेमें रक्त अधिक हो और नाकसे रक्त गिरे तो फसफोरस ६ । बातकेकारणसे हो तो ब्रायोनिया ६, रक्त अल्पताके कारण हो तो फेरस ६ एसिड फस ६, आर्सेनिक ३०, चाइना ६, या इउल्लेगिया १ x

परिपाक शक्तिकी क्षीणताके कारण हो तो मक्खभमिका ६ पल्सेटिला ६, मर्क्यूरियस ६, चाइना ६, और बेसेडोना ६ ।

**साधारण नियम ।**—रक्तकी कमीके कारण दृष्टि क्षीण होनेसे पुष्टिकर और बल बढ़ानेवाली चीजें खिलाना चाहिये । अन्नगाहनसे अन्न, विशुद्ध वायु सेवन इत्यादि हितकर हैं ।

रातीधी—वेलेडोना ६, लायकोपोडियम १०, और दिमौधीमें—साईलीसिया १०, फसफोरस ६, सल्फ्यूरिक एसिड ६ या वेलेडोना १० ।

### तारकामण्डल प्रदाह (Iritis).

चक्षुताराके चारो तरफवाले मण्डलको तारकामण्डल कहते हैं । यही तारकामण्डलमें अलन होनेपर ठीक समय पर दवा न दी जाय तो, आन्ना पड़कर देखनेकी शक्ति जाती रहती है ।

**प्रदाह (अलन),** चोट लगने या किसी प्रकारके आघातके कारण या प्रमेदजनित आदि कई प्रकारसे होता है ।

**साधारण लक्षण ।**—दृष्टि, शक्तिकी कमी और दूरकी चीजें न दिखाई देनी, दियेकी रोशनी या धूपसे कष्ट, मानूम होना, आंखें मूंदनेसे दर्द, सोनो कानपटोमें सूई खेचनेकी तरह दर्द, इत्यादि ।

**चिकित्सा ।**—चोट लगनेके कारण तारकामण्डलमें

जनन हो तो भार्मिका ६, ( भार्मिकाका मूल परिष्ट १ = सूद, पाध पार्थ जलमें मिलाकर रोज ३ ४ बार आंखें धोनी चाहिये ) दाहके साथ ज्वर रहे तो एकोनाइट ३५ और भार्मिका ६ पर्यायक्रमसे देना चाहिये । यदि मस्तिष्कमें भी कोई गड़बड़ दिखाई दे तो भार्मिका और वैसेठोना पर्यायक्रमसे देना चाहिये । घातके कारणवाले दाहमें—आयोनिया, साइजिलिया, यूफ्रेशिया । अन्विघात जनित प्रदाहमें—आर्सेनिक, कसोसिंथ, क्राकिस्सस और सलफर । छपदंश ( गेरमो ) जनित प्रदाहमें—कैलिब्राइकम, मार्कसल, एसिड फस् । प्रमेह जनित प्रदाहमें—एसिडफस्, मार्कसल, अर्मेन्टम-आइरिकम । यही सब दवायें प्रयोगकी जाती हैं ।

## आलसदृष्टि ( Muscæ volitanter )

इस रोगमें आंखके सामने छोटे छोटे कीड़े, धूल या छोटे सूतकी तरहके पदार्थ उड़ते हुए दिखाई देते हैं । उराना ज्वर, अपरिमित शुक्र निकलना, रक्तकी कमी इत्यादि नाना कारणोंसे यह रोग उत्पन्न होता है । कारणका पता लगाकर दवा देनेसे तुरंत ही यह रोग छूट जाता है, कहीं कहीं कम जोरीके कारणसे भी यह रोग उत्पन्न होता दिखाई देता है ।

अतएव चाइना ६, या एसिड फॉस ६०, प्रायः सभी लक्षणों में फायदा करता है ।

## धूमदृष्टि ( Glaucoma ).

कभी कभी आंखोंसे चमकदार या कुड़ेरासा दिखाई देता है । स्वास्थ्यकी हानिसे ही प्रायः यह रोग हो जाता है । रोगके कारणका अभी तक पता नहीं लगा है । किसी किसी रोगके साथही यह रोग भी देखा जाता है । एकीनाइट ६, वेलेडोना ६, आर्जेण्टम नाईट्रिक ६, फसफोरस ६, समय समय पर लाभ दिखाते हैं ।

## अश्रुमौ ( Hordeolum ).

आंखोंके पलकके ऊपर या नीचे अलनके साथ एक प्रकारकी फुसी निकलती है, उसे अश्रुमौ कहते हैं । पस्टिसा ६, इस रोगकी अच्छी दवा है । बारबार फुसी होनेसे और फुसी सूखनेके बाद वह स्थान कड़ा हो जाये तो सलफर १० या सॉफिसाग्रिया ६ ।

होमियोपैथी ।

६ । कर्णरोग ।

कर्णप्रदाह ( Otitis )

कर्ण प्रदाह अधिक करके सर्दी लगनेसे ही होता है, और कानके भीतरकी जगहमें दर्द, सूजन तथा उसका रंग सात्व हो जाता है साथही ज्वर भी रहता है । रोग होते ही दवा न करनेसे कानके भीतरके कई पर्देतक इसका असर हो जाता है और धीरे धीरे दुर्गन्ध आने लगती है तथा पीप बहने लगता है ।

चिकित्सा ।—पहिली अवस्थामें विशेष करके शिरमें दर्द तथा गलेमें दर्द हो तो विलेडोना ३x और गर्म जलका सेक देना चाहिये । परन्तु यदि कर्ण गर्म तक दर्द हो और साथ ही ज्वर भी रहे तो एकोनाइट ३x । दर्द पुराना हो तो नाइट्रिक एसिड ६, सल्फर ३० देना चाहिये । कई गड़ानेके तरह दर्द और कर्णमूलमें बड़ा दर्द हो तो कामोमिला ६ ।

कर्णशूल ( Ootalgia )

कर्ण प्रदाहमें ज्वर और दप दप करके दर्द होती है । कर्णशूलमें कानमें सूई भेधनेकी भांति दर्द होती है । यह दर्द कभीकभी बढ़कर दांतके मच्छेतका आभासी है । सर्दी



या चोट लगनेसे, हाम या शीतलाके बाद कर्णशूल हो जाता है ।

**चिकित्सा।**—प्रमेह या सर्दीके कारणसे या कानमें ठंडा जल प्रवेश कर जानेसे दर्द हो तो एकोनाइट १५ । चोटके कारणसे दर्द हो तो पार्निक्का १, किसी चीजके बेघनेकी भांति दर्द हो तो पसुसटिका १५ । सर्दीके कारणसे भी हो तो पसुसटिका सामदायक है । दस्तशूलके साथही यदि कर्णशूल हो तो कमोमिसा १२, मार्कसस ६ ।

## कर्णव्रण (Abscess of the Meatus)

कर्णावर्तके बगलमें छोटे छोटे दाने होकर दर्द, सूजन तथा खाल रंग हो जाता है । इससे सुननेकी शक्तिमें भी मंद पड़ जाता है ।

**चिकित्सा।**—कानमें टपक, रंग खाल और सूजन हो तो बेलेडोना १५ ग्रीन और बेलेडोना का बाहरी प्रयोग होना चाहिये । यदि बेलेडोनासे कोई लाभ न हो तो साइप्रिसिया १५ । पीप होना चाहता हो तो (अर्द्ध पकोनेके लिये) हेपर-सलफर ६, प्रदाइ कम होनेपर सलफर १० ।

## कर्णनाद (Tinnitus Aurium).

इस रोगसे कानमें, गुन् गुन्, फस्फस्फ, सीं सीं इत्यादि शब्द होते सुनाई देते हैं। दूसरी दूसरी बीमारीके कारण या आयविक दुर्बलताके कारणसे यह रोग उत्पन्न होता है। इस रोगसे मनुष्य बहिरा भी हो सकता है।

**चिकित्सा।**—कानमें घंटेका शब्द, गर्जन शब्द या गुन् गुन् शब्द हो तो एसिड फस्फोरिक ३०, सुबहको कानमें गर्जनेकी भांति शब्द और बारबार कानके भीतर खलुसाहट हो तो नक्सममिका ६, ३०। कानमें जलकी प्रवाहकी तरह या गुन् गुन् शब्द सुनाई दे तो कमोमिला ६। कर्णनादनके अपध्यवहारके कारण माना प्रकारके कर्णनादमें एसिड नाइट्रिक ६ और घादना २००। मस्त्रकमें रक्त संचय होनेसे उत्पन्न हुए कर्णनादमें बेसेडोना ६, और वमन भी कर्णनादके साथ हो तो भिराड्रम एस्वम ३। कसकी गाढ़ीके शब्दकी भांति या हिस् हिस् शब्दवाले कर्णनादमें डिजि टेसिस ६।

## कानमें पीप (Otorrhœa)

शाम, छर इत्यादि रोगके बाद और गण्डमांसाप स्रवकोंके कानमें पीप (रोम) हो जाता है। यदि पुण्ड्रियोंके कानमें पीप हो तो यह बहिरताका लक्षण है।

**चिकित्सा ।**—दुर्गन्धित पीप अधिक निकले तो अरम-मिट ६ । कानके पीछे या नीचे दर्द, सूजनके साथही दुर्गन्ध पीप निकले विशेष करके पारा, खानिके दोषके कारणमें नाइट्रिक एसिड ६ । कानको बहते बहुत दिन होगये हो और आराम न होता हो तो कैसकेरिया कार्ब ६, १० । कानसे लाल पानीकी तरह पतला तथा चटचटा दुर्गन्धित पीप निकले तो आफ्ताईटिस ६ । गन्धग्रन्थ कफ या पीप निकले तो पलसटिक्सा ६, कानमें तीज दर्दके साथ पीप या रक्त मिला हुआ पीप निकलता जाये तो मार्कसल । कानके बाहर सूजन हो और भीतरसे पतला स्राव हो तो साइलिसिया १० । पीप सूखकर बहिरापन आता जाता हो तो थोड़े दिन सफ्फर १० और फसफोरस ६ पर्यायक्रमसे प्रयोग करना चाहिये ।

## बधिरता ( Deafness )

बधिरता ( बहिरापन ) तीन प्रकारका है, ( १ ) स्नायविक क्रियाकी विपन्नताके कारण ( २ ) दूसरी दूसरी बिमारियोंके कारण ( ३ ) मूक बधिरता अर्थात् जन्मबधिरा । पहिली दो बधिरता दवासे आराम होती है ।

**चिकित्सा ।**—सब अण्ड दुबला और गण्डमाला जमित बधिरतामें धार्जकी ध्वनि और दूसरी दूसरी प्रकारके शब्द सुन

पड़े पर मनुष्यकी वाते न समझमें आवे तथा कानमें सदा एक प्रकारका शब्द मानस हो इत्यादि लक्षणोंमें फस्फोरस ३० । रक्त संवय हो जानेके कारण गिरका दृढ़ कानमें एक प्रकारका शब्द मानस होनेके साथ बधिरतामें चिमिनाम सक्तफ ३० क्रमका विधूर्ण । अपरिमित शक्तधयके कारण सुननेकी शक्तिकी कमी हो तो एसिड फस ६ । सर्दीसे उत्पन्न हुइ नयी बधिरतामें एकोनाइट ६, बेसेडोना ६ या पलसटिला ६ और पुरानी अवस्थामें मर्क्यूरियस ६ । ज्वर या दूसरी बीमारीके बाद बधिरता हो तो बेसेडोना ६, पलसटिला ६ । साइलौसिया ३०, चाइना ३, सलफर ३० और एसिड फस ६, कर्णगत्ररमें फोड़ा होकर बह खान बन्द होनेके कारण मनुष्य बधिर हो जाता है ऐसी अवस्थामें सलफर ३०, डेट सलफर ६, चरम मेट ६, कष्टिकम ६, और एण्डिम क्रूड ६ ।

## ७ नाककी रोग ।

नाकमें फोड़ा ( Ozena )

नाककी श्लेष्मिक झिल्लीमें फोड़ा होकर दुर्गन्धित पीप या छेद बहने लगता है । इस रोगसे धीरे धीरे नाककी अस्थि या उपस्थि ध्वंस प्राप्त होकर प्राणशक्तिका क्षोभ हो सकता है । पाराके अपव्यवहारसे, उपदशके कारणसे,

पुरानी सर्दी, चोट, पत्थर भाँकमें प्रवेश कर जानेसे और पिता या माताके पारा दोषसे यह रोग उत्पन्न होता है ।

**चिकित्सा ।**—नाक जाल, सूखी हुई तथा उसमें दर्द हो, नाकके रंध्रमें गर्मी, और दर्द मालूम हो, पीला आभायुक्त या पीला स्राव, कभी कभी जलमिश्रित या कुछ सूखा हुआ पीप बहने लगे तो घरम-मिट ६ । नयी सर्दीसे नाकसे जल बहुत बहनेके कारण नाकका ऊपरी भाग जाल हो तथा उसमें दर्द होय; फिर नाकका निचला भाग बैठ जानेके कारण सूघनेकी शक्ति जाती रहे, उससे पीप तथा रक्त मिला हुआ या मांसके घोषन के भाँति दुर्गन्धमय स्राव हो इत्यादि लक्षणोंमें कैलि-मार्कम ६ । पाराके अपव्यवहारके कारणसे या उपर्दश रोगके बाद या पिता माताके पारा दोषसे पीनस रोग होने पर और उसके साथ जलन और सूजनके साथही दुर्गन्धित पीप या श्लेष्मामिला हुआ पीप बहने तो एसिड नाइट्रिक ६ । अतिशय दाह और जलनके साथ नाकसे पानीकी तरह बहने या उसीके साथ छींक और स्वरमंग इत्यादि लक्षणोंमें, नाकके पुराने कोड़ामें आर्सेनिक ६, १० देना चाहिये ।।

दवा देनी जरूरी है। एक ओरके नाकके छिद्रसे सफ-  
यत रक्त बहता है। कभी कभी यही रक्त नाककी राहसे  
निकलकर खरगोश, गलकोप या भ्रामाशयमें भाजाता  
है। साथमें रक्त अधिक होनेके कारण और कभी चोट  
लगनेके कारण तथा बहुत परिश्रम या खांसीसे इस रोगकी  
उत्पत्ति होती है। बहुत बन्द होकर या अर्शोवलिसे रक्त  
बहना बन्द हो जाने पर नाकसे रक्तनिकलने लगता है।

**चिकित्सा।**—फिरम आयड १ धूर्ण, इसकी उत्तम  
दवा है। बारबार समा हुआ रक्त बहे तो हैमामिलिस १x  
भीतर प्रयोग और दो तीन बूंद हैमामिलिस 0 नाकके भीतर  
छोड़ देनेसे रक्तस्राव बन्द होजाता है। रजः स्रावके बंदसे या  
अर्शोवलिका रक्तस्राव बन्द होनेके कारण नाकसे रक्त गिरने  
पर पलसेटिला ६, हैमामिलिस १x, पडोफाइलम ६, वो सल  
फर ६०। मस्तकमें या नाकमें चोट लगनेसे नाकसे रक्त गिरता  
हो तो पार्निका १x। रह रह कर रक्त बहनेसे चादना ६,  
और कार्बोमेड १०।

## नासा ( Polypus ).

शैथिलिक भित्तीके उपादानसे नासिका गहरके बीचसे  
जलसुन या पीयामकी तरह सुजन हो जाती है। यह एक  
या दोनो नाकमें होता है। नासा होनेके पड़से प्रायः

पुरानी सर्दी, चोट, पत्थर नाकमें प्रवेश कर जानेसे और पिता या माताके पारा दीपसे यह रोग उत्पन्न होता है ।

**चिकित्सा ।**—नाक साफ, सूनी हुई तथा उसमें दर्द हो, नाकके रंध्रमें गर्मी और दर्द मासूम हो, पीला आभायुक्त या पीला स्राव, कभी कभी जलमिश्रित या कुछ सूखा हुआ पीप बहे तो शरम-भेद ६ । नयी सर्दीसे नाकसे जल बहुत बहनेके कारण नाकका जपरी भाग साफ हो तथा उसमें दर्द होय; फिर नाकका बिचला भाग बैठ जानेके कारण सूँघनेकी शक्ति जाती रहे, उससे पीप तथा रक्त मिखा हुआ या मांसके घोघन के भाँति दुर्गन्धमय स्राव हो इत्यादि लक्षणोंमें कैलि-मार्शक्रम ६ । पाराके अपव्यवहारके कारणसे या उपदंश रोगके बाद या पिता माताके पारा दीपसे पीनस रोग होने पर और उसके साथ जलन और सूजनके साथही दुर्गन्धित पीप या श्लेष्मामिखा हुआ पीप बहे तो एसिड नाइट्रिक ६ । अतिशय दाह और जलनके साथ नाकसे पानीकी तरह बहे या उसीके साथ छींक और स्वरभंग इत्यादि लक्षणोंमें, नाकके पुराने फोड़ामें आर्सेनिक ६, १० देना चाहिये ॥

### नाकसे रक्त बहना (Epistaxis).

यह रोग यदि सामान्य दिखाई दे तो दवा देनेकी कोई जरूरत नहीं है किन्तु यदि बारबार यह रोग उमड़ आवे तो

दवा देनी जरूरी है। एक घोरके नाकके छिद्रसे सञ्च-  
यत रक्त बहता है। कभी कभी यही रक्त नाककी राहसे  
निकलकर खरनाली, गलकोय या आमाशयमें आजाता  
है। माथेमें रक्त अधिक होनेके कारण और कभी चोट  
लगनेके कारण तथा बहुत परिश्रम या खांसीसे इस रोगकी  
उत्पत्ति होती है। बहुत बन्द होकर या अर्गोवलिसे रक्त  
बहना बन्द हो जाने पर नाकसे रक्त निकलने लगता है।

**चिकित्सा ।**—फेरम आयड १ धूर्ण, इसकी उत्तम  
दवा है। बारबार जमा हुआ रक्त बहे तो हैमामिक्स २५  
भीतर प्रयोग और दो तीन बूंद हैमामिक्स ० नाकके भीतर  
छोड़ देनेसे रक्तस्राव बन्द होजाता है। रक्त स्रावके बंदले या  
अर्गोवलिका रक्तस्राव बन्द होनेके कारण नाकसे रक्त गिरने  
पर पलसेटिका ६, हैमामिक्स १२, पडोफाइटम ६, वो सन  
फर १०। मन्दाकमें या नाकमें चोट लगनेसे नाकसे रक्त गिरता  
हो तो चार्मिका १५। रह रह कर रक्त बहनेसे चाइना ६,  
और कार्बोमेज १०।

## नासा ( Polypus ).

शैथिल भित्तीय संपादनसे नासिका गहरके बीचमें  
सहस्रन या पियामकी तरह सृजन हो जाती है। यह एक  
या दोनो नाकमें होता है। नासा होनेके पंजिले प्रायः



पुरानी सर्दी, चोट, पथर नाकमें प्रवेश कर जानेसे और पिता या माताके पारा दोषसे यह रोग उत्पन्न होता है ।

**चिकित्सा ।**—नाक लाल, सूजी हुई तथा उसमें दर्द हो, नाकके रंध्रमें गर्मी और दर्द मालूम हो, पीला आभायुक्त या पीला स्राव, कभी कभी जलमिश्रित या कुछ सूखा हुआ पीप बहने तो शरम-भट ६ । नयी सर्दीसे नाकसे जल बहुत बहनेके कारण नाकका ऊपरी भाग लाल हो तथा उसमें दर्द होय; फिर नाकका बिचला भाग बैठ जानेके कारण सूंघनेकी शक्ति जाती रहे, उससे पीप तथा रक्त मिला हुआ या मांसके घोघन के भांति दुर्गन्धमय स्राव हो इत्यादि लक्षणोंमें कैलि-बाईकम ६ । पाराके अपव्यवहारके कारणसे या उपद्रव रोगके बाद या पिता माताके पारा दोषसे पौनस रोग होने पर और उसके साथ अस्त्र और सूजनके साथही दुर्गन्धित पीप या श्लेष्मामिला हुआ पीप बहने तो एसिड नाइट्रिक ६ । अतिशय दाह और जलनके साथ नाकसे पानीकी तरह बहने या उसीके साथ छींक और स्वरभंग इत्यादि लक्षणोंमें, नाकके पुराने फोड़ामें आर्सेनिक ६, १० देना चाहिये ।

### नाकसे रक्त बहना (Epistaxis).

यह रोग यदि सामान्य दिखाई दे तो दवा देनेकी कोशिश न करनी है किन्तु यदि बारबार यह रोग उभर आये तो

फरनेसे सांसमें कष्ट और कलेजा कांपना तथा छातीके नीचे दर्द होना इत्यादि लक्षणोंमें डिजिटेलिस ३ । हृत्पिण्डकी हृदि, माडी सुप्त प्राय, शारीरिक अवसन्नता, श्वास प्रश्वासमें अत्यन्त कष्ट, इस सिये रोगी सो नहीं सकता और सोस नहीं सकता तथा नींद नहीं आती, पैरमें शीथ, हृत्पिण्डमें जलन कम्पन और शूल होनेसे कौकटस १५, नावकी खेनेवाले और सुदूर फिरानेवालोंका हृत्पिण्डके आयुशूल पेयोशूल और हृत् हृदिमें आर्निक्का ६ । दूसरी दवाये आर्सेनिक ६, स्नाइ जिलिया ६ ।

## हृत्शूल ( Angina pectoris )

श्वीण और दुर्बल हृत्पिण्डके आघेपके कारण वचमें जो दर्द होती है उसको हृत्शूल कहते हैं । वचमें अचानक तेज दर्द हो और उसके बाद वही दर्द हृत्पिण्ड होकर चारों ओर फैल जाये, धीरे धीरे पौड़ा इतनी अधिक हो जाये कि सांस लेने तथा छोड़नेमें कष्ट होकर रोगकी मृत्यु तक हो जाती है, कुछ देर तक दर्द थोड़ा रहकर फिर तेज हो जाती है । अतिशय अस्थिरता, मामसिक चञ्चलता मृत्यु भय, मूर्छा इत्यादि उपपन्न होने लगते हैं । कोई श्वीण पकड़कर खड़े रहनेसे भी कम्पकम्पी और पसीना इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं ।

सर्दीं हो जाती है । प्रहिसे भरदनमें थोड़ी थोड़ी दर्द होती है, फिर सब रंगमें बड़ी दर्द होती है, मांस और चेहरा खाल हो जाता है, दवा बेखोना ६, सेंगुनेरिया १५, पर्यायक्रमसे देना चाहिये ।

## ८ रक्तसंचालन रक्तकी पीड़ा ।

हृत्प्लि ( Hypertrophy of the heart ).

हृत्प्लि का आकार गरीफा फलसे कुछ मिलता है । यह बढ़कर गोल और भारी हो जाता है और सब पेयी मोटी हो जाती है । कसरत बहुत करनेके कारण रक्तको संचालन क्रिया बन्द होनेसे यह रोग उत्पन्न होता है । इसके लक्षण—हृत्प्लि की क्रियाका तेज होना और शब्दके साथ उसका चलना, छाती धड़ धड़ करना तथा एक प्रकार दर्द मालूम होना, गला खस खस होकर खाँसी होती है । परियम करनेसे सांसलेने तथा छोड़नेमें कष्ट और नाड़ीका छुट्ट और हुत हो जाना, कभी कभी बखसलक बीचकी अंगठ सूज भी जाती है ।

चिकित्सा ।—हृत्प्लि के क्रियाकी वृद्धि और उसमें तेजी, धीरे तरफ ददे, माँही तीखी और हुत, सांस लेने या छोड़नेमें कष्ट इत्यादि लक्षणोंमें एकोनाइट ६ देना चाहिये । हृत्प्लि के पेयीकी दुर्बलता, माया घुमना, मूर्छाभाव, परियम

हृत्पिण्डकी क्रियाका लोप, मानस होना, इत्यादि लक्षणोंमें एकोमाइट ६, हृत्पिण्डमें दर्दके कारण वक्षस्थलमें मी-दद चेहरा स्याम शिरमें दर्द, इत्यादि लक्षणोंमें बेलेडोना ३, हृत्पिण्डकी क्रिया कभी तेज कभी बन्द, हिसने या सोनेसे मानस हो कि हृत्पिण्डकी क्रिया लोप होगई है; अत्यन्त अस्थिरता बहुत परित्यक्त और अतिशय मानसिक उत्तेजनाके कारण हृदयमन्दनमें ठिमेसिस १०। मनमें ऐसा होना कि हृत्पिण्डकी क्रियाको कोई हिला देता है या दबा देता है या बड़े तेजसे चलाता है। सर्वदा हृत्पिण्ड धक् धक् करे, बाई करवट सोने या घूमनेसे ठिमे हो तो कैकस १५, कभी कभी सांस बन्द होकर मूर्च्छा, जीब और दुर्बल नाड़ी, बाई और दर्द बारबार ठठी सांस लेना, हृत्पिण्डकी क्रिया कभी तेज कभी धीरे इत्यादि लक्षणोंमें लैकेसिस ६। स्थायिक दुर्बलताके कारण हृत्पिण्डकी पीड़ा और उसके साथ ही बारबार मूर्च्छा होना इत्यादि लक्षणोंमें लैकेसिस ६ वा १०।

## मूर्च्छा ( Syncope ),

स्थायिक दुर्बलताके कारण कोई-कोई मनुष्य सम्पूर्ण रूपसे या थोड़ा बहुत अज्ञान हो जाते हैं, इसको मूर्च्छा कहते हैं। अतिशय दुर्बलता, रक्त इत्यादि धातुके चयनके कारण भय, मानसिक विकार हटाव हर्ष या शोकके कारण भी मूर्च्छा हो सकती है।

17 Aug 2016

**चिकित्सा ।**—घीण और विषम गति नाड़ी दुर्बलताके साथ ही सांसमें कष्ट और मृत्युभय, चेहरा मलिन आखे धसी हुई इत्यादि लक्षणोंमें आसैनिक ६, २० । जिन मनुष्योंके शरीरमें रक्त विशेष हो उनके हृत्तुलमें सांस रुक जानेपर एकोनाष्ट ३५, ३० । बारबार हृदस्पन्दन, मूर्च्छा, व्याकुलता और नाड़ी घीण हो तो एसिड वाइडो ३ । हृत्पिण्डका आलेप, ऐसा मानूम होना मानो लोहके कायसे हृत्पिण्डकी फिसीमें पकड़ लिया हो तो कैक्टस १५, पाकस्थलीकी क्रिया विगड़कर हृत्तुल उत्पन्न हो तो नक्स-भमिका ६, ३० ।

### हृदस्पन्दन ।

### -(Palpitation of the Heart)

अच्छे शरीरके हृत्पिण्डकी क्रिया समभाव ही रहती है । असमभाव होनेपर कोई रोग हुआ है, अनुमान करना चाहिये । स्त्रायविक, दुर्बलता, रक्त प्रधान घातु अतिशय मानसिक चिन्ता, अपरिमित शारिरिक परियम या व्यायाम, शुष्कवायु, रक्तसाधकी विलक्षणता, अतिसेधुन, अपरिमित मादकद्रव्य सेवन, चेस्त्ररोगकी कठिन पीड़ा इत्यादि कारणोंसे हृदस्पन्दन रोगकी उत्पत्ति होती है ।

**चिकित्सा ।**—सुखमेखल उत्तम और खाल, हाथ पैरकी अथगता, सांस, तेज, सामान्य संसेखनामें हृत्कर्म,

हृत्पिण्डकी क्रियाका लोप मालूम होना इत्यादि लक्षणोंमें एकोमाइट ६, हृत्पिण्डमें दर्दके कारण वक्षस्थलमें भी दर्द, चेहरा खाल शिरमें दर्द, इत्यादि लक्षणोंमें धीलेहोना ३। हृत्पिण्डकी क्रिया कभी तेज कभी बन्द, हिंसने या सोनेसे मालूम हो कि हृत्पिण्डकी क्रिया लोप होगई है, अत्यन्त अस्थिरता बहुत परित्यम और अतिशय मानसिक उत्तेजनाके कारण हृदयमन्दनमें छिजिटेसिस ३०। मनमें ऐसा होना कि हृत्पिण्डकी क्रियाको कोई हिंसा देता है या दबा देता है या बड़े तेजसे चलावता है। सर्वदा हृत्पिण्ड धक् धक् करे, बाई करवट सोने या घूमनेसे हृत्ति हो तो कैकस ३५, कभी कभी सांस बन्द होकर मूर्च्छा, घोंष और दुर्वल भाड़ी, बाई और दर्द बारबार ठंडी सांस लेना, हृत्पिण्डकी क्रिया कभी तेज कभी धीरे इत्यादि लक्षणोंमें कैकेसिस ६। स्नायविक दुर्वलताके कारण हृत्पिण्डकी पीड़ा और उसके साथ ही बारबार मूत्र होना इत्यादि लक्षणोंमें कैकेसिस ६ वा ३०।

### मूर्च्छा ( Syncope ),

स्नायविक दुर्वलताके कारण कोई-कोई मनुष्य सम्पूर्ण रूपसे या थोड़ा बहुत अज्ञान हो जाते हैं, इसको मूर्च्छा कहते हैं। अतिशय दुर्वलता, रस इत्यादि धातुके चयनके कारण भय, मानसिक विकार छटावृत्त्य या शोकके प्रारण भी मूर्च्छा हो सकती है।

**चिकित्सा ।**—रोगीको मूर्च्छित होते ही कपूर या अर्गनामि (कस्तूरी) रोगीकी नाकके पास रखना चाहिये । ५।६ मिनिटके बीचमें बारबार नाकके पास रखते ही वसोशी आती रहती है । रोगीको निगलनेकी सामर्थ्य रहने पर स्वस्थ विशेष देखकर निम्नलिखित औषध प्रयोग करनेसे रोगके फिर आक्रमण करनेका डर नहीं रहता और शीघ्रही आरोग्य होजाता है ।

हटातु मानसिक विकार या भयजनित मूर्च्छा होने पर ऐकोनाइट ३x और ओपियम ३० । रोगी निश्चेष्ट भावसे पड़ा रहे तो नक्सममिका ३० और 'आमने-कार्म' ६, रस इत्यादि धातुचयसे उत्पन्न भई हुई पीछामें चायना ६, शारीरिक दुर्बलता और अस्थिरतामें भौसेनिक ३०, सब-शरीर ठंडा, हाथ पैरमें पसीनाके साथ दुर्बलता और मूर्च्छा हो तो मेराइम-भिर ३x । वायु प्रधान दुर्बल मनुष्योंको मेक मस्केटा ३x, और हृत्पिण्डकी क्रियाके विकार जनित मूर्च्छा रोगमें डिजिटेलिस ६ ।

### गलगण्ड ( Goitre ).

गलेके गौंठकी हृत्पिण्डको गलगण्ड कहते हैं । इसमें ऊपर या प्रदेह कोई उपसर्ग नहीं दिखाई देता पर गौंठ अधिक बड़ जानेके कारण ठोक गिलने या सोस लेने कीइनेमें कष्ट हो सकता है ।

चिकित्सा । तरुण और कोमल गलगण्डमें पाइयो-  
डियम D दाहरी प्रयोग करनेसे लाभ होता है । स्पष्टिया ६  
और पाइयोडियम ६x पर्याप्तमसे । गलगण्डकी सामान्य  
भुजनमें कैलकेरिया ६ ।

## श्वासयन्त्रकी पीड़ा ।

### सर्दी ( Catarrh )

श्वासनालीके थोड़ा चंश प्रदाहयुक्त होनेसे सर्दी हो  
जाती है । कंथ नसिकाकी रैषिक भित्ती प्रदाहयुक्त होकर भी  
सर्दी होती है तथा नाक और गलेकी रैषिक भित्तीसब प्रदाह-  
युक्त होकर सर्दीके साथ हीम्बर उत्पन्न होता है । रोगको,  
पहिंसी अवस्थामें शरीर मलिन, बदनमें दर्द, चंभाई खाना गिरमें  
टट्ट, माया घूमना, आंखें सास सांस गर्म, बारबार छींक और  
साथही आंखसे और नाकसे पानी बिरना इत्यादि लक्षण प्रगट  
होते हैं । फिर थोड़ा थोड़ा जाड़ा तेज और चंचल नाड़ी, सूखी  
खांसी, खरबड़, बुखामन्द, सब चंभोंमें दर्द इत्यादि लक्षण  
प्रगट होते हैं । कारण—अधिक देरतक गीला कपड़ा  
पहिरने, पानीमें भीमने घोस या सर्दी लगने और यकायक  
घसीना बन्द करनेसे यह रोग उत्पन्न होता है ।

चिकित्सा ।—स्फिरिट कैल्फर, रोगको पहिंसी  
अवस्थामें जब थोड़ा थोड़ा जाड़ा मासूम हो बदनमें दर्द हो  
और नाकसे जल बिरे ।



एकोनाइस ३ । रोगियों पक्षिली अवस्थामें थोड़ा थोड़ा आँड़ा छ्वर, जभाई बदनमें दर्द, आँखोंमें जलन, आँखोंमें पानी भर आना सांस गर्म बारबार छींक आना माथा भारी होना पतला, श्लेष्म बहना और अत्यन्त अनिमतः ।

त्रायोनिया ३८, ३९, ४० । खासनालीकी श्लेष्मिक भिक्षीमें जलन, कष्टकर खाँसी खासते खासते थोड़ा कफ निकलना, कफसे नाकका छेद बन्द हो जाना, खासनेके समय वक्षस्थलमें दर्द, आँखोंसे जल गिरना, पाकखलीकी क्रियाका बिगड़ना, वक्षके अंगलमें सुई धेधनेकी तरह दर्द ।

जेलसिमियम ३८ । बीठमें आड़ा मालूम होकर छ्वर, छ्वर आरम्भके पक्षिले माथा गर्म, प्यास, माथाभारी, चेहरा लाल, सजल वक्ष, नाडी पूर्ण और दृप्त, मखेमें दर्द, खाँसी और स्वरमद्ध ।

आर्सेनिक ऐलमम ६, ३० । अधिक पतला, सक्त और जलनके साथ श्लेष्मास्राव, बार बार छींक आना आँखोंसे जल गिरना, अत्यन्त आग्नि और तन्द्रा, नाक, आँख, स्वरनाली और कण्ठनालीकी अस्वस्थता ।

पलसेटिसा ३, ३० । नाकसे गाढ़ा दुर्गन्धयुक्त श्लेष्मास्राव, काम और माथेके अंगलमें तेज दर्द, माथा भारी मालूम होना, किसी द्रव्यका स्नाद या सुगंध न आना, गर्म घरमें और मन्थ्याकी रोगकी वृद्धि ।

मर्क्यूरियस सल ६ । गलेमें दर्द और घाव नाकमें द  
और घाव, बारबार छींक, हल्दीके रंगके पीपकी भांति गा  
श्लेष्मा, बहना, कभी आढ़ा कभी गर्मी, आंखोंमें जलन  
संख्याको रोगका बहना ।

इपिकाक १८, ६ । बारबार छींक और बहुत श्लेष्मास्राव  
उसीके साथ वमनकी इच्छा या श्लेष्मावमन ।

सेपा ६ ।—बारबार जोरसे छींक, नाकसे अधिक जल  
गिरना, ( आपही आप नाकमें बूद बूद जल गिरना ) होंठमें  
झालेकी भांति उठ आना और उसमें जलन तथा दर्द ।

कैलिबार्डक्रम ६ । पुरानी सर्दीमें खरबग, सूतकी तरह  
श्लेष्मास्राव और गलेमें दर्द ।

साधारण नियम ।—ज्वर रहे तो चाबू, वाली,  
भाराष्ट इत्यादि क्षुद्र पथ्य । फिर रोटी थोरसा । खान या  
सर्दी एकदम निषेध, रातकी सोनेकी पहिली गर्म जलमें पैर  
धोनेसे उपकार होता है । गर्म वस्त्र पहिर कर पसीना  
निकासना अच्छा है ।

## वायुनाली प्रदाह ( Bronchitis )

नये वायुनाली प्रदाहमें बड़ो थार छोटी छोटी श्वास  
नालीकी श्लेष्मिक भिन्नी आक्रान्त हो जाती है । सर्दीरोगमें  
नाक और गलेकी श्लेष्मिक भिन्नी आक्रान्त होती है । लड़के  
और ठीको यह रोग जोमेसे विपदकी आशङ्का है । -



गन्धका सांसके साथ शरीरमें प्रवेश करना इत्यादि कारणोंसे यह रोग उत्पन्न होता है । हफ्फोंका रोगी प्रायः दीर्घजीवी होता है ।

**चिकित्सा ।**—आसैनिक ६, १२, २० । फुसफुसमें रक्त जमा हो जानेके कारण उत्पन्न भये हुए श्वासकष्टमें गला सांय सांय करे, रुफनेसे हडि, वक्षस्थलमें गर्मीका मालूम होना और पसीना ठंडा ।

**हृषिकाक ६ ।**—वक्षस्थलपर दबाव मालूम होना, घन घन सांस, धड़फड़ शब्द, सब अंग ठंढे, सब शरीर विशेष करके चेहरा पीला, धँसनी, चमन करनेकी इच्छा बारबार कष्ट देनेवाली खांसी ।

**एकोनाइट २, २० ।**—हफ्फोंका आराम होनेपर व्याकुलता सांस छींचनेमें कष्ट, हृत्पिण्डकी क्रिया धीमी ।

**कूप्रास-मिट ६ ।**—स्त्रायविक श्वासरोगमें आक्षेप और मूर्च्छा होनेसे ।

**कैलिहाइड्रो ६ ।**—बारबार छींक, नाकसे पतला स्रोषा बहना, सांसमें कष्ट ( वात या उपद्रवग्रस्त रोगी ) ।

**नक्षत्रभूमिका ६, २ ।** अतिशय उष्णता, वक्षकी हड्डीकी नीचे दर्द, बहुत स्रोषा निकलनेपर हफ्फोंका कम हो जाना । कम होने पर घोर पीले रंगकी जीफ, रोगकी बढ़ती और घटती दोनों दशामें—कणियत और ख्याया हुआ अथवा दृजम होना ।

लोवेसिया २, ३ ।—( रोग आरम्भ होतेही इसको देनेसे खास कष्ट बढ़ने नहीं पाता ) पेटसे छाती तक दुर्बल मालूम न होना, वमनेच्छा या वमन, पाकस्थलीमें कोई कठिन वस्तुका रहनेकी तरह मालूम होना । । । । ।

श्वेताद्रस-आखस ६, १२, २० ।—नाक, कान और पैरके तल्वेमें ठंडा पसीना आने पर ।

सलफर ६, १० । गठिया बात, चर्मरोग और अन्यान्य घातु विकृतिसे हुए खास रोगमें ।

साधारण नियम ।—गुरुद्रव्य भोजन निषिद्ध । शामके पहिले ही रातका भोजन, धारुखान, विचरण, रुद्ध वायु सेवन, उष्णजल पान और कफ नाशक द्रव्य भोजन हितकारी है । थोसमें फिरना और बहुत सवेरे बिखोनेसे चठना अच्छा नहीं ।

## फुसफुस प्रदाह (Pneumonia).

फुसफुस प्रदाह एक या दोनों तरफ होता है । इस रोगमें साधारणतः तीन अवस्था होती है । प्रथम अवस्थामें फुसफुसमें रक्त संशय होने पर आका लगकर बुखार आना, बदनकी गर्मी १०१ से १०३ डिग्री तक होती है, खास प्रश्वसकी गति प्रति मिनटमें ३०।३५ बार होती है, और नाड़ीका स्पन्दन १२०, १२० दफे होता है, पहिले खुर आरम्भ होकर थोड़ी थोड़ी

खांसीके साथ घटघटा कफ निकलता है, फिर दूसरी अवस्था शुरू होता है। द्वितीय अवस्थाके पछिसे खोङाके मोरचेके तरह या घट चूर्णके तरह कठिन ससससा कफप्लाव खांसीके वजह छातीमें खैचन, शिरमें दर्द, अरुणि श्वास प्रश्वासमें कष्ट, नाड़ी पूर्ण और तेज चलती है। पछिसे खिखे प्रथम अवस्था कई एक घण्टेसे २।३ दिन तक रहती है। फिर द्वितीय अवस्थाका आरम्भ होने पर फुसफुस कड़ा हो दर्द कम होता है, खांसनेमें वैसा कष्ट नहीं होता और कफ पतला हो निकल जाता है। इसी तरह २ से ४ दिन तक द्वितीय अवस्था रहकर तृतीय अवस्थाका आरम्भ होता है। रोग आराम होनेको होता है तब ख्वर और फुसफुसका दर्द कमता है खांसी और कफ आना बन्द होता है। किन्तु यदि रोग कठिन आकार धारण करे तो द्वितीय अवस्थाके बादश्री फुसफुसमें पीप पैदा हो खांसीके साथ बारबार निकला करता है, फिर नाडी धीरे धीरे रुत तथा श्वासका धेग बढ़ कर रोगी शक्तिशून्य हो मर जाता है। कभी रोगी जाताकतीके वजह पीप निकाल नहीं सकता इस दशामें श्वास रोध हो किसी किसीकी सहाय्य होती है। इस रोगमें परीक्षाके खिखे वच परीक्षाका यन्त्र (एम्बोस्कोप) की सहायता आवश्यक है। वच परीक्षा करनेसे मासूम होता है कि रोग शुरू होते ही पछिसे कठिन शब्द सुनाई देता है फिर केशसे केश घींसनेकी भांति शब्द अनुभव होता है। द्वितीय अवस्थामें जब फुसफुस कठिन

होता है, तब कोई प्रकार शब्द सुनाई नहीं देता । तृतीय अवस्थामें जब फुसफुसमें पीप पैदा होता, तब केवल टप् टप् शब्द सुनाई देता है । दोनो तरफ फुसफुस आक्रान्त होनेसे पीछा कठिन है समझना होगा ।

कारण ।—कटु परिवर्तन, चर्मावरोध, शारीरिक दुर्बलता, प्वरादि रोगमें फुसफुसका दुर्बल होना ओस और ठंड लगना ।

चिकित्सा ।—एकोनाइट १२, ६ ।—रोगके प्रथम-वस्थामें जब प्वरभाव, सर्दी अत्यन्त ग्लानि, बेचैनी दोनो कंधेके बीच या छातीमें दर्द, थोड़ी खांसी, तीसरे पहरको रोगका बढ़ना आदिमें ।

फुसफुस ६, ३० ।—बारबार कष्टकर खांसी, वक्षस्थलमें तेज दर्द, पीला या हरा अथवा रक्त मिला बुझा श्लेष्मा बहना, नाड़ी तेज, केश घसनेसे जैसा शब्द होता है, वैसाही शब्द फुसफुसमें मालूम होना । नड़कीके ब्रह्मो—न्यूमोनियामें एकोनाइटके साथ पर्व्यायक्रमसे इसे खिलाना चाहिये ।

आयोनिया ६, १० । बारबार सूखी खांसी पर श्लेष्मा कम निकलना, वक्षस्थलमें सुई बेचने या दबाकर पकड़नेकी तरह दर्द, सांस लेनेके बाद दर्दकी छवि ।

मेराइम मिर १२ ।—( पेन्सिली अवस्थामें जब फुसफुसमें रक्त संचय हो ) वक्षस्थलमें गर्मी, दर्द और भार मालूम होना । शीत, कष्टकर घन 'घन सांस' और सूखी खांसी,

माड़ी पूर्ण, कठिन और चक्कनशील, इस तरह कि स गलीसे दबाकर धरने पर भी छोप न हो ।

एण्टिमार्ट १२ ।—ग्रासनाली प्रदाहयुक्त, गला खस खस करके खांसी और साय साय शब्द, बिना कटके बहुत कफ का गिरना, माड़ीका वेग बढ़ना पर बढ़नकी गर्मी कम, ठंडा प्रसीमा बहुत, प्रतिशय चक्कठा और बेचैनी, चेहरा काला या पीला, मस्तिष्कमें रक्त संचय ।

जेल्सिमियम ३५, ६ । दाहिनी ओरका फुसफुस प्रदाह-युक्त और चसीकी साय यज्ञतमें दर्द, चटखटा पीसे रगका पतला मल और सांस लेनेमें कष्ट ।

सलफर ६, १० । फुसफुसप्रदाहकी पहिली अवस्थामें या पीप उत्पन्न होनेके पहिले ।

लाइको पोडियम १२, १० ।—रोगकी तीसरी अवस्थामें पीप उत्पन्न होने पर ।

साधारण नियम ।—बचखेल और पीठ रुईका पंहुले रखकर बांधना चाहिये । ठंडा पानी पीनेको देना नना है ।

## खांसी ( Cough ) —

खांसी दूसरे रोगोंका लक्षण मात्र है । ग्रासनालीका विगड़ना, पाकस्थलीकी क्रियाका विकार, फुसफुस प्रदाह, यज्ञतकी पीड़ा और सर्दी इत्यादि रोगोंके साथ खांसी भी रहती



है। खांसी दो प्रकारकी होती है —तरल और कठिन ( तर और सूखी ) यक्ष्मारोगमें, ज्वर और वक्षस्थलमें दर्दके साथ शरीर क्षय करनेवाली खांसी रहती है। इफ्फो रोगके साथ जो खांसी रहती है, वह रातको बढ जाती है और उसीके साथ खासका भी कष्ट वर्तमान रहता है। न्यूमोनिया रोगमें ईंटके चूर्णकी भांति वर्षाविशिष्ट अल्प निष्ठीवनयुक्त खांसी रहती है। खूनकी खांसीमें रक्तके साथ खांसी और सूखी खांसीमें घन घन शब्द करके खांसी होती है। हामज्वरके साथ भी एक प्रकारकी सूखी खांसी देखी जाती है ।

**चिकित्सा ।**—एकोनाइट ३५ ।—उत्कण्ठा, माघमें पीडा, कजियत, चित् सोनेसे खांसीका शान्त रहना, करवट सोनेसे खांसीकी वृद्धि खांसनेके समय वक्षस्थलमें खोंचा-मार्नेकी तरह दर्द, सूखी खांसी ।

**इपिकाक ३५ ।**—बारबार छींक, कष्टकर खास प्रखास, आस्त्रेपिक और सांस बन्द करनेवाली खांसी, स्वरनालीमें सुरसुरी या घावके साथ साथ साथ शब्द या बहुत से आ जम कर घड़ घड़ शब्द, खांसनेके समय नाभीमें दर्द, वमनकी इच्छा ( मिचली ) या वमन ।

**अेलसिमियम ३ ।** स्वरभंग या स्वरवद्धके साथ तेज खांसी और उसीके साथ कण्ठमें और वक्षमें दर्द, ( प्रदाहकी पहिली अवस्थामें ) ।

वेनेडोना १।—खरनाली और कण्ठमालीमें जलन, पूर्ण और कठिन नाड़ी, उजली आंखें, चेहरा लाल, माथा भारी मस्तिष्कमें रक्त अधिक, कभी स्त्रव, कभी ठसके की खांसी, रातफो हृदि, ठंठी हवामें आगम मानूम होना, वक्षस्थलमें दर्द, श्वास प्रश्वास मृदु ।

एसिड नाइट्रिक ६, १० । दुर्बलता, मानसिक अवसाद, माथा भारी, भूखकी कमी, पाकस्थलीमें दर्द, भोजनके बाद पेट भारी मालूम होना, रात्रिमें शरीरके गर्मकी हृदि, प्यास, पसीना, नींद न आना, वक्षकी छल्लीके नीचे दर्द ( पुरानी खांसी ) ।

एपिटिमार्ट ६, १० । खरमंगयुक्त सूखी खांसी, गला घड़ घड़ करके पतला कफ कटसे निकलना, भोजन करनेके समय खांसते खांसते खाया हुआ पदार्थ वमन, खांसनेके समय जमाई आना ।

मायोनिया ६, १२, १० ।—खांसनेके समय मस्तक वक्षस्थल और बगलमें खींचनेकी भाति या सुई धँसनेकी तरह दर्द, वक्षस्थलमें दर्द खांसनेके समय सब अंगोंका कांपना, सुबहको, सन्ध्याके समय और ठंठी हवामें खांसीकी हृदि, सूखी खांसी ।

ब्रसेरा १ ।—रातके समय खांसीकी हृदि और सायड़ी वमन और ठकार, कभी कभी रक्तमिश्रित श्लेष्मा निकलना, रड़ रड़ कर खांसीका धग, सोनेसे खांसी बढ़ती है इससे रोगीको उठकर बैठना पड़ता है ।

- भार्निका ६ । क्षणस्थायी ठसके की खासी, खांसते खांसते सब शरीरका कांप उठना कफके साथ रक्त निकलना, वक्षके बगलमें सूई बेधनेकी भांति दर्द ।

आर्सेनिक ऐल्बम ६, १२, ३० ।—खास खासीकी भांति सांस बन्द करनेवाली खासी वक्षस्थलका आकुञ्चन, बेचैनी प्यास ।

कटिकम ६, १० ।—सूखी खासी, खांसते खांसते आपही आप प्रेशाव निकल जाना, स्वरभंग, रातके समय शय्याकी गर्मीसे खासीकी वृद्धि, शीतल जल पीनेसे खासीका वन्द होना, खांसते खांसते गले तक श्लेष्माका आजाना पर रोगीको धूकनेकी शक्तिका न रहना ।

केनोयाम ६-१० ।—गला खुस खुस करके सूखी खासी, सोने, बैठने या हँसनेसे खासीकी वृद्धि तथा रातकी खासीका बढ़ना दिनको कम होना ।

झिपर-सलफर ६ ।—पुराने अग्निमान्द्यके साथ खासी, गलेमें जलन और स्वरभङ्गके साथ कड़ा गठोरा श्लेष्मा निकलना । सर्दी लगनेसे खासीकी वृद्धि, गलेमें कोई चीज अटकनेकी तरह मालूम होना और उसी कारणसे थूक गिलनेमें कष्ट ।

हायोसायेमस ६-१ ।—स्त्रायविक आक्षेपजनित सूखी खासी, रात्रि और सोनेसे खासीकी वृद्धि तथा उठ बैठनेसे खासीका कम हो जाना ।

**हग्नेशिया ६ ।**—हिष्टिरिया वो गुष्मवायुयस्त रोगोंकी खांसीके कारण नौदमें प्याघात, कण्ठनालीका फड़कड़ाना, खांसनेसे गलेकी खुसखुसीका बढ़ जाना ।

**कैलि बाइक्रम ६ ।**—खांसते खांसते रक्त मिला स्नेषा निकलना, खांसीके बाद माया धूमना, सुबहको नौदसे उठने पर और भोजनके बाद खांसीका बढ़ना ।

**मर्कूरियस् सल ६ ।**—पीप मिला रुषा स्नेषा (पुरानी खांसीमें), रात्रिमें छद्दि, छातीसे गले तक जलनके साथ दर्द और स्वरमद्ध, सदरामय, लवणाल स्नेषा वमन ।

**नक्शमसिका ६ ३० ।**—खांसनेके समय पाक्खसीमें दर्द, गिरमें दर्द, गलेकी गालीमें जलन, चटपटा स्नेषाका निकलना बहुत सबेर या भोजनके बाद खांसीकी छद्दि, रुकने या नींदसे सांस छोटने पर खांसीकी छद्दि, खांसीके कारणसे नौद न आनी, विशेष करके बिचसी रातमें खांसीका आरम्भ होना ।

**फसफोरस ६ ।**—गद्दा खुसखुस करके सुखी खांसी, स्वरमद्ध, छातीमें दर्द, फेन मिला रुषा और चटपटा पीप मिला रुषा नमकीन स्नेषा निकलना, सोने, हँसने या बोलनेसे खांसीकी छद्दि ।

**फल्सेटिला ६ ३० ।**—बाफ जमा हो जानेके कारण सांसका कट, गलेमें घड़ घड़ शब्द, दिमको पीले रंगका लोम

श्लेष्मा निकलना, रातको और सोनेसे सूखी खांसी । बाहरकी वायुसे खांसीकी वृद्धि ।

## १०। परिपाकयन्त्रकी क्रिया ।

### मुखगद्गरका प्रदाह (Stomatitis)

इस रोगमें मुखगद्गरक भित्री ताल रंगकी हो जाती है, सूजन और वेदनायुक्त या घट होकर कभी कभी पीप निकलने लगता है । सास लेने तथा छोड़नेमें दुर्गन्ध आती है, जीभ लाल और सूजी हुई, मसूड़ा, और तालू भी सूज जाता है ।

पाकाशयकी क्रियाकी बिचक्षणताके कारण, हाम या स्फोटक ज्वरके बाद अथवा मुँहमें गर्म चीज प्रवेश करनेसे यह रोग उत्पन्न होता है ।

चिकित्सा ।—पारा खानेके कारण यह रोग होनेसे नाइट्रिक एसिड ६, तथा दूसरे कारणसे होने पर मार्कसल ६ ।

### दन्तशूल । (Tooth-ache)

एकाएक अतृप्त परिवर्तन, अजीर्ण, गर्मावस्थाकी आनवीय पीड़ाकी उत्तेजना और वायुकी पीडा इत्यादि कारणोंसे दन्तशूल ( दाँतोंमें दर्द ) उत्पन्न होता है ।

चिकित्सा ।—बहुत करके सब प्रकारके दन्तशूलमें यकिले प्लान्टे गो २ सेवन और प्लान्टे गो ० दांतोंमें मसूड़ेमें घसने सेही लाभ होता है । ठण्डी हवामें दांतोंमें दर्द, ठंडा पानी देनेसे दर्दका बन्द होमा, एक घोरकी दर्दमें एकोनाइट १x । सांस लेने तथा छोड़नेमें दुर्गन्ध, कोष्ठबन्ध, और दन्तचयजनित दन्तशूलमें क्रियोजोट १२ । मसूड़ेमें छई बेघने की तरह या दप् दप् दर्दके साथ कई दांत आक्रान्त होनेसे और यह दर्द विचरणशील ( घूमनेवाली या कभी ऊपर या उधर ) होने पर बेलीडोना १ । सर्दीके कारण उत्पन्न हुई दांतके दर्दमें ( यदि दन्तमूल न सजे ) मुहमें कोई चीज प्रवेश करतेही चापकर दबानेकी भांति दर्द हो और साथ ही पड़िनी दर्द आती रहे तथा बिछावनकी गर्मी और तीसरे पहर रोगकी वृद्धि हो तो पलसेटिला १ । ठीक सब्याके समय दांतका दर्द और जीभमें गाढ़ा सादा छेप दिखाई दे तो ऐण्टिम क्रूड ६ । दांत बड़ा भानूम हो, दांतोंको दांतोंसे दबाने तथा ठंडा अल सार्ज होनेसे असह्य कमकमी होकर दर्द हो, रातमें कपाससे बगल तक दर्द बढ़ जाये, गर्म, प्रयोगसे घटे तो आर्सेनिक ६ । आयवीय दन्तशूलमें—ठंडी हवासे दर्दका बढ़मा दांत बड़ा या असह्य हुआ माशूम हो, दन्त मूल और गाल फूल जायें गर्म चीज पीने या भोजनमें तथा बिछावनकी गर्मीमें रोगकी वृद्धि इत्यादि लक्षणोंमें कैमोमिला ६

लाभदायक होता है। दन्तमूलमें दर्द, तथा रक्तस्राव, मुंह  
 सूखा रहे पर प्यास मालूम न हो, चबानेके समय दर्द इत्यादि  
 लक्षणोंमें कार्बोभेज १२। कमिजनित दांतकी, दर्द, गर्भा-  
 वस्थाकी दांतकी दर्दमें और दूसरी, दूसरी तरहकी दर्दमें  
मार्क्यूरियस ६। चेहरेके चारो तरफ मोचने, या खोंचा बंधने  
 की भांति दर्द कानतक दर्द वही 'हुई, बहुत लोच बहना  
 रातमें दर्दका बढना इत्यादि लक्षणोंमें मार्क्यूरियस ६४, कमका  
 विधूर्ण सेवन कराना चाहिये। बढती हुई जवा दांतमें  
 लगते ही दर्दका बढना, दांतका बड़ा मालूम होना, वाई  
 और अधिक दर्द, आहारके समय दांत ठडे मालूम पड़ने  
 इत्यादि लक्षणोंमें सल्फर ६। पारा सेवनसे उत्पन्न भये हुए  
 दन्तशूलमें—बहुत लार गिरि साथही मच्छेसे रक्त बहे  
 तो नाइट्रिक एसिड ६, चयमास दांतोंमें जब दर्द उसके,  
 साथही दूसरे दूसरे दांतोंमें भी दर्द ठठा पानी लगनेसे दर्दका  
 बढना, इत्यादि लक्षणोंमें स्पाइजिलिया ६। बरफ या ठठा  
 पानी लगनेसे दर्दकी भांति हो तो कफिया १४। दांत काले  
 या उन पर काली रेखा दिखाई दे और विकृत हो। दन्त-  
 मूलमें नाखून या शीर्ष हो, अंतुकाशीन दन्तशूल, आक्रान्त  
 दांतोंमें चिबाने या अलग करनेकी भांति दर्द हो, विष करणा-  
 वत् वेदना कानतक मालूम हो। शंखदेशमें दप् दप् करके

दर्द हो, दांतोंकी जड़ ख़जी या सफ़ेद रंगकी हो, ठंढा द्रव्य पीने या खानेसे दृढ़ हो तो टैफ़िस्याग्रिया ३० ।

साधारण नियम—दांत सदैव निरापद रहें इस लिये भांति भातिके दांतोंके मज्जन तमाक़ या चुस्ट बहुतरे लोग व्यवहार करते हैं, परन्तु उनसे लाभ तो कम होता है पर हानिही अधिक दिखाई देती है । सफ़ेद मिट्टी तम्बूकके साथ मिलाकर दात घोंसे लाभ होता है, दांत चिलनेसे उखाड़ गलनाही अच्छा है ।

## जीभका घाव (Ulcer on the tongue)

कभी कभी जीभपर छोटे छोटे दाने दिखाई देते हैं जिससे भोजन करनेमें बाध होता है । मर्क्यूरियस बिन फायडेटस, विषुर्ष ३ इस रोगकी दवा है । परन्तु यदि रोगीकी पाँका दोष हो तो एसिड नाइट्रिक ६, देना चाहिये । -२-

## गलघृत (Sore-throat).

सर्दीके कारण गलेमें दर्द होना, जोरसे बातें करनी गाना, यक्षुता देना, ख़रमंग अवस्थामें चिलाना, उपदंशका फोड़ा इत्यादि कई कारणोंसे यह रोग उत्पन्न होता है । पहिले मुखगल्लरमें प्रदाह, घंटीका बढ़ना और तालमूल सूख जाता



है। फिर गलेकी शैथिक भिक्षीमें फोड़ा होकर रोगीको गलेमें सुरसुरी मालूम होती है बारबार कफ निकालनेकी चेष्टा करता है, कोई चीज निगल नहीं सकता और सांस लेने तथा छोड़नेमें कष्ट होता है।

**चिकित्सा ।**—गलेकी नई दर्दमें, अतिशय उत्ताप, निगलनेमें दर्द, गला लाल, भाँखें उजली चेहरा लाल शिरमें दर्द इत्यादि लक्षण दिखाई दे तो बिलेडोना ३x, और एकोनाइट ३x ( पर्यायक्रमसे )। गलेमें सामान्य दर्द और सूजन कुछ नीला रंग लिये हुए लाल फोड़ा, श्वास-प्रश्वासमें दुर्गन्ध इत्यादि लक्षणोंमें मार्कसल ६। नोंदसे आगनेके समय गला सूख जाये यूँक निगलनेके समय गलेमें कोई गोल चीज अटकती मालूम हो, गलेके भीतर देखनेसे लाल या बैंगनी रंग दिखाई दे, गलेके बाहर थोड़ी सूजन हो तो लेकेसिस ६। यूँक निगलनेमें गलेमें दर्द, तालूपड़ाह, फोड़ेसे पीप निकले तो ( पुरानी अवस्थामें ) वीराइटा-कार्ब ६। कभी कभी भाँसे निक ६, फाइटोलैका ३, डालकैमारा ६, प्रयोग करना चाहिये।

## पाकस्थी प्रदाह ( Gastritis )

नये पाकस्थी प्रदाहमें—चापनेसे जलनके साथ बढ़नेवाली



## रक्तवमन या रक्तपित्त (Hæmate mesis)

धूपमें वृममा, अधिक व्यायाम, अतिशय शोक, अति मैद्युन, क्षार, लवण, अम्ल और कटु द्रव्य तथा सरिचादि तीव्र चोख भोजन इत्यादि कारणोंसे पित्त बिगड़कर रक्त दूषित हो जाता है। वही पित्तसे बिगड़ा हुआ रक्त, आँख, कान, नाक तथा मुखगहररूप जर्धमार्गसे या लिङ्ग, योनि, और गुच्छद्वार अधोमार्गसे अथवा दोनों मार्गों से निकलता है। साधारणतः वमनके साथ सुहसेही रक्त गिरता है, रक्तवमनके पहिले पाकस्थलीमें दर्द और भार मासूम होना, अजीर्ण, वमनेच्छा, सुहका नमकीन स्वाद, नाड़ी दुर्बल, दीर्घ निश्वास, अवसन्नता, माथा भिम् भिम् करना इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं। वमन द्वारा पाकस्थलीसे जो रक्तस्राव होता है उसका परिमाण या वर्ण सब समय पर समान नहीं रहता है।

चिकित्सा ।—एकोनाष्ट १५ । रक्त प्रधान मनुष्योंका सुह लास, पूर्ण-नासी, कलेजा घड़ घड़ करना, व्याकुलता, उषर, एकाएक पाकाशयमें दर्द होकर रक्तवमन ।

\* पुसपुससे रक्तवाह और पाकस्थलीसे रक्तवाहका प्रभेद—वमनका रक्त बीजा कासा, विनयुक्त, सुतद्रव्य या मलके साथ निश्चलता है और वमनके पहिले आमाशयमें दर्द और वमनके पहिले वमनेच्छा रहती है। पुसपुससे रक्त निश्चलने पर रक्त आमाशय, विनयुक्त, उषा निर्जित मलके साथ रक्त नहीं रहता है और रक्त निश्चलनेके पहिले आमाशय और वमनमें दर्द होती है।

मिनिफोलियम १x ।—बिना कष्टके छालवर्णका रक्त वमन ।

इपिकाक ६ ।—वमनेच्छा या वमनके साथ लाल रंगका रक्त निकलना, थोड़ी देर ठहरनेवाली बार बार खांसी, मुँहका लवणस्वाद, जीभ सजल ।

हिमामेलिस १ ।—दुत, कम्पमान और शीतल नाड़ी, कासे रंगका रक्तस्राव, पेटमें गड़गड़ कल कल शब्द, बिना कष्टके रक्तस्राव दुर्बलता ।

आर्निका मण्टेना ६ ।—थड़ा थड़ा रक्त वमन, भोजन और पीनेसे छद्दि और बहुत परियम या आघातजनित रक्तस्रावमें ।

आर्सेनिक ६, १० ।—सांस लेने तथा छोड़नेमें कष्ट, चेहरा भस्मिल, हृदयस्पन्दन, बदनमें दाह न हटनेवाली प्यास, नाड़ी क्षुद्र और चघन ।

चायना ६ १० ।—अधिक रक्त वमन होकर रोगी दुर्बल हो जाने तथा हाथ पैर ठण्डे और नाड़ी चीण हो जाने पर ।

नियम ।—रक्त वमन बन्द न होने तक साबू, शर्बत आरारोट, थोड़ा दूध ठण्डा करके पिंसामा चाहिये और पाकस्थलीके उपर ठण्डे अलकी पट्टी देनेी चाहिये ।

## अजीर्ण या अग्निमान्द्य (Dyspepsia)

परिपाक क्रियाकी विलम्बताको अजीर्ण या अग्निमान्द्य कहते हैं, भूख नष्ट, पेटका फूलना, कब्जियत या उदरामय, टैकार आना, वमनोद्देग (मिचली) कलेजेमें जलन, पेट भारी मानस होना, सुइमें जल भर आना, भोजनके बाद पेटमें दर्द, सांसमें दुर्गन्ध, कलेजा धड़ धड़ करना, माथा दूखना इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं ।—

**कारण ।**—अधिक तेल या घी की बनी चीजोंका भोजन, भोजनके पदार्थ भली प्रकारसे न चिबाकर थोड़ी पेटमें जाने देना, बहुत दिनोंतक भाँति भाँतिकी दवा खाना, मद्यपानादि अत्याचार, अतिरिक्त शारीरिक और मानसिक परिश्रम या परिश्रमका एकदम त्याग ।

**चिकित्सा ।**—नक्सभमिका ६, १०-। भोजनके बाद पाकस्थलीमें भार और दर्द मानस, पड़ना, कलेजेमें जलन, पेट फूलना, छट्टी ठकार, बारबार भोजन किया हुआ द्रव्य या पित्तवमन, सुइका कड़ुवा और अन्न खाद, भोजनके बाद सन्द्रावेश और आलस्य, सुइको गिर घूमना, बारबार उठना मल प्रवृत्ति, चेहरा कुछ पीला, विशेष करके मद्यपानादि-जनित अजीर्ण-रोगमें ।

**पमसेटिना १ ।** कलेजेमें जलन, वमनेच्छा, जीभ दूख

घोर रुखड़ी बारबार पतला दस्त मुखका कड़ुवा या अम्लसाद विशेष करने वीसे बमार्ग गई चीजे न पचनेके अजीर्णमें ।

त्रायोनिया ६ ।—भोजनके बाद पाकस्थलीमें भार मालूम होना, ऐसा मालूम हो कि पाकस्थलीमें एक टुकड़ा पत्थर रखा हुआ है, कोष्ठबद्ध, माया भारी, पाकाशयमें खोचा मारनेकी भांति दर्द मुख कड़ुवा घोर अम्लसाद तथा वमनेच्छा, गर्मके दिनोंका उदरामय ।

साइकोपोडियम ३०, २०० ।—भोजन किया हुआ पदार्थ पचनेके समय अतिशय तन्द्रा, पेटमें वायु भरकर पेटका फूलना, कोष्ठबद्ध, घाई घोरकी अतड़ीका कांपना दुर्बलता या अधग्रन इत्यादिसे उत्पन्न भया हुआ अजीर्ण, पेशीकी ताकतका कम होना या परिपाक रसके अभावके कारणके अजीर्णमें ।

कार्बो-मेज ६, ३० ।—पेटका फूलना, कलेजमें जलन, उदरामय, माया भारी मालूम होना, कमजोरी (पुराने अग्नि मान्य घोर बुढ़ीके अग्निमान्यमें ।

एप्पिम-क्लूड ६ । ' ' पचनेकी शक्तिका कम होना घोर अरुचि, पाकस्थलीमें भार मालूम होना, मिचली या पित्त घोर कफ वमन, शुद्धाहारसे दुर्गन्धित वायु निकलना, भोजन किये हुए पदार्थका बुरा बुरा टेकार, कभी पतला दस्त, कभी कोष्ठबद्ध, पेशाबमें जलन ।

**साधारण नियम ।—**किसी विपरीत पदार्थके पेटमें जानेके कारण वमन होनेसे जिस तरह वह विष जलदो निकल जाय, वही उपाय करना चाहिये । पाकस्थली या किसी दूसरे यन्त्रकी उत्तेजनाके कारण वमन होनेसे गर्म पानी पिलानेसे ही अच्छा फल होता है । छोटे छोटे बरफके टुकड़े घूसनेको देनेसे भी फायदा होता है । कभी कभी पाकस्थलीको आराम देने या सामान्य आहार करनेसे वमन रुक जाता है । अभिमान्यके वमनमें कच्चे नारियलका पानी उपकारी है ।

### पाकाशयमें दर्द ।

### (Pains in the Stomach).

भोजनके बाद, पाकस्थलीमें जलसे मोचनेकी भाँति दर्द, भोजनका पदार्थ पेटमें पड़ते ही दर्दका बढ़ना, अन्न या तीता खाद लिये ठेकार, कौ होकर भोजन किया हुआ पदार्थ निकल जानेसे दर्दकी कभी इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं ।

**चिकित्सा ।—**जलभूमिका ६, १० । भोजनके बाद पाकस्थलीमें दर्द और उसके साथही अवसन्नता, थोड़ा भोजन करने पर भी दर्द माधूम होना, पेटके ऊपर और कोखमें दर्द, आँखोंके साथ वमन या वमन करनेकी इच्छा, माया भारी, कोष्ठवह, पेटका फूँटना ।

आर्सेनिक ६, ३० । भोजन या पीनेके बाद वमन, पाक-  
स्थलीमें खोचा मारनेको भांति दर्द, रातको दर्दका बढ़ना,  
बहुत धीवैनी और कमखोरी ।

कैमोमिला ६ या १२ ।—रातके समय पाकस्थली पर चाप  
माचूम होना और दर्द, तीता या भस्मके स्वादका वमन ।

कलोसिंथ ६ ।—पाकस्थली खाती माचूम होना और  
जखन, रातको पाकस्थलीमें पेंठन, तीता वमन (पीले रंगका),  
पेटका फूटना । एसिड हाइड्रो ६, वायूयूस ६, कार्बो-मेज  
३० समय समय पर प्रयोग करना चाहिये ।

### अन्त्रप्रदाह (Enteritis)

पेटमें कई जगह अंतड़ी (आंत या भाड़ी) हैं । छोटे  
छोटे अन्त्र प्रदाहित होने पर उसको अन्त्र प्रदाह (एण्टराइ-  
टिस), और बड़े-बड़े अन्त्र प्रदाहित होने पर उसको आमरक्त  
(डिवेयट्री) कहते हैं । यह रोग अधिक कारके लड़कोंको ही  
होता है । पहिले कपकपो देकर ज्वर, पेटमें (विशेष करके  
नाभिके चारों तरफ) बहुत तेज दर्द और ठगानेसे दर्दकी  
वृद्धि । धीरे धीरे दर्द इतनी बढ़ जाती है कि रोगी झिन्न  
नहीं सकता और दर्दके कारण रोगीको खित होकर ठेठना  
पेटके ऊपर रखकर सोना पड़ता है । यहचि, कोठबण,  
वमनेच्छा, पेटका फूटना, कभी कभी पतला दस्त इत्यादि  
लक्षण दिखाई देते हैं ।



**चिकित्सा ।**—ज्वर और प्रदाह कम करनेके लिये

एकोनाइट  $\text{R}_x$  । ज्वर, प्रदाह, शीत, चेहरा साफ गिरमें दर्द तथा पतला दस्त इत्यादि लक्षणोंमें बेलाडोना ६ । नाभिके चारो तरफ मलनके लिये तीव्र वेदना बड़ी दुर्बलता और सुस्ती । तेज प्यास, परन्तु थोड़ा ही पानी पीने पर कुछ देरके लिये छत्ति इत्यादि लक्षणोंमें आर्सेनिक ६ । बहुत कूयने पर रक्त मिला हुआ श्लेष्मा दस्त होने पर मार्ककर ६ । सरलान्धमें दर्दके साथ बारबार दस्त, पेट फूलकर ठोसके तरह शब्द, नाभिके चारो तरफ खींचनकी तरह दर्द, सब पेटमें दर्द और मिचली इत्यादि लक्षणोंमें कस्तोरसिन्ध ६ । कोटौर अंतर्द्वियोंमें प्रदाहके साथ बहुत तरहका मल कई प्रकारका उदरामय, सुबहको दर्दका बढ़ना, सब शरीर पीला और पेट फूलना इत्यादि लक्षणोंमें पडोफाइटम ६ ।

**साधारण नियम ।**—गर्म अलका सेक । तेज दर्दकी हालतमें साबू, वालि, आरारोट इत्यादि सहु पथ ।

## शूल की दर्द (Colic).

शूल कई प्रकारका है, उसमें बड़े अन्धकी या अन्धकी पेशियोंके आघेपके कारणसे उत्पन्न हुई दर्दकी अन्ध-शूल कहते हैं । शूल वेदना बड़ीही कष्टदायक है । इस रोगमें ज्वर नहीं रहता । दर्द और की ( मिचली ) रहे तो

उसको पित्तशूल और पेट फूले, तथा दर्द हो तो उसको आग्निशूल कहते हैं । पेटमें विशेष करके नाभिके चारो तरफ मोचने या ऐठनेकी भांति दर्द, दबानेसे दर्दका कम होना, कोष्ठबद्ध, बारबार मलत्यागकी इच्छा, परन्तु दस्त साफ न होना, वायु निकलना, मिचली या कैं, पेट भारी भावूम होना और डेकार घाना इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं । भारी या उत्तेजक पदार्थ भोजन, धोस या सर्दी लगना, ठण्डा प्रयोग, पसीना रोकना, छमि, कोष्ठबद्ध इत्यादि कार-  
णोंसे यह रोग उत्पन्न होता है ।

**चिकित्सा ।**—कसोसिन्ध ६, ३० । नाभिके चारो तरफ असहनीय खींचनेकी भांति दर्द, रोगी तीव्र वेदनाके कारण बचैम होकर छटपटाने लगे और सामनेकी तरफ दिमाजवत टेढ़ा हो जाय और हाथसे नाभिको धांप रखे । धांपकर दबानेसे दर्द कुछ देरके लिये बन्द हो जाय, फिर छोड़तेही पहिलेकी भांति दर्द होने लगे, कभी कभी पेट फूल जाये, मुखमण्डल मलिन, पेटका बहुत फूलना, डेकार या वायु निकलना और कोष्ठबद्ध होने पर इसके साथ साइको पोडियम ३० ( पर्यायक्रमसे ) ।

**नक्षत्रममिका ६, ३० ।**—पेट फूलनेके साथ दाहण आधेय अग्नि शूल वेदना और साथही मूत्रागयमें कतरनेकी तरह दर्द और कोष्ठबद्ध ।

कमोमिला १२ ।—नाभिके चारों ओर मोच फेकनेकी भांति दर्द, उदरामय, पेट फूलना, रातको और गर्मीमें वृद्धि ।

आइरिस्-भास-१ ।—पेट बहुत फूलना, पेटके ऊपरी भागमें आला, पित्तवमन, ऐठनेके तरह दर्द ।

डायस्कोरिया १५ ।—पहिले नाभिके मध्यस्थलसे दर्द आरम्भ होकर धीरे धीरे समूचे पेटमें फैल जाय, इस दर्दके साथ पेट फूलना, लेपावत जीम, सोने पर दर्दका बढ़ना, सीधे खड़े होने पर और पीछे झुकने पर दर्द कम होना, भोजन किया हुआ पदार्थ वमनके साथ निकलने साथ एकाएक शूल वेदना और गर्भावस्थाके पित्तजनित शूलमें ।

भेराट्रम एल्बम ६ ।—रातको और भोजनके बाद पेट फूल कर दर्द । पेटमें गडगड़ कलकल शब्द, समूचे पेटमें दर्द । मुँहसे अल गिरना, मुँह और हाथ पैर ठण्डे ।

स्त्रियोकी गर्भावस्थामें पेट फूलनेके साथ, शूल वेदनामें ककूरुत्तस ६, भारी पदार्थ खानेके बादकी शूल वेदनामें पल-सटिला ६ और कलोसिन्य ६ (पर्यायक्रमसे) । इसके साथ कोष्ठबध, और पेटका फूलना रहने पर पलसटिला ६ और लाप्रकोपडियम १० ।

पथ्यापथ्य ।—सद्यः पथ्य, अर्थात् सबू, बार्लि और गर्म दूध । दर्द आराम होने पर पुराने चायसका भात, छोटी भखलीका शोरवा, पलवस, बीस, कैलिका फूल और मागकसु ।

## कोष्ठवह ( Constipation ).

कई कार्णोंसे कोष्ठवह ( कब्जियत ) हो जाता है और यह अनेक रोगोंका लक्षण भी माना जाता है । किसी तरहका शारीरिक परित्यम न करके घरमें बैठे रहना, रातको जागरण, तेज काफी, चा और मादकद्रव्य सेवन करनेसे, थोक दुग्ध या भय पानेसे, गिर पड़नेसे, यक्षत रोगसे, अश्वितकर द्रव्य भोजन इत्यादि कई कार्णोंसे कोष्ठवह हो सकता है । कोष्ठवह होनेसे प्रायः गिरमें दर्द, अवरभाव, ( ह्रारत ) अरुचि अस्वच्छन्दता इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं । कोष्ठवह अधिक दिनों तक रहनेके कारण अर्य और रुधसी बात हो जाता है ।

**चिकित्सा ।**—बारबार मलत्यागकी इच्छा पर पेट साफ न होना, बड़ा खेड़ बड़े कष्टसे निकलना, सामान्य पतला मल, माया भारी पेटमें चाप मालूम होना और अरुचि लक्षणमें नक्षममिका ३० । जोड़ार जाड़ा मालूम होना, गिरमें दर्द, यक्षतमें दर्द, सूखा बड़ा तथा कड़ा खेड़, वायुके कारण कोष्ठवह यर्माविस्था और गर्मीके समयका कोष्ठवह और खड़ कोकि कोष्ठवहमें त्रायोमिया ६, ३० । ( नक्षममिका और त्रायो-  
निया अलग इस लिये है कि बारबार मल प्रवृत्तिके साथ कोष्ठवहमें नक्षममिका और मल प्रवृत्ति विहीन कोष्ठवहमें त्रायो-  
निया लाभदायक होता है ) माया भारी, माया घूमना, कठिन खेड़युक्त मल निकलना, सदा तन्द्रावेश, चेहरा लाल, भ्रूव परि

मांसमें कम, इत्यादि लक्षणोंमें ओपियम ३० । (हृत् शान्त प्रकृति और रक्त प्रधान घातु विशिष्ट व्यक्तियोंके हृत्में ओपियम लाभदायक है, ) कोष्ठबन्ध या बन्धे कष्टसे सूखा कठिन मल निकले, पेट फूला रहे, भोजनके बाद पेट फूले, पेटमें गर्मी मालूम हो, मुँहसे जल गिरि इत्यादि लक्षणोंमें साइको-पोडियम ३० देना चाहिये । पेट और गुच्छद्वारमें भार और गर्मी मालूम हो, गुच्छद्वारमें छुटकुट और गर्मी मालूम हो । मल त्यागके पछिले और बाद मलद्वारमें अस्त्रच्छन्दता मालूम हो । बारबार अटस मसप्रवृत्ति और अर्शपीडा रहने पर सल्फर ३० । बारबार रक्त ओषध सेवनके कारण कोष्ठबन्ध होने पर हाइड्रेटिस ० ।

साधारण लक्षण ।—कोष्ठबन्ध होनेपर सुलाव लेना ठीक नहीं, कारण इससे कोष्ठबन्ध अम्यस्त हो जाकर, फिर बिना सुलावके कोष्ठ परिष्कार नहीं होता, ओषध खानेसे यदि मल न निकले तो १२ औंस गर्मजलमें १ ड्राम मिंसारिन मिलाकर मलान्तमें पिचकारी देनेसे गांठ गांठ मल निकलता है । रोग सुबह ब्रह्मसे उठने पर ठंडा पानी पीना और मित्ठ ठण्डे अन्नसे खान लाभदायक है ।

एपेण्डिकस प्रदाह ।—शरीरके भीतरमें निचले अंगके दाहिनी ओरका भाग एपेण्डिकस है ( दूसरा चिक देवना चाहिये ) इस स्थितीयकी बीसवीं शताब्दिके आरम्भसे ही इसका नवीन नामकरण हुआ है पर यह रोग

पहिलेहीसे था । खाई हुई चीज ठीक ठीक न पच करके ( विशेष करके गठियावाले रोगियोंका ) कई जगह यह रोग हो जाता है, पेटकी दाहिनी तरफ दर्द ।— ( रोगीकी कई सप्ताह तक यह दर्द नहीं मान्य होता ) फिर यह दर्द धीरे धीरे बढ़ जाती है और सायनी प्वर और पाकाग्रय यन्त्रकी क्रियाके व्याघातके कारण दर्द, इस रोगका पहिला लक्षण है । इस अवस्थामें रोग निवारण न होनेसे शरीरके दूसरे दूसरे यन्त्र आक्रान्त होकर रोगीकी मृत्यु तक हो सकती है, इस रोगका नाम सुनते ही लोग हताश होकर अथ चिकित्सा ( नष्टर ) का विचार करने लगते हैं परन्तु पहिली अवस्थामें होमियोपैथिक मतके अनुसार चिकित्सा होनेपर नष्टर लेनेकी कोई जरूरत नहीं पड़ती ।

लक्षण ।—शिरमें तेज दर्द, रोगीका सह न सकना, वमन ( कभी कभी बारबार ) जीम मलिन, कभी कभियत हो जाती है कभी नहीं होती, वायु छूटना, पैर मोड़े रहना, नीचेके पेटमें निचले भागमें तेज दर्द शरीरकी गर्मी १०० एक से १०१ डिग्री । यकृत और मीछा भी कभी कभी बढ़ जाती है ।

चिकित्सा ।—हेकेसिस २० इस रोगकी एक अच्छी दवा है ( विशेष करके पेटके दाहिनी तरफ कातरनेकी भांति दर्द, कमरमें कापड़ेका न रख सकना, सामान्य प्वरके साय वमन लक्षणमें ) परन्तु दर्द सूई धीमेकी भांति या जलन हो

जानेसे (विशेष करके माता छापनेके बाद या स्त्रियोंके एपेण्डिकस प्रदाहमें) लैकेसिसकी अपेक्षा एपिस ३० लाभदायक है। पर यदि लैकेसिस या एपिस प्रयोगसे लाभ न हो तो आर्देरिस ३० देना चाहिये। सत्युभय, उष्णप्लू, जीम प्लास, तेज प्यास पर थोड़ा पानी पीनेहीसे प्यासका बन्द होना, विछावन पर छटपटाना, बड़ी सुस्ती इत्यादि लक्षणोंमें आर्सेनिक ३०। शय्यापर हिलने डोलनेसे दर्दका बढ़ना, लक्षण में ब्रायोमिया ३०। पर हिलने डोलनेसे दर्द बन्द होनेपर क्लसटक ३० देना चाहिये।

**आनुशङ्किक चिकित्सा।**—खूब गर्मजल बोतलमें भरकर उसका सेक, रोगकी तरुण अवस्थामें बार्सीका पानी देना चाहिये, फिर खूब पतला शोरवा पीर अन्तमें दूधके साथ खल मिलाकर पीनेको देना चाहिये। एलोपैथिक डाक्टर इस रोगकी जितना भयंकर समझते हैं होमियोपैथिकवासे उतना नहीं मानते।

## उदरामय (Diarrhoea)

बिना क्यूे यदि बार बार पतला दस्त हो तो उसको उदरामय कहते हैं। साधारणत उदरामय चार प्रकारका होता है—(१) भारी पदार्थ भोजन, अपरिष्कृत खल पान अन्तेजक औषध इत्यादि सेवनके कारण उपदाह जनित उदरा-

मय । (२) परिपाक कार्यके व्याघातके कारण अजीर्ण द्रव्य निफलनेवाला उदरामय । (३) गर्म शरीरमें ठण्ढा जल या धरफ इत्यादि पीना या ठण्डी हवा लगकर एकाएक पसीना बन्द होनेके कारण प्रदाहजनित उदरामय । (४) गर्मीके दिनोंका उदरामय । उदरामय और सामान्य हैजेका प्रमेद "हैजा"के प्रबन्धमें लिखा हुआ है, उदरामयमें पेट ऐठना और कूयना नहीं रहता, परन्तु आमामयमें ये दोनों लक्षण दिखाई देते हैं ।

**चिकित्सा ।**—कैम्फर ।—शीत, कंफकपी, पाकस्थलीमें दर्द हाय, पैर और मुँह ठण्डे, गर्मीके दिनोंके उदरामयमें और सर्दीके कारण उत्पन्न भये हुए उदरामयमें ।

**पल्सटिसा ६, १२ ।**—परिवर्त्तनशील मल, मुँहका स्वाद तीता, मिचली या वमन, ठेकार भावा, शुष्पाकजनित उदरामयमें ।

**अष्टिमल्लू १ ।**—सादी स्निग्धयुक्त खाँभ, ठेकार, वमनेच्छा, अरुचि, पानीकी तरह पतला दस्त, पित्त मिला हुआ दस्त ।

**इपिकाक ६ ।**—वमन या वमनेच्छा दुर्गन्धित मल, रक्त मिला हुआ दस्त, पेटमें दर्दके साथ गर्मीके समयका उदरामय, सड़कोंका पीले रंगका या पीला मिला हुआ सखर रंगका दस्त ।

**नक्सभमिका ६, १७ ।**—अति भोजन, रातमें जागरण और गंराब पीना इत्यादि अत्याचारके कारणसे उत्पन्न भये हुए उदरामयमें ।



चायना ६, १२, ३० ।—भोजनके बाद, रातको या सुबह को दर्दके साथ या बिना दर्दके कुछ क्षणों लिये हुए अजीर्ण मलका निकलना और उसके साथही कमजोरी, अरुचि और प्यास ।

आर्सेनिक ६, ३० ।—दस्त होनेके पछिले बेचैनी, पेट या पेशुमें दर्द मलत्यागके समय वमनेच्छा या मिचली कृयना मलत्यागके बाद शुष्महारमें जलन, सब अङ्ग कांपना, कलेजा धक् धक् करना दुर्गन्धित मैला और थोड़ा मल, मलत्यागके बाद बड़ी सुस्ती ।

डाल्कोमिरा ६ ।—घोस या सर्दी लगकर या सर्दी अनित उदरामयमें, रात्रिमें पित्त दस्त, पेट फूलनेके साथ दस्त, कई तरहके रंगोंका मल, पतले दस्तके साथ कड़ी गांठ गांठ, दस्त और कै एक साथ, शुष्महारमें जलन ।

आइरिस भार्म ६ ।—हैजेके लक्षण लिये हुए दस्त — पेटमें बहुत दर्द, शुष्महारमें ज्वाला वमन या वमनोद्देग, आपही मल निकल जाना इत्यादि लक्षण मिले हुए मर्मी और आड़ेके दिनोंको उदरामयमें । शिशु उदरामय और शिशु विस्त्रविकामें ।

मार्क्यूरियस् सल् ६ ३० ।—पित्त मिला हुआ आमय या रक्तमय मल, मलत्यागके पछिले पेटमें दर्द और मल-त्यागके बाद इस दर्दका कम हो जाना । कईमकी तरह मल या हल्दीके रंगका मल ।

भेराइम ऐल्यम ६, १० ।—पागोकी तरह या चावलके धोभनकी तरह परिमाणमें अधिक दस्त, शब्दके साथ मल निकलना, आपही मल निकल जाना वमन कोई द्रव्य पेटमें खातेही वमन, अतिशय दुर्बलता, हाथ पैरका ऐ ठना, नाड़ी क्षुप्तमाय ।

पडोफाइलम ६ ।—सूडकोंके दांत निकलनेके समयका उदरामय, बहुत तरहके रंगोंका अधिक मल भोजन या पानके बाद मलत्याग और पेशु खासी मासूम होना ।

फसफोरस ६, १० ।—पेटका फूलना और खट्टी टिकारके साथ पुराने उदरामयमें कमजोरी और हजेके बाद का उदरा मय ।

ब्रायोनिया ६, १० ।—अत्यन्त गर्मीके कारणके उदरामयमें ।

कौल्केरिया कार्व ६, १० ।—दुर्बलता और शीर्षता, मुख मण्डल रक्तहीन, कभी अरुचि, कभी अति शुष्क, अल्पजनित पुराने उदरामयमें ।

ऐसो ६ ।—पीले रंगका दुर्गन्धित मल, पाछामा लगतेही निकल जाना मलत्यागके पक्षिसे और बाद वस्त्रिकोटरमें दर्द, सुबहके समयका उदरामय ।

कलोसिन्य ६ ।—पेटमें किंवा नाभिके पारो तरफ कतरने या खींचनेकी भांति दर्द, खानेसे दर्दका बढना और दस्त भी अधिक होना । बहुत ज्यादा दस्त होनेसे कुछ देरके सिये

दर्दकी शक्ति, फिर पश्चिमी तरफ दर्द, पश्चिमी पानीकी तरफ फिर पित्त मिला हुआ और कभी कभी रक्तमिश्रित दस्त ।

फैरमेट १० ।—बहुत दिनोंतक उदरामय भोगकर रोगी विलकुल कमजोर हो जाये और बहुत झुंघने पर अजीर्ण मल निकले ।

सलफर १२ या १० ।—पीला या भटमैसी रंगका आमाशय, धेदना रहित मलस्राव, अजीर्ण मल, सुबहकी रोगका बढ़ना पुराने अतिसारमें ( पुराने उदरामयमें ) शुद्ध-हारमें घाव होनेपर ।

भारी चीज भोजनके कारण उत्पन्न भये हुए उदरामयमें पलसटिला ६, नक्षत्रमिका ३०, एण्टिम-कूठ ६, इपिकाक ६, दूधित जल पान और अपरिशुद्ध वायु सेवनके कारणसे उदरामयमें बैप्टेरिया १५ और आर्सेनिक ६ । ओस, ठण्डा या सर्दी लगकर उदरामय होनेपर कैम्फर, एकीनाइट १५, ब्रायोनिया ६ और सासकामिरा ६ । अतिरिक्त अच्छे और फल सेवन जनित उदरामयमें कसोसिन्य ६ और आर्सेनिक ६, गर्मीके दिनोंके उदरामयमें—चायना ६, भैराइम ६, आइरिड ६, और आर्सेनिक ६ । मानसिक कारणसे उत्पन्न हुए उदरामयमें—इन्जेसिया ६, कमोमिला ६, भैराइम ६ ।

नियम ।—ओस या ठण्ड न लगे, ऐसे घरमें रोगीको खुलाना चाहिये । गर्म जलमें कपड़ा भिंगोकर और अच्छी तरह निचोड़कर रोगीका बदन पोछ देना चाहिये ।

पट्टय ।—भारारोट, चाबू, वाल्सी, सींगी या मागुर मण्दलीका शोरवा, फिर खूब पुराने घायका मात ।

## रक्तमाशय (Dysentery)

बृहत् पम्बके प्रदाहयुक्त घायको रक्तमाशय कहते हैं । पेटमें दर्द और ममत्यागके समय कूथना इसका प्रधान लक्षण है । रोगके आरम्भके भूखका न लगना, वमन या वमनेच्छा, नाभिके चारो तरफ तेज दर्द, पानीके तरह पतला दस्त और सामान्य ज्वर, फिर सब पेटमें दर्द, कूयनेके साथ बारबार मलत्यागकी प्रच्छा, सादा कफ या रक्तमिश्रित कफस्राव या मण्दलीके घोंए हुए पानीकी भांति स्राव । रोग बढ़ जानेसे रोगीके शरीरसे एक प्रकारकी दुर्गन्ध आने लगती है, मुख मण्डल चंचल, दृढ़ और घीब नाड़ी, छिचकी और आपसी मलका निकल जाना, हाथ और पैरका तसवा ठण्डा, बकना भ्रकना इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं । आहारका अनियम खूब गर्मी या सर्दी लगना दूषित जलपान इत्यादि कारणोंसे यह रोग होता है । रोगीके बदन या मलमूत्रसे जो माफ निकलती है उससे भी यह रोग उत्पन्न हो सकता है ।

चिकित्सा ।—एकोनाइट १x, १० ।—ज्वर, पेटमें दर्द, रक्तमय आम, प्यास, बेचैनी ।

मावर्गुरियस १x, १, १० ।—रक्तमाशय रोगका मार्क-कर एक अल्पगत सप्तम दया है । केवल रक्त या रक्तमिश्रित भाव

बहुत कूयनेके साथ बारबार मलत्यागकी इच्छा, मलत्यागके पहिले और पीछे पेटमें तेज दर्द, मूत्राशयमें जलनके साथ बड़ा कष्ट और पेशाब थोड़ा ( कभी पेशाब बिलकुल ही नहीं होता ) रोगी निस्तेज । रक्त जितना अधिक होगा इससे उतनाही लाभ होगा, रक्तका भाग कम होकर श्लेष्माका भाग अधिक होनेसे मार्कसल ६ । मलत्यागके बाद फिर भी बैठे रहनेकी इच्छा बनी ही रहे और साथही बहुत कूयनेके लक्षणमें मार्ककर ।

नक्षभमिका ३० ।—मलत्यागके पहिले और समयपर अत्यन्त कूयना पड़े पर मलत्यागके बाद भी इच्छा रहे तथा कूयन्मन्थीर दर्द बन्द हो ।

बिलीडोना ६ ।—पेट फूलना, बहुत कूयने पर थोड़ा मल, सरलान्त्रसे प्रदाह, ऐसा माशूम हो कि मूत्राशय और सरलान्त्र नीचेकी मुका आता है, प्वर, पांख उभली, चेहरा खाल और प्रक्षाप मलत्यागके बाद अधिक कूयनेकी इच्छा ।

कसोसिन्य ३ या ६ ।—पेट फूलना, पेट कसकर पकड़ना या मोड़ना, चांपकर धरने या झुकनेसे दर्दका कम होना, सादी क्षेदाच्छादित जिह्वा, रक्तमय पिच्छिल आंव और निष्फल वमनेच्छा ।

एलो ६ ।—मैलिन उज्जस रक्तस्राव, अतिशय कूयना, कमरमें दर्द, उरु भारी, नाभीके चारो तरफ कतरनेकी भांति

दर्द, मुँह छखना, प्यास, पिंड फूला, कभी कभी मलत्यागके समय सूच्छा ।

कौनकेरिया ६, १० ।—मल सज या सादो पीसा, भायेपर पसीना, पैरका तनया बरफके तरह ठंढा तथा पिंडस्थियोंमें खैचन मलहारमें दर्द ।

इपिकाक १, ६ ।—चासकी तरह जरा चयवा चोटा गुड़की तरह कासा फेनयुक्त मल, पेटमें दर्द तथा कूँघने पर पड़िले फेन मिला दुषा दुर्गन्धित रक्तमल, फिर रक्तमय श्लेष्मास्राव, अविरत वमन या वमनेच्छा अतिशय स्थानि ।

कटिकम ६ । बहुत कूँघने पर खंड खंड रक्त मिला श्लेष्मास्राव, गुच्छदार तुड़ तुड़ कर हिले और बहुत दर्द हो, पेट फूले ।

रसटक्स ६ । रातको आपही मल निकल जाये, पेटमें अंतरनेकी तरह दर्द, अविरत मल प्रवृत्ति । पुराने रक्ता-माशयमें ( विशेष धरके विकार सचप रहनेपर ) रसटक्स १० एक महीपथ है ।

सलफर ६, १० ।—मलत्यागके बाद कूँघनेसे रक्त जाना, तथा रक्तमय भाँव न निकलकर भाँवके ऊपर छतकी भाँति रक्त दिखाई दे, रोग दुःसाध्य होने तथा दूसरी कोई दवासे फायदा न होने पर सलफर १० देना चाहिये ।

पथ्य ।—इस रोगमें रोगी बहुत कसबोर हो जाता है इस लिये इसका और बलकारक द्रव्य श्लिवात्रा चाहिये ।

आरारोट, सीनी या मागूर मच्छलीका शोरवा, वार्ति, विहाजाका  
थोडा रस या दूध और ज्वर न रहे तो भातका माह दिया  
जा सकता है ।

## अर्थ ( Piles )

इस रोगमें, मलद्वारकी गिरायें फूस और बड़ जाती है ।  
यही बड़ी हुई गिरायोंको "वर्ति या मसा" कहते हैं, यह देखने  
में मटरकी भांति होता है । मसा कभी एक ही देखा जाता  
है । मसा यदि मलद्वारके बाहर हो तो उसे वर्तिवर्ति और  
भीतर रहनेसे अन्तर्वर्ति कहते हैं । यही मसे फटकर रक्त  
निकलता है । एक प्रकारका मसा और होता है,  
उससे रक्त नहीं बहता, उसे अन्वर्ति कहते हैं । मलद्वारके  
पास खसुबट, जलन, कांटा बेधनेकी भांति दर्द, कब्जियत,  
बार बार मसत्यागकी इच्छा इत्यादि इस रोगके लक्षण हैं ।  
बार बार खुसाब लेना, सस्तेसस्ते पदार्थ भोजन अथवा पान,  
मद्यपान, रात्रिमें जागरण, घृत और मसाला इत्यादि द्रव्योंसे  
बना हुआ भोजन या बिना परिचयके बैठे बैठे दिन काटना,  
ठण्डा पत्थर, भीषा घास, या खुब नर्म वस्तुपर बैठनेके कारणसे  
यह रोग उत्पन्न होता है ।

चिकित्सा ।—नक्षत्रमसिका ६, १० ।—कभी कभी  
उदरानय, मसत्यागके समय मसाका बाहर निकलना,

- कमरमें दर्द, पेशाब करनेके समय पीड़ा, अधिक देर तक चिन्ता करने और भोजनके बादसे दर्दका बढ़ना । जो लोग कुछ भी परिश्रम नहीं करते या घी और मसाला मिला हुआ पदार्थ अधिक खाते हों तथा अधिक मद्यपान करे ।  
सूर्यास्त भ्रम्यात् सन्ध्याजे रात्रय मन्दभ्रमिका ३० और सुबहको सक्तफर ३० प्रयोग करनेसे कई प्रकारका यवासीर या अर्ध-रोग प्रारम्भ होता है ।

सक्तफर ३० ।—पुराने अर्ध रोगमें जब कि कोष्ठ अत्यन्त कठिन हो, छोटी छोटी गांठमय रक्त मिश्रित मूत्र, मसंहारमें ज्वर, और छलुछट बार बार हवा मलत्यागकी इच्छा ।

हैमामेलिस २ ।—जब मसोसे रक्त अधिक निकलता हो । यदि मसा बाहर हो तो आधपाव जलमें ३० बूंद हैमामेलिस मूल परिष्ट मिनाफर उसमें एक साफ कपड़ा भिंगोकर मसाके ऊपर पट्टी रखनेसे रक्तस्राव रुक जाता है ।

प्लो ६ । अत्यन्त खान्साकार और वातरनेकी भांति दर्द तथा बहुत ज्वरनेपर बहुतसा मखिया घण्टका गर्म रक्त निकले और दस्त पतन्ना हो ।

रोगकी पहिली अवस्थामें मसामें दर्द रहे तो एकोनाइट ६० यज्ञतमें रक्त अधिक और कईमवत् मस दिखार्हे'दे'तो पडो-फादसम ६ तथा सक्तफर ३० गर्भापस्थामें कोष्ठवत्से सायही साय मसासे रक्त बहे और दर्द हो तो कोनिगसोनिया ६० अतिसारयुक्त अर्धरोगमें प्लो ६ । बिना रक्तस्रावके यवासीर-



रोगमें—पहिली अवस्थामें अतिशय दर्द हो तो एकोनाइटे ३, ज्वाला और खसुहट हो तो कैपसिकम ६, तथा पुराना होने पर नक्षत्रभस्मिका ३० और सल्फर ३०, अर्शसे आमस्राव हो तो एकोनाइट ६ और कार्बूरियस सल ६, प्रयोग करना चाहिये । पुराने बवासीर रोगसे रोगी अतिशय दुबला पतला होने पर आर्सेनिक ३०, फेरम ३०, कार्बोभेज ३०, एसिड-फस ६ ।

निषिद्ध ।—उत्तेजक द्रव्य, मत्स्य, मांस, दही, उरद जाल मिर्च इत्यादि ।

## क्रिमि ( Worms )

सबराचर तीन प्रकारकी क्रिमि देखी जाती हैं—(१) छोटी छोटी सूत सरीखी (२) लम्बी केपुएकी भांति । (३) घूँस लम्बे फीतेकी भांति । (१) सूतकी भांति क्रिमि मलद्वारके पास बहुत रहती है, कभी मूत्रनाली और योनिद्वारसे जाती है, इसी कारणसे इन स्थानोंमें खुलबुलाहट खुलसाहट और जलन होती है, तथा घातुशय्य होने लगता है । छुद्र अर्थात् छोटी क्रिमिके साधारण लक्षण ये हैं—नाकके अग्रभागमें और मलद्वारमें खुजली, सांस लेने तथा छोड़नेमें दुर्गन्ध मालूम होना, पायस्थानके समय अत्यन्त कष्ट, पायस्थानके स्थानपर लगातार खसुहट और इसी कारणसे मिट्टाका

अभाय । सुद्ध क्रिमि चौथाई इंचसे एक इंचतक लम्बी होती है ।  
 (२) केशुएकी भांति लम्बी क्रिमि सुद्ध अन्तमें रहती है, कभी  
 कभी पाकस्थलीसे ऊपर उठकर कौ होकर बाहर निकलती है,  
 कभी मसूके सांय बाहर होती है । साधारण लक्षण—पेट  
 फूटना और पेटमें अत्यन्त दर्द मालूम होना, दांत कड़-  
 कड़ाना, सोते सोते अचानक चमक उठना, नाकका अग्रभाग  
 तथा मसूदारपर खसुखट, पेट कड़ा और गर्म शरीर दुबला  
 पतला, चेहरा पीला, चक्षुतारा विस्तृत । अंवासा मिठा हुआ  
 दस्त, कभी अत्यन्त भूख लगना, कभी पराधि सांस लेने तथा  
 छोड़नेमें दुर्गन्ध, मूर्च्छावेग कभी कभी मिचली, सुइमें  
 बारबार जल भर जाना । इनकी लम्बाई चारसे  
 बारह इंचतक है । (३) फीताकी भांति क्रिमि—सफेद,  
 चिपटी या गांठ गांठ, लम्बाई १० से २०० फीटतक । यह सुद्ध  
 अन्तमें रहती है । मनुष्य शरीरमें एकसे अधिक नहीं रहती,  
 मसूके साय इसका कुछ अंश निकलता भी है ।

कच्चा फल, सड़ी मछली, अधिक मीठा भोजन, गन्दौ अव-  
 स्थामें रहना इत्यादि कारणोंसे यह रोग उत्पन्न होता है ।  
 लड़कोंके अन्य रोगोंके साथ प्रायः क्रिमि रहती है ।

चिकित्सा ।—सिना १५, २०० । चक्षुतारा विस्तृत  
 मिश्रित अवस्थामें यकृतक घबड़ा उठना, मूर्च्छावेग, वमन  
 या पमनेच्छा, नाकके अग्रभागमें खुजली, मसूदारमें सुड़  
 सुड़ाना, पेटमें खिंचाव, मूत्र थोड़ा और दूधकी भांति ।

टियूक्रियम १x ।—गुच्छदारमें प्रतिशय प्रदाह, सायवीय उत्तेजनाके कारण माथा घूमना और नौदका न चाना (घृतकी भांति क्रिमिमें टियूक्रियम उपकारी है ।)

स्यण्टोनाइन १x विचूर्ण ।—सब प्रकारकी क्रिमिमें यह उपकारी है । घेठमें दर्दके लक्षणमें ।

सन्तफर ३० ।—क्रिमिजनित शूल वेदनामें या अन्य औषध प्रयोग करने पर जब रोग कुछ कमता चले ।

फीताकी भांति क्रिमिमें—फिस्तिक्समांस ०, मार्वा-कर ३x, ऐनाम ३ ग्रामका विचूर्ण, फीताकी भांति सभी क्रिमि और केचुएकी भांति क्रिमि नष्ट करता है । डाक्टर हिचक और टेस कहते हैं कि लाप्रकोपोडियम ३० दो दिन, मेराइम १२, चार दिन और इपिकाक ६, सात दिन प्रयोग करनेसे क्रिमि नष्ट होजाती है, क्रिमि धातु विशिष्ट शिशुके सिये कैल्क-रिया ३० ।

नियम १—एक मोतक जलमें थोड़ा नमक मिलाकर निम्न ३१४ बार सरलान्त्रमें पित्तकारी देनेसे लाभ होता है । बालकोको नाभपथ देना चाहिये । मौठा पदार्थ कड़ा फल मूल, अपरिष्कार जल, सड़ी मछली, और मांस निषिद्ध है ।

## यकृत प्रदाह ( Hepatitis ).

पुराना मलेरिया ज्वर, पारा या कुइतारमका अपेक्षवहारी, अर्द्ध मद्यपान, गर्मस्थानमें वास इत्यादि कारकोंसे विकृतमें रक्त संचार होकर जलन हो जाती है, यह प्रदाह पुण्या होने पर यकृत बड़ जाता है और कठिन होजाता है तथा धीरे धीरे मोटकी दाहिनी ओर फैल जाता है। रोगकी लक्षणवर्णनमें पड़िले जाड़ा और कंपकंपी देकर ज्वर आता है। पीछे यकृतमें दर्द आरम्भ होता है, भागमें दर्द, कुछ बेस्वाद, छेदच्छा दित जिह्वा, मूखका नरहना कईमवत् मखिन या सादा मल, दाहिने कांधेपर थोड़ी दर्द, कोंछके दाहिनी ओर भारी मासूम होना, इत्यादि लक्षण दिखाई देता है। पड़िली अवस्थामें रक्तसंचय बन्द होवेपर अन्योन्य लक्षण भी कम हो जाते हैं। यदि रक्तसंचय दूर न हो तो उत्तरोत्तर लक्षण भी तेजीसे प्रगट होने लगते हैं। जैसे दाहिनी कांधमें तेज दर्द, आंखें पीसी गंठतकी ऊपर ऐसी हर्द कि ज्ञात तक न रखा जा सके। ओरसे सांस छोड़ने परे या गार्ड कर्वट सीनेपर या खांसनेसे, इस दर्दका बर्फ खाना। वमन या वमनेच्छा पीछे रगका पेशाब, कोंछवज (कक्रियत) या उदरामय (पतला दस्त होना) इत्यादि लक्षण दिखाई देने लगते हैं और यकृत भी बड़ जाता है। रोगकी आरम्भ होनेकी अवस्थामें ये सब लक्षण धीरे धीरे कम होने लगते हैं नहीं तो धीरे धीरे रातके

समय जाड़ा और कंपकंपी देकर जोरसे छ्हर भाने लगता है और यक्षतमें एक प्रकारका धाव पककार प्राय रोगीकी मृत्यु हो जाती है और भी अनेक समय पर यक्षतकी आकृति छोटी होनेसे संघ भंग फूस जाकर रोगी मृत्युको प्राप्त करता है ।

चिकित्सा १—एकोनाइट २५, ६। ( यक्षतके नये प्रदाहमें ) जाड़ा और कंपकंपीके साथ छ्हर, यक्षतके दर्दमें ।

नक्तममिका ३, ३० ।—शराब पीनेसे उत्पन्न भये हुए पुराने यक्षत प्रदाहमें कजियत और भोजनके बाद दर्दका बढ़ना ।

चाइना ६, १० ।—छ्हर बहुत पुराना हो जाने पर शरीर रक्त हीनसा हो जाये, झोडाकी हडि, यक्षत बड़ा कठिन और दुर्बलता ।

मार्क सल ६, ३० ।—यक्षतके तरुण प्रदाहमें और पुराने प्रदाहजनित यक्षतकी हडि होने पर सूजन और कड़ाई यक्षतके स्थानको दबाकर घरनेकी भांति दर्द, ( इसी कारनसे रोगी दाहिनी कर्बट नहीं सो सकता है । ) पीले रंगकी आंखें, भूख बन्द, सफ़ेद कड़ा मलिन या पित्तमिश्रा भूषा पतला मल, सुष्ट वेस्त्राद सांसमें कष्ट ।

चेमिडोमियम ३० ।—यक्षतमें तेज दर्द, दाहिने कर्बे या दाहिने कर्बेकी हड्डीके भीतर दर्द, पीले रंगका पतला मल

या उज्ज्वले रंगका काड़ा मस, सब शरीर पीले रंगका, पीले रंगका गाढ़ा पेशाब ।

न्याइम मियूर ३० ।—यकृतमें सुई भोंकने या चिकोटी काटने अथवा टबाकर पकड़नेकी भांति दर्द, पेट बहुत फूला, कभी कभी पेटका मोखना और सायही खर ।

न्याइम सल्फ, ३० ।—छूने हिलने, गोरसे सांस खींचनेसे यकृतमें दर्द, पेट खाली रहनेपर नाभिके चारो ओर दर्द, भोजन करनेपर इस दर्दका कम होना ।

पक्षोफाइसम ।—यकृतके नये प्रदाहमें कक्षियत रहने पर ३ क्रम । पुराने प्रदाहमें ३० क्रम—यकृत बड़ा और सायही पित्त वमन, पित्त मिखा हुआ पतला मस, मसत्यागके समय कांचका बाहर निकल आना, मुहका स्वाद तिक्त, मूत्र मैला चेहरा मलिन, गिरमें दर्द, विशेष करके गिरके अग्रभाग अर्थात् कपाक्षमें तेज दर्द ।

फसफोरस ३, ३० ।—यकृत बड़ा और कठिन होकर धीरे धीरे छोटा होना और अन्तमें उदरी होमिपर ।

बाल्ब रिस १५ वा १ ।—यकृतमें रक्त संघय होकर मूत्र मालीमें, उरमें, कमरमें और पेटमें दर्द हो ।

त्रायोनिया ३५, ३, ३० ।—यकृत बड़ा और कठिन, सुई भोंकनेकी भांति ख्यालाकर दर्द, (चांपकर धरनेसे इस दर्दका बढ़ना) कक्षियत या पायखानेकी इच्छाका बिगड़ना अथवा, गिर घूमना, दाहिने कांधेमें दर्द, बांखें और बदनका चमड़ा

कुछ पीना, यकृतके तरुण प्रदाहमें मार्क्शूरियसके साथ यह पर्यायक्रमसे प्रयोग करने पर, आशा तीन फलसांभ होता है ।

साइकोपोडियम १२ या ३० ।—पेट वायुसे फूला हो और कंजियत हो, सदा दबानेकी भांति दर्द, चांपकरे घर्ने और जोरसे सांस खींचने पर दर्दका बढ़ना, दाहिनी तरफ और पेटमें दर्द ।

लेट्टीण्ट्रा ३५, ६ ।—जीमें पीले रंगकी, पित्तवर्धन, अक्षतरेकी भांति काला मल, यकृतके चारो ओर, असह्य वेदना कईमवर्षवत् मल, आमामय, ज्वर, उदरी या शोथ ।

आसेनिका १० ।—यकृत बड़ा, सूजन, पेशाब थोड़ा, जीवनी शक्तिका कम होना, और प्यास ।

सिपिया ३० ।—जरायू और मूत्राशयकी क्रियाके विकारके साथ यकृतका पुराना प्रदाह, दुर्बलता, अग्निमान्द्य और गठियां, सूजन ।

हिपरसलफर ३५ विचूर्ण ।—सांस लेनेसे, खांसने और हिलनेसे दर्दका बढ़ना (यह दर्द पड़े तक बढ़ जाती है, पर्यं पीड़ाके साथ यकृतमें रक्तसंचयजनित पुराना प्रदाहमें) ।

नियम ।—यकृतके ऊपर छोटे बड़हेका सूत्र गर्म करके सेक दे । ज्वर रुकने पर सानू वालो आरारोट इत्यादि खपपथ । मछली मांस, घृत या घीसे पका हुआ भोजन करना नहीं चाहिये ।

## बड़ी हुई ग्रीष्म (Enlarged Spleen):

मलेरियाका विष शरीरमें घुसनेसे ग्रीष्म (पिचही) बढ़ जाती है। ज्वरके समय ग्रीष्मावस्थामें पिचहीमें रक्त समा होकर यह बढ़ जाती है। इसे छोड़, हृदरोग, रजो सोप, और वमनाधीर रोगमें रक्त निकलना बन्द होकर पिचही बढ़ती है। पिचही बढ़नेसे सब शरीर रक्तशून्य और ग्रीष्मरक्तका तथा अग्निमान्द्य, कब्जियत या दस्तका अधिक होना, कमजोरी इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं। पिचही धीरे धीरे बढ़कर पेटकी बाईं तरफ फैल जाती है और इतनी कड़ी हो जाती है कि मानस होता है कि पथरका एक टुकड़ा रखा हुआ है। रोग बढ़ जानेपर उदरामय (अर्थात् दस्त अधिक आना) या रक्त आमाशय (खून मिलि हुई पाच गिरना) हो जाता है, भूख बिल्कुल नहीं रहती दांतका चड़भा फूलकर रक्त गिरने लगता है अन्तमें उदरी और शोथ (पूजन) होकर रोगीकी मृत्यु होती है। पिचही फट करभी कोई कोई मरता है।

**चिकित्सा।**—मलेरिया ज्वरके साथ ग्रीष्मके नये

प्रदाहमें पहिले ज्वरकी दवाही करना आवश्यक है। नये ग्रीष्म दाहमें एकोनाइट १२, ग्रीष्मके ऊपर-सूई बंधनेकी भांति दर्द हो घापनेसे दर्द बढ़े, कभी कभी पिटम और रक्त वमनका लक्षण दिखाई देतो चार्मिका ६। पेटके बाईं तरफ दबाये रहना या सूई गड़ानेके तरह दर्द, ग्रीष्म



बड़ी-घीर कठिन, बाँहें तरफ नहीं सों सकना कमजोरी, चेहरा मलिन, प्रायः सदा शरीर गर्म रहना इत्यादि लक्षणों में आसैनिक ३० । अधिक दिनों तक विषमज्वर भोगनेसे ग्रीहों घीरे घीरे बढ़ जाये और उसके साथही रोगी बहुतही दुर्बल हो गया हो तो चाँदना ६ या १०-१ । कभी कभी ग्रीहों में चिनककी भाँति दर्द हो तो कार्बोमेज १ और नैड्रम म्यूर १० । इनके प्रतिरिक्त मेक्सभेमिका १०, फोफाइटम ६, मार्शरियस विन आयोडे ३ से ३५ विचूर्ण, फसफोरस ६, एसिडनाइट्रिक ६, लैकेसिस ६, सियानोथास १५, सेप्टुआण्डा ३५ प्रयोग करना चाहिये ।

## पाण्डु ( Jaundice ).

यकृतके क्रियाकी विषमताके कारण पित्त आशोषित न होकर रक्तमें रह जाता है इसीसे पाण्डुरोग (कंवल) होता है । इस रोगमें रोगीका सम्स्त शरीर, आँखकी जालीवाला अंग, गलेका मूल भाग और मूत्र इत्यादि पीले रंगके हो जाते । यहाँ तककी रोगीको सब चीज पीछी दिखाई देती है तथा मिछीना पीला हो जाता है । कोष्ठवद या सदरोमय, मुँहका स्वाद तिक्त कड़मवत् या उससे रंगका मूल तथा नाड़ी दृढ़ और दुर्बल इत्यादि लक्षण इस रोग में दिखाई देते हैं, यह रोग बढ़ जानेसे प्रायः रोगीकी मृत्यु हो जाती है ।

**चिकित्सा।**—मसिन हसदीके रंगका चेहरा, यँकतमें सूर्य वेधनेकी भांति दर्द, मुँहकी स्वाद तिष्ठ, चर्बुचि, वृद्धता केमजोरी और पित्त मित्रा कृष्ण पतला मल इत्यादि लक्षणोंमें चाहना ६५ कोष्ठयक्ष, मैला मूत्र, विद्यावन पर हसदी सरीखा पीला दाग लगना, माँही घीरा और कोमल, सब शरीर हसदी सा पीला इत्यादि लक्षणोंमें मार्क-सस ६, ( पड़िलो अवस्थामें तीन बार बार एकोमाइट ६५ का प्रयोग करके मार्क-सस ६ प्रयोग करना उचित है ) बदनका चमड़ा तथा आँखोंका पीला, कुछ मटियाला रंगका पेशाब, स्वरमग, खासीऔर निराशा इत्यादि लक्षणोंमें फसफोरस ६। खेप्टाण्डा ६, एसिड कस ६० इत्यादि औषध लक्षणके अनुसार समय समय पर प्रयोग करना चाहिये ।

पथके सम्बन्धमें पुरी तरह ध्यान रखना चाहिये । ज्वर रहने पर साबू वाली, चारारोट ज्वर न हो तो पुराने चावलका भात तरकारोका रस इत्यादि देना चाहिये । मत्स्य, दुग्ध, घृत और मीठा निषिद्ध ।

७११-

७१३, १

## भगन्दर ( Fistula in Ano )

भगन्दरकी ( अर्थात् सरलाम्बके विधान अनुसार ) चारो ओर एक प्रकारका फोड़ा होता है, इसको भगन्दर कहते हैं, यह फोड़ा जख्मी छूँकर भाराम नहीं होता, इस लिये

“नासूर या सर्इन” होजाता है ।, यस्या रोगके चन्तिम अव-  
स्थामें प्रायः भगन्दर होते देखीं गये हैं ।

चिकित्सा ।—प्रीडका ( पुसरी ) उत्पन्न होनेके बाद  
टपकसी दर्द, गुच्छादार खोंख, रंगका, शिरमें दर्द इत्यादि  
लक्षणोंमें बेलोडोना ३५५ या मार्क सल ६, प्रीडका सूजकर  
उसमें रौम उत्पन्न होने पर डिपर, संलफर, ३ विचूर्य ।  
फोडेवे अधिक परिमाण रौम निकलता हो या सर्इन  
होनेपर साइलिसिया ३०, सलफ ( विशेषमें कष्टिकम ६,  
चाइना ३०, कैल्केरिया ३०, कैल्केरिया फोर १२,  
सलफर ३० इत्यादि प्रयोग करना चाहिये ।

## ११ । मूत्रयन्त्रके रोग ।

### मूत्र-यन्त्र प्रदाह ( Nephritis )

मूत्रकोपन । दाह, होनेसे ज्वर वमनोद्देग, पेशाब थोड़ी,  
कमी खास, कमी घोघनकी भांति कमी तेरह या रौम मिश्रित,  
पेशाब करनेके समय तेज जलन, मीरदण्ड और कमरमें  
दर्द, पण्डकोय खास और समय समय पर पेशाब एकबारगी  
बन्द होकर प्रसाप या मूच्छावस्था अथवा मृत्यु होजाती है ।  
सहसा, पीस या सर्दी लगना बहुत मध्यपान रात्रिमें  
जागरण । मुत्रकारक, पीपधियोंका अपव्यवहार, चोट लगना  
इत्यादि कारकोंसे यह रोग उत्पन्न होता है ।

**चिकित्सा।**—ज्वर, और प्रदाह लक्षणके साथ रोगकी पहिली अवस्थामें एकोनाइट ३५ । बूद-बूद पेशाब (कभी कभी रक्त मिला हुआ) भ्रूणकोष जाल रंगका, पेशुमें ज्वालाकर वेदना, पेशाब करनेके समय जलन या पेशाब न-होना इत्यादि लक्षणोंमें कैथारिस ६ । मलिन या रक्त मिला हुआ मूत्र, भ्रूणकोष जालवर्ण, शरीरके नाजा स्थानोंमें शोथ इत्यादि लक्षणोंमें टेरिविन्यिना ६ । बारबार मूत्रत्यागकी इच्छा मूत्रकोषमें कृच्छ्र, वेधनेकी भांति दर्द, भ्रूण-और-चेहरा जाल, कभी कभी प्रक्षाप हो तो विलेडोना ६ । आर्सेनिक ३०, केनाबिस आठ ६, नक्सभमिफा ३०, पलसेडिला ६, डिपर सलफर ६, मर्क्यूरियस सल ६, साइकोपोडियम ३० सौपिया ६, सलफर ३० इत्यादि औषधोंके भी समय समयपर आवश्यकता पड़ती है ।

### मूत्रस्तम्भ और मूत्रनाश ।

(Retention and suppression of Urine)

मूत्रागममें, मूत्र संचित होकर किसी-समयसे, मूत्र न निकल सके तो उसे मूत्रस्तम्भ और मूत्रागममें मूत्रकी उत्पत्ति न होनेसे, मूत्रनाश कहते हैं । मूत्रस्तम्भमें पेशु फूल-जाता है, मूत्रनाशमें यह नहीं रहता । मूत्रका विप्राण, उत्पादन, रक्तसे मिलकर मूत्रनाश रोग उत्पन्न होता है । इस

रोगमें भवसन्नता, तन्द्रा, मोह, चैतन्यलोप इत्यादि कई लक्षण प्रगट होते हैं, ध्वर विकार, हैजा इत्यादि कई सांघातिक रोगोंके साथ प्रायः मूत्रनाश रोग भी हो जाता है। प्रमेह रोगमें सहसा रीम निकलना बन्द, मूत्रप्रत्याका बढ़ना, या मूत्रस्थलीका पक्षाघात या किसी प्रकारकी चोटके कारण मूत्र रोग उत्पन्न होता है।

**चिकित्सा।**—मूत्रनाश रोगमें मूत्राशय प्रदाह वर्तमान रहनेपर रोगकी पहिली अवस्थामें एकोनाइट १ और टेरिबिन्थिना ६ पर्यायक्रमसे हैजाकी बीमारीमें यदि पेशाब रुक जाये तो टेरिबिन्थिना ६, क्वारिस ६ या कैलि-वाइक्रम ६।

**मूत्रस्तम्भ रोगमें।**—जबाला और यन्त्रणाके साथ एकाएक मूत्रस्तम्भ होने पर स्फिरिट कैम्फर। तुरतके जनमें बच्चोंको मूत्रस्तम्भ होनेसे १०।१५ मिनिटका अन्तर देकर कैम्फरकी शीशी उनके नाकके पास रखनी चाहिये। मूत्र-स्थलीके पक्षाघातके कारण धूद धूद पेशाब होने पर नक्स-भमिका ६ या फष्टिकम ६। गुल्मवायुग्रस्त रोगियोंको मूत्रस्तम्भ होने पर नक्समस्क्रेटा २ इग्नेशिया ६ या जेलसीमियम ६। मूत्राशयकी सुखशायीग्रन्थिकी छत्रिके कारण उत्पन्न भये हुए मूत्रस्तम्भमें पक्षसेटिन्हा ६ और प्याराइटो कार्ब ६। रोगकी पहिली अवस्थामें (पर्यायक्रमसे)। एकोनाइट ३५ और जेलसीमियम ३५ या एकोनाइट ३५ और क्वारिस ६

( पर्यायक्रमसे ) रोगीको गर्म जलके टबमें कमरतक डुबाकर बैठाना उत्तमफलप्रद है ।

## मूत्रकृच्छ्र ( Strangury ).

यह रोग बड़ाही कष्टदायक होता है । बारबार पेशाब करनेकी इच्छा होना, अति कष्टसे बूद बूद पेशाब होना, या एकबारही पेशाब न होना और पेशाबके समय बड़ीही दर्द और कष्ट मानूस होना । यही इस रोगका लक्षण है । प्रमेह, पयरी, जरायुविकृति, मूत्रपन्थि प्रदाह, क्रिमि इत्यादि रोगोंके साथ मूत्रकृच्छ्र रोग दिखाई देता है ।

**चिकित्सा ।**—ज्वाला और कष्टके साथ सहसा मूत्रकृच्छ्र होनेसे दो चार बूद कैम्फर चीनी या बतागेमें डाल कर पन्ध्र बीस मिनिटोंका अन्तर देकर खिलाना चाहिये । अधिक परिमाणमें कैन्फरिस औषध सेवन करके मूत्रकृच्छ्र होनेपर भी कैम्फर । बारबार मूत्रत्यागकी इच्छा, कतरनेकी भांति या छिदनीकी तरह असह्य दर्द पेशाब करनेके समय जलन और पेशुमें दर्द हो तो कैन्फरिस ६ । मूत्रपन्थि, अमनेन्द्रिय अथवा ह्राथपाथमें शोथ हो और साथही पेशाब करनेके समय बड़ी असह्य मानूस हो तो एपिस-मिल ६ । घोस या ठण्डा जगकर मूत्रकृच्छ्र हो तो एकोनाइट १५ । मम ( सीढ़ ) स्नानमें रहनेके कारण हो तो छातकेमारा । गर्म जलका सेव देना अच्छा है ।

## आपही पेशाब निकलना (Enuresis).

मूत्रस्थलीमें पक्षाघात होनेसे मूत्र धारण आर्थात् पेशाब रोक रखनेकी शक्ति एकदम या अधिकांश खली जाती है । मूत्र त्यागकी चेष्टा होने पर फिर उसका रोकना कठिन हो जाता है और सुरत बूढ़ बूढ़ पेशाब होना आरम्भ हो जाता है । मूत्राशयमें मूत्र संचित रहने पर भी बूढ़ बूढ़ मूत्र होता है । आघात, प्रसव कष्ट, पथरी, प्रमेह, क्रिमि रोगके कारण यह रोग उत्पन्न होता है । लड़के जब उन्हें मोद लगी रहती है उस अवस्थामें आपही पेशाब कर देते हैं ।

**चिकित्सा ।**—बालक और वृद्ध मनुष्योंको कैथेरिस, मूत्राशयकी ग्रन्थि बढ़ आये या मूत्राशयमें पथरी होनेके कारण बालक और वृद्धको आपही पेशाब हो तो जेल-सिमियम ६x । गुल्मवायुग्रस्ता स्त्रियोंको मूच्छविषके समय आपही पेशाब हो जाये तो इन्नेसिया ६ । क्रिमिके कारण हो तो सिना ३x, और सार्डजेसिया ६ । शुष्क चरण पीढाके कारण हो तो एसिड-फस ६, ३० । इरिजिरन ३, वेल्लेडोना ६, कैथेरिस ६, नक्सममिका ६, इत्यादि भी समय समय सामदायक होते हैं । इस रोगमें चिन्त कदापि न खोना चाहिये । खड़ा भीर नमकीन पदार्थ न खाना चाहिये ।

## शुक्रक्षरण (Spermatorrhœa)

जवानोंकी चारआवस्थामें प्राकृतिक नियमोंको उल्लङ्घन कर अनैसर्गिक उपायोंसे वीर्य निकल जानेके कारणसेही यह रोग उत्पन्न होता है । छमिके कारण सरसाम्बन्धका उपदाह, मूत्रमाली और मूत्राशयका उपदाह, मस्तिष्क, पीठ और मष्माकी पीडा अथवा पीडा और सदा घोड़े पर सवार होकर घूमनेसे भी इस रोगकी उत्पत्ति हो सकती है । पर अधिक करके हस्तमैथुनसेही यह रोग उत्पन्न होता है । शुक्र प्रमेह रोगमें चारबाशुद्धि एकबारगो नहीं रहती । स्त्रियोंकी देखने या छूनेसेही, मलत्यागके समय जोर देने और घोड़े पर सवार होने पर घोड़ेही उत्तेजनामें रेतस्त्राव हो जाता है । बहुत शुक्र निकल जानेसे नीचे लिखे लक्षण दिखाई देने लगते हैं ;—विमर्ष चित्त और असह्य भाव, अतिशक्तिका कमना सब कामोंमें निरुत्साह, शारीरिक दुर्बलता, अग्नि मान्द्य, कोष्ठबद्ध, पीठ फूलना, कसलमें घट्टकन, मिरमें दर्द, एकाएक खड़े होनेसे आंखोंमें अन्धेरा आ जाना चेहरा रक्तहीन आंखोंमें गड़गड़ पड़ जाना और आंखके कोनेमें ग्रामता संप्रदीप । इस रोगसे धीरे धीरे ध्वजमङ्ग, पचाचात और यक्ष्माकास इत्यादि रोग भी हो सकते हैं ।

चिकित्सा ।—एग्नास कैसास ६ । , मानसिक अथ



सन्नता, सदा अन्य मनस्त, दुर्बलता अननेन्द्रियकी शक्ति कम पर काम प्रवृत्ति अधिक हो ।

एसिड फसफरिक ६, ३० । बहुत स्त्री सहवास या हस्त-मैथुनके कारण अननेन्द्रियकी दुर्बलता, स्वप्नदोष, सङ्गमके समय जल्दी जल्दी शुक्र चरण, चित्तकी विषयता, स्मृति-शक्ति ( याददाश्त ) की कमी ।

चाइना ६, ३० ।—प्रायः अननेन्द्रियकी अस्वाभाविक उत्तेजना, स्वप्नदोष, पेटमें दर्द, कानमें भों भों शब्द, चेहरा सान्न और माथा घूमना, बारबार जँमाई आना और अतिशय दुर्बलता ।

फसफोरस ६, ३० ।—सङ्गमके समय बड़ी तेजीसे रेत स्राव और कमजोरी, रतिशक्तिकी कमी, मानसिक चिन्ताकी अधिकता, कलेजेमें घटकन बहुत शुक्रक्षय और हस्तमैथुनके कारण लिङ्गका एकदम न उठना ।

झाटिना ६ ।—यौवनावस्थाके आरम्भमें अपरिमित शुक्रक्षय और हस्तमैथुनके कारण कामेच्छा व्यतीत लिङ्गोच्छास और शीघ्र शीघ्र शुक्रचरण ।

नक्सममिका ६, ३० ।—सामान्य कारणसे कामभाव सुषुप्तके समय निद्राभङ्गके बाद अस्वाभाविक लिङ्गोद्रेक, उत्तेजक द्रव्य खाने या पीनेसे स्वप्नदोष, अण्डकोषमें दर्द, कोष्ठबद्ध, अरुचि ।

अतिशय मैथुनेच्छा पर लिङ्ग उठतेही शीघ्र शीघ्र शुक्र

श्वसन, स्रव शरीरमें दर्द, कमजोरी इत्यादि लक्षणोंमें कैल्स रिया कार्य ६ । ट्राफि साधिया ६, जेलसिमियम १०, सल्फर १०, वैराइटा कार्य ६, कैन्वरिस १२, इन्नेसिया ६, पार्ज्वलाम ६, कोनायम ६, फेराम ६, कैलेडियम १०, सेलेनियम १०, इत्यादि समय पढ़ने पर काममें लाने चाहिये ।

**नियम ।**—केवल औषध सेवनसे यह रोग नहीं छूटता बल्कि औषधके साथ ही साथ रोगीको नीचे लिखे नियमानुसार अवश्य चलना चाहिये —सर्तसर्ग साफ़ हवा सेवन, सुबह और शामको घूमना, अनुत्तेजक पदार्थको छाना या पीना, अच्छी अच्छी बातें करना तथा धार्मिक ग्रन्थोंका पढ़ना और नित्य अवगाहनमें स्नान करना उचित है । उत्तेजक द्रव्य पान या भोजन, कुसर्ग, घियेटरमें जाना, नाटक या नाबेल ( सपन्यास ) पढ़ना, इत्यादि सदा और अवश्य त्याग देने चाहिये ।

## प्रमेह (Gonorrhœa)

पेशाबकी राहकी शैथिलिक भिक्षी प्रदायक रोग प्रमेहसे जो स्नायु होता है उसे प्रमेह कहते हैं । प्रमेह बड़ी दुःखदायी व्याधि है । अपवित्र स्त्री या पुरुषके सहवास दोषसे यह रोग उत्पन्न होता है । स्त्रियोंके मुखमार्ग

सन्नता, सदा अग्न्य मनस्क, दुर्बलता अननेन्द्रियकी शक्ति कम पर काम प्रवृत्ति अधिक हो ।

एसिड फसफरिक ६, १० । बहुत स्त्री सहवास या हस्त मैथुनके कारण अननेन्द्रियकी दुर्बलता, स्वप्नदोष, सङ्गमके समय जल्दी जल्दी शुक्र क्षरण, चित्तकी विषमता, स्मृति-शक्ति ( याददाश्त ) की कमी ।

वाइना ६, १० ।—प्रायः अननेन्द्रियकी अस्वाभाविक उत्तेजना, स्वप्नदोष, पेटमें दर्द, कानमें भों भों शब्द, चेहरा लाल और माथा घूमना, बारबार अंगारे आना और अतिशय दुर्बलता ।

फसफोरस ६, १० ।—सङ्गमके समय बड़ी तेजीसे रेत स्राव और कमजोरी, रतिशक्तिकी कमी, मानसिक चिन्ताकी अधिकता, कछेजेमें घड़कन बहुत शुक्रघन्य और हस्तमैथुनके कारण लिङ्गका एकदम न उठना ।

ग्लूटिना ६ ।—यौवनावस्थाके आरम्भमें अपरिमित शुक्रघन्य और हस्तमैथुनके कारण कामेच्छा व्यतीत लिङ्गोच्छास और शीघ्र शीघ्र शुक्रक्षरण ।

नक्सभमिका ६ १० ।—सामान्य कारणसे कामभाव सुबहके समय निद्राभङ्गके बाद अस्वाभाविक लिङ्गोद्देक, उत्तेजक द्रव्य खाने या पीनेसे स्वप्नदोष, अण्डकोषमें दर्द, कोष्ठबद्ध, अरुचि ।

अतिशय मैथुनेच्छा पर लिङ्ग उठतेही शीघ्र शीघ्र शुक्र

श्री मूत्रनालीकी पीवामें जलन और मूत्राश्रयके साथ ज्वर भी वर्तमान रहे तो ।

कैन्थरिस ६ । बारबार पेशाबकी तेजी, दो धारसे पेशाब, पेशाबके बाद और पछिले जलन, खून या रीम निकलना, बार बार लिङ्गोद्देक और अतिशय कामप्रवृत्ति, रात्रिमें बारबार लिङ्गोद्देक होनेके कारण, नौदका खुलजाना, बूद बूद पेशाब होना और तेज जलन ।

कैनाबिस इण्डिका ३x, ६ ।—मूत्रनालीके द्वारपर दर्द और रंग छाल, रीम अधिक परिमाणसे आना, लिङ्गसुखमें सज्जन बारबार लिङ्गोद्देक हो तो ।

मर्क्युरियस सल ६ ।—मूत्रनालीके मुहमें जलन और सह सह या कूट कूट करना, प्रोप (रीम) से मूत्रनालीके मुहका गुट जानेके कारण पतलीधारमें पेशाब निकलना । पछिले उजले रंगका पतला स्राव फिर गाढ़ा पीले रंगका ।

प्रोसेटिका ६ ।—मूत्रनालीके संकोचनके कारण पतली धारसे पेशाब निकलना और साथ ही रक्त स्राव भी होना तथा स्त्रियोंके प्रमेह रोगमें ।

सेल्सिमियम ६ ।—लिङ्गोद्देकके साथ मूत्रमार्गकी जलन और चख स्राव (रोगकी तरुणावस्थामें) मूत्रनालीके आधेपूके साथ उजले रंगका स्राव निकलने पर (रोगकी पुरानी अवस्थामें) ।

डाक्टर-आरका मत है कि प्रमेह विष शरीरमें घुसनेके

पुरुषोंके सूत्रमार्गकी अपेक्षा सुदृढ़ होनेके कारण सतना यन्त्रणा-  
दायक नहीं होता । प्रमेह विष शरीरमें प्रवेश करते ही  
पड़िले २।५ दिन मूत्रमालीका मुँह सुन्नसुन्नता तथा खलु  
आता है, गर्म या साख रंगकी हो जाता है । जलन होने  
लगती है और थोड़ा थोड़ा सुफेद स्राव होने लगता है ।  
फिर बहुत बहुत दूधकी तरह या पीले रंगका या हरे रंगका  
तथा रक्तमय स्राव भी निकलने लगता है । पेशाब करनेके  
समय बड़ी दर्द होना ही इस रोगका एक प्रधान लक्षण है ।  
रात्रिमें बारबार अस्वाभाविक लिङ्गोट्रेक ( और इसी कारणसे  
बारबार नौद खुल जानेसे रोगी दर्दसे बेचैन हो जाता है )  
लिङ्गमुण्ड अर्थात् सुपारी, सुजी हुई, अण्डकोषमें जलन और  
मूत्राशयकी मुखवायी ग्रन्थिमें जलन होती है । ये उपरोक्त  
बाँधी हुई अवस्था सातसे चौदह दिनतक दिखाई देकर  
धीरे धीरे सब उपसर्ग कम होने लगते हैं । केवल पेशाब  
करनेके समय थोड़ी थोड़ी जलन और पीले रंगका रौम  
निकलने लगता है इसे पुराना प्रमेह कहते हैं । प्रमेह रोगमें  
नीचे लिखे उपसर्ग दिखाई दे सकते हैं — अण्डकोषमें  
जलन, मूत्रमालीका फोड़ा सुख जानेके कारण एकाएक  
पेशाबका बन्द हो जाना, घात, भीखीमें जलन, लिङ्गका मुँह  
( सुपारी ) सुजी हुई और बाँधी दिखादि ।

चिकित्सा ।—एकोनिक्ट ३x । रोगकी पहिली अव-  
स्थामें, पेशाब करनेके समय लिंबवत् या कटनेकी भांति दर्द

पथरी । —(Stone or Calculus) मूत्रयन्त्र, पित्त-  
कोष गिरा (Veins) तालु (Tonsil) इत्यादि शरीरके बहुतसे  
अंगोंमें कई कारणोंसे पथरी (ककर) उत्पन्न होती है ।

तालुमें कंकर (Tonsil liths, रंगे, कंकर इत्यादि  
रोग अल्प चिकित्सा अन्यमें देखनेका विषय है । पित्तपथरी  
के विषयमें नीचे लिखा लिखा गया है । मूत्रपथरीका विवरण  
यथोचित स्थानमें लिखा जायगा ।

पित्तपथरी । —(Gall Stone or Biliary Cal-  
culas) पित्तकोष (Gall Bladder) वा पित्तवाही नली  
(Biliary Ducts) में यदि पित्तरस (Bile) भोजनके दोषसे  
उत्पन्न होकर पथरीके ऋण (Gravel or Stone) आकारमें  
हो तो उसे पित्तपथरी (Gall Stone) कहते हैं ।

वास्तुकी रेत (Gravel) वा कपोतके अण्डे अथवा  
मटरके समान छोटा, बड़ा, मझोला, गोलाकार, सादा कासा,  
हरि-रंगका, एक वा अधिक पथरी रोगीके पित्तकोषमें उत्पन्न  
होती है । सोमें इस लोगोको यह रोग है, उसमेंसे स्त्रियोंको  
संख्या ही अधिक है । पेटमें थोड़ी बहुत पीडा, यही इस  
रोगका मुख्य लक्षण है, और जन्मभर पित्तकोषसे पथरी  
रहने पर भी कोई कोई बिलकुल किसी प्रकारका दर्द नहीं  
जानते । पथरी जितने दिन पित्तकोषसे चटकी रहती है, रोगीको  
उतने दिन प्रायः किसी तरहका विषेय कष्ट नहीं रहता,

बाद (जलन होनेके पहिले) सिपिया ३० नित्य सबेरे एक बार और रात्रिको एक बार प्रयोग करनेसे रोग शीघ्र आराम होता है। पेशाब करनेके समय बहुत जलन रहनेसे हाइड्राष्टासि १ ग्राम ६ चाशमस पानीमें मिलाकर पिचकारी देनेसे जलन कम हो जाती है।

**संक्षिप्त चिकित्सा ।**—रोगकी पहिली अवस्थामें ऐकोनाइट, जेल्सिमियम, कैल्सरिस, यूजा, विलेडोना, और नक्सभमिका। पुरानी अवस्थामें—केनाक्स इन्फ्लिका, यूजा, फेरम, पल्सेटिला, नक्सभमिका, पेड्रोलियम, चाइना और सल्फर। बारबार लिङ्गोच्छास होनेसे—ऐकोनाइट, कैल्सरिस और जेल्सिलियम तथा थोड़ा गर्म जल या ठण्डे जलकी धार देनी चाहिये। प्रमेह रोगके साथ यदि अण्डकोष प्रदाह-युक्त हो तो ऐकोनाइट, जेल्सिमियम, पल्सेटिला, मर्क्यूरियस, हैमामिलिस और फाइटोलक्का। प्रमेहरोगके बाद गठिया हो तो मर्क्यूरियस-विन आइयोडेटास कसचिकम, कलोटिन्य, मार्क्सल मिजेरियम, पल्सेटिला, आयोनिया, रडो-डेस्ट्रुन और रसटकस। प्रमेहरोगके बाद बाधी हो तो मर्क्यूरियम आयोड नाइट्रिक एसिड और लैकेसिस। ६ से १० शक्ति पर्यन्त यह सब औषध व्यवहृत होते हैं।

**पट्य ।**—ज्वरकी अवस्थामें सधु पथ ठण्डा पानी या गोद मिना हुआ जल उपकारी है। उष्ण ग्रथ्यापर ग्रथन, बहुत देर तक घूमना, मिर्चा या मीठा पदार्थ अनिष्टकारक है।

६ ग्लैण्डके जगत् प्रसिद्ध डाक्टर हिचजी पिस्तपथरीका कह  
। प्रगमनार्थ यवास्केरिया कार्य — व्यवस्था करनेसे कभी भी ध्वंस  
मनारथ नहीं रहे । ) पिस्तसे उत्पन्न शुभ पीड़ा निवारणार्थ  
यह परम औषधि है पन्द्रह मिनिट अन्तर पर दे । तीन घण्टा  
सेवनके पश्चात् इससे पीड़ा गमन न होनेसे थॉर्नेरिस प्रति  
वैस मिनिटके पश्चात् देना चाहिये ।

कोलेस्टेरिनम आमेरिकाके डाक्टर खोयान इसी औष  
धिका २m शक्ति प्रयोग कर पिस्त पथरीसे उत्पन्न वेदनामें  
आयुष्य फल पाकर मोहित हुए हैं । (Vido Allens  
Nosodes edition, 1910), २m क्रमका सुविता  
न होने पर भिन्न शक्तिका व्यवहार किया जा सकता है,  
६ ग्लैण्डके डाक्टर वॉर्नेट ३२—३ पूर्ण सेवन करानेसे पिस्त  
पथरी रोगकी विधित्त अवस्थामें अनेक उपकार पाये  
हैं । विषोन्मूल्यस और हाईड्राटिस प्रत्येक मात्रामें एके  
बूटसे १० बूट पर्यन्त । डाइपोस्कोरिया और जेस्चिडोनियम  
२ × कार्डूयाम मेरियेनास २ × जेस्चिमियम १ × बेस्चिडोना  
१ × और आर्सेनिक १ इत्यादि औषध पीड़ा निवारणार्थ  
व्यवहृत होता है ।

। आनुपद्धिक चिकित्सा ।—पीडासे रोगी नितान्त  
दुर्बल हो पड़नेसे उसको थूथ गरम पानी पिलाना और  
थूथ गरम जलका सेक देना वा सरसान्धको उपयुक्त यन्त्रादि



कदाचित् पेटमें दर्द भालूम पड़ने मात्रहीसे जबतक पथरी पित्तकोषसे पित्तवाही नालीमें आम गिरती है तब अकस्मात् धीरे धीरे पेटमें एक तरहका असह्य दर्द होकर रोगीको अत्यन्त अश्वीरकार डालता है, इस कठिन दर्दका नाम पित्तशूल (Biliary Colic) है, यही शूल दाहिनी कूखसे आरम्भ होकर चारों तरफ प्रायः दक्षिण कंधा और सब अङ्गोंमें फैल जाती है और पौडाके साथ वमन ठंडा, पसोना, दुर्बल नाड़ी, जाड़ा (Collapse) पाण्डू, श्वास आने जानेमें कष्ट, मूर्च्छा इत्यादि लक्षण दीख पड़ते हैं । पौडा कड़े घण्टासे कई सप्ताह तक रहकर अकस्मात् मिट जाती है । अर्थात् पथरी यन्त्र (Dualolumb) में आकर पड़नेसे सम्पूर्ण व्यथा मिट जाती है । इसी तरह मल धीन करनेसे पथरी पानेसे समझना चाहिये है कि पथरी निकल गयी है ।

**चिकित्सा ।**—(१) जिससे शूल पौडा शीघ्र निवृत्त हो और (२) मलके साथ पथरी शरीरसे निकल आनेसे जिसमें आगेका और पित्तकोषमें पथरी उत्पन्न न हो, इन्ही दो बातों पर ध्यान देकर औषधि और पथ्यादिकी व्यवस्था करना चाहिये ।

(१) शूलपौडाके समय ।—क्यास्केरिया कार्ब, ३० (पित्त प्रवही चिकित्सा में सिद्धहस्त डाक्टर खाण्डामिलन, और

पिण्डमें पथरी न उत्पन्न हो या उत्पन्न हुई पथरी गल जावे नीचे लिखे उपायसे वह साधी जा सकती है,—

पेशाबके साथ पत्थरका कण (gravel) निकलने पर और पीठमें और कमरमें पीड़ा होने पर बार्बेरिस चारवार सेवनकी रीति है । किन्तु जिसको गठिया वात है (Gout) वा जिसे अधिकतासे इस्त्रिक एसिड खिल्लाया गया है उसके लिये आर्टिका इस्त्रिग्स मात्रा ५ बूट हर आठ घण्टेके अन्तर पर देना और साफ़ है पानी पीना अति हितकर है ।

चूना और पत्थर एकही पदार्थ है, इस लिये पानके साथ चूना खाना निषिद्ध है उत्तर पश्चिम तरफके अनेक स्थानोंमें चावलोंमें बहुत छोटे छोटे कंकर रहते हैं, वह रोगीके लिये अनिष्टकारक है इसलिये उसे भी न खाना चाहिये कुम्हाके जलमें अधिकतर जिस कुम्हामें चूनाका (lime) भाग अधिक है उसे न पीना चाहिये ।

नयेकी वस्तु सेवनसे भी रुकसाग होता है । तुरत दुधा हुआ गौ दुग्ध कोई कोई व्यवस्था करते हैं ।

वाफ़ किया पानीका सुविता न होने पर उसके बदले ठण्डा जल अधिक पीनेसे उपकार होता है पित्तगूल रोगका पथ्यादि देखो ।



नालीमें, पीछा और पेशाबके नीचे पड़िले सफेद और पश्चात् मान्द मांडके सदृश होजावे । सिपिया (६३०) पेशाबके नीचे गोंदके समान चिपचिपा श्वेतवर्ण वा ईपत लाल । सार्साप्यारला (६३०) पेशाब करनेपर वह गोंदके पानीके समान मैला हो जावे ।

नाइट्रोमिटर एसिड २२ वा अग्निलिकएसिड (१-१२) पेशाबके नीचे क्वालसियम अक्सासैट जमनेसे (Oxalate of lime deposit),

उपरोक्त औषधियां मानों रोज अन्ततः चार बार करके सेवन कराना चाहिये । बेलेडोना (१५-१०) अफीम (१-१०) नक्स (१५-१०) सिनिका (६-१०) कभी २ उपकार करता है ।

(ग) मूत्राशयकी पथरी चिकित्सा । लिथियाम कार्बो-निकाम (३५ चूर्ण १०) रोज चारवार सेवनसे छोटी पथरी गल जाती है । क और ह के बीचकी औषधियां लक्षणानुसार व्यवहार करनेसे बहुत समय उपकार निलता है, किन्तु लेथो राइट (Lithorite) इत्यादि यक्षकी सहायतासे आश्चर्ययुक्त अस्त्रचिकित्सा द्वारा बड़ी पथरी शरीरसे निकाल नाही परम चतुरता है । X-Rayके सहायतासे शरीरकी पथरी दीखपड़ती है ।

(घ) प्रतिपेधक (रोकनेकी) चिकित्सा जिससे मूत्र-

## १४। चर्मरोग।

### आमवात (Urticaria)

आमवात रोग एकाएक दिखाई देनेसे कई घण्टे या कई दिन रहनेपर फिर आपसी आप मिट जाता है। रोग पुराना होनेसे, फिर रोगी कष्ट पाता है। शरीरके आना खान फूँस उठते हैं खुलुष्ट होती है और आक्साया खान गर्म हो जाता है। चिड़िमछली, केकड़ा या भारी द्रव्य भोजन, सर्दी खाने के बाद यह रोग उत्पन्न होता है।

चिकित्सा।—दाह, ज्वर, प्यास और सास रंगके दानोमें खुजली हो तो एकोनाइट १५। पीड़का ग्रस्त भाग सास रंगका और बौचका भाग सफेद, अन्न या सूँ मछानेकी भाँति दर्द या बहुत ही कुद् कुद् पथवा सुब सुब करना आर्टिका इयूरस १५ या एपिस १५। आर्टिका इयूरस और एपिस प्रभेद —दाने एकाएक बैठ जाये तथा वमन, अतिसार और मक्का आदि खजलोंमें आर्टिका। दाने बहुत फूँस उठे और सूँ मछानेकी तरह तेज दर्द हो तो एपिस मीघ। उदरामय हो तो, एण्डिमक्कूड, गक्सममिका, पलसेटिसा। सर्दी लगकर हो तो कालकेमारा। रोगकी पुरानी अवस्थामें एपिस, आर्सेनिक, सत्ताफर, कुईनि आर्से यही सब दवायें देनेसे काम चलेगा। पीटमें गड़बड़ हो ऐसा पदार्थ न खाना चाहिये।



तथा घोड़ा जोड़ा रात सिमा दुआ पीप या कुक्ष कानि रंगका  
पीप निकसना इत्यादि मल्लणोंमें धार्मिक ६, १० । गण्ड  
भामाके कारण उत्पन्न भये हुए घावमें सल्फर १० और कैस्के  
रिया ३० । अलनवाना घाव, सान रंगका हो तो मैलेडोमा  
१२ । सामान्य घावमें धीरे धीरे पीप उत्पन्न हो तो साइलि-  
सिया ३० । पीप निकालकर घाव बंठा देना हो तो डिपर,  
सल्फर १० । धीरे पीप बढ़ना अर्थात् घावको पकाना हो  
तो डिपर सल्फर विधूर्ण ६ । पारद छोप रहनेसे यह धीरे  
भी उपयोगी होता है । उपदंशके कारण उत्पन्न भये हुए  
फोड़ेमें मर्कूरियम ६ । पुराने घावमें किसी दूसरी दवासे फल  
न दिखाने देने पर सल्फर १० । घाव सड़ना आरम्भ होगया  
हो तो कैलेण्डुला १ आउगस, आधा सेर जलमें मिलाकर उसी  
जलमें एक साफ कपड़ा मिलाकर घावको ऊपर पट्टी देनेसे  
सड़ना बन्द हो जाता है ।

## पाचडा ( Scabies )

और

खुजली ( Itching of the Skin )

औषानूसे, एक प्रकारका फोड़ा होता है। मणिवन्ध और, उगली इत्यादि स्थानोंमें, सूक्ष्म और कोमल चमड़ेके नीचे ये सब कीड़े वास करते हैं, इसी कारणसे उगलीमें यह रोग होता है।

चिकित्सा ।—नित्य दो बार कार्बोलिक या नीमके पत्ते पानीमें, पीटाकर अच्छी तरह धोकर, गन्धकका मलहम लगा देनेसे जल्दही सुख जाते हैं, कैलकेरिका, कार्बनिका, आर्सेनिका, हेपर-सल्फर, मक्खनमिका, या मर्क्यूरियस कर, सोरिणाम, लाइकोपोडियम, फ्रीटन-टिन्वियम, कष्टियम, ट्रेफिसामिया इत्यादि औषध (१० शक्ति) खुजलीमें लाभदायक होते हैं।

## छत ( घाव ) ( Ulcer )

छोट खगनेसे, घिस जानेसे, गिरनेसे इत्यादि कई कारणोंसे फोड़ा हो जाता है।

चिकित्सा ।—घावसे रक्त बहना, आगसे जलनेकी भांति जलन, घावके चारों ओरका स्थान कड़ा और रुका

फोड़ामें पौप उत्पन्न होनेके समय मर्क्यूरियस सस ६ । फोड़ा सठनेका उपक्रम हो आक्रान्त स्थानमें जलन हो और साथ ही कमजोरी मासूम हो तो आर्सेनिक ६, १०, फोड़ा बैठानेकी इच्छा हो तो शिपर ससफर १० पर यदि पक्का हो तो उसीका विधूर्ण १ । पारद दोष हो तो यह बहुतही लाभदायक है । पौप बहुत परिमाणमें निकले या फोड़ा पुराना हो तो साइलिसिया १० । छोटा छोटा फोड़ा हो तो, भार्मिका ६ । बारबार फोड़ा हो तो ससफर १० । फोड़ा गलकर उसमेंसे दुर्गन्धित स्राव निकले तो एक सौ भाग गर्म जलके साथ एक भाग कैलेण्डुला ० मिलाकर फोड़ेकी जगह धो देने की चाहिये ।

### अंगुलीका घाव ( Whitlow ).

नखें खूब छोटा करके काटवाने, चोट लगने या जल जामे भयवा कीड़े विपाक पदार्थ रक्तस्राव होनेसे अंगुलीका अप्रभाग प्रदाहयुक्त होकर उसमें रीम उत्पन्न हो जाता है । रोग कठिन हो जाने पर सत्युक्त हो सकती है ।

चिकित्सा ।—रोगकी पहिली अवस्थामें या जब दर्द इन्हीतक फैल जाय, उस अवस्थामें साइलिसिया १० । छ्वर रहनेपर साइलिसियाके साथ बेलेडोना ६ ( पर्यायक्रमसे ) अंगुलीका अप्रभाग बहुत सूजकर कुछ काले रंगका होजाये



सड़ा हुआ घाव और उसके घगलमें छोटी छोटी फुन्सियाँ और घावसे दुर्गन्धित पीप निकलना इत्यादि लक्षणोंमें लैकेसिस है । खुजली, चर्बनवत् कष्ट और काटनेकी भांति दर्द, घावके ऊपर हाथ रखनेसे सड़नहीमें रक्तस्राव और इस रक्तमें दुर्गन्ध अनुभव लक्षणमें एसिड सल्फ्यूरियक है । पचन शील घाव ( वह घाव जो गलता हुआ हड्डीतक चला-आये ) में भी यह उपकारी है । पाराके अपव्यवहारके कारण पुराना नासूर घावमें क्षादकोपोडियम १२, एसिड नाइट्रिक है । घाव गहरा उसका बाहरी भाग ज च छेदकी भांति, रंग लाल, छूनेहीसे दर्दका बढ़ना और प्रायः घावसे रक्त गिरना, इत्यादि लक्षणोंमें मार्कसल है । १-१० बुद कौलण्डुला ० २ छटाक जलमें मिलाकर उसी जलमें कपड़ा भिंगाकर आक्रान्त स्थानपर पड़ी रखनेसे अच्छा फल होता है ।

## फोड़ा ( Boils ).

रक्त दूषित या देह शीर्ष होनेसे छोटा या बड़ा फोड़ा निकलता है । कोई कोई फोड़ा बिना, पकेही बैठ जाता है । जो फोड़ा सजतेही दप दप दर्दके साथ कड़ा हो जाता है वह फोड़ा प्रायः पकेही जाता है ।

चिकित्सा ।—पीप उत्पन्न होनेके पहिले आक्रान्त स्थान सजकर "दप दप" दर्द मालूम हो तो बेलेडोना १२

**चिकित्सा ।**—आक्रान्त स्थल स्नीत, सासरंगका और जलनके साथ सूई धेधनेकी तरह दर्दके लक्षणमें एपिस मिल ६। वण सड़ना भारभ हो तो आसेनिक ६, १०। आक्रान्त स्थान शाल रंगका और चमकीला खोचा धेधनेकी तरह दर्द, ऐठने तथा चिकित्सा मारनेकी भांति दर्द, निद्रावैश होना पर मोदका अच्छी तरह न 'भाना, 'इत्यादि लक्षणोंमें बेसेडोना १२, (पीप उत्पन्न होनेके पश्चिमे प्रदाहित ईष्यस्थानमें बार बार बेसेडोनाका प्रयोग उत्तम होता है)। ज्वालोकर घेधनाके साथ रक्तस्राव शील (दुर्गन्धित-पीप मिला हुआ), बल घटानेवाले त्रयमें काम्बोमेज ६, १०। तेज दर्द और जलनके साथ दुर्गन्धित पीप निकलना और मन्त्रस्थ विधानतस्तु गलना भारभ होनेपर साइलिसिया १०, लैकेसिस ६। टैरेण्डुला क्लुबेन्सिस यन्त्रणा निवारणके लिये एक बहुत ही उत्तम औषधि है।

गर्म जलमें फसालैन भिजाकर सेंक देनेसे भी लाभ होता है। मैदा या तौसीकी पुस्तिस देनेसे टटैनी हर जाती है।

**कई दूसरी दूसरी चर्मरोगकी दवायें ।**

**घमौरिकी दवा ।**—एफोनाइट और एसटस घोड़े गर्म जलमें थोड़ा घोलकर बदनपर मलनेसे लाभ होता है।

**बदनका फाटना ।**—सर्दी या जाड़ेके दिनोंमें फटनेसे आसेनिक।

धीरे जलन तथा दर्द हो तो आर्सेनिक ६ (रोगकी तेजीवाली अवस्थामें) असस्य दर्द पैदा होनेपर मार्कासस ६, हिपर सलफर ६, टैमोनियम ६ एमन कार्ब ५०० मासट्रिक एसिड ० या हायोस्कोरिया ० या फसफोरस ० आक्रान्त स्थान पर, क्षमा देनेसे दर्द कम हो जाती है।

### पृष्ठव्रण (Carbuncle).

यह एक प्रकारका बड़ा चिप्टा तथा गोलाकृति दूषित फोड़ा होता है। बहुमूल्यके रोगीको पृष्ठव्रण होनेसे, जीनेकी भाशा बहुत कम रहती है। गरदनमें या गरदनके नीचे अथवा कमरमें यह फोड़ा होता है। इसका आकार इसके अण्डेकी भांति होता है। कभी कभी एक बड़े कमला नीबूकी तरह हो जाता है। सामान्य सूजन या फोड़ेकी भांति ठीक मध्यस्थलमें एक सुइ म. होकर कई छोटे छोटे सुइ होजाते हैं, और इन सब सुइसे पतले फेनकी तरह क्लेद निकलता है। पहिले थोड़ी जगह पर अधिकार जमाकर फिर धीरे धीरे बढ़ जाता है। यह सूजन पहिले साफ, फिर कुछ काले रंगयुक्त हो जाती है। साधारणतः २।३ सप्ताहके बाद आक्रान्त स्थान और उसके नीचेके गहरा अशक्त सह जाता है। ज्वर, शिरमें दर्द, जलन, अरुचि, कामजोरी, भौंदना न आना इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं। ४० या इससे ऊपरवाली उमरके मनुष्योंको यह रोग होवे देखा जाता है।

रमरकी भांति घट बढ़ सकता है। इसलिये गर्भावस्थामें इसकी भीतर शिशु बढ़नेसे यह भी बढ़ता है और बढ़का हो जाने पर यह छोटा होकर निकल जाता है और पहिलेके समान हो जाता है। इसके ऊपरी भागको “जरायुका भादि” (Fundus) कहते हैं। नीचेका भाग उसकी अपेक्षा छोटा है इसको “जरायुकी घीवा” (Cervix) कहते हैं। जरायुकी घीवामें एक छिद्र रहता है, उसका नाम “जरायुका मुख” (Os) है। प्रायः तीन इंच लम्बा एक टेढ़ा सुरङ्ग जरायु घीवाके चारों ओर खुड़ा हुआ है। इसको ‘योनिपथ’ (Vagina) कहते हैं।

२। जरायुके दोनों तरफ एक एक लम्बा बादामकी आकृतिके दो ग्रन्थ हैं, उनको ‘डिम्बकोष’ (Ovaries) कहते हैं। प्रत्येक डिम्बकोषमें सरसोंकी भांति बहुत छोटे छोटे दस बीस “डिम्ब” (Ovum) रहते हैं।

३। जरायुके भादिमें दोनों तरफसे बाँझकी भांति दो नल (तीन इंच लम्बे) विस्तारित होकर जरायुके साथ डिम्बकोष दोनोंको मिलाते हैं, इनको ‘काकल नल’ (Fallopian Tubes) या ‘स्त्री वीर्यवाहीनल’ कहते हैं। (द्वितीय चित्र देखिये)।

फलसु।—स्त्रियोकी यौवनावस्थामें जब सब जगनेन्द्रिय परिपुष्ट हो जाती है, तब डिम्बकोषसे डिम्ब निकलता है। उस समय डिम्बकोष, काकल नल और जरायुकी गालमें

मोछमें दाढ़ ।—लाइको पोडियम, मार्क-पायड  
मैफाइटिस, ऐण्डिम क्रूड, सलफर ।

सेहुआकी दवा ।—कैलिकार्ब्य एसिड नाइट्रिक,  
नैट्रम स्यूर, कैथारिस, मैफाइटिस, सलफर ।

मुखत्रण ।—ऐण्डिमक्रूड, ऐण्डिमटार्ट, कार्बो ऐनि-  
मैलिस, आर्सेनिक, पल्स, कैलि-नाइट्रिक, पेद्रोल, एसिड  
फस, सलफर ।

दद्रु या दाढ़ ।—डिपर सलफर, फसफोरस । एसिड  
नाइट्रिक, रसटक, सीपिया, मैफाइटिस, सलफर । उपरोक्त  
दवाये ६ से १० कम तक दी जा सकती है ।

## १३ स्त्रीरोग ।

स्त्रीरोग चिकित्सा में प्रवृत्त होनेके पहिले पाठकगणोंको  
स्त्रियोंके अन्तर्निष्ठ सम्बन्धमें निम्न लिखित उपयोगी बातें  
स्मरण रखनी चाहिये ।

१ । स्त्रियोंके पेशुमें भ्रूवाधार और मलमाण्डके बीचकी  
जगहमें अण्डाशय ( Uterus ) है । यहाँ एक बाली होती है,  
जिसका आधार अण्डाशय या माध्यापति फलकी भाँति है । इस  
अण्डाशयके गड़हेके बीचमें बच्चा नी भासतक रहता है । यह

एकोनाइस १५ ।—एकबार रजःस्राव होकर एकाएक सर्दी लग कर या भयके कारण बन्द हो जाना ।

त्रायोनिया ६ या १२ ।—रजःस्रावके बंदसे मास या मुहसे रक्त निकलना, सूखी खासी, वक्षस्त्रयमें सूई वेधनेकी भांति दर्द, कोष्ठवृद्ध ।

सिमिसिफियूगा ६५ ।—हिमकोपके स्रायुगच्छिकों क्षीणताके कारण रजोरोध । गिरमें दर्द, नींद न आना बायें धनुमें (विशेष करके बायें स्तनमें) दर्द । शारीरिक दुर्बलता दूर करनेके लिये कैलकेरिया कार्ब १० और सुम्फर १० । रक्तकी अल्पताके कारणसे जो तो फेरम ६ और चायना ६ ।

## (ख) रजोरोध (Amenorrhœa)

रजःस्राव आरम्भ होकर फिर बन्द होजाय, आलस्य परायणता, सुप्तमदोष ऋतुके समय अधिक परिमाणमें बरफ आना, सर्दी, लगना, पानीमें भिगना, घूमना एकाएक शोक, दुःख या भय इत्यादि कारणोंसे रजोरोध हो जाता है ।

चिकित्सा ।—मसकमें रक्तसंचारजनित माया घूमना, आंखोंमें चंघेरा हो जाना और आंखके गड़हमें दर्द, शर्माशय और डिम्बाशयमें तेज दर्द, प्रस्ताप आदि लक्षणोंमें देखीजोना १ । नाकसे रक्त गिरि, माया घूमी वक्षस्त्रय और मध्यममें सूई वेधनेकी भांति दर्द हो, सूखी खासी और पाक-स्थलीमें दर्द हो तो त्रायोनिया ६ । पेटमें शीघ्र दर्द (परि

रजः ( छ ) बाधक वेदना ( झ ) श्वेत प्रदर ( भ ) र  
निवृत्ति ( ज ) हरित् रोग ।

( ऋ ) पछिले रजःस्रावमें विलम्ब ।

( Delayed Menstruation )

कुम लोगोके देशकी स्त्रियोंको साधारणत १२।१३ वर्ष  
अवस्थामें पछिले रजःस्राव आरम्भ होकर ४०।५० वर्ष  
अवस्थातक प्रति महिनेमें नियमितरूपसे रजःस्राव हु  
करता है । किसी किसी बालिकाकी यौवनवस्था ही जा  
पर भी रजःस्रावमें देर होती है , या पछिले एकवार रजःस्रा  
होकर फिर बन्द होजाता है । स्रावविक दुर्बलता या ब  
दिनोंतक कोई रोग भोगनेसे, शारीरिक दुर्बलता या रक्तस्रा  
कों अल्पताके कारण और योनिमुखकी आवरण क्लिष्टी  
फटनेके कारण पछिले रजो दर्शणमें देर होती है । सप्य -  
माया भारी और दर्द नाकसे रक्त गिरना, कलेजा धड़कन  
यास प्रवृत्तासमें कष्टबीध कमन और जंघमें भारीपन त  
पेडुमें दर्द ।

, चिह्नितसा.।—पल्सेटिला ३८, ३० । पिट और  
पीठमें दर्द, घिरमें दर्द, अस्थि, सदा जाड़ा मालूम होना  
आलस्य, मिथली, कलेजेका धड़कना, रक्तहीनता । कम सप्य  
ओंके साथ यदि श्वेतप्रदर हो तो सीपिया ६ ।

“रजोरोध” “स्वस्परज” और “अति रज” चिकित्साकी औषधाली लक्षणानुसार इस रोगमें प्रयोगकी जाती है ।

(घ) अनुकल्प रज ।

(Vicarious Menstruation.)

रजो स्रोत ( या अल्प रज-स्राव ) के कारण नाक, पुसपुस ( जेन्नाके सहित रक्तस्राव ) पाकस्थली ( रक्त वमन ) और गुच्छदारसे रक्त निकलता है ।

चिकित्सा ।—नाक गुच्छदार या शरीरके दूसरे कोई रास्ते होकर रक्तस्राव, रक्तवमन कलेजेमें दर्द, खांसी ( खेत प्रदर रहे या न रहे ) आदि लक्षणोंमें हेमोमेनिस १ और आयोनिया ६ ( पर्यायक्रमसे ) । गाढ़ा सात्वर्णका रक्त-स्राव होनेसे इपिकाक ६ । खांसते खांसते रक्तस्राव, दुर्बलता, मुखमण्डलकी रक्तहीनता आदि लक्षणोंके साथ यक्ष्मा रोगके पूर्व लक्षण दिखाई देने पर सिनिसियो १५ । नाक और कानसे रक्त निकले, स्तनमें दर्द हो, वदन गर्म हो तो पल सेटिवा ६ ।



अमसे वृद्धि ) विमर्ष चित्त , निर्जन प्रियता लक्षणमें । शीपिय  
 ६ । सर्दी लगकर रजोरोधमें ऐकोनाष्ट ६ ॥ मानसिकलक्षणे  
 जनित पीडामें ध्वनेसिया ६ । ठण्ड या रक्तकी अस्पता  
 कारण रजोरोध हो तो कौस्तुभ-कार्य ६ । रक्तकी अल्पता  
 और उदरामयके साथ रजोरोध हो तो फेरम ६ । ऋतु ब  
 होकर यदि रोगिणी पेटकी दर्दसे छटपटाये तो जेलसिमियम  
 ६ । गर्म अलसे या गर्म गोमूत्रमें फुँनल भिखाकर कमरमें  
 सेंक देनेसे लाभ दिखाई देता है ।

### (ग) अनियमित ऋतु ।

#### (Irregular Menstruation.)

ऋतुका निर्दिष्ट समय है । स्त्रियोंको प्रति मासके २८ से  
 दिनसे जराबहुत होकर कुछ कालिमा लिये लाल रंगका पतल  
 स्राव निकलना है । ३ से ५ दिनोंतक यह स्राव रहता है, इस  
 स्रावका परिमाण एकसे छेढ़ पावतक होता है । उल्लिखित  
 नियमोंमें व्यतिक्रम होनेसे दवा करना कर्तव्य है । अनिय-  
 मित रक्तस्रावका लक्षण — २। ३ मास रक्त-स्राव होकर एका-  
 एक बन्द हो जाना, कभी कभी ४।५ मास रक्त बन्द रहकर  
 अचानक अधिक स्राव होना । किसीको १०।१५ दिनों तक  
 थोड़ा थोड़ा स्राव हुआही करता है ।

चिकित्सा ।—पक्ष्सेटिका और घायना ६ ।—  
 पर्यायक्रमसे प्रयोग करने पर अच्छा लाभ दिखाई देता है ।

सकता है । अतिरिक्त संगम, अधिक पुष्टिकर पदार्थ भोजन । उत्कट मानसिक चिन्ता, या बार बार गर्भसंचार होना भी इस रोगका कारण कहा जाता है । आलस्यभाव, बदनमें दर्द, जंभाई, छठना, बदन ऐठना, शिर भारी और दर्द । पीठ और कमरमें दर्द, परुचि पैरका तलवा ठण्डा और ज़ाड़ा मान्द्रुम होना इत्यादि लक्षण इस रोगमें देखेजाते हैं । बहुत परिमाणसे रक्तस्रावके कारण, चेहरा पीला, पाखें गढ़ेमें घंसी हुई, हाथ पैर ठंडे, कान बन्द, दृष्टि और नाड़ी चीप तथा सूक्ष्म इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं ।

**चिकित्सा ।**—शारीरिक दुर्बलता और गर्भाशयकी क्रियाके विकारके कारण अधिक दिनोंतक रहनेवाला प्रसुर रजःस्रावमें आसैनिक ६ । रजोनिवृत्तिके समय, गर्भावस्थामें और प्रसवके अन्तमें—पीठमें और पेटमें कर्द रहने पर पठ-सेटिका ६ । सूत्रयन्त्रमें प्रदाह, क्षय दृष्टि, डिम्बाश्रयमें दर्द । सार्व वर्णका अधिक रज निकलनेसे स्त्राविना ६ (स्त्रावही स्त्रियोंके लिये स्त्राविना विशेष लाभदायक है) । सदा वेदना शून्य बहुत और पतला रजःस्राव, कभी काले रंगका कभी यक्षा यक्षा । कभी दुर्गन्धमय रक्तस्राव, सामान्य छठने बैठनेमें प्रावका बढ़ना, सब बदन ठण्डा या भीतर सप्ताप अरायुके सुईमें चौटी चलेनेकी तरह सुड़सुड़ाहट, पेटमें दर्द और योनिभी और दावके साथ साक्षा काक्षा धिप धिपा चलकतराकी भांति काक्षा स्रावमें क्लोकस सेटाइना ६ ( पारामके समय प्रायमा ६

अरायुके दोपसे थोड़ा रजस्साव होनेसे नीचे लिखी दवायें दी जाती हैं ।

**चिद्धित्सा ।**—कृन्ति, शारीरिक और मानसिक अवसाद, पीला त्वक्, ठंडी हवा असह्य, घमन, शिरमें दर्द और रक्तकी स्त्रव्यतामें सिमिया १० (घीणाङ्गी और वायुप्रधाना स्त्रियोंके लिये यह और भी उपयोगी होता है) सामान्य परिमाणमें जलवत् स्त्राव, सब शरीर पीला जाड़ा लगना, रजस्सावके पूर्व और उसी समय कमरके दर्दमें पलसेटिला ६ भास्कार और वायु सेवनके अभावके कारण अथवा किसी प्रकारके क्षय करनेवाले रोगके कारण थोड़ा रज स्त्राव होनेसे फेरम ६ । कोष्ठबन्ध और उसीके साथ बदनके चमड़ेमें फोड़िया रहनेसे पैफाइटिस ६ । स्त्रायविक दुर्बलता और उदरामय रहनेसे, फसफोरस ६, ग्लाटिना ६, कार्बोनिज ६, और सल्फर ६ । समय समय प्रयोग किया जाता है ।

### (च) अतिरज (Menorrhagia).

इस रोगमें अरायु होकर बहुत रज स्त्राव होता है । यह नियमित समयके पूर्व या परे भी हो सकता है और थोड़े या अधिक दिनोंतक रह सकता है । माना प्रकारके कारणोंसे रज अधिक जाता है, उसमें अरायुकी यान्त्रिक क्रियाका परिवर्तन, अरायुकी क्रिया दूषित होना, अरायु या अरायु ग्रोवामें किवा डिम्बकोषमें रक्त संचय इत्यादि कारणोंसे यह रोग हो

रोगिणी स्त्रियोंके प्रचुर रक्तस्रावमें और यक्ष्मसमें दर्द रहनेपर कैंसकेरिया कार्य ६ (विशेष करके स्त्रुसाधू स्त्रियोंके लिये) ।

ट्रिनिटम ६ । चिप चिपा और साल रक्त घमनीसे निघले, आनुदेगमें दर्द हो (विशेष करके रक्तस्राव प्रपन्न रोगिणीके लिये) ।

विराम आयुष्ठाकी चिकित्सा ।—अत्यन्त रक्त-स्रावके कारण रोगिणी बहुतही दुर्बल हो जाय तो प्रसवेटिसा, फेरस, चायना और आर्सेनिक । रक्तसंचालनकी विरुद्धता और खर रहनेपर एकोनाइट, वात हो तो सिमिसिफिउमा, उदरामय, स्त्रमद्ध और खाँसी या यक्ष्माके लक्षण प्रकाश पानेपर कैंसकेरिया कार्य, मानसिक उत्तेजना, मैयुम प्रवृत्तिकी अधिकता हो तो फसफोरस, बीच बीचमें बहुत परिमाणमें रक्त निकले और दुर्बलताकी अतिरिक्त रोगिणीको दूसरे किसी प्रकारके शरीरकी विरुद्धता अनुभव न करने पर ट्रिनिटम । ये समस्त औषध छठी शक्तिके प्रयोगद्विजे जाने चाहिये ।

साधारण नियम ।—अतिरिक्त शारीरिक और मानसिक परिश्रम निषेध । यदि कोई दुर्बल करनेवाला रोग या वातुगत कोई दोष नहीं हो और रोगिणी स्वस्थ रहे तो गर्भ उसके टवमें रोगिणीको कमर तक झुकाकर १०।१५ मिनट रखकर निकास लेने और गर्भ कपड़ेसे बदन पोछनेपर साम

और पीड़ित अवस्थामें क्रोकस प्रयोग करनेसे विशेष फल पाया जाता है ) । गाढ़े अलकतरकी भांति अधिक सुाव । पट्टा और योनिमें दर्द मालूम होना मानो पेटकी भाँड़ी इत्यादि खींचकर योनिद्वारासे निकल पड़ेगी, संगम प्रवृत्तिका आविष्क, अरायुमें प्रदाह और सर्वदा तन्द्रावेश लक्षणमें ग्रेटिना ६ ( इसके साथ क्रोकस पर्यायक्रमसे प्रयोग करनेसे लाभ दिखाई देता है, विशेष करके पुरानी दशामें यह औषध उपयोगी है ) अस्तुके पहिले प्रसव वेदनाकी तरह सेज दर्दके साथ कड़े दाने मिले सुाव, रह रहकर दर्द आदि लक्षणमें कैमोमिला १२ । वेदना शून्य बहुत अधिक परिमाणमें घतला, कभी गाढ़ा काँसे रंगका रक्त सुाव, रक्त सुावके कारण कमजोरी, काममें भौं भौं शब्द अरायु सुखमें जलन, प्रति द्वितीय दिनको दर्दकी वृद्धि लक्षणोंमें चायना ६ । नाभि प्रदेशमें दर्द और वह दर्द अरायुतक फैली हुई, अविरत धमनेच्छा, माया घूमना, माथेमें दर्द, चेहरा सूखा और ठंडा, गाढ़ा लालवर्णका रक्तसुाव होनेसे इपिकाक ६ । ( उल्लिखित लक्षणमें प्रसवान्तिका आकस्मिक रक्तसुावमें भी यह उपकारी होता है ) सुतनाकी और शुष्कद्वारमें प्रदाह रह रहकर बहुतसा खोर लाल वर्णका रक्तसुाव ( विशेष करके गर्भसुावके बाद ) हो तो इरिजिरन १५ । चोट लगनेके कारण अरायुसे अधिक रक्तसुाव होनेसे चार्निका ६ और हेमामेसिस १ उपकारी है । नियमित समयके बहुत पहिले योनिद्वारमें सुंजखी और ज्वालाके साथ खेत, प्रदरपक्षा

रोगिनी स्त्रियोंके प्रचुर रक्तस्रावमें और वक्षस्थलमें दर्द रहनेपर कैलकेरिया कार्य ६ (विशेष करके स्मूलाङ्गी स्त्रियोंके लिये) ।

इन्डियम ६ । चिप चिपा और क्षास रक्त घमनीसे निकले, धातुदेशमें दर्द हो (विशेष करके रक्तस्राव प्रधान रोगिनीके लिये) ।

विराम अवस्थाकी चिकित्सा ।—अत्यन्त रक्तस्रावके कारण रोगिणी बहुतही दुर्बल हो जाय तो पलसेटिका, फेरम, चायना और आर्सेनिक । रक्तसंचालनकी विक्षोभता और स्वर रहनेपर एकोनाइट, घात हो तो सिमिडिफिडगा, छदरामय, स्वरभङ्ग और खासी या यक्ष्माके लक्षण प्रकाश पानेपर कैलकेरिया कार्य, मानसिक उत्तेजना, मैथुन प्रवृत्तिफौ अधिकता हो तो फसफोरस, बीच बीचमें बहुत परिमाणमें रक्त निकले और दुर्बलताके अतिरिक्त रोगिणीको दूसरे किसी प्रकारके शरीरकी विक्षोभता अनुभव न करने पर इन्डियम । ये समस्त औषध जठरी शक्तिके प्रयोगकीये जाने चाहिये ।

साधारण नियम ।—अतिरिक्त शारीरिक और मानसिक परिश्रम निषेध । यदि कोई दुर्बल करमीवाला रोग या धातुगत कोई दोष नहीं हो और रोगिणी सवल रहे तो गर्म जलके टबमें रोगिणीको कमर तक डुबाकर १०।१५ मिनट् रखकर निकाल देने और गर्म कपड़ेसे बदन पोछनेपर क्षाम

देखाई देता है । हेमालिस ० बीसगुने साफ जलमें भिन्ना कर उसमें कपड़ा भिगों कर योनिमें देनेसे कभी कभी लाभ देखाई देता है ।

### (छ) बाधकवेदना (Dysmenorrhoea).

रजःस्रावकी विक्षिप्तताके कारण एक प्रकारकी दुःखदायी दर्द पैदा होती उसीको बाधकवेदना कहते हैं । पेटु और कमरमें यह दर्द मासूम होती है । वारें डिम्बाशयमें बद्धत दर्दके साथ थोड़ा रजःस्राव ( ऋतुके समय ) पेटु, मेरुदण्ड कमर या सब अंगोंमें अतिशय दर्द, कमजोरी, शिरमें दर्द शिर घूमना, आलस्य, अग्निमान्द्य, वमनेच्छा या वमन इत्यादि लक्षण बाधक वेदनामें रहते हैं । अतिमैथुन, जरायुके स्थानका हटजाना रक्तसंचयके कारण उत्पन्न हुई जरायु प्रदाह और श्वेतप्रदर इत्यादि कारणोंसे यह रोग होता है ।

**चिकित्सा ।**—सिमिसिफिचगा ६ । ऋतुके पहिले शिरमें दर्द ( ऋतुके समय ) पेटमें प्रसवकी भांति दर्द, पेटु, पट्टा, पीठ और पाकस्थलीके ऊर्ध्वमें तेज दर्द, भस्मिरंगका थोड़ा रजःस्राव या अधिक स्राव ।

पलसेटिशा ६, १० ।—कमर, पेटु और पीठमें कतरने या छिदनेकी भांति तेज दर्द, अग्निमान्द्य, अरुचि, माया घूमना, जाड़ा सगना, ऋतुकालीन उदरामय, थोड़ा रजःस्राव या कभी थोड़े परिमाणमें चट चटा रक्तस्राव इत्यादि लक्षणयुक्त श्राग्त

अभाववाली स्त्रियोंकी बाधक वेदनाकी यह छत्तम औषध है ।  
सिमिसिफिटगा और पलसेटिला पर्यायक्रमसे प्रयोग करनेपर  
प्रायः बाधक वेदनामें उपकार होता है ।

वेलेडोना ६, १० । जरायुमें और छिम्बाशयमें रक्तसंचयके  
कारण उत्पन्न हुई बाधक वेदनाके समय मान्द्रुम होता है  
मानो पीछेसे पेटकी माड़ी जोरसे ठकेलकर योनिद्वारसे बाहर  
आ गिरिगी । रजःस्रावके एकदिन पहिलेसे दर्दका उठना  
अतुल्यके समय पायखानेमें अतिशय कष्ट, पेटमें कतरनेकी तरह  
दर्द, आँख और सुह लाल रंगके और रंगोंका दप दप करना  
इत्यादि लक्षण मिले हुए रक्त प्रधाना स्त्रियोंके लिये यह एक  
अति उत्तम दवा है ।

सेलसिमियम ३५ ।—जरायुमें रक्तसंचय अनित आक्षेपिक  
बाधक वेदना, योनिद्वारमें और जाँघमें ऐठनकी भाँति दर्द,  
पहिले पेटसे दर्द आरम्भ होकर धीरे धीरे कमर और पीठके  
ऊपरीभाग और गर्हणमें आक्षेपिक वेदना, कभी कभी दर्द  
घटनेपर रोगिणीकी तन्द्राविश और आलस्य इसके साथ कसो  
फाइनम १५ पर्यायक्रमसे प्रयोग करने पर यथेष्ट उपकार  
होता है यदि ऊपर रहें तो यह और भी सामदायक है ।

कैमोमिला १२ ।—मखिन या कासे रंगका चिट चिटा रक्त  
स्राव, प्रसवके दर्दकी भाँति वेदना बार बार पेशाव करनेकी  
इच्छा, पेटमें दर्द, कमरसे सामनेकी ओर ठेसनेकी भाँति दर्द



इत्यादि लक्षणयुक्त वायू और पित्त प्रधाना उग्र प्रकृतिकी स्त्रियोंके स्थिते बाधक वेदनार्थे ।

कक्खूलस ६ ।—पेट एठनेकी भांति पेटमें दर्द मालूम होना, वक्षस्थलमें भार और सांस लेनेमें कष्ट बहुत थोड़ी मात्रासे कासा रक्त निकलना या श्वेतप्रदर । शिरमें बहुत दर्द और शिर घूमना, पेट फूलना, कभी कभी मूर्च्छा और वमनेच्छा ।

हेलोनियस ६x ।—जरायुमें अतिशय दर्द, कासे सूतकी तरह सुाव ।

नक्सममिका ६, ६० ।—बिना समयकेही थोड़ा रज सुाव, जाड़ा मालूम होना, अग्निमान्द्य, सुबहकी मिथली या कै ।

सिकेली-कर ६ ।—नियमित समयके बहुत पछिले दाना दाना, मैला और दुर्गन्धसुाव, पेटमें तेज दर्द मानो पेटके सब पदार्थ योनिद्वार होकर बाहर निकल पड़ने, सब अङ्गोंमें (विशेष करके हाथ पैरमें) ठंडा पसीना चीष नाड़ी, मूत्राशयमें और मलाशयमें कतरनेकी तरह दर्द, कभी कभी रक्तसुावके अभावके कारण तेज दर्द और दुर्वसतामें ।

मैन्नेसिया फस ६ । ( गर्म जलके साथ ) पाकस्थली और जरायुमें आक्षेपजनक वेदना ।

एपिस ६ ।—छिम्बकोपमें चूर्ण गड़ानेकी भांति, दर्दसे रोगिणी छटपटाय, प्रसव वेदनाकी भांति दर्द ।

भारवापार्म, अप्युलस ६x । जठसुकाशमें दर्द, एकाएक

भारम्भ होकर ८१० घण्टे तक रहे, अरायुमें तेज दर्द, पीछे समस्त पेटमें दर्दका फैल जाना । आधेपयुक्त बाधक ।

निम्नलिखित औषध ( छोटी शक्तिमें ) समय समय पर आवश्यक होती है — कोकस, मस्कास, कलिस्थोनिया, सिनिसियो, विलियम, सिपिया, स्याविना अन्यगमिलाम, कलो फास्फम, ड्रेटिना, बोरास, वायोनिया, और कूप्रम ।

नियम ।—बन्ध रजःस्रावकी कारण उदरमें तेज दर्द रहनेसे गर्म जलका या गर्म गोमूत्रका सेक देनेसे लाभ हो सकता है । विजली (Electricity) प्रयोगसे भी दर्द निवारण हो सकती है ।

यदि होमियोपैथिक औषधका सुविधा न हो और रोगिणी दर्दसे भविरा हो रही है तो छलटे कम्बलकी जड़ वजनमें चार पाने, छ दाना गोखमिर्च और पानके छ टेके साथ पीस कर ( अतुकावकी तीन दिन ) प्रातःकालके समय सेवन कराना, इसी तरहसे दो दिन अतुमें खानेसे बाधक निश्चय हो जा सकता है ।

## (ज) श्वेतप्रदर Leucorrhœa)

अरायुकी आवश्यक भिन्नीसे, अरायुके भीतरसे और अरायुके मुखसे भांति भांतिके रंगका ( सज्जा, मौना, पीला, दूधकी तरह, मांस छोये हुए जल या काँसे अलकमराकी )

तरह ) स्राव निकलता है, इसीको श्वेत प्रदर कहते हैं । गण्डमाला धातुग्रस्ता योद्धी उन्मथाली वान्तिकाओंकी भी समय समय यह रोग होता देखा जाता है । ठीक समय पर दवा न होनेसे धीरे धीरे जरायुसे अधिक परिमाणमें पीपकी भांति स्राव होने लगता है और उस कारणसे योनिमें भीतर और सुखमें घाव उत्पन्न हो जाता है । कोठबल, माया धरना, पेट फूलना, परिपाक क्रियाका व्याघात और बेहरेकी रक्त हीनता इत्यादि लक्षण वर्तमान रहते हैं ।

सर्दी लगना कृमि, अपरिष्कार ( मैला ) रहना, उत्तेजक द्रव्य पीना या खाना, स्वास्थ्यभंग, अतिरिक्त संगम, बीच बीचमें अतिशय रक्तस्राव, जरायुके बीचमें कोई उत्तेजक पदार्थ, कर्कटिका होकर योनिमें प्रदाह, बार बार गर्भपात इत्यादि कारणोंसे श्वेतप्रदर होता है । स्त्रीया प्रधान या गण्डमाला धातुग्रस्ता स्त्रीयोंको यह रोग अधिक होते देखा जाता है ।

**चिकित्सा ।**—कौसकरिया-कार्ष्ण ६, १० । दूधकी भांति प्रदरमें—जरायुमें ज्वाला, खुजली और दर्द, वान्तिकाओंके और गण्डमाला धातुग्रस्ता स्त्रीलोगोंके प्रदरमें यह उपकारी है ।

**पलसेटिसा ६ ।**—सब प्रकारके श्वेत प्रदरमें यह उपकारी है । सादे रंगका गाढ़ास्राव ऋतुके बाद इस स्रावका बटना ( इसमें कभी दर्द रहती है कभी नहीं भी रहती । )

**एन्ड्रिड नाइट्रिक ६ ।**—( विविध रोगोंको भोगकर या

गर्मी रोगके बाद श्वेतप्रदर होनेसे यह औषध उपकारी है )  
पहिले घुंऐसा और गाढ़ा स्राव होकर ५।६ दिनके बाद  
उससे पतला पानीके भांति या मांसके धीयनके पानीके तरह  
दुर्गन्ध निकलने पर ।

क्रियोजोट ६ ।—जठरके ४।५ दिन बाद पीसी रंगके कसे  
धानकी गन्धके भांति स्राव, जरायुके बाहर छलम, छई गहानेकी  
भांति खनन और खुजली, महामे स्राव खगकर फोड़ा और  
पीठमें दर्द ।

घोभिष्टा १२ ।—सफेद अण्डेकी तरहके रंगका पुराना  
श्वेतप्रदर और उसके साथही सिर बड़ा माचूम होना ।

सिपिया १—प्रसव वेदनाकी तरह दर्द, कोष्ठवद कुछ सभ  
रंगका दुर्गन्धित स्राव या दुर्गन्धमय पानीकी तरह स्राव  
निकलनेसे ( चीणाङ्गी और वायु प्रधानां स्त्रियोंके लिये यह  
विशेष उपकारी है । )

सलफर ३६ ।—पुराने श्वेतप्रदरसे बहुत दिन भोगने पर  
हो एक मात्रा सलफर भी उपकारी होता है ।

उजला या हलदीके रंगका स्राव होनेसे मार्क सल,  
सिपिया, कैलकेरिया कार्ब, चायना और प्वाइम् मिटर ।  
पानीकी तरह पतले स्रावमें स्त्राविमा फेरम और पलस् तीव्र  
ज्वाला कर स्रावमें—एसिड भाइड्रिक, पलसेटिसा, क्रियोजोट,  
आर्सेनिक, दुग्धवत् स्रावमें साईंसिसिया, क्वालकेरिया कार्ब

प्लसेटिला साइकोपोडियम और फेरम । रक्त मिले हुये स्त्रावमें—क्रियोजोट, साइकोपोडियम और चायना । यह दवायें छूटे शक्तिकी प्रयोग करना उचित है सोच बीचमें औषध बन्द करना चाहिये ।

नियम ।—रोज नहाना जननेन्द्रियको दिन भरमें चार बार घोना और विशुद्ध हवामें घूमना चाहिये, नाटक, थियेटरमें जाना खराब सगतमें रहना, देरसे हलम होनेवाला द्रव्य भोजन करना और स्वामी सहवास निषिद्ध है ।

### ( भ ) रजोनिवृत्ति (Menopause)

आगे बताया है कि स्त्रीस्रोतोंका ऋतु २०।२२ बरस तक रहता है ( अर्थात् अगर १२ बरसकी उमरमें जिस स्त्रीकी रज शुरू होता है, प्रायः ४४ बरस उमरमें उसका ऋतु बन्द होगा ) । ४० वर्षकी अवस्थामें स्त्री-जननेन्द्रियमें रक्तसंचय कमने लगता और ४५।५० वर्षकी अवस्थामें स्वास्थ्यका स्त्रियोंका ऋतु सदाके लिये बन्द हो जाता है । उस समय अण्डाशयका आकार छोटा हो जाता है, योनि संकुचित हो जाती है और दुर्बलताके लक्षण दिखाई देने लगते हैं । इसी प्रकारसे सहजमें ही ऋतु बन्द होनेपर किसी औषध प्रयोगकी आवश्यकता नहीं पड़ती है ।

परन्तु यदि सहजही ऐसी दशा न हो कर यदि आयुकी उन्नता ( सैस् बार बार गर्मी मालूम होना, शिरमें दर्द,

कलेजेमें घड़कन दिष्टीरिया) वमनेच्छा कोष्ठबद्ध, पेटमें वायु, अमा होना बहुत पसीमा और पेशाब इत्यादि लक्षण दिखाई दे तो भीषण अवस्था करना चाहिये । रजोगिष्ठितिके कुछ पहिले किसी किसी स्त्रीका शरीर अच्छा और सबल मालूम होने लगता है ।

चिकित्सा ।—सैकेसिस ६—( इस रोगकी प्रधान भीषण है ) रक्त रक्त कर गर्मी मालूम होना, शिरमें जलन मींदके बाद रोगका बढ़ना ।

सैडुनेरिया ३८ या ऐमिल नाइट्रिट ३ ।—( स्त्रायविक लक्षणमें ) यदि सैकेसिससे कोई लाभ न हो ।

बहुत पसीमा या सार निक्कलनेमें ज्यादातर २५, शिरकी दर्दकी प्रबलतामें म्मनोइन ३, शिरमें, चांदीमें वैशी जलन मालूम हो तो चाइना ६ या फेरम ६ पाकसली खाकी मालूम होनेसे हाइड्रोसियानिक एसिड ६ ।—रोगिणी छट पुष्ट होनेसे तो छाक्टर खेडाम, एकोनाइड ३ देनेको कहते हैं ।

नियम ।—कुछ गर्म जलसे स्नान, और जल्द पचने-वाली वस्तु भोजन, समय पर सोना, शारीरिक परियम थोड़ा करना ।

(ज) हरित पीड़ा ( Chlorosis )

इस रोगमें रक्तके जाल दामोका भाग कम हो जाता है,

इसी नियम के अनुसार सफेद मिट्टी की तरह कुछ लज्जना पीना या चूने के पीसे रंगका हो जाता है । नियमित समयमें प्रायः वस्तु नहीं होता शरीरकी गर्मी कम हो जाती है, उदा खाड़ा मानस होता है शिरमें दर्द, आँखोंकी पलकमें सूजन आँखोंके घारों और स्वादोंके भाति दाग, कलेजेमें घड़कन, गाड़ी घीण, ओंठपर रक्तका चिह्न तक नहीं रहता अजीर्ण, कौष्ठवद, चिड़-चिड़ा स्वभाव, अरुचि इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं । रात स्राव, हस्तमैथुन, फटुका गड़बड़, नियमित शारीरिक परिश्रमका न करना, दुश्चिन्ता इत्यादि कारणोंसे यह रोग उत्पन्न होता है ।

**चिकित्सा ।**—फेरस २५ चूर्ण ।—यह इन रोगकी प्रधान औषधि है । एक एक घण्टे सुबह शाम दोनों समय सेवन करना चाहिये । हज, बेयार, जूसों, धुँकौ इत्यादि अच्छे अच्छे चिकित्सकगणोंने इस औषधकी प्रशंसा की है और इसके पक्षपाती हैं ।

**आर्सेनिक ३० ।**—अधिक परिमाणमें रक्तस्राव या शोथ होनेपर अथवा लोहा मिले औषधके अपव्यवहारसे या रोगिणी बहुत कमजोर हो जाने पर ।

**पससेटिला ६ ।**—यह एकदम बन्द या बहुत थोड़ा रक्तस्राव होना । जो लक्षण फटु बन्द होकर रोगिणी कमजोर बहुत थकावट हो जानेपर ।

जेटम मिउर १० ।—जंघाके जोड़में सर्दी भानूम होना, पेडुमें भार भानूम होना, शृङ्गन, कोष्ठबद्ध, ऋतुबन्द या बीच बीचमें कपट्टेमें दाग लगना, उत्कण्ठा इत्यादि लक्षणोंमें ।

कैलकेरिया १० सिपिया १२, ग्रेटिना ६, फस्फरिक एसिड ६, सनफर १०, ग्राय्याम ६, समय समय पर आवश्यक होमेषे सेवन करना चाहिये ।

नियम ।—सदं जनमें ( विशेष करके समुद्रके जलमें ) स्नान । चाफ दवा घेयन, दूध पीना, पास्तकी ( Bran ) रोटी खाना, धूपमें इधर उधर घूमना । रोगिणीको आलसमें समय न काटना चाहिये ।

## ( २ ) जरायुके रोग समूह ।

### Diseases of the Uterus.

जरायुके रोगमें नीचे लिखे प्रधान रोगोंके विषयमें क्रमसे लिखे गये हैं ( क ) जरायुकी सप्रता, ( ख ) जरायुकी मूर्च्छा ( ग ) जरायु प्रदाह ( घ ) जरायुके बीचमें वायु या जल जमा होना ( ङ ) जरायुस्त भर्मुद ( च ) जरायुकी स्थानान्तरिता या नाला छपड़ना ।



## (क) जरायुश्रौ उग्रता (Hysteralgia).

जरायुमें दर्द मानूस होना, समस्त वस्तिमें कन्कन् दर्द, यह दर्द स्थायिक । ऋतुके समयमें और अधिक चलनेमें बढ़ि पाता है । भ्रूख न लगना, अस्थिरता ( बेचैनी ) घमनेच्छा, अनिद्रा पाकाशयमें गड़बड़ इत्यादि इस रोगके प्रधान लक्षण है ।

चिकित्सा ।—सिमिसिफियुगा ३५ ३० ।—इस रोगका प्रधान औषध है ।

आर्मिका ६ ।—ऋतुकी अवस्थामें बहुत परित्यक्त या प्रसवके बाद संचालनसे यह रोग होने पर ।

इस रोगमें आमाशयके गड़बड़ या पाकस्थलीमें दर्द रहने पर कैमोमिला ६, मक्कममिका ३० या पलसेटिला ६ इत्यादि देना चाहिये ।

(ख) जरायुज मूर्च्छा या हिष्टिरिया ।  
( Hysteria )

आयु समूहके ( विशेष करके जरायुके आयुमें ) उग्रताके कारण मूर्च्छारोग उत्पन्न होता है ।

चिकित्सा ।—“शुक्का” रोगकी चिकित्सा देखना चाहिये ।

मूर्च्छावस्थामें रोगिणीके मुह या नासारम्भ बहुत थोड़ी देरतक खुल टवा रखनेसे, थोड़ा ऊँचे परसे भारीसे उसके चेहरे पर इस तरह जल डालना चाहिये, जिससे उसके सांस लेने और छोड़नेमें बहुत थोड़ी देरतक व्याघात पड़वे । इसके बाद रोगिणीको जोरसे सांस लेना ही पड़ेगा और यह होतेही तुरन्त उसकी मूर्च्छा भंग होगी ।

## (ग) जरायु प्रदाह (Metritis)

यह दो प्रकारका है—(तरुण) नया और (पुरातन) पुराना ।

तरुण जरायु प्रदाह ।—प्रसव या गर्भस्रावका रक्त दूषित होनेसे सघराचर तरुण जरायु प्रदाह हो जाता है बहुत ज्यादा मासूम होना प्रसव ऊपर और पीछे दर्द होना इसके प्रधान लक्षण है । ये लक्षण दिखाई देते ही “मेराइम भिरिड १५” देना चाहिये । फिर “नक्सममिका १० भी आवश्यक हो सकता है । वेलेडोना ६, कलोसिन्य ६, रास-टक्स ६ वा सैकेसिस ६ भी समय समय पर उपयोगी होकर लाभ दिखा सकता है, यह रोग बढ़ाही आर्थकात्मक है, इसी लिये उपयुक्त चिकित्सक पर निर्भर रहना चाहिये । यदि रक्त दूषित न हो तो मयका कोई कारण नहीं है । २।१ मात्रा एकोनाष्ट १५ देनेही से रोग हट आवेगा ।

पुरातन जरायु प्रदाह ।—प्रसवके बाद जरायु संकुचित

न होनेपर अथवा कृत्रिम सपायसे गर्भसंचार न होनेपर या बहुत दिनोंतक हरित पीछा भोगनेपर, जरायु क्रमशः वेदनायुक्त, कड़ा और बड़ा हो जाता है । इसीको पुराना जरायु प्रदाह कहते हैं । पेटमें भार मालूम होना, बाधक वेदना स्तन या कमरमें दर्द पश्चिमे रजःस्राव पीछे रोध स्वामी संसर्गमें दर्द, सूत्रस्थली और मलद्वारमें बेग, छिष्टिरिया इत्यादि इस रोगके प्रधान लक्षण हैं ।

**चिकित्सा ।—सैबाचना १५ ।—**धैरी मात्रामें रक्त-स्राव होनेसे, रक्तस्राव परिष्कार स्निग्ध, चटचटा या जलीय होने पर ।

**वैलेडोना १५ ।—**प्रकृत जरायु प्रदाहमें, डाक्टर मैथिसन एकमात्र वैलेडोनाके ऊपरही निर्भर रहनेके लिये कहते हैं । विशेषतः “जरायु प्रदेशमें जलन या दाब मालूम होना, मानो पेटके भीतरों यन्त्र बाहर निकल पड़ेंगे” इन लक्षणोंमें वैलेडोना उपयोगी है ।

**सिपिया १२ ।—**प्रसवकी दर्दकी भांति दर्द, थोड़ा रजः-स्राव, प्रसवद्वारमें सुजली ।

**हाइड्राटिस १ ।—**जरायु ग्रीवा, जरायु मुख और अपत्य पथका घाव, गाढ़े पीले रंगका प्रदर स्राव ।

**अरम्भ मेटालिकम १०, पल्लेटिका १, मियूरफ १, सैकेसिस**

६. सिमिसिफियुगा ६, सल्फर १०, लवणकी अनुसार समय समय पर आवश्यक हो सकता है ।

**नियम ।**—स्त्रीजननेन्द्रिय गर्म जलसे रोज दो तीन बार अच्छी तरह धो देना चाहिये । जरायु सुखमें बाव रहने पर बीस भाग जलके साथ १ भाग हार्श्वैटिस ० मिलाकर धो डालना अच्छा है । जबतक रोग न हटे, तबतक स्नायी संसर्ग करना या कमरमें कसकर कपड़ा पहिरना उचित नहीं है । रोज समय पर स्नान, पुष्टिकर पदार्थ भोजन और नियमित परिव्रम आदि करना उचित है ।

(घ) जरायुकी बीचमें वायु, जल या रक्तसंचय ।

प्रदाह इत्यादि कारणोंसे जरायुकी बीचमें वायु जम्बता है और जरायुके ऊपर दाब पड़नेसे वायु फस फस बन्द करता हुआ बाहर निकलता है । इसीको जरायुकी बीचमें वायु संचय (Physometra) कहते हैं वेसेडोना १५ और कार्बो-पोडियम १२ इस रोगके औषध हैं ।

प्रवाह या क्षत आदि सूखकार किसी किसी स्त्रीके जरायुका सुख बन्द हो जाता किसीका जरायु सुख जम्बसे ही बन्द रहता है । जरायुका सुख बन्द हो खानसे जरायु कमजोर बढ़ता जाता है और उसकी आवरण झिल्लीसे जल या रक्त निकलकर जरायुमें 'संचय' (Hydrometra) या 'रक्त संचय

अधिक हिलडोलके घूमना निषेध है, होमियोपैथिक दवासे ही रोग चला जाता है तथापि कोई कोई होमियोपैथिक औषधके साथ नीचे लिखे कौशलसे जरायुको ठीक स्थानपर बैठा देते हैं।—

रोगिणीको अर्धशयनावस्थामें रखकर उसके सर, कलेजेकी ओर खींचकर चिकित्सक अपनी अंगुलियोंसे थोड़ा दबाकर हथेलीसे जरायुको धीरे धीरे ऊपर उठा देते हैं। जरायु स्थानपर आनानेसे 'पेसारी' \* (Pessary) व्यवहार करनेकी कइसे।

## (२) डिम्बकोषकी व्याधि ।

### ( Diseases of the Ovaries )

डिम्बकोषके रोगोंमें नीचे लिखे तीन रोगका विवरण यथाक्रमसे लिखा जाता है —(क) डिम्बकोष प्रदाह, (ख) डिम्बकोषका शोथ, (ग) डिम्बकोषकी स्रायु-शूल ।

### (क) डिम्बकोष प्रदाह (Ovaritis) .

यह रोग दो प्रकार नया और पुराना । घोट लगना,

\* पेसारी एक प्रकारका बल है । इसी कारण जर्मनी तथा फ्रांसमें न बट कर ठीक स्थानपर ही रहता है ।

प्रयत्न बमनेच्छा, अतुकासमें ठंड लग कर या संगम हेतुसे रजोरोध ० होना आदि कारणोंसे “डिम्बकोषमें नया प्रदाह” होता है । रोग अल्पी आराम न होनेसे “डिम्बकोषमें पुराना प्रदाह” होता है । अक्सर येश्वा और कामुकी स्त्रियोंके डिम्बकोषमें प्रदाह होता है । पेटके कुछ ऊपर पेटके खूब भीतरमें दर्द, कनकनाहट, दबाने या छिलनेसे दर्दका बढ़ना, छ्वर, धमन, बमनेच्छा आदि इस रोगके प्रधान लक्षण है ।

तृण प्रदाहकी चिकित्सा एकोनाइट १५ ।—ठण्ड लगकर अतु बन्द हो प्रदाह होना, पेशाबमें कष्ट ।

एपिस ६ ।—दहिने डिम्बकोषमें प्रदाह, छई गड़ानेकी भांति दर्द, पेशाब कम, प्यास नहीं ।

सीकेसिस ६ ।—बायें तरफके डिम्बकोषमें प्रदाह, पीप, जरायुमें असह्य दाब ।

दूसरे दूसरे औषध —वेनिडोना १५ ।—( खाँसकर छई गड़ानेकी तरह दर्दमें ) मार्ककर ६, पलसेटिला ६, हैमा-मेसिस ३, कसोसिन ६, लक्षणके अनुसार सगय समय पर दिया जाता है ।

जाय, वमन, पेट फूलना, हृदयस्पन्दन, पेशाब कम होना इसका खास लक्षण है ।

**चिकित्सा ।**—म्याजा ६ । इस रोगकी एक उत्कृष्ट औषध है । सिर्फ इसीके उपर निर्भर कर बहुतेरे रोगी आराम हुए हैं ।

शूलकी दर्द उठने पर एडोपिया ३x चूर्ण और आराम होने पर जिङ्कम भैलेरियानम् ३x चूर्ण देकर डाक्टर खड्गाम की कई जगह सफल मिला है । ट्राफिसायिया ६ मानसिक उत्तेजनाजनित दर्दमें उपयोगी है ।

यदि दर्द स्नायविक या प्रदाहजनित मालूम न हो तो हैमामेसिस ६ या कलोसिन्य ६ देना चाहिये ।

स्वामी सहवास और मानसिक उत्तेजना निषिद्ध है ।

## (४) योनिरोग समूह ।

( Diseases of the Vagina )

योनीरोगोंमें नीचे लिखे रोगोंके बारेमें लिखा जायेगा ।

- ( क ) योनिप्रदाह, ( ख ) योनि पाक्षिप, ( ग ) योनिभ्रम, ( घ ) योनिमें सुजली

## (क) योनिप्रदाह ( Vaginitis )

योनिमाला, रंग, गरम, फूली और दर्द होती हो तथा योनिसे पीप निकले और पिशाबकी वजह जलन, योनिमें खुजली होती योनि प्रदाह रोगका होना समझना होगा । प्रमेह का पीप लगना, अतिरिक्त संगम, बलात्कार, प्रसव कालमें आघात रक्त दूषित होना, योनिमें क्लिष्ट प्रवेश, ठंड लगना आदि कारणोंसे योनि प्रदाह रोग होता है । इस रोग में प्रायः माइवारी बन्द नहीं होती । यह रोग दो प्रकार,— नया और पुराना ।

नया योनि प्रदाह ।—शीतले छ्वर, कमर, खंघा और घुटनों में भारापन और दर्द, योनिसे कफ निकलना, मूत्र रुकना आदि नये योनि प्रदाहके लक्षण हैं ।

चिकित्सा ।—ठंड लगकर प्रदाह होनेसे पहिले ऐकोनाइट ३× फिर मार्कुरियम् ३ उपकारी है । प्रमेह के प्रदाहमें सियिया १२ और आघातके प्रदाहमें अर्णिका ३ देना चाहिये । पिशाबमें जलन अधिक होनेसे कैन्थारिस ४ देना ।

रोगिणी ४।५ दिन बिछीने परसे अलग न हो इसका स्थान रचना ।

पुराना योनि-प्रदाह ।—योनिमें भीतरी कफ, निकासने वाली भित्तीमें नीचे आमाशुक्त साखरगकी फुसरी पैदा होना



योनि ढीली हो जाना, तथा योनिसे सफेद पीला, आदि कई प्रकारके रंगका अधिक पीप निकलना पुराने प्रदाहके यह प्रधान लक्षण है ।

**चिकित्सा ।**—मार्कुरियस् ३ और सिपिया २ चूर्ण, डाक्टर जुसोंके मतसे यही दो दवा पुराने प्रदाहकी प्रधान औषध है ।

बोराक २५ चूर्ण पीप बहुत निकलने पर देना चाहिये ।

नैट्रिक ऐसिड ६ ।—पीप जलन, घाव और फोडिया रहने पर देना चाहिये ।

कैल्केरिया ६, पलसेटिसा ६, क्रियोनोट ६ और सल्फर २० बीच बीचमें देनेकी जरूरत पड़ती है ।

### (ख) योनिका आक्षेप (Vaginismus).

किसी किसी नौ जवान स्त्री की योनिद्वार छोटा होनेके कारण तथा उसके आवरण झिल्ली (Hymen) का अनुभव शक्ति अधिक (Hyperaesthesia), रहनेसे योनिके चारों तरफ पेशियां एकाएक सिंझुड़ जाती हैं, इसी को योनिका आक्षेप कहते हैं । संगमके समय पुरुष इन्द्रिय योनिमें प्रवेश नहीं होता, और पेशीमें आक्षेप होनेके साथही बड़ी दर्द होने लगती है और यहां तककी, किसी किसी रोगिनीको पेशीयों तक आ जाती है ।

विवाहके बाद बहुतोंरी यह समस्या जाना नहीं चाहती ।

क्यों जाना नहीं चाहती अभिभावकोंको इसका खोज करना चाहिये ।

**चिकित्सा ।**—सिलिका & मक्सभक्तिका & और बेले डोना & इस रोगका प्रधान औषध है । शरीरमें शीसेका विष (Led Poison) प्रवेश होनेके बादिय में ग्राय्माम & उपकारी है ।

बड़ी नाद या टबमें गरम पानी रख रोगिणी को कमर तक घोड़ी देर बुनो रखनेसे फायदा मानस होता है । रोग अच्छी तरह से नहीं हटने से संगम उपकारी है ।

( ग ) अवरुद्ध गोनी ।

योनिमुख रोध अथवा कुमारी भिल्ली (Hymen) कठिन या बिना छिद्रकी रहनेको अवरुद्ध योनि कहते हैं ।

( १ ) योनिमुख का भीतरी भाग बन्द होने या कुमारी भिल्ली कठिन रहने से कृतु होनेमें कोई बाधा न होती केवल योनिमें पुरुष इन्द्रिय प्रवेश नहीं हो सकता । गरज पुरुष संगमन होने तक स्त्री को इस रोगका होना मानस तक नहीं होता और न किसी प्रकारका कष्ट होता है ।

**चिकित्सा ।**—अंगुली या पुरुष इन्द्रिय के दबाव से ठकना तुरत फट जाता है । यदि दबाव से ठकना न फटे तब नक्षर से फासना चाहिये ।

( २ ) यदि कुमारी भिल्लीमें छेदन हो तो रज भी नहीं निकलता । इसे ठीक समयमें चिकित्सा करना चाहिये ।

चिकित्सा ।—सलाका (Probe) से छेद करने पर रजः निकलता है । किन्तु संगम की अनुरत होने पर काटनाही अच्छा है ।

### (घ) योनिश्च श (Prolapsus Vaginae).

जरायु के स्थानान्तरित के साथ साथ योनि भी कभी कभी निकल आती है इसी को “योनिश्च श” कहते हैं । मल भाँड़में कठिन मसला जसा होना या मूत्राधार फूल जाने अथवा कष्टदायक प्रसव दर्द के बाद भी योनिवाह्वर निकल आती है । पेडूका भारी मालूम होना चलने में कष्ट होना और मलभाण्डका फूलना इस रोगका प्रधान लक्षण है ।

चिकित्सा ।—टैनाम ६ और क्रियोकोट ६ इस रोगका प्रधान औषध है ।

चौड़े दिन तक बैठकर तकिये के सहारे सोना चाहिये । १०।१५ मिनट अन्तर पर चौड़े पानी में बैठने से योनि सहजमें अपने जगह चली जाती है ।

### ( ङ ) योनिमें खुजली ।

( Pruritis Vulvae )

शरीर दुर्गन्ध हो जानेसे योनि भी माना प्रकार फुसरी पैदा होकर भयानक खुजली होती है ; इसीको “योनिकी खजली” कहते हैं ।

**चिकित्सा।**—सल्फर ३० । जलनके साथ खुजली फुसरी, गरम मांजूम होना और चर्शमें दिया जाता है ।

**डल्लिक्स ६।**—भयानक खुजली रातकी घटना । उदर रोग सफेद मल में उपकारी है ।

**आर्सेनिक ३०।**—जब भरी फुसरी ससने लगे तब देना ।

**कैलाखियम ६, मार्कुरियस ६, साइकोपोडियम १२, कार्बो मेजी ३०, नेद्रम मियुर ३०, नक्स मोमिका ६, सिपिया १२, पेद्रोलियम ६, समय समय पर जरूरत पड़ती है ।**

**सहकारी उपाय।**—आक्रान्तस्थान सर्वदा साफ रखना चाहिये । कैलेण्ड्रुल्ला ० एक भाग जिस हिस्से पानीमें मिश्राकर रोज २।३ दफे योनि धोना चाहिये । योनिमें काटेकी भांति केश पैदा हुए हो तो उसे साफकर दवा खगाना चाहिये ।

## (५) कामोन्माद ।

( Nymphomania )

यदि कोई युवती स्त्री संम इच्छाकी चगने काबूमें न रखकर किसी दूसरे पुरुषसे अपनी इच्छा पूरी करनेमें कुण्ठित न हो तो उसे “कामोन्माद” रोग हुआ है समझना होगा । योनिमें छोटे, छोटे कीड़ोंके तरह एक प्रकार कीटाण पैदा होनेसे स्त्री जननेन्द्रियमें ( Irritation ) तेजी आती है । इसी तेजीसे क्रमशः रोगिणी कामान्ध होजाती है ।

**चिकित्सा ।**—हाइयोसाइमस ६ । प्रलाप और निर्लक्षताके साथ प्रबल सगम इच्छामें ।

**प्राटिना ६ ।**—स्त्री जननेन्द्रिय अत्यन्त सुरसुराइट सिये कामोन्मादमें ।

**कोका ० ।**—ऋतुकाय या प्रसवके बाद कामोन्माद होनेसे । अरिगेमम भालगारिस ० इसको एक उत्साह औषध है ।

**नियम ।**—सवेरे उठना, रोज ठंडे पानीसे स्नान और हवामें टहलना उचित है । नाटक किस्सा पठना और उत्तेजक पान आहार बन्द रखना ।

### (६) वन्ध्यात्व (Sterility)

स्त्रियोंको सन्तान पैदा करनेकी शक्ति न होना इसे “वन्ध्यात्व” है । स्त्री जननेन्द्रिय अर्थात् अरायु डिम्बकोष और योनिमें ऊपर लिखे रोगोंमें से कोई एक भी रहनेसे सन्तान नहीं होती उपयुक्त चिकित्साके फलसे यह रोग आराम होनेसे वन्ध्यात्व दूर होता है । तथा पुरुषके दोषसे या स्त्री जननेन्द्रिय पुष्ट न रहनेसे भी स्त्रियोंको वन्ध्या बनना पड़ता है, इस अवस्थामें उसको औषध खिलाना ठीक है ।

किन्तु ऊपर लिखे कारणोंके न रहने भी यदि किसी स्त्रीको पुत्रका सुख देखनेसे वंचित होना पड़े तब नीचे लिखी दवायें देनी चाहिये ।

**चिकित्सा ।—**कोनायम ३ ।—खासकर डिम्बकोषके पहरावीसे द्रुये वन्ध्यात्वमें तथा थोड़ा रजका आना और दोनोंमें दर्द रहनेसे ।

बोराका ६ ।—तीव्र श्वेतप्रदर संयुक्त वन्ध्यात्वमें ।

आयोडित ६, सिपिया ३०, भरस ३०, फस्फोरस ३०, कैफाम मिचर ३० कभी कभी जरूरत पड़ती है ।

**नियम ।** दीर्घकाल व्यवधान पर संगम होना चाहिये । यदि पुरुषके दोषसे सन्तान न होय तो पुरुषको कोनायाम ३ या आयोडियम ६ पिशाना चाहिये ।

## ( ७ ) स्तनका रोग ।

( Diseases of the Breast )

**स्तनमें दर्द ( Pain ) ।—**

कोनायाम ३ ।—जटुके स्तनमें दर्द रहनेसे ।

मैग्नेशियम ३५ ।—दहिने स्तनमें इतना दर्द जो हाथ तक नहीं चठ सके ।

सिमिसिफिउगा ३५ ।—बायें स्तनमें मयाभक्त दर्द ।

## (ख) स्तनमें स्फोटक (Abscess)

वेसेडोना ३५ ।—थोड़ा होनेका उपक्रम स्तन कड़ा, साठ और गरम ।

ब्रायोनिया ३५ ।—विसेडोना लक्षणसे अधिक कडाँ च  
स्तनमें भयानक दर्द ।

फाइटोलैका २५ ।—यदि दो दिन ब्रायोनिया फायदा  
हो तो इसे देना ।

हिपार सल्फर ३५ । पीप होने पर ।

सिलिका ३० ।—फोछाके बाद मासूर (Simp8) होनेपर

### (ग) स्तनमें अर्बुद ( Tumour )

फाइटोलैका ३५ ।—पुराने अर्बुद रोगकी बढ़िया दवा है  
बाह्य प्रयोग ।—फाइटोलैका एक भाग बौस गुने पानीमें  
मिलाकर स्तनके उपर पट्टे रखना ।

### (स्तनमें दूषित अर्बुद ( Cancer ).

हाइड्रैटिस १५ ।—यह दूषित अर्बुद बढ़िया दवा है ।  
बाह्य प्रयोग ।—हाइड्रैटिस ० एक ड्राम, चार चौंस  
पानीमें मिलाकर घोंगा चाहिये ।

कनायस ३ या साइकिउटा ३ ।—लगातार दो महीने  
आसेनिक खातेसे फायदा न होने पर इसे देना चाहिये ।

स्तन प्रदाह या टुनका देखो ।

### (घ) मेरुदण्डका उपदाह ।

( Spinal Irritation )

शरीर धीन होनेसे मेरुदण्डके स्थानमें विद्येपमें निबन्ध दर्द

होते हैं । इसीको मिरदण्डका उपदाह कहते हैं । दर्द होनेवालास्थान दवानेसे दर्द बढ़ना यही इसका प्रधान लक्षण है ।

घार्मिका ३ ।—आघात जनित उपदाह सिमिसिफिउगा ३ ।—जरायुके किसी रोगके साथ उपदाह ।

रस टक्क ४ ।—आमवातके साथके उपदाहमें ।

आर्सेनिक ६ ।—स्त्रायुशूलके साथके उपदाह में ।

नियम । सुसुप्त गर्भ पानीसे पीप धोना और साफ इवानें टहलना उपकारी है ।

( ६ ) पिकचक्षु-अस्थि प्रदेशमें दर्द ।

( *Coccygodynia* )

पिक चक्षु इच्छी \* को पीगी और विधान तन्तुमें कभी स्त्रायुशूल ( *Neuralgia* ) के तरह तेज दर्द मासूम होता है, इसीका नाम पिकचक्षु अस्थि प्रदेशका दर्द कहते हैं । उठने, बैठने, अलसत्याग कृत और संगम कालमें दर्द होना यही इसका प्रधान लक्षण है । थोटा वगैरह लगनेसे यह रोग पैदा होता है ।

चिकित्सा ।—थोटा आदि लगनेसे कुछ दर्दमें—  
घार्मिका ३ या रुटा ३५ उपकारी है ।

\* मिरदण्ड आघातजनित "पिकचक्षु अस्थि प्रदेशमें दर्द" ।



यदि दर्द चोटसे न हो तो फसफोरस & या लैकेसिस & देना चाहिये । यदि उपवेशनावस्थासे उठकर खड़ा होने पर दर्द हो तो लैकेसिस विशेष उपकारी है ।

## गर्भिणी रोग ।

### गर्भ संचार ।

गर्भ लक्षण ।—अतृप्त बन्ध होना, अरुचि, जी मचलाना, स्तनके ऊपरका हिस्सा कासा होना, पेडू और दोनों स्तनोंका बढ़ना आदि गर्भके लक्षण है । किन्तु बहुतेरे रोगमें यह सब लक्षण दिखाई देते हैं इससे उपर लिखे लक्षणोंके साथ यदि दोसे पांच महीनेमें पेडूमें बालकका हिलना डोलना मान्य हो तो गर्भका रहना स्थिर जानना । अर्थात् मनुष्यके छातीमें कान लगानेसे जैसे धुक् धुक् शब्द सुनाई देता है गर्भिणीके पेडूमें कान लगानेसे बालकके छातीका धुक् धक् सुनाई देनेसे गर्भके सम्बन्धमें और कोई सन्देह नहीं रहता ।

गर्भकाल ।—२८० दिन (गर्भ संचार से प्रसव दिन तक) ।

गर्भावस्थामें निषम पालन ।—नीचे लिखी स्वास्थ्यविधि पर विशेष ध्यान रखना चाहिये नहीं तो प्रसूती और गर्भस्थ बालक दोनोंके अभिष्टकी सम्भावना है ।

(क) आहार ।—गर्भावस्थामें देरसे हजम होनेवाले

पदार्थ खाना अधिक भोजन या उपवास अपकारी है । दूध, डाल, फरसी, चिवड़ा पूरी आदि पुष्टिकर और हस्तका भोजन करना चाहिये । सोघा मिठ्ठीके बरतनका टूकड़ा अपचार खराब घीका बनाया पदार्थ खाना मना है । जो सब द्रव्य खानेसे अजीर्ण होनेकी सम्भावना हो उसे विष भांति देखना, कारण अजीर्णके दस्तके साथ गर्भका बाहक भी निकल सकता है । गर्भावस्थामें नाना प्रकारके वस्तुकी खाने की इच्छा होती है, जिस द्रव्यके खानेसे गर्भस्थ शिशुके खराबीका डर न हो वैसा पदार्थ अवश्य खानेके को देना चाहिये ।

(ख) पोशाक ।—कपड़ा ढीला पहिरना चाहिये, कारण कमर को खूब कस कर कपड़ा पहिरने से वातक विकस्रांय या भराडुआ बेवक्त पैदा होता है । तथा भींगा और मैला कपड़ा भी पहिरना अच्छा नहीं है ।

(ग) मेहनत ।—रोज साफ हवामें टहलना और नियमित परिश्रम करना उचित है । अधिक परिश्रम करने से गर्भपात होता है और बिलकुल आलसीके भांति बैठे रहने से प्रसवके समय प्रसूतीकी कष्ट और बाहक निस्तेज होता है । गर्भावस्थामें ( खासकर प्रथम तीन महीने में ) गाड़ी, पासकी, किशो या रेलकी सवारी करना, दांड़ना, भारी चीज उठाना, कूदकर या एक पैरसे चलना खासी सहवास

आदि मना है कारण इस से गर्भपात होनेका खतर है । गर्भावस्थाके दश महीने एक जगह रहना चाहिये ।

(घ) मन ।—मन सर्व्वदा निरुद्ध और प्रसन्न रखना चाहिये । माताके मनका भाव गर्भस्थ शिशुके मनके ऊपर काम करता है, गर्भावस्थामें नारीका मन भयान्त रहनेसे भावी सन्तानभीतरपोक होती है । गर्भिणीका मन छटास होनेसे—विषण्ण स्वभाव लिये पैदा होती है । ( इस अध्यायमें पहिले गर्भावस्था और पीछे प्रसवावस्था के बारेमें लिखा जायगा ) ।

गर्भावस्थामें गर्भिणीको बड़ी सावधानीसे रखना चाहिये । गर्भ संचारसे प्रसवकाल तक साधारणतः नाना प्रकारके उपसर्ग होते हैं और उससे गर्भिणीको अतिशय कष्ट भोगना पड़ता है । नीचे प्रधान उपसर्गके विषयमें लिखा जाता है ।

मूर्च्छा ।—मूर्च्छा होते ही सुख पर ठ ठा पानीका छीटा देना और मस्कस ० या स्प्रिट कैम्फर सू घाना चाहिये । मूर्च्छा छूट जाने पर नीचे लिखी दवाये दी जाती है । रस रत्नादि घयसे हुई मूर्च्छामें चायन ६, १०, खर जानेसे हुई मूर्च्छामें—ओपियम ६, जोकि दुष्सादिजनित मूर्च्छामें—इग्नेशिया ६, हृत्पिण्डकी क्रिया घीणकी मूर्च्छामें—डिजिटैलिस ६, आयविक दुर्बलता के कारणकी मूर्च्छामें—ऐमिड फस् ६ ।

गिरका भारी पन और घूमना ।—रक्षाधिक्य से हुए माथा घूमने और आंखके सामने काला काळा दाग दिखाई देनेसे ऐकोनाइट ६ । दप्-दप् गिर-पीठा, आंख और मुख मंडल नालरंग तथा काममें भी भी शब्द होनेके लक्षणमें वेलोडीना ३ । मार्गमें रह-रह कर दमक और दर्दमें नक्कममिका २० । जदरत होनेपर “गिर-पीठा” चिकित्साकी दवाओंसे चुनकर प्रयोग करना चाहिये ।

दातमे दर्द ।—दांतके दर्दके साथ बुखार होतो ऐकोनाइट ६ । स्नायविका उत्तेजना या भ्रूणार्थ दोपके दस्त शूलमें कैलकेरिया-फ्लोरेटा ६, माकियूरियास ६ नक्कममिका २०, कैमोमिला १२, आयिडम क्रुड ३ और क्रियोजिट १२ लक्षणानुसार प्रयोग करना चाहिये । “दस्तशूल” देखिये ।

शोथ ।—गर्भावस्थामें रक्त संचालन क्रियामें बाधा होनेसे पैर, अघा और स्त्री-जननेन्द्रियमें शोथ होता है । प्रसेनिक २०, चायना ५, एपिस ६ और फेरस २० लक्षणानुसार देना चाहिये । “शोथरोग” देखिये ।

वमन और वमनेच्छा ।—गर्भावस्थामें वमन, वमनेच्छा और सुइसे घामी जाना यह तीनों उपसर्ग प्रायः प्रातःकालको बढ़ता है । थोड़ेदिन इसी तरह होता रहता है फिर आपसी आप बन्द हो जाता है । यदि सद्यजमें

बन्द न होनेसे लक्षणके अनुसार मोचे लिखी दवायें देना चाहिये ।

लगातार वमन या जौ मत लाकर पित्त या कफका वमन और पेटकी विमारी होनेका खर अथवा पतला दस्त आनेसे इपिकाक ६ । पाकस्थलीमें दर्द, कजियत, डकार आना, सुहसे पानी गिरना, हिचकौ, सुबरे खानेके पछिले या बाद के होनेसे नक्कभमिका ३०, क्रियोजोट ६, सिपिया ३०, कौ कभी कभी जरूरत पड़ती है ।

सुखसे पानी गिरना ।—अधिक भोजन करनेसे सुखसे पानी गिरना है खट्टा या खाये हुये भोजनके स्वादका डकार आती है । नीचे लिखी दवायें देनी चाहिये । मार्कुरियस ६ प्रधान औषध है । खट्टो डकार, एकाएकी डकारके साथ साथ कहुधा पतला पदार्थ गलेतक आकर फिर नीचे चल जाना, अरुचि, छातीमें जलन, कजियत तथा बराबर सुखसे पानी गिरने पर नक्कभमिका ३० । पेट फूलना या पेटका झकड़ जाना, पाकस्थलीमें जलन और खट्टो डकारके साथ सुहमें पानी आनेमें कार्वोमेज ३० । लगातार खट्टो डकारके साथ पानी आनेसे कैलकेरिया कार्व ३० ।

ऐ ठन ।—४।५ महीनेके समय गर्मिणीके पेर, अंधा, पेट पीट और कमरमें ऐ ठन आभीकभी होती है । जरूरत पड़ने पर नीचे लिखी दवायें छटी शक्तिकी प्रयोग करना चाहिये । पेर और अंधेमें ऐठन होनेसे आमोमिखा और उसीके साथ

धिरमें दर्द, अग्निमान्द्य या वमनेच्छा रहे तो नक्सभमिका, ब्रायोनिया और सिपिया, उदरामय हो तो, आइरिस और मिराद्रम । कमर और पेटमें ऐठना होनेसे कस्तोरिन, किउ ग्राम, नक्सभमिका, साथही पेट फूला रहे तो साइको पोष्टियम ।

कक्षियत ।—कस्तिन सीनिया २४ इसकी प्रधान दवा है । दूसरी दवायें —नक्सभमिका १०, ब्रायोनिया ६, ससफर ३०, ओपियम ३०, ग्लान्बम ६ । कोष्ठबन्ध रोग देखिये ।

उदरामय । माकियुरास ससफर ६ चायना ६, एसिड-फस ६ ससफर ३० और पोडोफाइलन ६ ।

छातीकी जलन ।—पन्सेटिला ६ और कैपसिकाम ६, इस दुःखदायी पोगकी प्रधान औषध है । अन्तर्पित्त रोगसे हुये छातीके जलनमें काल्केरिया कार्व ६ ।

अनिद्रा ( नींद न आना ) ।—कफिटा ६ इसकी प्रधान दवा है पहिली रातको नींद आना और पिछली रातको नींद न आनेसे ससमर ३० । अनिद्राके साथ छ्वर भी आता हो तो एकोनाइट ६ । पैरकी खैचन या दर्दके समय नींद न आनेसे कैमोमिला ६ या मिराद्रम ६ ।

रुचिविकार ।—सोधीमिड्रीया ठिकरा आदि खानेकी इच्छा अधिक होनेसे कार्वोमिन ६ । सफेद मिट्टी खानेकी इच्छा होनेसे कैलकेरिया कार्व ६ ।

छातीकी घड़कन ।—डिजिटैलिस ६ प्रधान औषध है ।  
अजीर्णसे छाती घड़ घड़ करे तो नक्सभमिका ६ ।

अर्थ ।—किसी किसी गर्भिणीको वावासीर उभड़ आती है । नक्सभमिका ६ इसकी उत्कृष्ट दवा है । वावासीरके साथ कजियत रहनेसे कलिनसोनिया ३५ देना चाहिये ।

खांसी ।—गर्भिणीको कभी कभी सूखी खांसीका कष्ट होता है । एकोनाइट ३ और नक्सभमिका ६ इस रोगका प्रधान औषध है । “आसयन्त्र रोग” देखिये ।

पिशाबकी तकलीफ ।—खिरिट कैम्फर प्रधान औषध है । एकोनाइट ३, विलेडोना ६, एपिस ६, आर्सेनिक ६, और कैथारिस ६ जरूरत पर देना चाहिये ।

शिरायोंका फूलना ।—जंघा आदिकी शिरायें फूलकर कभी कभी बड़ी दर्द होती है । हैमामेलिस ३५ इसकी अक्षीर दवा है । हैमामेलिस ० तीन गुने पानीमें मिछा उसमें कपड़ा भिंगोकर फूले हुए स्थान पर पट्टी रखनेसे दर्द, खून जाना कम होता होता है ।

रजका निकलना ।—गर्भावस्थामें भी कभी कभी ऋतु होता है । ककि उजस ६ । और फसफोरस ६, इसकी बढ़िया दवा है ।

पेटकी कनकनाइट ।—कैसोमिला १२ या नक्सभमिका ६ एक खुराक देतेही आराम होती है । कैल्चिकार्ब ६ भी अच्छी दवा है ।

ज्वर ।—गर्भावस्थामें पड़िले कई एक महीने ज्वर -  
योद्धा रहनेसे दवा देनेकी जरूरत नहीं है । यदि ज्वर न  
कूटे तो एकोनाइट ६ देना चाहिये ।

दर्द ।—पैर या पैरके तलवोंमें एकाएकी ऐठन,  
खैचन या दर्द हो तो क्लिफाम ६ या जेससिमियम ६ देना  
उचित है ।

पावखानेके जगहमें खुजली हो तो बोरार्क ६ और ऐम्ब्रा  
६ इसकी बढ़िया दवा है । सोडागा पानीमें मिलाकर दिन-  
भरमें दो तीन बार प्ली इन्ड्रि घोना चाहिये ।

पेट बड़ा होनेके अत्यन्त कष्टमें ।—बेलेडोना ६ और मक्क-  
भमिका ६ ।

पेटमें आलसक हिलनेके कष्टमें ।—ओपियम ६ चार्चिका ६ ।

धातुकी बिमारी ।—दूधके तरह धातु बहनेसे कैलकेरिया  
६ । हलदी या पानीके तरह धातु बहनेसे सिपिया १२ ।  
धातुके बहनेसे अत्यन्त कमजोर होने पर, चायना ६ । यदि  
धातु बहते समय योनिमें सुर सुराइट हो अथवा सगम  
करनेकी खूब इच्छा हो तो, झाटिना ६ । “मोस प्रदर”  
देखो ।

स्तनमें दर्द । स्तन कड़ा, काला, भारी और दर्द हो तो  
बेलेडोना १५ । स्तन फूला, भारी किन्तु साफ न हो तो इस  
अवस्थामें ब्रायोगिया ६ ।

स्तनके दींडीमें जलन या घाव ।—चोट लगनेसे बोंडीमें



दाह हो, तो आर्निका ३ सेवन करना चाहिये और आर्निका जलमें मिलाकर, घोंना चाहिये।, थोड़ीमें घाव होनेसे हाईड्राटिस ३ सेवन करना चाहिये और हाईड्राटिस पानीमें मिलाकर लगाना चाहिये ।

स्तन बड़ा होनेसे दारुण यन्त्रणा ।—शूल, वेदनाकी तरह तकलीफ होनेसे, कोन्यायाम् ३ । दाहयुक्त यन्त्रणामें, वेले-छोना ३८ और त्रायोनिया ३ ।

मानसिक कष्ट ।—गर्भिणी सदा, उदास रहे तो, सिमि सिफिच्या ६, योकेमें चो, प्रम्मे शिया ६, उरगरे हो, एको-नाइट ३, कुछ सभाष हो, कैमोमिला १२ ।

अप्रकृत प्रसव वेदना ।—गर्भावस्थाके साथ साथ प्रसव वेदनाके बराबर जो वेदना देखी जाती है ( "प्रसवके दर्दका अप्रकृत लक्षण" देखो ) कैमोमिला ६, इसकी उत्कृष्ट औषध है । पलसेटिला ३०, सिकेलि या कल्लोफाइलम ३८ समय समय पर जरूरत होनेसे देना चाहिये ।

गर्भावस्थामें रक्त स्राव ।—(१) गर्भिणीके अधिक हसने, रोने खींचनेसे, अथवा गिरनेसे, अरायुके बीचमें घसा लगाकर फूल ( Placenta ) अरायुसे खसक जाता है और, इसमें रक्तस्राव होना प्रारंभ होता है, आर्निका ३ इसकी उत्कृष्ट औषध है ।

( २ ) उपरोक्त कारणोंके सिवाय फूल अरायुके मुखपर, टवलेकी तरह, रहनेसे, भी रक्तस्राव होने शक्य

है, उस समय रोगिणीको अत्यन्त कष्ट होता है । इस लिये अच्छे वैद्यको देख माना चाहिये यह रोग गर्भावस्थाके शेषभागमें या ठीक प्रसव कालमें होता है । ऐसे समय पर रक्तस्राव होना ही इसका विशेष लक्षण है (स्वाभाविक प्रसव वेदनासे शोषावत् पदार्थ मात्र निकलता है, कभी भी रक्तस्राव नहीं होता "प्रसवकी अवस्था" देखो) ।

**धातुदोष ।—( Diathesis, )** ।—माता पिताको कोई रोग होनेसे सन्तान पर चसर करता है । गर्भावस्थामें प्रसूतिकाको निम्न लिखित औषध पत्रके मासमें एकबार सेवन करानेसे भायी सन्तान सबल होती है —

**कैल्केरिया कार्ब १० ।**—पिता या माताको गण्डमाच्छा (Scrofula) या धातुदोष होनेपर ।

**वैसिलिनाम २०० ।**—यक्ष्मा या क्षय रोग कुचल होनेसे ।

**सोरियास १० ।**—पिता या माताको दुर्गन्धयुक्त चर्मरोग रहने ।

**सिलिका १० ।**—पिता या माताको अस्थि विकृति रोग (Rickets) होने पर ।

**वैरार्डेटा कार्ब १०, प्यारियोडियम १०, गुला १०, मार्कुरियास ३०, फेष्टिकाम १०, सिपिया १० और सलफर १०** रोगके लक्षण अनुसार प्रयोग करना चाहिये ।

## गर्भपात या गर्भस्त्राव ( Abortion ) -

गर्भ संचारसे छः मास तक गर्भस्थ शिशु पतन होनेको 'गर्भस्त्राव' कहते हैं । इस अवस्थामें लडका बच नहीं सकता ।  
 च्छी तरह उपचार न होनेसे प्रसूतक जीवन नाशकी  
 शंका रहती है अर्थात् सात महीनेके बाद और नौ महीनेके  
 हिले जो संस्तान होती है, उसको "अकाल प्रसव"  
 कहते हैं । ऐसी अकाल प्रसूत संस्तान दीर्घायु भी  
 होती है ।

कमर और पेट में दर्द होनेसे समझना होगा कि लडका  
 पेटके नीचे खसक आया है, रक्त या श्लेष्मा निकलना यह  
 गर्भपातका पूर्व लक्षण है । गर्भावस्थामें कमकर कपड़ा  
 पहिरना अधिक परिश्रम करना, गाड़ी, पालकी नौका, रेल  
 इत्यादि पर चढ़ना ( विशेष कर गर्भावस्थाके प्रथम चार मही-  
 नेमें ), दौड़ादौड़ करना गिर जाना भारी चीज उठाना,  
 अंगूठेके बल खड़ा होना, तसवीर टांगना या छटिया पर मस-  
 हरी लगाना, शरीरमें घेघकका छेना छ्वरसे, पौड़ित रहना,  
 सामी सहवास, तीव्र औषध सेवन इत्यादिसे भी जमनेमिथ्यमें  
 पैदा होती है । अतिशय भय, आशमा, शोकादि कारणसे  
 गर्भस्त्राव होता है इस लिये उपरोक्त विषयमें खूब सावधान  
 रहना चाहिये । जिसका एक मरतबे गर्भपात हुआ है  
 फिर उसको गर्भपात होनेकी संभावना रहती है, इस लिये

गर्भ संचार होतेही खूब सावधान होना चाहिये । यह रोग बड़ा कठिन होता है, इस लिये विवेचना सहित चिकित्सा करना अत्यावश्यक है ।

## गर्भपात निवारण चिकित्सा ।

स्वाबाईना ३ ।—गर्भावस्थाके प्रथम तीन महीने तक गर्भग्राव होनेका संदेह रहता है ( अर्थात् दर्द होनेसे या रक्त दिखाई देनेसे ही ) ।

सिकेंलि ३ ।—गर्भावस्थाके चतुर्थ या पञ्चम मासमें गर्भ पातकी आशंका रहती है ( अर्थात् दर्द होनेसे या रक्त दिखाई देनेसे ही ) ।

पार्निंका ३ ।—गिरना, भारी चीज उठाना, चोट खनन, इत्यादि कारणोंसे गर्भपात होनेकी आशंका है ।

कैसोमिल्ला ३ ।—क्रोधादि मानसिक उत्तेजना होनेसे गर्भपातकी संभावना होती है ।

चारचार गर्भपात निवारण चिकित्सा ।—( पूर्वमें जिस समय गर्भपात हुआ हो उसके निदान एक मास पहिले प्रति सप्ताह खूबखामुसार निम्नलिखित औषध सेवन कराना चाहिये —

जरासुके दोषसे गर्भपात होने पर ऐपिस ३, स्वाबाईना ३ वा चिकेंली ३, 'प्लून्का (Placenta) दोष होनेसे फस

फोर्स ६, भ्रूणदोष या माताको उपद्रव हुआ हो तो, मार्कुरियस ६, पिता या माताको यक्षा रोग होय तो वसिलिनाम ३० (मासमें केवल एक मात्रा) ।

### गर्भस्त्राव होनेके बाद चिकित्सा ।

चायना ६ (विशेषतः यदि कई सप्ताह तक रक्तादि बहता हो और रोगिणी अत्यन्त दुर्बल हो), फूल गिरनेमें देर होनेसे पलसेटिना ३० या सिकेलि २०० सेवन कराना चाहिये ।

**आनुषङ्गिक चिकित्सा ।**—गर्भकालमें, कमरमें तथा जरायुमें दर्द मालूम होते हुए यदि श्लेष्मा या रक्तवहना शुरू हो तो, गर्भवतीके चिरकें नीचे तकिया न देकर चित्त सोलाना चाहिये और (रक्त बन्द करनेके लिये) उसके पेट पर और योनिमें खर्पाका टुकड़ा या ठंडी जलपट्टी रख देनी चाहिये । गर्भवतीके शारीरिक तथा मानसिक कष्ट पर विशेष ध्यान देना चाहिये । उसके सोनेका घर शीतल तथा साफ होना चाहिये और वहां पर किसी प्रकारका गोल माल न हो । बहुत देरतक चित्त सोनेसे यदि कष्ट मानूम हो तो गर्भवतीको कुछ तकियाके सहारे बैठा सकते हैं । सुधा लगनेसे लघु पण्य देना चाहिये ।

प्रतनी खबरदारी खेमे पर भी यदि गर्भपात हो तो गर्भसे भ्रूण और फूल सय निकल जाय यह काम उपयुक्त धात्रि द्वारा करना चाहिये, नहीं तो

सूतिकादि रोग उत्पन्न होनेसे गर्भवतीका प्राणतक आ सकती है। फूल गिरनेमें देरी हो तो, पल्लसेटिमा १० या सिकेलि ३० देगा चाहिये और जो शुष्क रोज रमादि सहता रहे तो चायना ६ देना चाहिये।

### प्रसवायस्थाके उपसर्ग ।

प्रसवकाल ।—पहिलेही कहा है कि गर्भ संस्कारके दिनसे प्राय २८० दिनमें (अर्थात् दसवें महीनेमें) सन्तान होती है। जो महीने तक गर्भिणीका पेट बढ़ता है। उसके बाद (अर्थात् प्रसव होनेके दस दिन पहिले) पैरू भूलने लगता है, कमर भारी होती है, अनेकवार पेशाब होता है और कमरके नीचेवाली हड्डोमें वेदना उपस्थित होती है। ये सब लक्षण दिखाई देनेसे सूतिका गृहका बन्दोबस्त करना चाहिये।

सूतिका गृह ।—घरमें जो सबसे उत्तम घर हो—अर्थात् जो घर बड़ा साफ खुलासेदार, दुर्गन्ध रहित, हवादार और जिसमें शीस न आवे या धूँआं न जमें ऐसेही घरको सुतीकागृह चुनना चाहिये। सूतिका गृहके दोष भाता या सन्तानके प्राणघातक होते हैं।

प्रसव वेदना ।—जगत्प्रकाशकारका परिवर्तन होना, जो अननेन्द्रिय आर्द्र होना और मसौका ठीला पड़ना, मान

सिक चिन्ता होना इत्यादि प्रसवके होनेके पूर्व लक्षण है । फिर जब बारबार दस्त और पिशाच करनेकी इच्छा हो, वमन हो, वमन होनेसे शरीरकापे, जल निकले ( अर्थात् योनिसे फेनके तरङ्ग-शेयादि बहने लगे ) तथा कमरसे दर्द शुरू होकर पेटके तरफ आकर सिक जाय तो प्रसव वेदना जानना चाहिये । अनेक समय प्रसव वेदनाका निर्णय करना कठिन हो जाता है, इसके प्रकृत और अप्रकृत लक्षण २ लक्षण नीचे दिये गये हैं ।

### प्रकृत लक्षण ।

- १ ।—पीठ, कमर, (कभी नचे तक दर्द हो) ।
- २ ।—हर वक्त दर्द नियमित रूपसे (जैसे प्रति पन्द्रह, बीस, तीस मिनट अन्तरके क्रमसे) आती और जाती हो ।
- ३ ।—हर वक्त दर्दके साथ जरायु सुख थोड़ा थोड़ा फैलता आय और जल बहता रहे ।

### अप्रकृत लक्षण ।

- १ ।—केवल पेटमें दर्द (चेठन या गुड़ गुड़ करना) बनी रहें ।
- २ ।—दर्द उठनेका कोई नियम नहीं जैसा, कभी दस मिनट और कभी पांच मिनटके बाद दर्द होती हो और कभी दर्द अविरामभावसे होती रहे ।
- ३ ।—दर्दसे न जरायु सुख फैलता है और न पानी बहता है ।

प्रसव वेदना जैसे जैसे बढ़ती जाय प्रसवकाल निकट आनकर घाँसीको बुलाना चाहिये ।

प्रसवको तीन अवस्था ।—प्रसवदर्द के आरम्भसे ६ घण्टामें बाधक होता है और बाधकका मस्तक पहिले निकलनेसे “स्वाभाविक प्रसव कहा जाता है । \* स्वाभाविक प्रसवको तीन अवस्था है ( Stages ) —

प्रथम अवस्था — प्रसवको दर्द आरम्भ होनेसे जरायु-मुख विस्तृत होकर जल † निकलनेके समय तक ( अर्थात् व्याघ्रा आरम्भ होनेसे है “पानी बहनेतक ) ।

दूसरी अवस्था ।—जरायु मुख चौड़ा होकर पानी निकलनेके समयसे सन्तान भूमिष्ट होनेके समय तक । इस अवस्थामें जरायु मुख और बाधक स्त्री अगनेन्द्रियमें कोई व्यवधान नहीं रहता, सुरङ्गके तरह होजाता है ।

तीसरी अवस्था ।—सन्तान भूमिष्ट होनेके समयसे जरायु फूल बाहर होनेतक ।

\* साधारणतः प्रसव कार्य स्वाभाविक विधानसे ही सम्पादित हुवा करता है ; किन्तु प्रायः प्रायः “अधस्तात्” कारण “अस्वाभाविक प्रसव” ( वीर्य, बाधकके द्वारा अथवा बाधिका बाहर निकलनेके बाद, प्रायः प्रायः दिन तक अथवा वैद्यकीय दवाका उपयोग से ही ) प्रसवित ) की बात कहना नहीं है । ऐसे समय होमियोपैथिक चिकित्सा करना चाहिये ।

† स्वाभाविक प्रसव वैद्यकीय समय से आमतः पदार्थ बाहर होता है रक्तपाव नहीं होता ।



स्वाभाविक प्रसवक समयमें कष्ट अवश्य

पासने योग्य विधि ।

पहिली अवस्था ।—प्रसवकी पहिली अवस्थामें गर्भिणी जिसतरह रहना और जो काम करना चाहे उसमें बाधा देनेकी आवश्यकता नहीं है । इस अवस्थामें उसे सुतिका गृहमें खेजाने या कांखनेकी आवश्यकता नहीं । बीच बीचमें गरम दूध या गरम पानी पिलाना अच्छा है इससे दुर्बलता दूर होती है । ठण्डा पदार्थ खिलाना अपकारो है, इसे खिलानेसे ब्याधा बढ़ सकती है ( अर्थात् प्रसव वेदना बन्द होजाती है ) । पहिले अवस्थामें कोई औषध देना, अच्छा नहीं, और यदि मालूम हो कि पहिले बच्चेका सिर बाहर न निकलकर यदि दूसरा कोई अङ्ग बाहर निकलेगा तो, पल्सेटिस्त, १० दो तीन मात्रा खिलाना चाहिये—इस औषधके गुणसे बालकका सिर घूमकर नीचेकी तरफ आसक्त है । ‘प्रसवकालके उपसर्गादि’ देखो ।

द्वितीय अवस्था ।—इस अवस्थामें प्रति सावधानीसे कार्य करना चाहिये । जल बच्चेना शुरू होतेही सुतिका को सुतिका गृहमें खेजाना चाहिये, और पहिलेकी तरह बीच बीचमें गरम दूध वगैरह पिलाना चाहिये । यदि ब्याधा धीरे धीरे कम होती जाय तो गलेमें अंगुली डालकर या नाकमें सीक डालकर या केश खिंचाकर या किसी सामान्य उपायसे

बसन्त करानेसे ध्यया आने लगती है। सुतिका को अन्ततक ही एक-ठागड़ स्थिर रहना चाहिये, ज्यादा छुटपट करनेसे ध्यया ओरसे नहीं आसकती। प्रसवके समय सुतिका बायें तरफ सोकर दोनों हाथ सिरके ऊपर उठारकर चाहिये और दोनों घुटने छाताकी ओर उठाकर दोनों तरफ फैला देना चाहिये (अर्थात् दोनों पैरों बीचमें एक गोला तकिया देने चाहिये), इस तरह करनेसे सहज ही में प्रसव होता है। प्रसवके पहिले निदान एकबार भी दस्त और पिशाब करना चाहिये। रक्तस्राव हो तो, “गर्भाविस्त्राका रक्तस्राव देखो।”

सड़केका सिर योनिमें आती हो धात्री प्रसवद्वार रक्षा करे नहीं तो सड़केका दोनों कंधे बाहर होनेके समय मसझार फटकर योनी तथा मसझार एक होसकता है।

सड़केका माथा बाहर होनेही उसके सुखमयहलका सार सेआदि साफ कर देना चाहिये नहीं तो सेआदि सुख गप्परने या नासिकामें आकर आस हो जाता है। यदि सड़केका माथा बाहर दिखाई दे और उसकी नाभिनाड़ी मालाके तरह गलेमें लिपटी हुई हो तो माथीमें चंगूती ठासकर इस तरह ठीका करना चाहिये कि सड़केका कंधा सह-अर्धोमें बाहर निकल आये। सड़केका, मसझार बाहर निकल तभी सुख शरीरयो धलपूर्वक, बाहर न खींचना चाहिये, इससे सड़के और मा दोनोंके प्राण जानेकी आशंका रहती

है। स्वभावके उपर निर्भर रहनेसे, बाकी देह स्वतः बाहर निकल आता है। छड़का भूमिपर गिरतेही उसको स्रुति काके पास धीरेसे रख देना चाहिये, दूर रखनेसे नाभि नाड़ी क्षिप्त होकर रक्तस्राव होता है, उससे प्रसूति तथा सन्तानके मृत्युकी संभावना है।

**नाड़ी काटना।**—सन्तानके भूमिष्ठ होनेपर जब तक वह चिन्नाकर शिशु न रोवे तबतक नाड़ी नहीं काटना चाहिये। (नाड़ीके जिस तरफ शिशुकी नाभीसे लगी हो उसी तरफ) शिशुके नाभिके उपर तीन अङ्गुल प्रमाण नाड़ी छोड़ नरम रेशमसे दो मध्यम घेर देना चाहिये, और उसके उपर एक अङ्गुल प्रमाण नाड़ी रखकर इसीतरह और दो फेर देना चाहिये, इसी तरह शिशु और प्रसूतिकी नाड़ी बाधनेसे, दोनो बन्धनोंके बीचकी नाड़ी तेज चकूया केचोंसे काट देना चाहिये। बन्धन कठिन न होनेसे, प्रतिशय रक्तस्राव होकर प्राणनाश होसकता है।

**साधवान।**—सन्तानके जिसने डोलनेसे नाड़ी काटेते समय उसके हाथ, पांवकी अङ्गुलियां न काटनेकी विशेष खबरदारी लेनी चाहिये। शिशुके भूमिष्ठ होनेपर यदि उसका मुख नीला होजाय तो शीघ्र नाड़ी काटकर पहिले थोडासा रक्त बहाकर फिर नाड़ी बांधनी चाहिये।

नाड़ी काटे जाने पर शिशुके नाड़ीके उपर तैलकी पट्टी बांध देना चाहिये। बाद इसके अङ्गुलीके अग्रभागमें सहज

सगाकर शिशुके मुखमें छाल छेपादि साफ करना चाहिये । फिर थोड़ा चूना जलसे धोकर नरम सफेद कपड़ेसे धीरे धीरे शरीर पोछकर गरम कपड़ेसे ढाँक देना चाहिये । शीत काशमें अथवा खूब ठंडी हवामें धाम न कराकर सरसोंका तेल थोड़ा गरम कर शिशुके सर्वाङ्गमें लगाकर खूब महीन कपड़ेसे आस्ते २ पोछ देना चाहिये \* । शिशु भूमिष्ट होने पर यदि न रोवे और मृत्युवत् पड़ा रहे तो 'मृतपत् भूमिष्ट शिशु' देखो ।

तीसरी अवस्था ।—जबतक फूल निर्गत न हो, तबतक प्रसूतीको अवस्था निरापद नहीं है । स्वाभाविक प्रसवमें फूल आधे घण्टेमें आपसी आप निकल जाता है । स्त्रीचा तानीमें विक्षेपण विपदकी आशंका है । "फूलका न पडना" देखो ।

फूल पडने पर प्रसूतीका कपड़ा और विस्तर साफ कर सबसे बाह्य अग्नेन्द्रियके मुख पर एक पाँच अंगुलके कपड़ेकी दो तीन तह बसाकर रख देना और बीच बीचमें यह कपड़ा बदल देना चाहिये ।

\* गरम जलमें धाम करानेमें 'बड़ो निरमोनिचा' रोम जैनेचा उपयोग है इसीसे बिजिलसके पिंड इस तरह बिजिल (गर्मी काष्ठमैके जलजली तीन दिन तक) गरम पानीके कमड़ सत्तान्त्र चन्द जल पाइया निष्कासन तेल ( Sweet and Pure olive oil ) व्यवहारकरनेके सिद्धि कहते हैं । ( Vide Fisher's diseases of children pp. 34-35 )

है। और इस लिये घड़ापर गुल अथवा लकड़ीका कोयलाही प्रायः जलाना चाहिये।

५। सूतिकाका पेट सेंकनेसे और आगकी आध पर कपड़ा सेक कर रखा अननेन्द्रियके सुख पर रख देनेसे और शिशुकी नाभि सेक देनेसे \* दर्द शीघ्र कम हो सकती है।

६। जिस सूतिका गृहमें आग नहीं रहती और जो सूतिका आग तापना पसंद नहीं करती तथा सीता नहीं खाती, उसे और उसके बच्चेको गरम कपड़ा इस्तेमाल करना चाहिये।

७। प्रसवोपरान्त प्रथम दो रोज और बाद दो दिन तक भूजा हुआ चिबड़ा और थोड़ा गोस्तमरिच पिस कर और बहुत थोड़ा गरम ची खीन्नाना चाहिये। और पांचवें रोज दूध मात खिलाया जा सकता है दास या और कोई पदार्थ प्रथम सप्ताहमें खिलाना नहीं चाहिये।

## १ प्रसवकालमें उपसर्गादि।

प्रसव वेदना आरम्भ होनेपर ५।६ घण्टामें सन्तान प्रसव होनेसे भीषण देनेकी कोई आवश्यकता नहीं है, किन्तु इससे ज्यादा देर होनेसे चिकित्सा कराना आवश्यक है।

३३

\* बिरलमें टैम पर चूड़ा गरम कर नाभि सेंकनेसे, नाभि चूटो सुख जाती है, सेंकनेसे सुख नाभि पर पेशी दाव न लगे बर्जातुभी और सेंकना चाहिये।

अनुसार निम्नलिखित औषधका प्रयोग करनेसे अल्प कालमें बिना कष्टही प्रसव हो सकता है । जरायु सुख सिकुटा रहनेके कारण प्रसवमें कष्ट होनेसे,—

जेससिमियाम १ । अनियमित, सामान्य या बहुत दर्द होनेसे, बहुत देर पहिलेसे योद्धी योद्धी दर्दका अनुभव होनेसे, पहिले अल्पवत् स्राव होने पर भी वेदना हृदि न होनेसे और इसी तरह फिर वमनकी इच्छा होनेसे पल्सेटिला ३० । उल्लिखित उपसर्गके बाद यदि अंधोमें (पेंठन) हो (विशेषतः यदि उसी गर्भिणीको तीन चार सप्ताह पूर्व हो), सिकेनिकर १० । सिरका दर्द, अस्थिरता, अकवाद छाया पैर घटवने लगने पर बेलेडोना १० । असह्य दर्द होनेसे केसोमिडा १, कफिया ६ और जेससिमियाम ६ । अत्यन्त प्रसव वेदनाके बाद एकाएकी प्रसव वेदना बन्द होकर प्रांख और मुँहका स्राव होना वमफूलना घड़ घड़ शब्द, बेहोशी और मूर्च्छा होनेसे ओपियम ६, १० । अत्यन्त कष्टसे गर्भिणी अघोर हो चित्ताकर होने लगी तो हार्डपोसायिमास ६ ।

पहिले गर्भस्थ सप्ताहका सिर बाहर न होनेकी आशंका हो तो पल्सेटिला १० । जरायुसुख कड़ा होनेसे और फैला न रहने पर बेलेडोना १० । कष्टकर प्रसव वेदनामें आर्णिका १ । प्रसव वेदनाके समय या बाद मूर्च्छा या उसके साथही शरीर चर्ककी तरह ठण्डा या नाड़ी मंद होनेसे, कैम्फर ।

। फूलका न गिरना ।—लड़का होनेके थोड़ेही देर बाद जरायु फूल बाहर निकल आता है । प्रसव होनेके बाद यदि एक घण्टेमें फूल न गिरे तो पल्सेटिला ३० या सिकेलि ३० प्रति पन्द्रह मिनटके अन्तर पर देना चाहिये । एक घण्टे तक यदि औषधसे कुछ फायदा न हो, तो एक हाथसे जरायुको दबाकर दूसरे हाथसे धीरे धीरे फूलको बाहर निकाल लेना चाहिये । जोरसे खींचने पर फूल बिखर कर उसका कुछ अंग पेटमें रह जाता है, ऐसा होनेपर रक्तस्राव होनेसे प्रसूतिका प्राणका खतर रहता है ।

### प्रसवके बादके उपद्रव ।

फूल गिर जानेपर यदि कोई उपद्रव न हो तो भी प्रसूतीको आर्षिका ३, रोज चारवार करके तीन दिन देना चाहिये । आर्षिका खिलानेसे प्रसूतीको कोई कठिन रोग नहीं होने पाता ।

प्रसवके बाद जो उपसर्ग होते हैं, उनका वर्णन नीचे लिखा हुआ है ।

**योनिमुख और गुदाका फटना ।**—योनिमुख प्रायः प्रसवके बाद थोड़ा बहुत फट जाता है और प्रसवकालमें प्रसूतीकी गुदा खूब सावधानीसे रक्षित न होनेसे फट जाती

है । कैलेण्ड्रिल्ला ० बीस बुद, एक छटांक पानीमें मिला कर उसमें कपड़ा भिगोकर फटे हुये स्थानमें रखनेसे शीघ्र आराम हो जाता है ।

**पोसनहरकी दर्द ।**—फूल गिर जानेके बाद कई एक बार जो वेदना होती है उसे "पोसनहरकी दर्द" कहते हैं । प्रसवके बाद जरायुमें जो रक्तका जमा हुआ अंश रहता है वह इस दर्दके साथ निकल जाता है, इस लिये हमसे प्रसूतीका कल्याण होता है । दर्द यदि ४८ घण्टेमें कम न हो तो आर्षिका ३ देना चाहिये । तबोक्त घबहानेकी हालतमें कैमोमिला ६ । आर्षिकासे फायदा न होने पर जेससिमि याम ३x या कफिया ६ अथवा सिकेसि ३० देना चाहिये ।

**रक्त बहना ।**—( *Lochia* ) ।—फूल गिरनेके बाद प्रायः बीस दिनतक जरायुसे थोड़ा थोड़ा रक्त बहता रहता है । पहिले दो दिन तक घोर लालवर्ण, बाद पीतवर्ण अन्तमें कलके समान या पतले पीपके तरह होकर बन्द हो जाता है । यदि अपने आप इसी तरह बन्द हो जाय तो भीषणकी कोई आवश्यकता नहीं है । किन्तु निम्नलिखित लक्षण होनेसे भीषण देना चाहिये ।

बहुत दिनतक बहनेसे, सिकेसि ३० । बराबर घोर लाल रंगका बहनेसे, सेबार्इमा ३x, एकाएकी बन्द हो जाने पर एकोनाइट ३x, और दुर्गन्धयुक्त होनेसे, क्रियोजोट ३ या कार्वमेजिटेविकसि ६ ( और कैलेण्ड्रिल्ला ० तीस गुने



जलके साथ मिखाकर रोज़ तोनवार धोना चाहिये ) देना चाहिये ।

**रक्तस्राव ।** ( Haemorrhage ) प्रसवके बाद रक्त-स्राव होनेसे, प्रसूतीके आनका डर रहता है । स्थान रहै कि प्रसवकालमें रक्त थोड़ा जाना चाहिये । खूब बेशी या जालवर्ण रक्त, स्रोतके तरह बराबर बहनेसे, निम्नलिखित उपायसे उसी दम करना चाहिये ।

प्रसूतीको सोलाकर सिर नीचा और जघा छ छा करना चाहिये, बाद उसी वक्त, उसके पेट पर हाथ रख अरायुको सुट्टीमें इस कदर धरना चाहिये कि वह संकुचित हो जाय, और गरम जल ( १२० ) उसके जननेन्द्रियमें पहुँचाना चाहिये । मिला सके तो बरफका टुकड़ा प्रसूतीके पेट पर और जननेन्द्रियमें रखना चाहिये और बरफ खानेके लिये भी देना चाहिये बर्फ भी रक्तस्रावको बन्द करता है ।

प्रसवकालमें, सेवाइना ३५ या हेमोमेलिस ३५ और रक्त बहनेसे यदि सुस्ती मालूम हो तो चायना ६, और स्नावसे मस्तकमें पीड़ा हो तो, फोराम् ६ देना चाहिये ।

**मूर्च्छा ।**—प्रसवकालमें या प्रसवके बाद किसी किसी स्त्रीको मूर्च्छा आकर उसके प्राणतक नाश होते हैं, इसलिये खूब सावधान होकर चिकित्सा करना चाहिये । मूर्च्छाके साथ सर्वाङ्ग बर्फके तरह ठंडा होनेपर, सुविनीका कैम्फर, मूर्च्छाके साथ कपालमें ठण्डा पसीमा हो या सामान्य हिस्सेसे मूर्च्छा

आगई हो तो, मीराद्राम एख ६, रक्तस्त्रावसे मूर्च्छा होने पर चायना ६ या कार्बोमेन १०, यदि बारबार मूर्च्छा आवे या बहुत देरतक रहे तो ट्रामोनियम ३५, आघात जनित मूर्च्छा पर आर्निका ६, भयसे मूर्च्छा होनेपर एकोनाइट १५ या कफिया ६ उपकारी होगा। शीपथ निगलनेकी सामर्थ्य न हो तो निर्दिष्ट शीपथ सुधाना चाहिये। गरम वाली इत्वादि हलका पथ लेना चाहिये, फिर ताकत देनेवाला भोजन कराना चाहिये।

ऐ ठन या आघेप ।—(Convulsions) प्रसवके बाद ( पहिले अथवा प्रसवकालमें ) सर्वाङ्गमें पीड़ा होना यह बड़ाही विपत्तिका कारण है। सिरमें बेसी दर्द होना, उज्जरठा आंखोंसे कम दीखना बोलते समय खड़ बड़ाना, हाथ पैरमें दर्द होना, तन्द्रा भाव होना, कमसे आंखकी पुतली घुमना, मुख कभी इस कन्धेके तरफ कभी उस कन्धेके तरफ होना। जौमका बाहर होना, घगुष्टकारके तरह सर्वाङ्गमें दर्द होना और गर्भिणीका बेहोश होजाना फिर दो चार मिनटके बाद होशमें आना तथा आघेप उपस्थित होकर प्रसूतीका फिरसे बेहोश होजाना, इस तरहसे आघेप पर आघेप होना और बारबार बेहोश होना यह सब सन्धुके लक्षण है। मस्तकका खाली पड़ना (Anaemia) या पिमायमें अण्डसाल (Albumen) का संशय होना यही सब आघेपके कारण है।

प्राक्षेप होनेके पूर्व-लक्षणमें—हार्डओसायेमास १५, प्राक्षेप कालमें वेलेडोना ६ या हार्डओसियानिक एसिड ६, प्राक्षेप बन्द हो जाने पर (विशेषतः सिरमें किसी तरहका, गोलमाछ रहनेसे) ओपियाम १० देना चाहिये । \* गरम दूध, बाली इत्यादि हलका पथ्य देना चाहिये ।

पसीना बन्द ।—प्रसवके बाद एकाएक गरम मालूम होनेसे, छातकेमारा ६ या कैमोमिला ६ देना चाहिये ।

सुस्तीमें ।—प्रसवके बाद अत्यन्त दुर्बलता होनेसे चायना ६ या फमफरिक एसिड ६ देना चाहिये ।

नींद न आना ।—यदि कोई विशेष रोग न रहने पर भी प्रसवके बाद रातमें नींद न आये तो, कफिया ६ देना चाहिये ।

मूत्ररोग ।—प्रसवके बाद प्रायः छ घंटे पिशाब नहीं होता । यदि बारह घण्टेमें पिशाब न हो तब एकोनाइट १५ प्रति पन्द्रह मिनटके अन्तर पर देना चाहिये, चारवार एकोनाइट सेवनसे यदि पिशाब न हो तो, वेलेडोना ६ प्रति

\* किसी किसी प्रसविका प्राक्षेप होनेके पहिली वर्ष सहित विषम वर्षों में जन्म होती है, उस समय एकोनाइट १५ और यदि (प्रसवकालमें या पहिले बचपनमें) पीड़ाके साथ बटपटा ठप्पा पसीना, नाड़ी धीरे-धीरे बंद हो जाती हो, मेरकम-मिथि १५ देना चाहिये ।

प्राघाघण्डा अन्तर पर ड्रेमी चाहिये । तीसबार बेसेडोनाके अयोगसे पिशाच न हो तब इक्वर्सेटम् १५ देना चाहिये ।

कोष्ठवृद्ध ।—प्रसवके बाद जरायु इत्यादि यन्त्रोंकी काम बन्द रहता है इससे प्रथम तीन चार दिन प्रसूति का पाखाना नहीं होती, इस अवस्थामें औषध सेवन करानेसे बीमारी बढ़नेकी संभावना है । यदि पांच छ दिन पर्यन्त पाखाना न होकर कष्ट मान्य हो तो क्लिस्मोनिया ३५ या मीराडाम एस्वम ६ देना चाहिये ।

उदरामय ।—प्रसवके बाद उदरामय हो तो हार्डपोसायेनास ६ या पल्सेटिला ६ देना चाहिये ।

अर्श ।—प्रसवके बाद कभी कभी अर्श होता है, पल्सेटिला ६ सेवन करना और हेमैमेलिस् तीसगुने खसके साथ मिलाकर घोना चाहिये ।

## सूतिका-ज्वर ( Puerperal fever ) ।

सूतिका ज्वर यह एक रक्तका विकार है, किन्तु यज्ञा स्त्रियोंकी याढ़ासे ही मतलब है । सूतिका-ज्वर अति भयानक और कष्टदायक रोग है । इसका कारण एक प्रकारका विष है । प्रसवके बाद नाना कारणोंसे जरायुका दूषित होना प्रसवके बाद फूटका कुछ द्रिच्छा जरायुके भीतर रहजाना,

यही रोगका कारण है। प्रसवके ३४ दिन बाद प्रसृतिका ज्वर होता है। पहिले सामान्य ज्वर आकर फिर धीरे धीरे बढता है, तब शीत, कंपकंपी और शरीर गरम होता है, शिरकी पीडा, नाडीका वेग; प्यास, पेटका दर्द, और १०६ डिग्री पर्यन्त ज्वर रहता है, परन्तु पसीना नहीं आता, और प्रायः स्तनसे दूध आना बन्द होजाता है। तथा ७८ दिनमें मृत्यु होती है। ज्वरायुसे सुगन्ध पीपके तरह निकलना यह अशुभ लक्षण है।

**चिकित्सा।**—एकोनाइट ३५।—पीडाके प्रथम अवस्थामें अत्यन्त ज्वर, शीत और कम्प, माड़ी हुत और कठिन, शरीर सूखा, पेट फूला और घेदनायुक्त, अत्यन्त प्यास, ज्वरायुमें दर्द (डाक्टर सडल्लामने इस अवस्थामें मेराट्रामभिरिड १, व्यवहार कराकर बहुतेरीकी जानको बचाया है।

**बेलेडोना ३०।**—उदरमें अत्यन्त पीडा, अस्थिरता, स्तनमें दूधका न रहना, मस्तकमें दप् दप् पीडा, इसी तरह नेत्र और मुखमण्डल लालवर्ण।

**नक्सभमिका ६।**—ज्वरायु की विमारी बढ़ने पर।

**कसोसिन्य ६।**—ज्यादा पेट, फूलनेसे।

**केलिसायेमेट्रास ६०।**—एकाएकी चिडिक मारती हुई पीडासे यदि रोगिणी रोते रोते सुस्त होजाये।

मार्किउरियास कर ६।—उदरमें काटनेके तरह पीड़ा होनेके कारण रोगिणी पेटपर हाथ न रखने देती ही, अत्यन्त घ्यास हो रक्त या भाँवलिये पाखाना ।

स्येकेसिस् ६।—पेटमें अत्यन्त वेदना हो और ( निद्राके बाद हृदि हो ) ।

रसटक्त ६।—जरायुमें सन्तन हो विशेषकर शरीरके नीचेके अङ्गमें कठिन पीड़ा देरतक बढ़ू रहनेवाला स्त्राव और सान्निपातिक छ्वर सङ्घर्षमें ।

पार्श्वरोजेन १०, २००।—पीपके कारणसे रक्तमें विकार हो तो देना चाहिये ( Pyaemic Condition ) प्रवस-वेगसे छ्वर हो यदि शीघ्र औवनौशक्तिको नाश करे, तो आर्सेनिक १० या स्येकेसिस् ६ । हार्श्वोसेमास ६ पर्यायक्रमसे प्रयोग करना चाहिये ।

दूसरी औषध—त्राइपोनिया ६, पलसेटिला ६, हेमा मेल्सिस १, चायना ६, एपिस ६ । पेटमें पीड़ा होनेसे खूब गरम फ्लासेन पेटमें बान्धना चाहिये ।

( पुराना ) क्षतिका रोग।—एक सुप्रसिद्ध चिकित्सा ग्रन्थमें “क्षतिका छ्वर” और “( पुराना ) क्षतिका रोग” एकही पीड़ाका भिन्न भाकार मात्र कहकर विद्यार्थियोंको उपदेश दिया है । परन्तु वास्तविक ऐसा नहीं, यह दोनों रोग अलग अलग हैं । ‘क्षतिका छ्वर’ सर्वाङ्गीरामक, एक प्रकारका विष रक्तमें मिलकर यह पीड़ा उत्पन्न होती है, “पुराना क्षतिका

रोग" स्पर्शसे संक्रामित नहीं होता, यी, किसी प्रकारके दूषित विषसे उत्पन्न नहीं होता, इसलिये यह सूतिका ज्वरकी पुरानी अवस्था या आकार नहीं । प्रसवके बाद यदि प्रसूतिकी अच्छी सेवा न होनेसे शरीर घीण होकर रक्तहीन होता जाता है, और पुराना ज्वर चदराभय, सूजन इत्यादि होता है, इसीको पुरानी सूतिका रोग कहते हैं ।

**चिकित्सा ।**—इस कठिन पौडाके लिये नैट्राम-सिडर ३०, आर्सेनिक ३०, चायना ६, फेराम-सैट् ३०, एलुमिना ६, सिपिया ३०, ग्राफाइटिस् ३०, पंक्तसैटिला ३०, नक्कभमिका ३०, दिया जाता है, किन्तु फेराम आर्सेनिकम ३०, इस रोगका उत्तम औषध है । मागुर मछलीका शोरवा पीना चाहिये । "रक्तस्रव्यता" रोगकी चिकित्सा देखो ।

**अतड्डीकी वादु ।**—(Puerperal Insanity) ।—प्रसवके बाद ( या पहिले ) बलघ्न होनेके कारण कौन कौन स्त्री पागल होजाती है । यह वायुरोग दो प्रकारका है ।—(१) उन्माद (Mania) और (२) विषाद-वायू (Melancholia) ।

(१) उन्माद रोग ।—बुद्धिकी अगति, अनर्थक वक्ताव, प्रिय मनुष्योंको मारनेके लिये होड़ना इत्यादि "उन्माद रोग" का प्रधान लक्षण है । सामान्य पागलपन, या इसी

गृहीत भाव ऐसे लक्षणमें, छाइओसायेमास् ३, घोर उन्माद ( यथा मयंकर प्रस्ताप, क्रोध काटनेको जाना, एकान्त अथवा अन्धकारमें रहनेकी अनिच्छा, निर्लक्ष भाव इत्यादि ) लक्षणमें, ट्रामोनियाम ३, उच्च भावपूर्ण प्रस्ताप अथवा एकान्त और अन्धकारमें रहनेकी इच्छा किंवा रह रहकर शारीरिक और मानसिक क्रियाका बन्द होना ( Catalepsy ) ऐसे लक्षणमें, केनोविस् इण्डिका ६ देना चाहिये ।

(२) विपाद वायुरोग ।—सतत विमर्ष या जड़भाव, हृदयमें शून्यताका अनुभव, अथवा आत्महत्या आदि 'विपाद वायुरोगी' का विशेष लक्षण है । सिमिसिफिडगा ३ इसका एक उत्तम औषध है । आत्महत्याकी इच्छा बलवती हो तो, भरम-नीट ६ देना चाहिये, ब्राटिना ६, पलसेटिला ६ या एन्नासब्याष्टास ३ किसी किसी समय उपकारी हो सकती है ।

वायुप्रस्ता स्त्रीका मन जिसमें जरा भी उत्तेजित न हो ऐसा प्रबन्ध करना चाहिये । दूध आदि इलाका और ताकत पर ध्यानकी व्यवस्था करनी चाहिये, कोर कोई सोमैले भिन्नकका भोरवा, उपकारी कहते हैं ।

खेतप्रदर ( *Phlogmasia alba dolens* ) किसी किसी स्त्रीका पैर प्रसवके बाद फूल जाता है या सफेद हो जाता है । पैरूसे पैर तक, दर्द, और "रक्तवह्म" ( Lochia )



स्तनका दूध कम होना यही कष्टकर पीछाका उपसर्ग है । पलसेटिसा & और हेमोमेलिस १५ इसका उत्कृष्ट औषध है, एपिस & और रसटक & मौके मौके पर देना चाहिये । साफ रुई पैरमें बांधना चाहिये, हलका और ताकतवर आहार करना चाहिये ।

बस्तिकोटरके कौशिक भिक्षी प्रदाह (Pelvicocellulitis) अस्र प्रयोग या आघातादि कारणसे यह प्रदाह उत्पन्न होता है । पेटमें दर्द, ज्वर और जननेन्द्रियका फूलना इस रोगका प्रधान लक्षण है । एपिस & और रसटक & यह रोगका औषध है, जोरका ज्वर होनेसे मिराडाम मिरिड १५ देना चाहिये ।

बस्तिकोटरमें पीला फोड़ा (Pelvic abscess) ।—यदि “बस्तिकोटरकी कौशिक भिक्षी प्रदाह” उपरोक्त औषध प्रयोगसे अच्छा न हुआ तो क्रमसे फोड़ा होता है (अर्थात् पीप होना आरंभ होता है) ऐसा होनेसे (पक्वानेके लिये) हिपार सल्फर १५ देना चाहिये और इसी तरह अगर पीप निकलता हो तो सिलिका & इसकी व्यवस्था है ।

पेटका भुल पड़ना ।—प्रसवके बाद किसी किसीका उदर नीचेके तरफ भुल जाता है । यह देखनेमें महा मासूम होता है, नहीं तो कोई रोग नहीं है । केसकेरिया १० या सिलिका १० प्रतिमास एकबार करके देना चाहिये ।

**सिरका बाल उड़ना ।**—प्रसवके बाद दुर्बलताके कारण किसी किसी स्त्रीके बाल झड़ने लगते हैं । फस्फरिक-एसिड ६, चायना ६ या आर्सेनिक ६ इसकी भीषण है ।

स्तनरोग ।	}	प्रसवके बाद स्तनकी
स्तनदुग्ध रोग ।		पौड़ा देखो ।

### प्रसवके बाद स्तनकी पौड़ा ।

प्रसूतिका स्तन सम्बन्धमें कई एक बातें नीचे लिखी जाती है ।

१। गर्भके तिन चारमास बादसे स्तन बढ़ने लगते हैं, उसी समयसे स्तनके बोझकी ओर ध्यान देना चाहिये । आखकाकके “सम्बन्धताके” अनुसार ऐसी कसी अगिया वगैरह न पहिरनी चाहिये जिसमें स्तनकी बोझीके उपर दाब पड़कर उसके बढ़नेमें बाधा हो ।

२। यह पहिलेही लिखा गया है कि प्रसवके आठ दस घण्टा बाद सन्तानको स्तनपान कराना चाहिये इससे मन्दे सन्तानको आसानीसे पाखाना होता है और प्रसूतिका प्वरादि नहीं होता ।

३। हमेशा सन्तानको स्तन देनेके समय पहिले थोड़ासा दूध फेककर फिर सन्तानको स्तनकी बोझी देनेी चाहिये ।

४। प्रसूतिके आहारके दोषसे स्तनका दूध खराब हो सकता है और यह दूध पान करानेसे सन्तानकी पेटमें दर्द अजीर्णता आदि रोग होते हैं अतएव आहारके विषयमें प्रसूतिको शुध सावधान रहना चाहिये ।

५। स्तनको बोड़ीको घाव होनेसे या माताको पेटकी बिमारी अथवा ज्वरादि हो तो शिशुको स्तनपान कराना नहीं चाहिये।

६। कठिन शारीरिक परिश्रमके बाद या क्रोधादि मानसिक सन्तोजनाके समय, या ठीक स्वामी सहवासके बाद स्तनका दूध खराब होता है, और ऐसी अवस्थामें संतानको स्तनपान करानेसे उसको अत्यन्त पीडा तथा सन्तुलक हो सकती है।

दूधज्वर ( Milk fever ) ।—प्रसवके कुछही घण्टा बाद दूध पैदा होनेके समय किसी, किसी, प्रसूतिको स्तनमें कांटा चुभनेकी तरह दर्द होती है और दो एक दिनमेंही दोनो स्तन कड़े होकर सामान्य ज्वर होता है इसीको दूधका ज्वर कहते हैं। इसमें कोई औषध देनेकी आवश्यकता नहीं है, केवल जबतक ज्वर हो तबतक संतानको स्तनपान कराना नहीं चाहिये तथा स्तनमें ठण्डी हवा न लगने पावे। किन्तु दूधका ज्वर भयानक होनेके कारण यह बीस घण्टेसे अधिक हो तो एकोनाष्ट १५ देना चाहिये और ज्वर छूटनेके बाद यदि स्तन गरम न हो तो (स्तन गरम होनेतक) ब्राईयो-निया, ६ देना चाहिये।

स्तनप्रदाह ।—हुनका प्रसवके बाद किसी समय स्तनमें प्रदाह और माथ ज्वर होता है। तब प्रसूतिके स्तनमें दर्द होती है, इस कारणसे वह संतानको स्तनपान नहीं करा सकती और उसको भारी कष्ट होता है। स्तन

लालवर्ण होकर प्रदाह युक्त हो तो ब्रायोनिया ६ ।  
 पीछाके प्रथम अवस्थामें घेरेछोना और ब्रायोनिया क्रमसे  
 प्रयोग करानेमें शीघ्र आराम मानूम होता है अथवा पीछा  
 हडि नहीं होने पाती । इसके सङ्ग प्रथम च्वर होनेसे एको  
 माइट और ब्रायोनिया (पर्यायक्रमसे) पीछा कम न होकर  
 क्रमसे स्तन सफेद होता हैं अथवा मवाद होनेका संदेह हो  
 तो मार्किउरियास सन ६ । मवाद होनेसे, हिपार सलफर ३५,  
 फोडा शीघ्र आराम करनेके लिये फसफोरास ६ । स्तन खुब  
 कड़ा होनेसे फाइटोव्याक्का ३५ सेवन और फाइटोव्याक्का ० २०  
 बुद आधा आठान्स जलमें मिलाकर स्तन पर पट्टी लगाना  
 चाहिये ।

स्तनकी बोझीका घाव (Sore nipples) ।—  
 स्तनके बोझीमें घाव होनेसे, प्रसूतिको अत्यन्त कष्ट होता  
 है, घीस बुद केलेनुडूखा ० एक छटाक जन्ममें मिलाकर  
 स्तन धोना चाहिये और पट्टी देना चाहिये । यदि बोझीपर  
 छोटी छोटी फुसरी हो और उसमें से रस बहने लगे तो  
 थाफाइटिस् ६, सेवन करना चाहिये ।

स्तनव्यथा (Painful nipples) ।—संतान स्तन  
 खींचनेसे यदि माताको खूब दर्द मासूम हो, तो फिक्का  
 ड्रियाम ३५ सेवन करना चाहिये । कभी कभी प्रसूतिको  
 बोझीसे कंधे तक शूलवेदनाकी तरह दर्द होती है उस  
 समय फ्रोटन् टिग्थियास ३ देना चाहिये ।

जब तक शिशु माताका दूध पीता है तब तक प्रसूतिकी रातका जागना, देरसे खाना, ज्यादा खड़ा, तीता चीज खाना मनमें क्रोध करना इत्यादि मना है ऐसा करनेसे शिशुको नाना प्रकारके रोग होते हैं। सन्तानको रोग होने पर माताको खूब सावधान रहना चाहिये, नहीं तो सन्तानका रोग बढ़ सकता है।

यदि माताको रोग हुआ हो या उसके स्तनमें ज्यादा दूध न हो तो घरके किसी स्त्रीका दूध अच्छा होनेसे सन्तानको पिलाना चाहिये, अगर दूध १ मिले तो गदह या गौका दूध पिलाना चाहिये। गौका दूध गाढ़ होनेसे, दूधके बराबर पानी मिलाकर और शुद्ध दूधकी चीनी (sugar of milk) मिलाकर गरम करके सन्तानको पिलाना चाहिये। ज्यादा दूध पिलाना, या ज्यादा रातको पिलाना अथवा सोनेके हासतमें या जगाकर दूध पिलाना अच्छा नहीं। यदि सन्तानको भूख न हो तो दूध न पिलाना चाहिये। साधारण रीतसे सन्तानका पेट भरम मालूम हो तो भूख है समझना चाहिये। एकसाततक सन्तानको स्नान पान कराना चाहिये।

शिशु आठ दस महीनेमें रीगने लगवा है, और एक बरसमें चलना सीखता है, किन्तु यदि पन्द्रह महीने तक चल न सके, तो उपयुक्त उसको चिकित्सा करनी चाहिये। सन्तान

नके सभ दांत आगे पर, पुराने चावलका खूब गरम भात थोड़ा थोड़ा खिसानेकी आदत छान्दनी चाहिये ।

गिण्टकी टषा जलमें न मिलाकर घटिका ( *Pilules* ) या घनुघटिका ( *Globules* ) सन्तानको सेवन कराना चाहिये ।

टौका ।—सन्तान भूमिष्ठ होनेसे एक साप्ताहिक भीतर गोबीजसे छपाना यह राजविधि है । जिस जगह अच्छा गोबीज न मिलनेके कारणसे छाप नहीं सक्ते तथा चारों तरफ रोग फैला हुआ हो तो ऐसे समय भैक्सिनिनाम २०० (जब तक चैचकका ओर रहे तब तक) हर सप्ताहमें सन्तानको एक बार खिसाना चाहिये ।

चाहिये कि वायु छातीसे होकर बाहर निकल जाय । हर मिनटमें १४।१५ बार इस तरह वायु प्रवेश कराने और निकालनेसे, १० मिनटमें सन्तानकी श्वास क्रिया प्रारम्भने लगेगी । यदि दस मिनटमें कुछ फायदा न हो, तब सन्तानके मुख या पेटमें पड़िले गरम जलका और पीछे ठण्डा जलका बार बार छौटा देना चाहिये । और सूखे हाथसे उसका हाथ, पैर और पीठ घिसना, शिशुमें सुखमें दिया लगानेमें बाधा न होने पावे ।

**शिशुके नाभिवा रोग ।**—नार काटनेके पांच दिन बाद नाभि सूखकर अलग होजाता है । यदि नाभि न सूखकर रक्त या मवाद गिरे किम्बवा घाव हो जाय, तो नाभि को गरम जलसे धोकर केलेखिउल्ला (दस बूंद, एक छटांक सरसोंके तेलमें मिलाकर) की पट्टी नाभिके ऊपर लगाया चाहिये और सिलिका ६ सेवन [ किन्तु मवादमें दुर्गन्ध हो तो सिलिकाके बदले आर्सेनिक ६ देना चाहिये ] । यदि दाह (अर्थात् नाभि सात होकर फूली हो और दर्द भी हो,) तो वेलेखोना ६ या आर्सेनिक ६ देना चाहिये ।

नार अच्छी तरह न बांधनेसे या गारका धन्धन टूट जाने से यदि रक्त बहे, तो हेमोमेसिस् कपड़ेमें लगाकर रक्त निकालनेके स्थानपर रख थोड़ा दबा रखनेसे रक्तका बहना बन्द हो जाता है बार बार इसी तरह रक्त बहनेसे आर्से-

निक ६ सेवन कराना चाहिये । कांशुमा, ज्यादा खांसी या रोना, पेट दूखना इत्यादि कारणोंसे नाभि पर ज्यादा दाव पड़नेसे यदि नाभिका अग्न्य बाहर ( Umbilical hernia ) हो जाय, तो आर्निका ६ या सालफिडरिक एसिड ६ सेवन, और रुईकी एक छोटी गहोसे नाभिको इस तरह दावकर बांधना चाहिये कि अग्न्य बाहर न हो सके । शिशु अत्यन्त दुबला होनेसे पौलकेरिया ६ देना चाहिये ।

गोंड ।—घाव सुखनेके बाद यदि नाभि उ ची रहे तो उसके ऊपर रुईकी गहो रखकर एक कपड़ेसे बांध देना चाहिये और नखभमिका ६ छिलाना चाहिये ।

स्तन न खींचना ।—यदि दुर्बलताके कारण स्तन स्तन न पौ सके तो धंमधमें दूध गारकर स्तनको पिलाना चाहिये, इस तरह दो तीनवार गारकर पिलानेसे स्तन आसानीसे स्तन खींचने लगेगी है । ऐसा करने पर भी यदि शिशु स्तन सुखमें न ले तो चायना ६ वी एक छोटी गोली उसके सुखमें देना चाहिये ।

स्तनान्ना पीलापन ।—स्तन पैदा होनेके दो एकदिन बाद कभी कभी उसका शरीर और नेत्रका सफेद भाग हलदीके तरह पीला हो जाता है । मार्कुरियास ६ इसको उत्तम दवा है । कोष्ठबद्ध होनेसे, नखभमिका २०



और उदरायय होनेसे, पडोफाईलम ३ देना चाहिये । बड़े बालकको पीलापन होनेसे “पाण्डू” रोग देखो, पुराना पित्ता-पनके लिये, चलिओ नियम् ६ अच्छा है ।

एक प्रकारकी भूत बाधा । (जिसको बङ्ग भाषामें “पचोय पाचोया” कहते हैं) ।—सन्तानका ओठ और गला सिकुड जाता है, नख और सब शरीर नीला हो जाता है । हृत् पिण्डकी क्रिया ठीक न होनेसे कठिन पौड़ा उत्पन्न होती है । डिमिटेलिस ६ इसकी अच्छी दवा है, सब शरीर बर्फके भांति शीतल होनेसे आर्सेनिक ६ देना चाहिये । अच्छी तरह सन्तानको कपड़ेसे ढांककर बाये अङ्ग सुलाना चाहिये, और सैरीके घरमें साफ हवा जाना चाहिये और धुआ न जमना चाहिये और आहारके तृटिसे जिससे सन्तान सुस्त होकर न पड़ी रहे इसका बन्दोबस्त करना चाहिये ।

डिबका ।—सन्तान उत्पन्न होनेके बाद कभी कभी उसके शिरमें डिबका दिखाई देता है । सुधा सरसोंका तेल गरम करके उसके पर लगाना चाहिये और आर्निका ३ सेवन करना चाहिये । यदि इससे कुछ फायदा न हो तो कैलके रिया कार्य ३० कुछदिन तक खिखाना चाहिये ।

शिशुका धनुष्टकार रोग ।—पैदा होनेके बाद शिशुके कभी कभी यह भयङ्कर रोग हो-जाया करता है । पचिसे

सन्तान स्तन नहीं खींच सकती, क्रमसे बोखार १०५।१०६ डिग्री हो जाता है और हाथ पैरमें खींचन होकर पीठ टेढ़ी हो जाती है और मृत्युकी सम्भावना होती है । बिलेखोना ६ इसका उत्कृष्ट प्रोपध है । ( विशेषकर नाभिमें दाढ़ होनेसे ) माताके ज्यादा शोकसे अथवा क्रोधके कारण दूध खराब हो गया हो और वह सन्तानको पिलाया जाय और उससे यह रोग हो तो ऐसी दशामें माता और शिशु दोनोंको इन्फेजिया ६ देना चाहिये, “धनुष्टकार” देखो ।

सन्तानकी हिचकी ।—कभी कभी सन्तानको हिचकी होती है । कई एक बूढ़ मियौका बर्बत या नक्सुममिका १० खिलानेसे हिचकी बन्द होता है ।

सर्दी खासो ।—ठण्डा लगनेसे सन्तानके नाकसे सर्दी भरती है, कभी खाँसी या ज्वर भी होता है, कभी नाक बन्द होजाती है, कभी सन्तान हाँफने लगती है और स्तन नहीं पकड़ सवाती । छातीमें सर्दी जमनेसे डर रहता है । सर्दी भरती रहने तो पल्सेटिला ६ । नाक बन्द होनेसे स्तन न खींच सके तो नक्सुममिका ६ । ठण्डसे भरे सर्दी यदि किसीसे अच्छी न हो तो मार्फुरियास् ६ । सर्दी गिरनेके सबब नाक या घोंठमें घाव होनेसे सांसेनिक ६ ।

सन्तानका नेत्र प्रदाह ।—भूमिष्ठ होनेके कई एक दिन बाद किसी किसी सन्तानके नेत्रमें दाढ़ होता है ।

नेत्र फूल कर लाल हो जाते हैं, मवाद गिरता है, दोनों पलक मिल जाते हैं और कभी कभी नेत्रमें घाव तक हो जाता है । इसी तरह थोड़े दिनों मवाद गिरनेसे नेत्र नष्ट होने की सम्भावना है, इसलिये इसकी पहिलेहीसे चिकित्सा करनी चाहिये । नेत्रकी पपनी फूली या लाल होनेमें और कभी कभी रक्त बहनेसे येलेडोना ६ । नेत्रकी पपनी फूली हो और किनारे फुसरी और ज्यादा मवाद प्रकट होता हो तो, मार्क सन् ६ । आर्जेन्टाम नाइट्रिक ६, और कैल्सकेरिया कार्ब ६ कभी कभी देनेकी आवश्यकता पडती है ।

तड़का (वेद्योगी) । वाय्वापद्यामें सायुमण्डलकी क्रिया सहजहीमें उत्तेजित होकर यह रोग होता है ऐसा लोग कहते हैं । यह रोग सुगी और हिटिरियाकी तरह है । दांत निकलनेके समय छाम या वसन्त रोग अच्छी तरह शरीरके बाहर न निकलनेसे, एकाएक छ वे परसे गिर जानेसे और क्रिमि दोष होनेसे यह रोग होता है । छ्वर, अस्थिरता, निद्राशून्यता, भयसे आक्षेप पैदा हो तो एकी-नाइट ६ । नेत्र और मुखमें खास, चक्षुतारा विस्तृत, भस्त्रक गरम, चमकदार उठना या सकलकर

३० । दाँत निकलनेके समय तड़का होनेसे कैमोमिला  
६ । घाम, चेचक अच्छी तरह बाहर न निकलनेसे यदि  
कठिन तड़का होय, तो जिङ्गम ६ अच्छा है ।

**शिशुशोथ निद्रा ।**—मस्तिष्कमें रक्त अधिक होनेसे

या रक्त संचयने प्रसूतिके अयोग्य भोजनसे या किमि  
रोगसे सन्तानकी निद्रा नहीं आती, जिस कारणसे निद्रा नहीं  
आती उसकी चिकित्सा करना उचित है ।

मस्तक गरम, बिना सवस ज्यादा रोना, सोनेकी अव  
स्थामें एकाएक चिल्लाकर रोना ऐसे लक्षणोंमें खेलेडोना  
६ । रक्त रक्त कर शरीर कापना, शरीर गरम, चिड़ चिड़ा  
स्वभाव और हमेशा गोदमें लेकर हुमनेकी इच्छामें  
कैमोमिला ६ । सन्तान इसे और खेले किन्तु शरीर गरम  
हो, और बीच बीचमें काखे तो, काफिया ६ । ज्वर और  
बीच बीचमें भयके कारण चिल्लाकर उठनेसे एकोनाइंट  
३ । किमि रोगके कारण निद्रा न होनेसे सिना ३५ ।  
कोष्ठवद्ध होनेके कारण निद्रा न आनेसे नक्सममिका ६ ।  
वे अन्दाज भोजन करनेसे या पाणी पौनेसे निद्रा न आवे  
तो, पल्सेटिसा ६ ।

**सन्तानका रोना ।**—शिशु रोने की से कोई कष्ट  
या रोग समझना चाहिये । किस कारण शिशुरोता है उसकी  
जांच करना जरूरी है, रोनेके समय कानमें हाथ लगाये तो

कानका दुःख, सुखमें अङ्गुली देकर रोवे तो, दांत उठनेका कष्ट, घुठने जोड़ कर पेटके उपर रखनेसे, पेटका दर्द, कर्कशस्वरसे रोनेसे गलेका रोग, खांसखांस कर रोनेसे बषस्थलकी पीड़ा, कर्कशस्वरसे रोवे तो छातीकी (फुस फुसकी) पीड़ा समझनी चाहिये। कभी कभी चूँटीके काटनेसे भी एकाएक रोता है। गरम और सूखा शरीर अत्यन्त वैचैनी और निद्रा शून्यता इत्यादि लक्षणोंमें, एकोटाईट १५। शिर गरम, नेत्र, सुख छाल, एका एकी चमककर उठनेसे, बेलेछोना ६। सन्तानका चिह्न चिड़ा स्वभाव, विशेष रोना, गोदमें बैठकर घूमना, पेटके दर्दसे हुटना उठाकर रखना और ज्वर होनेसे कैमोमिला ६। (विशेषकर दांत उठनेके समयके नागाप्रकारके दुःख होकर सन्तान विशेष रोनेसे यह विशेष उपयोगी है।) कोष्ठ वह या पेट फूलनेके कारण रोनेसे, नक्स-भमिका ३०।

दूधपेक्षना।—आयविक उत्तेजना या पाक्स्थलीके दोषसे वमन होता है। सूतिके अपरिमित भारी पदार्थ खानेसे बालकके परिपाक क्रियामें बाधा होकर जमी हुई दहीके समान दूध वमन होनेसे, पल्सेटिना ६। दूध पीनेसे उसीदम वेगसे चमककर कै होना, जमी हुई दही के तरह वमन वमनके बाद 'शिशुका सुस्त होजाना और कुछ कासके बाद उसको दूध पिलाने पर पहिलेके तरह वमन होना इत्यादि लक्षणोंमें प्रयुजा ६। उपर काहे

नक्षत्रके साथ जिह्वा सादी और लेपयुक्त हो तो आन्त्रिम फुल ६ । इसके साथ दुर्गन्ध ममयुक्त उदरामय होनेसे कैल्केरिया कार्ब १० । दूधके साथ पित्त या क्षारके तरह कफ गिरनेसे इपिकाक् ६ । परुचि और कोठवद होनेसे, नक्सममिका १० ।

**दातनिकासना ।**—बालकके दात ६ठे माससे लेकर ८।१० मासमें निकल आते हैं, पहिले दो नीचेके तरफ बाद ऊपरकी तरफ दो, इसी तरह क्रमसे ८ तीस वरसमें दूधके सब दांत निकल आते हैं । छत्र उदरामय, कोठवद, आक्षेप इत्यादि उपसर्ग दांत निकलनेके समय होते हैं ।

इन सब उपसर्गोंमें कैमोमिला १२ थोड़ा चौपघ है, छत्र होनेसे, एफोगार्डट ६ । अधिक उदरामय होनेसे, कैमोमिला ६ । आमाशय होनेसे, मार्क कर ६ । कोठवद होनेसे, नक्सममिका १० । तडका होनेसे बेल्डोना ६ । दांत निकलनेमें देर होनेसे कैल्केरिया—कार्ब १० । यदि दात गड़। फाटकर बाहर न निकल सकता हो तो गद्दीको थोड़ा घोरकर फिर मिला देनेसे दांत जल्दी बाहर निकल आता है ।

खांसी ( Croup ) पुण्डीके दो प्रकार—(१) छत्रिम और (२) प्रकृत । छत्रिम पुण्डी मिश्रको एकाएक

आकुम्भण करती है, शिशु जब निद्रावस्थामें रहता है, एकाएक गला सुष्ठसुष्ठ करके निद्रा भङ्ग हो जाती है, श्वासप्रश्वासमें एक प्रकार साय साय शब्द होकर गला घड़ घड़ करता है, यह घुण्ठी प्रति भयानक होती है। प्रकृत घुण्ठीसे पहिले थोड़ी खांसी बाद आक्षेपिक शृष्क खांसी होती है, बार २ खोंखनेसे गलेका बैठना और गलेमें दर्द होता है। शरीर अत्यन्त गरम होनेसे रोग बढ़ता है। खांसीका शब्द कुत्तेके बच्चेके शब्दके तरह होता है।

(कृत्रिम या प्रकृत घुण्ठीमें) - एकोनाईट १५ और अक्षिया १५ भाग २ चण्डा पर पर्याय क्रमसे देना चाहिये। एकोनाईट और अक्षियाके सेवन करनेसे (अर्थात् ज्वर कम होकर खांसी बढ़ जानेसे) हिपरसत्तफर ६। आक्षेपिक खांसी होनेसे सांख्यिकास् २५ उत्तम है। (विशेषकर रातमें शिशुकी निद्रा एकाएक खुलकर श्वास प्रकट होनेसे।) रोगके आरम्भमें केवल गरम जल, बाद जलका भरारोट, पानीके साथ बार्नी दूध इत्यादि पथ्य जानना। प्रसुतिके भोजनके तरफ भी ध्यान रखना चाहिये।

शिशुकी सुखमें घाव।—गोराक्स १८ चूर्ण इसकी उत्तम दवा है। थोठ और सुखमें फुसरी जिप्साका प्रान्तभाग क्षेपयुक्त मध्य भाग खाल सक्कीरके समान, सुखमें दुर्गन्ध अत्यन्त बेचैनी, सबज रक्तापतना भेद इत्यादि लक्ष

रोमें पार्सेनिक ६ । दांत निकलनेके समय मुखमें घाव, मुख या गिरमें पसीना कठिनमल पैर ठण्डा होना इत्यादि लक्षणोंमें, कौलकेरिया कार्ब ६ । औभ फूली और दाहयुक्त हो, दस्त मूलम घाव और इसी कारणसे रक्त बहता हो, मुखमें दुर्गन्ध हो सुगन्धसे नार विगेष बहती हो, आमाशयके तरह प्रेमायुक्त पतन्नामल हो तो, मार्क्सन् ६ । मुखमें चारो तरफ फुसरी और सड़ा गन्ध, मुखसे घाव करनेवाली सार बहे तो, एमिड नाइट्रिक ६, (पिता माताके पाराके दोषसे, सन्तानको छुई फुसरीके लिये भी यह उपयोगी है ।) सफेद सैप युक्त जिवहा मुखमें बड़ी बड़ी फुसरी, मुखसे रक्त निचो छुई सार गिरना गुदाके चारों तरफ फुसरी, जिद्राका व्याघात इत्यादि लक्षणोंमें, सल्फर १० ।

**सन्तानका फोड़ा ।**—कभी कभी सन्तानके गिरमें, गलेमें थानके पीछे, बगलमें बाहुके सन्धिमें फोड़ा होता है । कौलकेरिया कार्ब १० । प्रायः घाव (घौषकालमें अधिक) होनेसे, कार्बो मेज १० । घाव चारो तरफ छोटी छोटी फुसरी होनेके कारण सन्तानको हमेशा तकलीफ हो तो, कौमो मिस्ता ६ । कानके पीछे आलरङ्गका घाव, दुर्गन्ध युक्त घाव होकर रक्त बहने और कोष्ठबह होनेसे, आईयोपठियस १० । गिरमें पहिले दो एक फोड़ा हो बाद उसका रक्त सन कर भस्त्रकमें अधिक फोड़ा हो तो सल्फर १०, हिपार



सम्पुर्ण ३० या कैलकेरिया कार्ब ६ । बहुत जगह भार्बिडा ३, विंगेप फल देती है ।

**शिशुका कोष्ठवृद्ध ।**— गर्भावस्थामें माताका कोष्ठ यद, अयोग्य आहार, माताका दूध न पिलाकर गायका दूध पिलाना या यकृतकी खराबीसे बच्चोंको कोष्ठवृद्ध होता है । ब्राइयोनिया ३० और आलुमिना ६ इसकी बढ़िया दवा है (भोजनके बादही कै होनेसे ब्राइयोनिया उपयोगी है) । सफेद रंगका कड़ा मल, कजियतके सबब दिन दिन बच्चोंका दुबला होनेसे कैलकेरिया कार्ब ६ । कड़ा मल बड़ी तकलीफसे थोड़ा हो और पेटमें वायुसे गड़ गड़ गों गों शब्द होवे तो लाइकोपोडियम १२ । पेटमें ऐठन और फूला रहनेसे, मोटा सखा कड़ा मल बड़ी तकलीफसे निकले तो मक्खममिका ३० । उदरामयके बाद अववा चुलाब लेने पर भी कजियत और गांठ गांठ मल ओपियम ३० ।

यतना मल और साय पैर ठण्डा होनेके लक्षणमें कैमोमिला ६ । गिश्त दस्त होनेके लिये कांखता है यह मैला न निकलता वायु सरती है । या बहुत थोड़ा मल निकलनेसे सिना १० उपकारी है । रोज कोई एक घण्टा पेटमें दर्द होनेसे चायना ६ । सड़ा खट्टी गंधका सम्भरङ्ग पतलादस्त, वमनेच्छा या वमन लक्षणमें इपिकाक १० । मनबद्धके सबबसे पेटमें दर्द हो तो नवभूमिका १० । भारी भोजन करनेसे हुई दर्दमें गायकादूध पिनाना बन्दकरना चाहिये । जयार्दनकी पोटली गरमकर माभिपर सेंक करनेसे दर्द धाराम होता है ।

**शिशुका उदरामय ।**—गुरुद्वय भोजन क्रिमि या दात निकलनेसे बच्चोंको उदरामय होता है । यदि ठण्ड लगनेसे उदरामय हो और साथही ज्वर भी रहे तो ऐकोनाइट ६ । देना चाहिये । गुरुपाक भोजनसे हुए उदरामयमें पल्सेटिला ६ । दात आनेके समय बच्चा सही लगकर उदरामय होनेसे खासकर बच्चा छेरियाता हो तो कैमोमिला ६ । उदरामयके साथ वमन या वमनेच्छा हो तो इपिकाक ६ । खट्टी गन्धयुक्त घटघटा या फेनौला अधिक मल और साथही पेटमें दर्द रहनेसे रिउम ६ । (खासकर दात आनेके समयमें) कौचके भांति दस्त और प्यास हो तो मार्क्सूरियास लसिस ६ । आयकादस्त और साथ ही खून आनेमें गैकसस ६ । चायलके धोवनके भांति दस्त

होनेसे भेराट्रम—आख्यम ६ । पुराने उदरामयमें आर्सेनिक ३० ससफर ३० ।

शिशुका हैजा ।—यह अति कठिन रोग है । पहिले अक्रोनाष्ट ३ देना चाहिये । इससे सपकार न होनेसे मोटन ३ । बदबूदार अधिकदस्त, सवेरे रोगको बढ़ती में पडोफाइनम ६ । रोग पुराना होनेसे आर्सेनिक ६ या कैलकेरिया ऐसेटिका ३ चूर्ण देना । पथ्य और अन्यान्य औषधके लिये “हैजा” देखो ।

बिछौनेपर मूतना ।—आयविक उत्तेजना, क्रिमि दोषादि कारणोंसे मूत्राशयकी धारणाशक्ति कम हो जानेसे बच्चे निद्रावस्थामें बिछौनेपर मूतते हैं । क्रिमिजनित होनेसे सिना २x (छासकर पिशाब थोड़ी देर रख देनेसे दूधके भांति दिखाई देने पर ।) घोर मौदमें पिशाब होनेसे धिले-होना ६ । दिन या रातको मूत्र रोक न सकनेसे जीन्स मिमम् ३x पिशाबमें दुर्गन्ध रहनेसे बैजयिक—एसिड ३x । मूत्रमें इसरिका एसिड रहनेसे लाइकोपोडियम ६ । मूलेन अयेल इसकी बहुत बकिया और प्रसिद्ध दवा है । शिशुकी बीच बीचमें बिछौनेसे छठाकर सुतानेसे यह रोग बिना दवाके आराम हो जाता है ।

पिशाब बन्द ।—सन्ताम भूमिष्ट होनेके बादसे २४ घण्टे तक पिशाब न होनेसे जल्दी कोई औषध देनेकी जरूरत

नहीं है । यदि पिशाब १६ घंटे न हो तथा शिशु वेश्मन हो रोने लगे तो ऐकोनाइट १ दो एक स्युराक देना । घबरे होना ६ कौन्यारिस ६ या ओपियम १० देने की कभी कभी जरूरत पड़ती है ।

अधिक उमरके बालकोंको कभी कभी पिशाब बन्द हो मूवस्थिती फूल जाती है, बदन गरम और दर्दसे परेशान हो जाता है । पेडूमें गर्म पानीका सेक देनेसे पिशाब उत्तरता है । इससे फायदा न होनेसे "मूत्र स्तम्भ", "मूत्रनाश" और "मूत्र लक्ष्ण" देखो ।

शिशु-यकृत । कैन केरिया आर्सेनिकम १० ।—

इसकी प्रधान दवा है । आहारके तरफ ध्यान रखना कुपय्य न होने पावे । इस पुस्तकका "यकृत प्रदाह" देखो छोटे बच्चे का मूत्र गरम कर यकृत में सेक करना अच्छा है । बायो निया ६, मार्किउरियास ६, आर्जेण्डम ६, ससपेर १० की कभी कभी जरूरत पड़ती है ।

एक ज्वर ।—कभी कभी शिशुका ज्वर नहीं छूटता ।

जेकसिमियाम १ इसकी बढ़िया दवा है । पाक्वाशयमें गड़बड़ हो तो पक्ष्सेटिषा ६, जीभ सफेद छेप मुक्त होनेसे आयुडिम फूड ६, क्रिमि होनेसे सिंखा ६ या आईजेनिया ६, बदन बहुत गरम, थमक उठना या हज्जाठज्जाके लक्षणमें बिले होना ६ उपकारी है । कभी कभी रोगीका ज्वर किसी तरहसे

नहीं छूटता, कमजियत रहना भाभिके चारो तरफ दर्द, क्रिमि पेटमें रहे चाहे न रहे तौ भी भाक खुजलाना आदिमें सिना २५—३०, सिनासे फायदा न हो तो आइजेलिया ३५ देना । मसल वार्मि आदि लघुपथ्य देना, मुखारमें दूध मना है । प्रसूतीके भी खान आहारमें ध्यान रखना चाहिये। “एक ज्वर” मलेरिया जनित सविराम ज्वर और “सन्निपातिक विकार” देखो ।

### तोतछापन ।—('Stammering.')

टामोनियम ६ कुछ दिन खानेसे फायदा होता है ।

### चर्मरोग।—(Erysipelas -) ठंड लगना

आदि कारणोंसे शिशुके बदनके किसी अंशमें पड़िले सामान्य लाल होता है फिर 'सर्वाङ्ग' लाल भंग हो जाता है, साथही ज्वर, प्रदाहित स्थानका फूल जाकर घाव हो रस गिरने लगता है । यह एक कठिन रोग है । बेन्जोडोना ३५, 'एपिस' ६, और रस टक्स ६ इसकी बकिया दया है । “विसर्प” देखो ।

### पामा (Eczema) ।—यह चर्म रोग बहुतेरे

स्थानोंको हुआ करता है । यह एक प्रकारकी खुजली है, देखने में भी यह खुजली की तरह होता है । इसका पीप कपड़ेमें लगकर सूख जानेसे कपड़ा कसा हो जाता है । जल

भरे फफोलेमें मार्किवरियास ६ अच्छी दवा है, रोग पुराना होनेसे प्रेफरिटिस ६ देना चाहिये ।

**शिशुके वदमका चमड़ा निकलकर घाव होना ।**—(Intertrigo) शिशुका चमड़ा बहुत नरम होता है इसलिये सामान्य कारणसे भी चमड़ा निकलकर घाव हो जाता है । मैला जमना, जोरसे बदन घिसनेसे चमड़ा फट जाना आदि कारणोंसे शिशुके कानके पीछे या गर्दन, पेट और बगलका चमड़ा फूट जाता है फिर साफ हो जखनके साथ रक्त गिरता है । कैमोमिला ६ इसको बढ़िया दवा है । कष्ट दायक घाव से खून निकलने पर मार्किवरियास सल् ६ अच्छी दवा है । रोग बारबार होनेसे साइकोपेडियाम १२ देना चाहिये ।

**शिशुका मृगीरोग ।**—(अपभार देखो) प्रक्सकर यह रोग बच्चोंको होता है । कैल्केरिया कार्ब ६ इसको बढ़िया दवा है । रोग पुराना होनेसे सलफर १० देना चाहिये किजप्राम ६, धिठफो ६, सिस्त्रिका १० देना चाहिये ।

**हुपछासी (Whooping Cough) ।**—यह बच्चों की एक प्रकार अर्शाकामक् खासी है, इस खासी के होनेसे जो भी सांस होनेसे “हुप” आवाज होता है । यह रोग तीन चार हफ्तेसे लेकर छ महीने तक रहता है । बहुत दिन तक

भोगनेसे शिशुकी वृद्धिकास तक हो जानेका डर है । दूसरा ६, इसकी बढ़िया दवा है । येचैनी अधिक हो तो किण्वाम ६, इपिकाक २ और नाफ्थालिन १x चूर्ण समय-समय पर देने की जरूरत होती है ।

### मस्तिष्क-श्लेष्मी प्रदाह ।—(Meningitis)

इस रोगमें पहिले भूख बन्द होता है, शिर भारी और वमन होता है; नाड़ी धीरे, श्वासप्रश्वास अनियमित और मजद टूटी होती है, फिर धीरे-धीरे खैचन, कपकी, नाड़ी तेज, शरीरकी गर्मी बढ़ना (१०४ डिग्री तक) आदि लक्षण होने पर बालक दो तीन हफ्तेमें कलकाशस बनजाता है । यह रोग चोट लगकर होनेसे अधिक २ । मलापादि हो तो बिले होना ६ । मस्तिष्कके पीछे और गरदनमें दर्द हो तो हेलेबोरास ३, फसफोरस ६, जिङ्गाम ६, एपिस ३, ब्रायोनिया ६, सल फर २०, जेलसिमियाम ३, ड्रासोनियम ६, वैसिलिनाम २०० (एक खुराक) समय समय पर जरूरत पड़ती है ।

### मस्तिष्कमें जलसंचय (Hydrocephalus)

।—सम्मान भूमिष्ठ होनेके एक वर्षके भीतर किसी किसीके मस्तिष्कमें शोथ होता है । १० वर्ष तक यह रोग रहते देखा गया है । शिशु मजेमें खाने पीने पर भी दिन दिन सूखता जाता है तथा शिर क्रमशः बड़ा होता जाता है बच्चे बुटेकी भांति दिखाई देने लगते हैं, हरवत्ता सोया रहता है पीछे धीरे धीरे

इन्द्रिय सब विकार हो शिशु मृत्युको प्राप्त होता है । कैल्केरिया १०, और सल्फर १० इसकी बढ़िया दवा है । वैद्यकीके साथ पिशाच बन्द होना, बालक पानीके सिवाय और कुछ खानेको नमानी इस अवस्थामें हेलेबोरस १ उपकारी है ।

**बालारिख विकृति (Rickets) ।**—शिशुके हड्डी में घूनेका भाग कम रहनेसे हड्डी अच्छी तरह तयार न हो कर कोमल, विवृण, विकृत और पतली होती है । पतला दस्त, कपालमें पसीना समय पर दांत का न निकलना, हाथ पैरके जोड़ोंमें दर्द, माथेकी हड्डी फूलकर बड़ी होना और पीठकी हड्डीका टेढ़ा होना इस रोगका प्रधान लक्षण है । इस रोगमें मोटा बालकको कैल्केरिया फस् ६x विचूर्ण और दुबला बालक को फार्सेनिक ६ देना चाहिये । सिलिका ६ और फस्फरस ६ समय समय पर उपकारी है । सफेद मिट्टी पैदा होनेवाले देशमें जवा बदलनेके लिये बालकको भेजना अच्छा है । दूध बढ़िया पिलाना उचित है ।

**धातु दोष या कुलज रोग ।**—नीचे लिखे तीन रोग अक्सर पिता माताके दोषसे शिशुको भोगना पड़ता है —  
(१) व्रण रोग (२) गंडमान्ना, (३) छपदर्श ।

१ । **व्रणरोग ।** (Tuberculosis) फुसफुस, मस्तिष्क अन्त्रादि चाहे जिस यन्त्र या तन्तुमें बालकको व्रण (tubercles) पैदा होता है । यह व्रण पहिले मटर बराबर



हो फिर कड़ा हो फूट कर घाव होता है, तब यह घाव धूसर या हलका पीले रंगका हो उसमें असंख्य छोटे छोटे कीड़े (tuberculous bacilli) होजाते हैं। फुसफुसमें ब्रण होनेसे "घय कास" (phthisis) रोग पैदा होता है, मस्तिष्कमें होनेसे "मस्तिष्कभिन्नी प्रदाह" (tubercular meningitis) रोग पैदा होता है।

फस्फरस ६ इस रोगकी प्रधान दवा कहना फलस्र नहीं है। शिशु अत्यन्त दुर्बल या रक्तहीन होनेसे कैलकेरिया फस्फरिका ६x घूर्ण देना चाहिये। मुखसे खून कै या नाकसे खून गिरना, ज्वर, अतृष्णालमें रक्तका न निकलना आदि लक्षणोंमें फेराम-फस् ६x या ६ अच्छा है। ज्वर, पसीना, दस्त बेहोशी, खांसी (सबेरे और शामको बृद्धि) फुसफुसमें तेज दर्द (चिलने डोलनेसे बढ़ना) आदि लक्षणमें आर्सेनिक ६, डिपार सल्फर ६, सिलिका १०, सल्फर ३०, लाइकोपडियाम १२ और आइओडियम ६ समय समय पर चरुरत पहुँची है। बैसिलिनामटिष्ठवारकिष्ठलिनाम और पाइरोजिनियाम देकर छात्राह, फिसारको, कोई फायदा नहीं हुआ।

पुष्टिकर आहार, विशुद्ध वायु सेवन, सुखे और लम्बे चौड़े मकानमें रहना आदि स्वास्थ्यविधि पालन करना चाहिये।

(१) गरुडमांसा । ( *Sorofula* ) यह उपर विष्टे "त्रण रोग"का अवस्था विशेष है, इस रोगमें शरीरके जोड़ ( खासकर गर्दनको गांठे ) सब फूलकर दर्द होता है, प्रायः पेटकी बिमारी या सर्ही होती है तथा घांख और कानमें पीप निकलता है । कौन्केरिया कार्ब ६ और चाइचा डियाम ६ इसकी प्रधान दवा है । त्रण रोगके औषधोंमें से अच्छा औषध चुन कर सेवन और प्यादि नियम पालन करना चाहिये ।

(३) शिशु उपदंश । ( *Infantile Syphilis* ) पिता या माताके कालमें उपदंश रोग रक्तमेंसे सन्तान भूमिष्ठ होते ही या थोड़े दिन बाद नीचे लिखे लक्षण प्रकाश होते हैं — शिशु दुबला होता जाय और सर्वदा रोता रहे निश्वास अच्छी तरह न निकले और बदनमें खुजली घाव पैदा हो । शिशुका यह उपदंश विष यदि किसी दूसरेके शरीरमें प्रवेश करे तो उसको भी वही रोग हो जाता है । मार्कूरियास सक्त ६० इसकी बढ़िया दवा है । खुजली और घाव अधिक होनेसे नार्मेट्रिक एसिड ६० अच्छा है । भरम मेट ६०, यूजा ६०, वेडियेगा ६ सलफर ६० समय समय पर उपयोगी है ।

सुखडौ । ( *Marasmus* ) ।—अच्छी तरह खजम न होनेसे शिशु दिन दिन सूखता जाता है, शरीरकी स्वाभाविक गर्मी (८८°) से कम होनेपर रोगका होना सम्भवा

होगा । पहिले सल्फर ३० और फिर कैलकेरिया कार्ब ३० इसकी बढ़िया टवा है । शिशु अच्छी तरह खाता पीता रहने पर भी दुबला होता जाय तो आलोटेनाम ४ अच्छा है ।

घातु दोष' की दवाइयोंमेंसे चुनकर समय समय पर देना चाहिये । पुष्टिकर खाद्य साफ हवामें रखना, सुखा सरसोंका तेल थोड़ा गरम कर मालिश करना । साफ घरमें रखना आदि स्वास्थ्यविधि पालन करना चाहिये ।

**धवल रोग ।** ( Leucoderma ) बहुतेरे लोग इसको "श्वेतकुष्ठ" भी कहते हैं पर वास्तवमें यह कुष्ठ या किसी प्रकारका चर्म रोग नहीं है , इसलिये रोगीको अलग रखने या उससे दृष्टा करना उचित नहीं है यद्यपि अभीतक इस रोगका निदान स्थिर नहीं हुआ है तथापि शिशु सर्वाङ्गीन ( या स्नायविक ) दुर्बलता ही इसका जो प्रधान कारण है इसमें कोई सन्देह नहीं है । आठ वर्षसे कम उमरके बालक को यह रोग प्राय नहीं होता । हाथ, गरदन, मुखमण्डल या छातीमें पहिले एक छोटा सफेद दाग होता है, क्रमशः यह दाग सफेद चिकत्ताके तरह होकर अन्तमें चिकत्ता मिल कर फफोलेकी भांति दिखाई देता है । पहिले लिख चुके हैं कि यह चर्मरोग नहीं है, बालकके सर्वाङ्गीकी दुर्बलता और स्नायुमण्डलके क्रियाकी खराबीसे उसका चर्म दूधके तरह धवल होजाता है इससे जिस भीषणसे शिशुके सर्वाङ्गीन स्वास्थ्य और स्नायुमण्डलमें उपकारी हो यही सब भीषण इस

रोगमें उपकारी है, चर्मरोगकी दवा देनेसे कोई स्थायी फल पानेकी आशा नहीं है ।

आर्सेनिक आलबम ३० ( या आर्सेनिक आइयोडियम ६२ पूर्ण ) कइ छफ्ते छिलानेसे रोग धीरे धीरे आराम होजाता है । यदि बहुत दिन तक आर्सेनिक देने पर भी फायदा मालूम न हो तो ( खास कर छाती धक्कट करना और श्वास प्रश्वासमें बाधा पडनेकी हालतमें ) फसफरस ६ देनेसे अवसर गुण दिखाई देता है । हिष्टिरिया ( मूर्च्छा ) भस्त युवती स्त्रियोंके धवल रोगमें इम्मेसिया ६ अच्छी दवा है । ससफर ३०, सूखा ६, कैलकेरिया कार्व ६, कैलकेरिया फस ६२ पूर्ण, आस्ट्रिम टार्ट ६, जिङ्कम ६, और रस टक्स ६ समय समय पर काममें आता है । उपरसे लगानेकी कोई दवा की जरूरत नहीं है, लेकिन बहुतची दाना, पोपलके पेंडकी जड़ बहड़ेके मूलमें पौस कर सेप देनेसे एक बालकका धवल रोग हमने अच्छा किया था लेकिन आठ वर्ष के बाद फिर उसको "धवल" दिखाई दिया ।

बासकको खुलके मूख लगे और जलम करनेकी ताकत बढ़े ऐसा बन्दीवस्त करना चाहिये । दूध, कइ क्षिभर भयेन पेड्रोसियम इमसशन, मीठा पका फल और पुष्टिकर आहार ( जिससे छाया और रक्त पैदा हो ) कराना, स्वास्थ्यकर पछाड़ी अगछ या नदीके किनारे भाव जया बदलनेके लिये कुछदिन वहां रहना अच्छा है । रोम गंगाकी मिट्टी लगाना गंगाघान

होगा । पड़िले सलफर ३० और फिर कैल्केरिया कार्ब ३० इसकी बढ़िया दवा है । शिशु अच्छी तरह खाता पीता रहने पर भी दुबला होता जाय तो आन्त्रोटेनाम ३ अच्छा है । “घातु दोष” की दवाइयोंमेंसे चुनकर समय समय पर देना चाहिये । पुष्टिकर खाद्य साफ ज्वामें रखना, सुखा सरसोंका तेल थोड़ा गरम कर मालिश करना । साफ घरमें रखना आदि स्वास्थ्यविधि पालन करना चाहिये ।

**धवल रोग ।** ( *Leucoderma* ) बहुतेरे लोग इसको “श्वेतकुष्ठ” भी कहते हैं पर वास्तवमें यह कुष्ठ या किसी प्रकारका चर्म रोग नहीं है , इसलिये रोगीको अलग रखने या उससे छुणा करना उचित नहीं है यद्यपि अभी तक इस रोगका निदान स्थिर नहीं हुआ है तथापि शिशु सर्वाङ्गीन ( या स्नायविक ) दुर्बलता ही इसका जो प्रधान कारण है इसमें कोई सन्देह नहीं है । आठ वर्ष से कम उमरके बालक को यह रोग प्राय नहीं होता । हाथ, गरदन, मुखमण्डल या छातीमें पड़िले एक छोटा सफेद दाग होता है, क्रमशः यह दाग सफेद चिकप्ताके तरह होकर अन्तमें चिकप्ता मिल कर फफोलेकी भांति दिखाई देता है । पड़िले निम्न चुके हैं कि यह चर्मरोग नहीं है, बालकके सर्वाङ्गकी दुर्बलता और स्नायुमण्डलके क्रियाकी खराबीसे उसका चर्म दूधके तरह धवल होजाता है इससे जिस भीषधसे शिशुके सर्वाङ्गीन स्वास्थ्य और स्नायुमण्डलमें उपकारी हो यही सब भीषध इस

रोगमें उपकारी है, चर्मरोगकी दवा देनेसे कोई स्थायी फल पानेकी आशा नहीं है ।

आर्सेनिक आलवम ३० ( या आर्सेनिक आइयोडियम ६५ वर्ष ) कई हफ्ते खिलानेसे रोग धीरे धीरे आराम होजाता है । यदि बहुत दिन तक आर्सेनिक देने पर भी फायदा मालूम न हो तो ( खास कर छाती धक्कड़ करना और श्वास प्रश्वासमें बाधा पड़नेकी हालतमें ) फसफरस ६ देनेसे अक्षर गुण दिखाई देता है । हिष्टिरिया ( मूर्च्छा ) ग्रस्त युवती स्त्रियोंके धक्कड़ रोगमें इन्नेसिया ६ अच्छी दवा है । ससफर ३०, यूका ६, कैलकेरिया कार्व ६, कैलकेरिया फस ६५ वर्ष, आष्टिम टार्ट ६, जिङ्गम ६, और रस टक्क ६ समय समय पर काममें आता है । उपरसे लगानेकी कोई दवा भी अक्षरत नहीं है, लेकिन बकुची दाना, पीपलके पेड़की बड़ बड़के मूलमें पीस कर लेप देनेसे एक बालकका धक्कड़ रोग हमने अच्छा किया था लेकिन आठ वर्ष के बाद फिर उसकी "धक्कड़" दिखाई दिया ।

बालकको खुलके भूख लगे और इजम करनेकी ताकत बढ़े ऐसा बन्दोबस्त करना चाहिये । दूध, कच्चा स्निमर अथवा, ग्लोसियम इमसलगन, मीठा पक्का फल और पुष्टिकर आहार ( जिसमें आयु और रक्त पैदा हो ) कराना, स्वास्थ्यकर पछाही प्रणय या नदीके किनारे भाव दवा बदलनेके लिये कुछदिन वहाँ रहना अच्छा है । रोग गंगाकी मिट्टी लगाना अगाधान

करना बहुत उपकारी है । मिठाई, अचार आदि खट्टी चीज और देरसे हजम होनेवाले पदार्थ विषके भांति छोड़ना चाहिये ।

## १६ आकस्मिक दुर्घटना । ( Accidents )

आगसे जलना ।—आगसे जलने पर फफोला हो घाव होता है तथा कोई कोई मर भी जाता है ।

चिकित्सा ।—थोड़ा जल कर फफोला होनेसे कैल्कारिस या आर्टिका-इउरेन्स मूख परिष्ट एक ड्राम, एक औंस पानीमें मिला कर उसमें एक टुकड़ा कपड़ेका भिंगोकर पट्टी रखना अथवा जले हुये स्थानमें सरसीका तेल लगाकर उपर मैदा या भाटा छिड़कना, किम्बा नारियलका तेल और चूनेका पानी समान धजन एकमें मिलाकर जले हुये स्थानमें लगाना अच्छा है । जले हुये स्थानमें जलन और फूलन, ज्वर, प्यास, बदनका घमड़ा रुखा, भय और घमड़ाहट लक्षणमें एकोमाइट ३५ पिलाया । आगसे जलकर वास्ते रगका फफोला, जलन, ज्वर, अत्यन्त प्यास, अतिशय दुर्बलता और मृत्युभय लक्षणमें आर्सेनिक ६ ।—घाव सड़ने लगने पर साइलिसिया ३० या सल्फर ३० पिलाया । जला हुआ स्थान-हई या कपड़ेमें बांध रखना इवा न लगने पावे ।

## होमियोपैथी ।

**चोट ।**—काटकर, चिसकर, चिरकर, कुचा मुरककर आदि कई प्रकारसे चोट है। चोटसे च फटकर फोड़ा या घाव होता है।

**चिकित्सा ।**—चोटसे खून जाना बन्द करना चाि चोटका मुह उपरकर ठठा पानी या बरफकी पट्टी रख फायदा होता है। चोट लगकर घाव होनेसे आर्षिका एक ब्राम एक थोम्स पानीमें मिलाकर इसी पानीमें का मिगी कर पट्टी रखना। मोथरे भस्त्रके घावमें आर्षिका ब उपकारी है। तेज भस्त्रका घाव या दाहदसे जल कर हु घाव कैलेस्ट्रियुलाका मूल भर्क २० दू द एक थोम्स पानि मिलाकर उपर लिखे अनुसार पट्टी लगाना। घाव होव और और लसव प्रकाय होने पर मोसे लिखी दवायें सेव करना चाहिये। ज्वर, शीत, प्यास, धक्काइट, मृत्युभय और मस्तक गरम होनेसे एकोनाइट १५। एक बगच्च चोट लग कर सर्वाङ्गमें दर्द होनेसे आर्षिका ६, चोट लगकर अधिक खून जानेसे डूई नाताकतौमें चायना ६ या आर्सेनिक ६, देना चाहिये। चोटमें चीनी या गन्धक चूर्ण लगा कर बांधनेसे खून बन्द हो चोट आराम होता है।

**माथेमें चोट ।**—यदि चमड़ा न फटे तो उपर लिखे अनुसार आर्षिकाकी पट्टी लगाना यदि फट जाय तब कैलेस्ट्रियुला ६० व २० एक छटाक पानीमें मिलाकर पट्टी



बांधना । छ्बर और सर्वांगमें दर्द हो तो आर्णिका ६ और एकोनाइट ६ पर्यायक्रमसे देना चाहिये ।

मस्तकमें बड़ा चोट लगनेसे रोगी बेहोश हो जाय तो आर्णिका ३ जीभमें लगाना, तथा रोगी जबतक होशमें न आवे तबतक उसको पुकारना या होशमें लानेकी कोशिश करना मना है । होशमें आकर यदि रोगीको बुखार हो तो आर्णिका ३ या एकोनाइट ३ ( या बेलेडोना ६ ) पर्यायक्रमसे पिलाना चाहिये ।

मुरका ।—अवस्था देखकर आर्णिका, रसटक और रुटा यही तीन दवायें पीने और लगानेमें प्रयोग होती हैं ।

कुचल जाना ।—शरीरका कोई अंग कठिन या हलकी वस्तुसे चोट लगकर न फटने या उसमेंसे खून न आनेसे उसको कुचल जाना कहते हैं । चोट लगे स्थानके मौचेकी रक्त बहा छोटी छोटी शिरायें टूट जानेसे वहांका खून जम जाता है, इसीसे वह स्थान नीला या काले रंगका हो जाता है । चोट गह्वरी लगनेसे पीप तक पैदा होता है ।

चिकित्सा ।—एक भाग आर्णिका ० दस भाग पानीमें मिला कर चोट लगे स्थानमें पट्टी बांधनेसे फायदा होता है । पट्टीके उपर केलिका पत्ता रख बांधना चाहिये । छ्बर, या शरीरमें दर्द मालूम होनेसे आर्णिका १५ पिलाना उचित है । चोट लगे स्थानके चारो तरफ छोटी

हो और वह स्थान काला हो तो हैमामिलिस ॥ एक भाग पानीमें मिलाकर आर्णिकाके तरह पट्टी लगाना चाहिये । पीप पैदा होनेकी सम्भावना हो तो डिपार सल्फर १० । सड़ने लगे तो आर्सेनिक १० और साइसिसिया ३० ।

**सवारी पर चलनेकी समयका वमन ।—**

गाड़ी, पाखौ, रेल, जहाज आदिकी सवारीमें किसी किसीको प्रति कष्टकर वमन होता है “ककिउलस” इसकी बहुत बढ़िया दवा है ।

**कौड़ोका काटना ।—**बरे, हड्डा, विच्छू आदि काटनेसे, काटे हुये स्थानके जहरको पंड़िसे छूरीसे निकाल लेना, फिर स्प्रिट कैम्फर अथवा सरसोंका तेल या कैरोसिन तेल या तमाखू या पियाज काटकर लगाना ज्यादा फूटनेसे एपिस ६ पिलाना । गुयाकौड़ा लगनेसे गुस्सरका पत्ता घिसकर घूना लगा देना । मकड़ीके जहरमें घौ और नमक फेट कर लगानेसे उपकार होता है । चूहा काटे तो सेहाम ६ खिलाना चाहिये । कूप्ता, गौदड़ आदि काटे तो सोडा गरम कर दागना और ट्रामोनिया १५ कई खुराक पिलाना चाहिये । विच्छूका विष सुरण या घुइयाका रस लगानेसे दूर होता है ।

**श्वासरोध ।—**पानीमें डूबने फाँसी लगाने, जहरीली

भाफ शरीरमें प्रवेश होने और पासहीमें कहीं बिजली गिरनेसे एकाएकी किसी किसीका श्वासरोध होजाता है ।

**चिकित्सा ।**—पानीमें डूबने या फाँसी लगानेसे हुये श्वासरोधमें रोगीको चित्त सुखाकर दोनो हाथ से उसको केहुनीके उपर याने दोनो भुजाको मजबूत धरकर झोंकिसे उठाना, तथा दोनो केहुनी मोड़कर छातीके उपर धीरे धीरे और मजबूतीसे दावे रखना । इसी तरह हरेक मिनिटमें १०।१५ दफे करनेसे श्वास आने जान लगती है । बिजलीके घमकसे हुये श्वासरोधमें हवाके रुख पर अर्धशायित अवस्थासे ठेस लगाकर बैठाना और मुख, छाती तथा गरदन पर ठंडे पानीका छौटा देना जमीन छोड़कर वही मिट्टी रखना पर सावधान हवा बन्दहो कहीं श्वास प्रश्वासमें विघ्न न होने पावे इस भाँति करनेसे रोगी होशमें आता है । रोगीको निगलनेको शक्ति हो तो नक्सममिका ३० पिलाना । विषाक्त द्रव्य पेटमें आनेसे आघासेर गर्म पानीमें २ क्काम नमक मिलाकर पिलानेसे कैके साथ पेटका विष निकल जाता है ।

**आंख या कानमें कीटादि प्रवेश ।**—

काँकर, कौड़े, केश आंखमें पड़नेसे, पलकको उल्टाकर कपड़ेसे निकाल डालना । आंखमें चूना पड़नेसे उसी समय ३० बूंद मिनिगार आघा पौन्स गरम जलमें मिलाकर आंख धो डालना, चूना धो डालने पर कैशेण्डिडना १० बूंद एक

छटाक पानीमें मिलाकर आंग पर पट्टी बांधे , स्याही पानीसे आंग न धोये, आंग पराब हो सकती है ।

कौड़ा कानमें घुसनेसे, भैर गरम करके कानमें डाल देनेसे कौड़ा भर जाता है । गुठनी या और कोई छोटी वस्तु कानमें घुस जानेसे सावधान पूर्वक चमोटी द्वारा बाहर निकासी होगी ।

**सर्प दंगल ।**—सांपके काटनेही पर काटे हुये स्थानके कुछ ऊपर रस्सी ( डोरी ) पचवा कपड़ेसे मजबूत एक धागा बांधे , बंधा इस तरह होना चाहिये, जिसमें धधनके नीचे रक्तका आना जाना न होसके । ( तथापि नाड़ी जिसमें न मिले ) तत्पश्चात् साफू वा और कोई तीव्र अस्त्रसे जिस जिस जगह दांतोंका घाव है, उस पर दो इंचे लम्बा और चौध इंचों गहरा औरकर दोनों तरफ अङ्गुलीसे घोड़ा २ खींचकर खोल दो । उस जगहमें विय रहनेसे, वहांसे लाल पानीसा पतला निकसेगा ( अधिक रक्त गिरनेसे दोनों तरफसे धीरे धीरे दाब देनेसे खोझ बन्द होगा ) तत्पश्चात् तीन सेन चम्दाज पार्माङ्गनेट अब पटास २x२ घृन्द, पानीमें मिला कर काटे हुये स्थान पर अच्छी तरह घिसे , इस प्रकार कई मिनिट घिसनेसे वह जगह कासी हो आवेगी । तत्पश्चात् दंगलके स्थान पर अच्छी तरह साफ़ा छपेट कर बांध-देवे और ऊपरके धागाको अलग कर दे । रोगीको इस तरह ठेस देकर बैठा कर रखना चाहिये जिसमें वह

निद्रित न हो जावे । काटनेके समयमेंही इस प्रकारकी चिकित्सा प्रणाली अवसरानुसार करने पर प्राणनाशकी आशङ्का नहीं रहती । कुछ पार्माइनेट-अथ पटास गृहस्थ मात्रकी घरमें रखना चाहिये ।

## १७ । औषधि लक्षण-संग्रह ।

( *Materia Medica.* )

**आर्थिका ।**—रक्त, मांसवर्धक और कैशिकाको ऊपर इसकी क्रिया है । चोट, वा शरीरके परिश्रमके हेतु पौड़ा समूह, प्रसवके पश्चात् पचाघात, सन्निपातकज्वर, पेशी-शूल, पतन वा चोटके कारण घुसुष्टकार, बात, शय्याचत, पुराना मलेरियाज्वर, नाक वा मुखसे रक्त गिरना, रक्त गिरना और अकस्मात् पाखाना, हो जानेके-लिये यह उपकारी है । शरीरके किसी जगहमें पौड़ा होनेसे जिस तरहकी पौड़ा समझ पड़े, उसी तरहके वेदना समझ पड़नेसे आर्थिका प्रयोजनीय है । चोट, गिर पड़ना, फटना, कालशिरा इत्यादिमें इसका प्रयोजन है ।

**आर्मेनिक ।**—शरीरके प्रायः जितने यक्ष और निस्त्रयके ऊपर इसकी मुख्य क्रिया है । शीत लगकर माथेकी शैथिल्य भिक्षी और नासिकाकी कफ अनित भिक्षी घिर कर जखन और अतयुक्त विकार, निकलते रहना, नाकके छिद,

घन होजाना, हृदय रोग, पानीकी तरह दस्त या जरा और काले रंगका जलमयुक्त दस्त, यौव वीचमें वमन, अतिसार वा हैजा, (विस्त्रिचिका) स्रुतिकाप्वर, पाकस्थलीमें असह्य असह्य युक्त वेदना, पियास, बारंबार थोड़ा थोड़ा पानी पीनेकी इच्छा ! पाकस्थलीमें घस त्वकमें जलन सहित खुजली और खुजलानेसे जपरकी छालका उठना, मुखके चारों तरफ जलन सहित खुजलाइट, इसी खुजलाइटसे सादा पानी का निकलना, पुराने सविराम ज्वरमें कुनैन लाभदायक न होने पर वा कुनैनके अधिक काममें सामने जलन होकर आँखोंमें पीड़ा होना शोथ, पुराना सड़ा घाव अनिद्रा, रक्त स्वप्न होना, छायाका गुल, जीवन की शक्ति का कम होना, शरीरके चय कारक रोग समूहोंका होना आदिमें ।

**एकीनाइट ।**—माथा और पीठको रंगों पर इसकी

प्रधान क्रिया होती है । प्रदाहसे उत्पन्न हुआ ज्वर, प्रायः सब प्रकारके नये रोग, म्यूमोनियाके पड़िली अवस्थामें ज्वरके साथ शीतलाका होना, सर्दी, काम, सूखी खाँसी, फुकर खाँसी, तरुणमात, गठिया यात, बहुत पियास शरीरका सूखना और गरम होना उद्देगचित्त, माँड़ीका कठिन, नीच्छ, और पूर्णता, सुखमण्डलका जाल होना, साँसके आने जानेमें कठिमेता, पीगावका खाल होना, हृदय कंठ, रक्तका रुक जाना ।

निद्रित न हो जावे । काटनेके समयमेंही इस प्रकारकी चिकित्सा प्रयासो अवलम्बन करने पर प्राणनाशकी आशङ्का नहीं रहती । कुछ पार्माडिनेट-अथ पटास गृहस्थ मात्रको घरमें रखना चाहिये ।

## १७ । औषधि लक्षण-संग्रह ।

( *Materia Medica.* )

**आर्णिका ।**—रक्त, मांसवर्धक और कैशिकाको ऊपर इसकी क्रिया है । चोट, वा शरीरके, परिश्रमके हेतु पौडा समूह, प्रसवके पश्चात् पक्षाघात, सन्निपातकाज्वर, पेथी शूल, पतन वा चोटके कारण घनुष्टकार, घात, शय्याघात, पुराना मलेरियाज्वर, नाक वा मुखसे रक्त गिरना, रक्त गिरना और भ्रुकस्मात् पाखाना हो जानेके लिये, यह उपकारी है । शरीरके किसी जगहमें पौडा होनेसे जिस तरहकी पौडा समझ पड़े, उसी तरहके वेदना समझ पड़नेसे आर्णिका प्रयोजनीय है । चोट, गिर पड़ना, फटना, कालशिरा इत्यादिमें इसका प्रयोजन है ।

**आर्सेनिक ।**—शरीरके प्रायः जितने यन्त्र और निस्त्रवके ऊपर इसकी मुख्य क्रिया है । शीत लगकर माघेकी शैथिल्य भिक्षी और नासिकाकी कफ जनित भिक्षी धिर कर जलन और क्षतयुक्त बिकार निकलते रहना, नाकके छेद,

घन होजाना, हृदय रोग, पानीकी तरह दस्त या जरा और काले रगका जमनयुक्त दस्त, वीच वीचमें वमन, अतिसार वा हैजा, (विमूचिका) घृतिकाज्वर, पाकस्थलीमें असह्य जलम युक्त वेदना पियास, बारंबार थोड़ा थोड़ा पानी पीनेकी इच्छा ! पाकस्थलीमें घत, त्वकमें जलन सहित खुजली और खुजलानेसे जपरकी खालका उठना, मुखके चारों तरफ जलन सहित खुजलाहट, इसी खुजलाहटसे सादा पानी का निकलना, पुराने सविराम ज्वरमें कुनैन लाभदायक न होने पर या कुनैनके अधिक काममें कामसे जलन होकर आखोंमें पीड़ा होना, शोथ, पुराना सड़ा घाव अग्निद्रा, रक्त स्रव्य होना, छायाका शूल, जीवन की शक्तिका कम होना, शरीरके अथ कारक रोग समूहोंका होना आदिमें ।

एकोनाइठ ।—साधा और पीठकी रगों पर इसकी प्रधान क्रिया होती है । प्रदाहसे उत्पन्न हुआ ज्वर, प्रायः सब प्रकारके नये रोग, न्यूमोनियाके पहिली अवस्थामें ज्वरके साथ शीतलाका होना, सर्दी, डाम, सूखी खांसी, कुकर खांसी, तरुणबात, गठिया बात, बहुत पियास शरीरका सूखना और गरम होना खट्टाचित्त, भाड़ीका कठिन, तीक्ष्ण, और पूर्णता, मुखमण्डलका खाल होना सांसके आने जानेमें कठिमेता, पेशाबका खाल होना, छट कप, रक्तका रुक जाना ।



**आसिटमोनियम टार्टारिकम ।**—यकृत, फुस

फुस, और पाकाशयकी शैक्षिक भिक्षीके ऊपर इसकी मुख्य क्रिया । वान्तक और हड्डोंकी घड़ घड़ खांसी (मानो वक्षस्थल शैषासे परिपूर्ण होरहा है, और कफका न निकलना ), सांख रोकनेवाली सूखी खांसी त्वचामें पीप युक्त फुनसी, शीतला, वातकों की वायु नलीमें जलन, कफ गिरना, अधिक सासका चलना, सास' आने जाने में कष्ट, और कमरकी घात ।

**एसिड नाइट्रिक ।**—शोणित, कफकी भिक्षी, ग्रन्थि और हड्डी, त्वचा, गुदा स्थान और छाँ के प्रसव द्वार इत्यादिमें इस औषधिकी क्रिया है । पारेका अधिक अप व्यवहार, गर्मी, कठके भीतरका घाव, यकृतकी पुरानी पौड़ा, गुदाके द्वार पर नासूर, खूनी यथासीर, पुराना सफेद प्रदर, रक्त आमाशय आदिमें ।

**एसिड फस्फोरिक ।**—आयु मण्डल, मूत्राशय, पुंशयविज्ञ, हड्डी और चर्म पर इसकी प्रधान क्रिया है । शोक, शारीरिक और मानसिक परिश्रम, अधिक मैथुनके कारण क्षीर्णकर पीछा समूह, आयु मण्डल और जन नेन्द्रियकी पीछा, पानीके तरह पतला चतिसारके साथ वस्त्रपातिकष्वर, अस्वस्थ घसीनाके कारण शारीरका दुर्बलता, स्तम्भाय, चिरकासीम व्याधा रहित पेटकी पौड़ा, शुक्रमिश्र,

हस्तमैयुनका कुफल, (गण्डमात्रासे उत्पन्न अस्थिघात, घासोंका भूँड़ जाना, (विशेषतः दुर्बलता जनित) ध्वज भङ्ग सफेद प्रदर, रातमें अधिक मूत्र त्याग अथवा बारबार थोड़ा थोड़ा मूत्र त्याग, उसी के साथ दूधके समान अथवा स्वच्छ अण्डोंके कारके समान पेशाब, बड़मूत्र दुर्बल कर स्रव दोष, हस्तमैयुन से हुये सुखमें व्रण ।

दुपिच्छाश्र ।—श्वास यन्त्र और पाकाशयके ऊपर इसकी, प्रधान क्रिया है । हाँफ चलना, सांसां और घर घर शब्द के साथ सांस के आने जाने का कष्ट जीम चलाया वा वमन होना, रक्त गिरना नाक वा मुखसे रक्त गिरना एकदिन के बाद स्वर, कुनेमके अपव्यवहार करनेके स्वरमें, अनियमित स्वर, शास्त्रकों के स्वरकी प्रयमावस्थामें, इने रंगकी आवयुक्त पेटकी पौड़ा और उसीके साथ थोड़ा थोड़ा रक्तवा छोटा पित्तसे माथामें पौड़ा वमन और जीम चलाना इसके प्रयोगका प्रधान लक्षण है ।

ओपियम (अफीम)—माथा, पीठभाग और शस्त्रमूत्र आयुमण्डलके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया है । दस्त-कल मय वा सङ्गेन जनित पौड़ा समूह, सन्निपातिक और विषम सन्निपातिक स्वर दिमागकी सुद्धी, गलेमें घरघरा हटसे श्वास प्रश्वास चलना, निद्रा न भान, आँखोंके तारोंका सिकुड़ना, पेटमें वायुका अधिक होना, अतिशय तिद्रा,

उसके साथ आधो आखें खुली रहना और सर्दीगर्मीमें, “तन्त्रा” अफीमके प्रयोगका प्रधान लक्षण है ।

**क्यालुकेरिया कान्ध्व** ।—परिपोषणकी विलक्षितसे उत्पन्न ( गण्डमांसा, गुटिका, और अस्थि कीमलता ) रोग समूहके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया है । बालकोंके दांत उठनेमें विलम्बका कष्ट, बालक यथासमयमें चलनेमें अक्षम, आंखें जलना, पुरानी पेटकी पौड़ा अन्ति स्फीत, जठरका अधिक होना, समयके बहुत पहिलेही जठर होना, दूधके समान घृत प्रदर, प्रसवके समय शीघ्र रीत चलना, और उसीके साथ दुर्बलता, रातको माथामें पसीना, खट्टी ठकार आना, पूर्णिमाके या समीप पूर्णिमाको रोगका बढ़ना, ठण्डी हवा और व्यथाके ओर सोनेसे रोगका कम होना, सब तरहकी पुरानी पौड़ामें एक दिन अन्तर पर रोगकी वृद्धि ।

**कार्वी-भेजिटेविलिस** ।—शोषित, आयुमण्डल और पाकाशयकी शैथिल्य कील्लोके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया है । ठकार, छातीका जलना पेटका कस आना, पेट फूलना, सन्निपातिका छ्वर, बवासीर, पेटकी पौड़ा, दांतका दर्द, मसूड़ों में घाव होना सदैव मसूड़ोंसे रक्त निकलना, सड़ा दुर्गन्धि युक्त घाव, गला बैठना कुपच, भुगुर्षु अवस्थामें रोगीके उर देश तक ठण्ठा होनेसे “रोगी क्रमागत हवा खानेकी चाह” यहो सब कार्वीके देनेका विशेष लक्षण है ।

**क्यामोमिला ।**—आयुमण्डली, यकृत, पाकाशय और शैथिलिक भिक्षीके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया है । बालकों के दांत निकलनेके समयके रोग यथा ।—पौला और हरि रंगका दस्त होना, तड़का, पतला छिछला मल, सड़े भगड़ेके तरह दुर्गन्धियुक्त पतला हरा और पौले रंगका पांव सहित मल, दांत छठनेके समय अत्यन्त कष्ट, पेटमें कौचीसे काटनेके दर्द होना, दांत छठनेके समय एक तरफका गाल गरम और सास होना और कष्टदायक अस्थिरता होनी । गलेमें सूजन और उसके साथ सामान्य ज्वर, गरम जल पीनेसे दांतोंकी पौछाका बढ़ना, आयुशून्य, जन्तुके समय रक्त सासके समान और कासा, गर्भावस्थामें स्त्रीसोमोंके अङ्गका अकटना, बालक सदैव चिह्नविहायन और थोड़ेहीमें क्रोध करना, गोदीमें लेकर चलने फिरनेसे दर्द कम होना ।

**चायना ।**—अन्यिकी आयुमण्डल पर इसकी प्रधान क्रिया है । पसीना रक्त अल्पता रक्तमें जलियाश अधिक, दुर्बलता, उदरामय यकृत और म्लीहामें रक्त संचयके हेतु विवृद्धि, मलेरियासे उत्पन्नभया अविराम ज्वर । ( जिस ज्वरमें शीत, गर्मी और पसीना अष्टरूपसे जान पड़ता है ), सूजन, भयानक भूख, माथा चढ़कर माथेमें दर्द मानो माथा फटा जाता है ऐसा जान पड़े, पेट फूलना, कुपैस करनेवाला अग्रदोष, अधिक स्त्रीमसङ्गसे अजम्बू, शरीरसे अधिक रक्त और शक्का गिरना या दूधके निरनेसे दीर्घत्व ।

**थुजा ।**—जन्म और मृत्यु यन्त्र गुदा स्थान और त्वचा पर इसकी क्रिया है, कानका तड़कना और उसी स्थानमें सड़ी दुर्गन्धियुक्त पीप बहना, मासिकाके भीतर घाव । खुजलीके साथ फुन्सी, एसबी, नासूर वा शोथ और ववासीर, प्रमेह, मूत्रमालीके मुखपर पीसी वा हरे रंगका पीप जमना, बारंबार घूट २ मीशव, प्रमेहके यथात् बहुमूत्र, गर्मीकी दूसरी अवस्था में ६ घंटे की टीका देने पर शरीरका रक्त दूषित होना । किसी के किसीके मतानुसार थुजा वसन्त रोगकी एक उत्तमौषधि और अवरोधक है ।

**नक्सभमिका ।**—पीठ, मज्जा और गतशक्ति तथा ज्ञानशक्तिदाता आयु पर इसकी मुख्य क्रिया है । दस्तकज, सूखी खांसी, सर्दी, मानसिक परित्यम, दुःखिता, रात्रि जागरण, अधिक भोजन, नश्वकी वस्तुके खानेसे उत्पन्न हुये रोग समूह, कभी दस्त होना और कभी दस्तकज, बारंबार दस्त होना शूल पीड़ा, पेट फूलना, छातीका जलना, सिरका दर्द और उसीके साथ माथा घूमना, ववासीर, पाकाशवकी सर्दी, जीभके पश्चात् भागमें मैल, भयकारक स्वप्नोन्मी की कोई छाती पर चढ़कर दयाता है गोला और जहाज पर चढ़नेसे जीमचलाया आलोपिक सांस चलना, भोजनके अन्नोक्ता अकड़ जाना, शीघ्र शीघ्र मासिक ऋतु होना, और रक्त अधिक गिरना, मासिक ऋतुके समय सबेरे वमनकी इच्छा होना,

बूद बूद पेशाबका गिरना, मूत्रस्थानमें पक्षाघात, यकृतकी पौड़ा, शराय पीनेके हेतु जिनसे ज़ाय पांवमें कम्प हो ।

**नेट्रिस मिचरियेटिकम ।**—रक्त, ससियामण्डल, परिपाकस्थलकी शैथिल्य भिक्षी, यकृत और ग्रीवासे ऊपर इसको प्रधान क्रिया होती है । अनिवार्य विषम ज्वर, अधिक मात्रामें हुमेन वा संखियाका अपव्यवहारसे उत्पन्न दुष्पा ज्वर, शीतता, रक्त स्वस्थता, दस्तकज, शीघ्र और यकृतका बढ़ना प्रमेह, खेतप्रदर, सर्दी, नाकसे रक्त गिरना, ज्वरठूटा, कड़ुआ वा मुनखरा स्वाद अथवा फीका सुख रहना ।

**पलसेटिला ।**—शरीरस्थ शैथिल्य भिक्षी, सैद्धिक भिक्षी, शिरा, आंख, कान और जननेन्द्रिय पर इसकी प्रधान क्रिया है । गरिष्ठ वस्तु खाने पीनेके कारण अजीर्ण, जीम सफेद वा पीले मैद्यसे भरी, पित्त और वाफका वमन, खट्टी ठकार, छाती नलना, आंव सहित पेट पौड़ा, हाम, शीतला कानफो पौड़ा, कामसे पीप बहना, घात, गठिया घात, स्वस्थ विराम ज्वर, माथामें शीतलगना, उसीके साथ नाकसे गाढ़ा कफ गिरना, आंखोंमें खोखर आना, हामके पचाव यदि रता, असमयमें मासिक श्वसु होना, ऋतुका रक्त असमय और काशा, पौड़ाके साथ पशु होना खेत प्रदर, अण्डकोष में बहान, ऋतुका बढ़ होना, प्रमेह, प्रसव पौड़ा होनेके समय सिंघाने शीघ्र शब्दकी भाूमिष्ट होना और अण्ड शरीर घूमकर

माथेका सामने आना, सड़जड़ीसे रोनेवाले और धीर स्वभाव वालोंके लिये यह उपयोगी है ।

**फस्फोरस ।**—शोणित और परिपोषण सायुमण्डल

में इस औषधिकी प्रधान क्रिया है । शारीरिक सायवीय दुर्बलता, फुस फुसमें जलन, कफ, खांसीसे साथ कफ, और रक्त निकलना, स्वरभङ्ग या स्वरशोष यक्ष्मा, पेटपीड़ा, मैदा और चर्बीकी वृद्धि, यकृतकी पीड़ा, भ्रूजभङ्ग, भट्टु शीघ्र शीघ्र होना, रजस्त्राव, स्त्री ससर्गकी इच्छा, गोधेकी ठुल्लकी हाड़में घत । दांतकी जड़का हिलना, और थोड़ेहीमें रक्त पड़ना, दस्तकी जड़ उखड़ना, छातीके फोड़ोंमें भस्त्र करनेके पीछे यदि नासूर हो तो यह औषधि उपकारी है ।

**फेरस ।**—रक्तके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया । खून सूखना, सप चर्बीकी दुर्बलता, कमजोरीसे माथेमें दर्द, मूत्र स्थली या मूत्रनालीमें जलन, पुरानी सन्निधौ, गलेमें फोड़ा, अति रज, और घाय वा कुमेनका अनियमित व्यवहार करने से हुई पीड़ा समूहमें । सुकुमार देह स्त्रियां और स्त्राव और रक्त प्रधान धातुके व्यक्तियोंको लिये यह औषधि उपयोगी है ।

**ब्रेलियोना ।**—मस्तिष्क (cerebrum) और समस्त सायु मण्डलके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया है । सुख मंडलका क्षाप्त होना, नाडी कठिन, पूर्ण और तेज, प्रताप रक्त-समृद्ध और जलन (पीप उत्पत्तिके पश्चिमे चर्बात् फोड़ा

और हृषकी प्रथमावस्थामें ) आयुशूल, जखातङ्क, आमरक्त, स्तम्भ रज, अति रज, प्रसव वेदना, खांसी, आरक्त ज्वर, विसर्प, फोछा, संन्यास आदि रोगमें वैस्सेडोना व्यवहार होता है । किसी तरहका दर्द अकस्मात् होकर अकस्मात् सपथम होना, वैस्सेडोनाका एक विशेष लक्षण है ।

**ब्राय्थोनिया ।**—फुसफुसवेष्ट, मस्तिष्क, और यकृतके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया । वायुनालीमें जलन, फुस फुसमें जलन, ( प्रथमावस्थामें ) वक्षस्थलमें शीत लगनेसे दर्द, ( खांसने और सांस लेनेसे ही दर्द होना ), सूखी खांसी, गठिया वात ( विशेषकर हिलने दुलनेसे कष्ट हो ), कमर वात, वातज ज्वर, न्यावा पित्तसे ज्वर, और माथेमें दर्द, पित्त वमन छातीमें जलन, कड़वी टकार, दन्त कल, चिरचिरा मिजाज, अनुकूल रज और सूतिका ज्वरमें, सूई गड़ने वा कटनेके समान दर्द होना, और हिलने दुलने से रोगकी वृद्धि ब्राय्थोनिया प्रयोगका प्रधान लक्षण है ।

**मेराट्रम चान्नाबम ।**—मस्तिष्क और पीठके आयु मंडलके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया समझी जाती है । पैजा ( चावलके धोखा पतला अपिद्ध रीतिसे द्रुत और वमन ), सब अङ्ग ठंडा, आन्त्र गल्ल अमजोरीके साथ ठंडा पसीना, आयुगन्तिकी सुखी प्रज्ञाप और उन्माद रोगमें, जीमचक्षाना वा वमनेके साथ “किन्नाटमें ठंडा पसीना” और गठिन दर्द इसकी प्रयोग करनेका प्रधान लक्षण है ।



**मार्किंजरियस भाङ्गभास ।**—प्रत्येक यन्त्र और

विधान तन्तु पर इसकी प्रधान क्रिया है । गांठमें सूजन वा पीप होना, गखेके भीतर फोड़ा, छार निकलना, सुखमें फोड़ा, दांतमें दर्द, कानसे पीप निकलना, नाक वा आंखसे खर्दी वा पीप गिरना, आंखे धामा, यकृतमें जलन ( दाहिनी तरफ सोनेसे दर्द कीवृत्ति ), यकृत कड़ा, सूजनयुक्त और दर्दयुक्त, खट्वापानी निकलना, न्यावा, पैस्तिक ग्रहणी, गर्मीका घाव अच्छी तरह जान पड़ना, पक्षाघातमें जलन, उपदंशज वात, आवके साथ रक्त मिक्की विष्ठा, ( काष्ठमा विशेषकर मलत्यागके समय ) रातके समयमें बिछीनाकी गर्मीसे पौड़ा अधिक होना मार्किंजरियस प्रयोगका प्रधान लक्षण है ।

**रसटक्स ।**—शारीरिक यन्त्र, शैथिल्य भिन्नी, त्वचा और चर्म्बिके विधान तन्तु पर इसकी प्रधान क्रिया है । वात ( विशेषतः पुराना वात ), गठिया वात, कटि वात, दांतज पक्षाघात, फोला सह विसर्प, श्रोतना, समस्त शरीरमें शमक सह्य शाल फुन्सी, अतिसारके साथ साविपातिक छ्वर, चर्म रोग ( असह्य जलन और खुजली ) और भैसिया दादमें, हिस्सने चर्मसे पौड़ामें रसटक्स प्रयोगका प्रधान लक्षण है ।

बाह्यप्रयोग—से सुरक गांठोंमें चोट लगने आदि पौड़ा आदिमें ।

**साधूक्कोपोसियम ।**—प्लास यन्त्र, परिपाक यन्त्र, जलन और भूल यन्त्रकी शैथिल्य भिन्नी, चर्म और यकृतके

ऊपर इसकी प्रधान क्रिया है । सबेर नींद टूटनेके समय और पीछे माथा धूमना, अरुणशक्तिकी दुर्बलता, अत्यन्त क्षुधा, असन सहित टकार, सुखमें यानी भर भ्रमा, और हात्ती अलना, खट्टी टकार, पाकस्थलीमें मोक्ष जान पचना, (यहांतक के थोड़ा खाने पर भी) मानसिक परिश्रमके कारण मन्दान्नि ।

ल्याकेसिस ।—पीठकी रंग पर और प्रधानतः फुस फुस और पाक्वाणविक छायापर इसकी प्रधान क्रिया है । गलेमें दर्द कानमें पीड़ा, गालके हाड़से घाम तक फटने लगना घ्यास न लगनेपर गला सूखना, सड़ा दुर्गन्धियुक्त मल वी मासूम मल निकलना, घीसकालमें उदरामय, त्वचामें कासा सौल रंगका विकारी फोड़ा, ध्वरायुसे थोड़ा रजस्त्राय (रक्त कासा ) ऋतुके समय प्रसवके समान पीड़ा, स्त्रियोंकी शेष उमरमें ऋतु बन्दके समय और भ्रमकी बीमारियोंमें ।

सलफार ।—प्रधानतः ग्रन्थि छाद्युर्मंडनको मध्य सब शरीरके ऊपर इसकी क्रिया होती है । चर्मरोग मात्र, खुजली पुरानी पीछा, दस्तकल, बवासीर, कफ, फोड़ा, बात, गूमरा, उ गल फोड़ा चिन्ना ( छोटी छमि ) उदरामय "माथाके भीतर अलन" बारंबार पेशाव लगना, पेशाव में असन, आंखि धाना धनियमित समयकी बहुत पड़िके और पीछे थोड़ी देर तक थोड़ा या बहुत रखरखाव होना, असन और जट्टदायक श्वेतप्रदर । जिन सब रोगियोंकी

उपयुक्त औषधि देने पर कुछ फल दीख न पड़े, 'उम्हें' बीच बीचमें सलफार देकर चिकित्सा करनेसे विशेष उपकार होता है। कभी रोगके पहिले और कभी पीछे यह औषधि देकर चिकित्सा करनी पड़ी है। छान वा धोनेके पहिले विछोनेकी गरमीसे या आधौ रातके पीछे रोगकी वृद्धि इस औषधि प्रयोग करनेका प्रधान लक्षण है।

**साङ्गलिसिया ।** \* शैफिदाभिलौ, ग्रन्थि, अस्थि और अस्थिकी ग्रन्थिकी सृजन, उ गन्तीमें फोडा नानाविध फोडा, गडमासासे उत्पन्न फोडा अस्थिकी नम्रता, मस्तकमें दुर्गन्धि पीपयुक्त पपटौ पड़ना, हाथ पांवमें अर्बुको वाम होने के कारण पतला पड़ जाना, अस्थि और अस्थिमें लपटे हुये त्वचामें पीप होना। पूर्णिमा और अमावास्याके समय किसी रोगकी वृद्धि होना।

**सिक्केलिक्कर ।**—मस्तिष्क और पीठ आयुर्मंजलपर इसकी प्रधान क्रिया है। हैजाका आघेप और अकड जाना, हैजामें हाथ पांव स्थित होना और सांसका रुकना पचाघात (सकवा) प्रसव पीडा, प्रसवास्तिक पीडा, रजसाव, (विशेषतः औषधादि स्थियोंकी) वे मासूम रूपसे दुर्गन्धियुक्त हरे रंगका मलत्याग आमाशयसे रक्त गिरना, जरादुसे अधिक

\* "शैफिदा" यह शब्द विशेषतः है, इसके बदले "शिदिदा" सर्वत्र व्यवहार करना चाहिये।

प्रमाण और अधिक दिनों तक भट्ठु गर्भ पतित होनेकी शक्ती, प्रसव शीघ्र होनेके हेतु सिकेलि सेवन करना अति दुष्ट दायक है ।

**सिना ।**—अम्लनासीके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया है । सदैव नाक खुलसाना, नाकके भीतर चंगली छानना, निद्रामें दांत किटकिटाना, आतमें छमि, भोजनमें अरुचि और दुष्ट क्षुधा, अतिसार, रातमें अग्रामसे पेशाव होजाना । (विछीनामें सूतना) दूधके तरह सफेद पेशाव, गला धरनेवाली खांसी, छमिके कारण माना रोग ।

**हिपार सल्फार ।**—चर्मा और आसयन्त्रके शैथिल्य पर प्रधान क्रिया है । पीपका बढ़ना और उत्पन्न करना इसका प्रधान गुण है । गला बैठना खांस लेनेमें कष्ट, (विशेषतः हड्डी खांसीके प्रथम अवस्थामें होनेसे), स्कोटक, अंगुलीका फोड़ा, पुरानी मन्दाग्नि, बवासीर, कानसे पीप बहना । गर्मीसे घाव, और दुर्गंधि पीप निकलना । गडमासा अर्थात् व्यक्तियोंके लिये, पारद अपव्यवहार अनित रोगमें और पुरुषोंका इलासे रोग बढ़े तो यह औषधि बहुत उपयोग है ।

**हैमामेसिस ।**—रक्तवहा, गिरामंडलीके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया है । शरीरकी किसी गिरासे बहिर गिरने पर ह्यामामेसिसका प्रयोग करना प्रधान लक्षण है । रक्त बवासीर, अभ्यान्तरिक यन्त्र बधा ।—फुस फुस, परिपाक

यन्त्र, मूत्रयन्त्र, मूत्रस्थली, जरायु मन्त्रधार आदिके गिराये रक्त गिरना, स्त्रीकी जननेन्द्रियमें गिराकी सूजन जरायुसे बहुत दिनों तक रक्त गिरना । यह औषधि आभ्यन्तरिक और बाह्यरूप दो तरहसे प्रयोग होती है ।

## विषम गुण ( antidoes )

( शराइकाद्वारा और सिमिसिफिउगाके सिवाय )

कोई औषधि अधिक मात्रा देवन करनेसे अधिक डर होने पर २।५ बूंद स्प्रिट केम्फरकी देना चाहिये ।

## कई एक कठिन शब्दोंका अर्थ ।

आवेप ।—अभिच्छर्मे मास गिराओंके आकर्षण, टामना, अकल जाना, ( Spasm ) ।

उत्तेजक ।—जो औषधि शारीरिक किसी यन्त्रकी क्रियाकी उत्तेजना उत्पन्न करे, ( Stimulant )

उत्तेजक कारण ।—किसी पीडाका मुख्य कारण, ( Exciting Cause ) ।

उद्गम ।—रक्तस्राव हेतु किसी अङ्गका कड़ा और शोथ होना, ( Eruption )

उदरो ।—पेटमें सूजन ( Ascites ) ।

उपशान्त ।—अतः विषमगुणी अति उत्तेजना, जिस कार

एसे घ्रायु और पेयिकी ( रोगों ) उत्तेजना हो,  
( *Irritation* )

उपादान ।—जिस जिस वस्तुसे कोई पदार्थ गठित हो,  
( *Ingredients* ) ।

जीवाणु ।—मयनाशीत अति सूक्ष्म पानी, अणुवीक्षण यन्त्रको  
सहायतासे मलेरिया ज्वर, हैजा आदि रोगोंमें  
इन्हें रक्तमें संचरण करते देखा जाय इस स्थित्ये  
इसे रोगोत्पादक कहते हैं, ( *Bacilli* ) ।

मिमी ।—नरम पारोक्ष जालके समान झट्टक टकना, *Mem-*  
*brano* ) ।

पौष्टिका ।—उष्ण, फोडा, फुनसी ।

पूर्ववर्त्ती कारण ।—किसी पौष्टिक गठनका कारण, ( *Predi-*  
*sposing cause* ) ।

प्रदाह ।—जीव शरीरके किसी अङ्गमें ईदना ( जलन इत्यादि )  
युक्त, उप्तप्त, पारस या सूजन होना, ( *Inflamma-*  
*tion* ) यथा ।—पाँव कटने, शाय दूधमें पर संगली  
में झील घुसने पर गर्दममें फोड़ा होनेसे जलन  
होती है ।

वेधान ।—शरीर यन्त्रका निर्माण वा गठन, ( *Structure* ) ।

वेधान तन्तु ।—जीवदैवके गठनेके उपयोगी सूतके समान  
उपादान समूह, ( *Tissue* ) ,

रक्तसञ्चय ।—जीवटेट्टके किसी स्थानमें या यन्त्रमें अधिक रुधिर  
जा एकत्रित होना, ( Congestion ) ।

रक्तसञ्चय ।—जीवटेट्टके किसी अङ्गमें अधिक प्रमाणसे ओर  
शोषता पूर्वक रक्तका चलावा ( Determination  
of Blood ) ।

संक्रामक ।—रूनेसे लगना, ( Contagious ) ।

इति ।

